व्यवहारिक और आलोचनात्मक राजनीति (संलाप)

राहुल सांकृत्यायन

किताब महल इलाहाबाद

पहिली छाप,   १९४५

दूसरी छाप,   १९४६

तीसरी छाप,   १९४८

(सोधी और बढ़ाई हुई)

परकासक :—किताब महल, ५६-ए, जीरो रोड, परयाग।

छापक :—कृष्णाच्चरन, विस्नू प्रेस, कटरा, इलाहाबाद।

तनिक अरज

(पहिली छाप)

इस किताबकी भाखा देखके कितने ही पढ़नेवाले अचरज करेंगे, लेकिन मुझे उमेद है, कि वह नराज नहीं होंगे; काहेसे कि यहाँ उन्हें ऐसे सैकड़ों सबद मिलेंगे, जिनको उन्होंने माँका दूध पीनेके साथ सीखा है और अब भी वह ऐसे ही फिर मीठे लगते होंगे। लेकिन मैंने इस पोथीको भाखा फैलानेके ख्यालसे नहीं लिखा। एक बरस पहले जो कोई कहता, कि तुम इस भाखामें एक किताब लिखोगे, तो मुझे बिसवास न होता। मैंने छपरा-बलियाकी भाखा मल्लिकामें आठ छोटे-छोटे नाटक लिखे, और मैंने देखा कि बातोंको रखनेमें कोई कठिनाई नहीं है। उस भाखामें मैं इस पोथीको लिख सकता था लेकिन फिर वह चार-पाँच जिलों होके कामकी होती। लेकिन इस तरहकी हिन्दीमें लिखना बहुत मुसकिल मालूम होता था। तो भी मैंने सोचा कि जिन लोगोंके पास मैं अपनी बातोंको पहुँचाना चाहता हूँ उनके लिये ऐसी ही भाखामें लिखनेकी कोसिस करनी चाहिये। पोथी लिखते बखत मेरे दिलमें हमेसा इस बातका ख्याल रहा है कि जिन्होंने प्राइमरी तक हिन्दी पढ़ी है, वह इसे समझ पायें। इस काममें सन्तोखी और दुखरामने मेरी बड़ा मदद की है, जो यह दोनों मेरे सामने न रहते, तो मैं बहक जाता। मेरी जनम भाखा बनारसी (कासिका) है, लेकिन ३१ बरसोंसे छपरामें ज्यादा रहनेके कारन मुझे वहीं-की भाखाका ज्यादा ग्यान है। बनारसी बोलने लिखनेमें मैं गलती कर जाता हूँ, तो भी भाखा लिखते बखत मुझे बनारसी और छपरही भाखाओंसे बहुत मदद मिली है। किसी समय मैं सालसे बेसी बुन्देलखण्डमें रहा था, और उस भाखाने भी मुझे जरूर मदद की। इसके बाद सबसे बेसी मदद सिरी सतनरायेन दूबे (सेठवी) से मिली। मैं बोलता जाता था, और वह कागज-पर उतारते जाते थे। कागजपर उतारनेके साथ साथ वह सबदोंके बारेमें अपनी राय देते जाते थे, जिससे भाखा और आसान बन सकी। वह भी राय देनेमें बहक जाते, जो उनके सामने अपने गाँवकी पुरबहिया (अहिरिनि)

भौजाई न होती। इस तरह फैजाबाद जिलेकी अवधी भाखासे भी मदद मिली। तो भी हिन्दी पढ़नेवालोंके थोड़ेसे जिलोंकी मदद मैंने ली। हो सकता है, इस पोथीमें कुछ ऐसे सबद भी आ गये हों जो पच्छिमके कुछ जिलोंमें न चलते हों। मैंने अपने जान ऐसे सबदोंको न लेनेकी कोसिस की।

राजनीतिको थोड़ेसे पढ़े-लिखे आदमियोंके हाथमें देकर अब चुप बैठा नहीं जा सकता। ऐसा करनेसे जनताको बराबर नुकसान उठाना पड़ा। जनताको वोट देनेका अख्तियार दे देनेसे काम नहीं चलेगा, उसे अपनी भलाई बुराई भी मालूम होनी चाहिये और यह भी मालूम होना चाहिये कि राजनीतिके अखाड़ेमें कैसे दाँव पेंच खेले जाते हैं। इस पोथीमें इस बातके समझानेकी मैंने थोड़ी-सी कोसिस की है। लोगोंको, इससे कुछ फायदा होगा या नहीं, इसे मैं नहीं कह सकता। और इतना बड़ा काम एक पोथीसे हो भी नहीं सकता। मुझे उमेद है कि मेरे दूसरे भाई अपनी मजबूत कलमसे और अच्छी किताबें लिखेंगे, तब ज्यादा काम हो सकेगा।

हो सकता है किसी-किसी भाईको पोथी पढ़ते वक्त कुछ सबद कड़े मालूम हों—दुखराम भाईकी कोई कोई बातें देहमें तीर जैसी लगती हैं, लेकिन दुखराम जैसे किसानको हम वैसी ही भाखामें बोलते सुनते हैं। तो भी जो किसी भाई के दिलमें चोट लगे तो मैं छमा माँगता हूँ। मैं किसी एक आदमीको दोसी नहीं मानता, आज जिस तरहका मानुस जातिका ढाँचा दिखाई पड़ता है, असलमें सब दोस उसी ढाँचेका है। जब तक वह ढाँचा तोड़कर नया ढाँचा नहीं बनाया जाता, तब तक दुनिया नरक बनी रहेगी। ढाँचा तोड़ना भी एक आदमीके बूतेका नहीं है, इसके लिये उन सब लोगोंको काम करना है, जिनको इस ढाँचेने आदमी नहीं रहने दिया।

आखिरमें मैं एक बार फिर सिरी सतनरायन दूबे (सेठजी)को धन्नबाद देता हूँ, कि उन्होंने रात-दिन लगाके बारह दिनों (१७ मई—२८ मई)में लिख डालनेमें अपनी कलमसे मुझे मदद दी!

परयाग
२८ मई १९४४

—राहुल सांकिर्तायन

तीसरी छाप

तीन बरिस पहिले मैंने इस पोथीको लिखा था। तबसे अपने देसमें बहुत बड़ा फेर-फार हुआ है। उस बखत भी मैं देखता था कि लड़ाईके पीछे हिन्दुस्तानको गुलाम बनाकर रखा नहीं जा सकता सो बात अब आँखके सामने है। गुलामी गई मुदा गरीबी बाकी है। गरीबी दूर करके हिन्दुस्तानको एक बलवान देस बनना है। रूस और अमिरकाके बाद तीसरी जगह अपने देसको लेनी है। मुदा, यह मुँहसे कहनेसे नहीं होगा। इसकी खातिर समूचे देसमें पंचैती खेती, नये ढंगकी खेती और कल-कारखाने छा जाना चाहिए और जल्दीसे जल्दी। कुल पच्चीस बरिस हमारे पास है। इसी बीच हमें यह कुल मंजिल मारना है। यह तभी हो सकता है कि सब जगह सेठोंके "लाभ-सुभ"को हटाकर देसकी भलाईको सामने रक्खा जाय। सेठ और सेठके पायक लोग लम्बी-लम्बी बात करके भरमाना चाहते हैं और देसकी भलाईका बहाना करके! हमें बात नहीं, काम देखना है। काममें देख रहे हैं कि लड़ाईके बखत भी सेठ लोगोंने दोनों हाथोंसे नफा बटोरा और आज भी उन्हींकी पाँचो अँगुरी घीमें है। खाली चीनीपरसे आँकुस (कनटरोल) उठानेसे कई करोड़ रुपैया सेठोंकी थैलीमें चला गया। कपड़ा और अनाज परसे आँकुस उठनेपर और बहुत करोड़ रुपैया सेठों और चोरबजारी बनियोंकी थैलीमें जायगा। कब तक थोड़ेसे आदमियोंके हाथमें देसका सारा धन और देसकी सारी जिनगी बटुरती जायगी? और, ऊपरसे जो बेसी नफापर बड़ा एकमटिकस (इनकम टैक्स) भी सेठोंपरसे उठा लिया गया है। सेठोंके लिए सब काम कितनी फुर्तीसे हो रहा है, सो हमारे सामने है।

दूसरी ओर जनताकी भलाईके सब काममें आज-कल आज-कल हो रहा है। जिमदारी उठानेकी बात खटाईमें पड़ी हुई है। कमेरोंके खिलाफ खूब हथियार चलाया जा रहा है और उनको फोड़कर आपसमें लड़ानेकी तदबीर की जा रही है। बाहरसे, कमेरोंके परघट दुसमन बारयाम उछल-

कूद रहे हैं। मुदा, एक ही भरोसा है "जिसको सालिगरामको भूनकर खाने-में अबेर नहीं हुई उसे बैगन भूननेमें कितनी देर लगेगी ?" जनताका तागत बहुत बढ़ गई है। जनताके सेवकोंकी भी तागत बहुत बढ़ी है। कुल जन-सेवकोंको एक होनेका बखत आ गया है। घरके भीतर कमुनिस, सोसलिस, फरवरबिलाकी, करन्तिकारी सोसलिस आपसमें चाहे लड़ो मुदा बूझ लो कि अकेले चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। जो सब लोग आपुसमें मिलकेर काम नहीं कर सकते हैं तो कमेरोंके पंचैती राज (समाजवादी प्रजातन्त्र) का सपना दूर बहुत दूर चला जायगा।

लड़ाईके बाद अब क्या करना चाहिये, यही बात इस छापमें बढ़ा दी गई है। और पहले की बहुत-सी पाँती और एक समूचा अधियाय निकाल दिया गया है।

परयाग
१६-१-४८

— राहुल सांकिर्ताएन

सूची

भागो नहीं बदलो

अध्याय १

दुनिया नरक है

और जगह जाने की क्या जरूरत है, सामने देखते नहीं, यह दुनिया नरक नहीं तो क्या है?—दुखरामने सन्तोखी से कहा। अभी दोनों की बात यहीं तक थी, कि एक तीसरा जवान आया, जिसे दोनोंने "आओ भैया" कहकर पास बैठनेके लिए कहा। अब फिर उनकी बात सुरू हुई। भैयाने ही पहल की—कहो क्या बात हो रही थी, मैं भी सुनूँ।

सन्तोखी—यही दुखराम दुनियाका रोना रो रहे थे, दुनिया नरक है, नरक।

भैया तो इसमें कोई सक है? देखते नहीं हमारे गाँव में पचास घर हैं, लेकिन उनमें कितने घर हैं, जो पेट भर खा सकते हैं?

दुखराम - मैं समझता हूँ, पाँच से अधिक नहीं।

भैया—और वह पाँच भी सूखा-रूखा घास-पात खाकर किसी तरह पेट भर लेते हैं,बाकी पैंतालीस घरमें किसीको एक साँझ खानेको मिलता है, किसीको दो दिन पर मिलता है। चैतमें जब फसल कटती है, तो एकाध महीना पेट भर खा लेते हों। छोटे-छोटे बच्चोंको देखते नहीं, कैसे उनका पेट कमरसे सटा हुआ है! और किसीके लिए होगा कभी-कभी सूखा अकाल, लेकिन हमारे यहाँ के लोगोंके लिए तो सदा ही अकाल रहता है, उन्हें सदा ही भूखा रहना पड़ता है।

भैया—जानते हो लोग जो इतना बीमार पड़ते हैं, वह भी भूखेही रहने के कारन।

दुखराम—क्यों नहीं भैया! पेटमें जब अन्न नहीं रहता, तो जान पड़ता है, आग भभक उठती है और सारे सरीरमें लहर बलने लगती है।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! जब सरीरको अन्न नहीं मिलता, तो वह दुर्बल हो जाता है। और सुना नहीं है "दुर्बलो दैव घातकः"। कोई भी आस-

पाससे बीमारी जा रही हो, दुर्बल आदमीको देखतेही उसका मन ललचा जाता है। अकालमें जितने लोग भूखे मरते हैं, उससे तिगुने बीमारीसे मर जाते हैं। अभी जो बंगालमें अकाल पड़ा था, जानते हो वहाँ कुछही महीनोंमें साठ लाख आदमी मरे, जिनमें भूखसे मरने वाले २० लाखसे जियादा न होंगे। मालूम है साठ लाखके अकाल-मरनके सुननेसे तुम्हें वह रोमांचकारी दुख नजर नहीं आएगा, जो मरनेसे पहले उनपर बीता।

क्या ऐसी बीती भैया जी?

भैया—कुछ न पूछो, यदि वह रातको सोते और सबेरे मरे पाये जाते, तो इतना दुख न होता। लेकिन उन्हें लाज छोड़नी पड़ी। सुना होगा तुमने, कलकत्ताकी सड़कों पर पचास-पचास हजार भूखे नर-नारी बाल-बच्चे पड़े हुए थे। यह ऐसे लोग नहीं थे, जिन्हें भीख माँगनेकी बान थी। कितने ही उनमें पढ़े-लिखे भी थे, कितनी ही औरतें ऐसी थीं, जिन्होंने घरके चौखटसे बाहर पैर नहीं रखा था।

सन्तोखी—और वह भी घरसे निकल कर सहरकी सड़कों पर चली आईं!

भैया—सारा बड़प्पन, सारा पर्दा-पानी तीनही दिन तक चलता है, चौथे दिन जब भूख से अँतड़ियाँ तिलमिलाने लगती हैं, तो सब लाज सरम इज्जत-पानी हट जाता है। फिर एक दो आदमीके ऊपर आफत आई हो, तो हो सकता है, लाज-सरमके मारे आदमी घरमें बैठा ही बैठा जान दे दे। लेकिन बंगालमें यह एक घरकी बात नहीं, एक गाँवकी बात नहीं, जिलेकी बात नहीं थी, बल्कि एक सूबेके दो-दो तीन-तीन करोड़ आदमियों पर यह आफत आई थी। अन्न परानसे भी महँगा था। पहले लोगोंने जेवर बेंचकर रुपये-दो-रुपये सेरका चावल खरीदा, लेकिन जेवर कितने लोगों के पास था? लोगोंने खेत बेंचा। खेत अन्न देते, लेकिन तीन महीने बाद—तब तक घर के लोग जिएँ कैसे? इसलिए लोगोंने अपने खेतोंको माटीके मोल बेंचा। बैल, गाय बेचा, घर भी बेंच दिया तब भी अन्न दुर्लभ था, खरीदनेके लिए पासमें कुछ नही था। करोड़-करोड़ आदमी कुएँ, तालाबमें डूबनेके लिए तैयार नहीं हो सकते थे। जानते हो न जीनेका मोह?

सन्तोखी—हाँ भैया ! जीनेके लिए आदमी क्या नहीं करता ?

भैया—वे लोग जीना चाहते थे, सुना कि कलकत्ता बड़ा सहर है। वहाँ देस-देसाउरसे अन्न आता है, वहाँ जानेसे क्या जाने, जीनेका कोई रास्ता निकल आए। इसलिए घरके घर खाली हो गए, लोग भूखे-प्यासे कलकत्ताकी ओर चल पड़े। सारे बंगालके लोग कलकत्ता कैसे पहुँच सकते थे ? भूखोंके सरीरमें इतनी ताकत कहाँ थी, कि साठ-सत्तर मीलसे ज्यादा चल सकें। कितने ही रास्तेमें मर गए, कितने ही कलकत्ताकी सड़कोंपर भी पहुँच गए। जानते हो न कलकत्ताकी बरखा ?

दुखराम—हाँ भैया ! वहाँतो जान पड़ता है, बारहों महीने बरखा रहती है।

भैया—लेकिन यह सन् १९४३ के बरखाके ही महीने थे, जबकि भूखे नर-नारी कलकत्ताकी गलियोंमें पहुँचे। कितनोंके पास तन ढाँकनेके लिए कपड़ा नहीं था, वह सरीरमें फटे बोरे लपेटे थे। मूसलाधार बरखा बरसती रहती थी और सड़कपर, पगडंडियों पर ये भीगते रहते थे।

सन्तोखी—क्या वहाँ धरमसाला-मुसाफिरखाना नहीं है ?

भैया—धरमसाला-मुसाफिरखाना दो-चार हजारके लिए हो सकता है, लाख-लाख आदमियोंके लिए धरमसाला कहाँ तैयार है ? कलकत्तामें भी सबको कहाँ खानेको मिलता ? लड़के और सयाने भी कूड़ों परसे बीनकर दाना खाते थे, सड़कपर फेंके सूखे टुकड़ोंको भी कुत्तों के मुँहसे छीन लेते थे। जीवनका लोभ ऐसाही है। आदमी कैसे भी हो जीना चाहते हैं। मैं समझता हूँ नरकमेंभी आदमी इसी तरह जीनेकी इच्छा रक्खेगा।

दुखराम—भैया ! इससे बढ़कर और नरक क्या होगा ?

भैया—हाँ मुर्दे सड़कोंपर पड़े रहते थे, कोई उठानेवाला नहीं मिलता था। यह कलकत्ताकी बात थी, देहातमें तो और भी बुरी हालत थी, क्योंकि वहाँ कोई पूछ-ताछ करनेवाला न था, न डाक्टरी महकमा, न डाक्टर, न मुर्दोंकी तस्वीर खींचकर अखबारोंमें छापनेवाले। लाखों आदमी दिल मसोसकर चुपचाप अपने गाँवोंमें मर गए। और जानते हो, कलकत्ताकी सड़कों पर

कुत्ते-बिल्लीकी मौत मरनेवाले ये लोग कौन थे ?

दुखराम—नहीं भैया ! बताओ, बंगाली रहे होंगे।

भैया—हाँ, बंगाली। इनमें थे बाम्हन, इनमें थे कायथ, इनमें थे ग्वाले, इनमें थे सेख, इनमें थे सैय्यद, सब जाति, सब धरमके लोग थे। भूखने सबको एक जैसा पंथका भिखारी बना दिया। इतना ही नहीं, भूखने उनसे इज्जत बेंचवा दी।

संतोखी—क्या कहा भैया इजत बेंचवा दी !

भैया—हाँ जान पड़ता है, इजत भी आदमी तभी रखता है, जब पेटमें दो दाना पड़ता है। जवान लड़कियाँ जवान बहुएँ और अधेड़ औरतें एक वक्त के भोजनके लिए अपनी इजत बेंच रही थीं। कलकत्ताकी सड़कों पर इजत बेंची जा रही थी। चटगाँव, नवाखाली, बरीसालकी गलियोंमें इज्जत बिक रही थी, बाजारों नहीं हर जगह इजत बिक रही थी। अन्न इजतसे बहुत महगा था। माँ अपनी बेटीकी इजतका सौदा करती थी। पति अपनी स्त्रीकी इजत बेंच कर कुछ लानेका इशारा करता था। कलकत्तामें कितनी नारियाँ खानगी (बेसवा) बननेके लिए मजबूर थीं, जानते हो ?"

संतोखी—बहुत होंगी।

भैया—बहुत कहनेसे वह दिल दहलानेवाला नजारा हमारे सामने नहीं आता। किसीने हिसाब लगाकर बतलाया था, कि एक समय तीस हजार औरतें अपनी इजतसे चावल बदल रही थीं।

दुखराम—इससे तो एकही बार आँख मूंद लेना अच्छा होता।

भैया—लेकिन यह एक आदमीके आँख मूँदनेकी बात नहीं थी, करोड़ करोड़ आदमी कैसे बिना हाथ-पैर हिलाए मरनेके लिए तैयार हो जाते। इसी लिए भूखने उनसे इजत बेंचवायी, जो कभी इजतके लिए मरते थे। साठ लाख आदमी मर गए, क्या उससे कम है यह लाखों औरतोंका इजत बेंचना ?

संतोखी—यह उससे भी बुरा है।

भैया—और जब फसल हुई, लोगोंको थोड़ा थोड़ा अन्न मिला, तो बरसात

बीत भी न पायी कि मलेरियाने आ घेरा। घरके घर बीमार पड़ गए, कोई पानी देनेवाला नहीं रह गया। किसी-किसी गाँवमें दो तिहाई आदमी मलेरिया और महामारीमें मर गए। घरके घर सूने हो गए। मुर्दे सात-सात दिन तक घरके भीतर सड़ा किए।

सन्तोखी—जीता ही देस मसान हो गया!

भैया—तो देखा न सन्तोखी भाई! इससे बढ़कर नरक कहाँ होगा, जहाँ इस तरह घुल घुल कर आदमीको मरना हो और बेइज्जत बे-पानी। वह तो बंगालकी बात है, अभी इसी साल-१९४४-में जान रहे हो, बिहारमें क्या हो रहा है?

दुखराम—बिहारमें भी कुछ हुआ है भैया?

भैया—कुछ नहीं, बहुत। चम्पारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगाके सिरिफ तीन जिलोंमें और वह भी सिरिफ तीन-चार महीनेमें एक लाखसे ऊपर आदमी हैजा और मलेरियासे मर गए और अभी (अगस्तमें) भी मर रहे हैं।

सन्तोखी—मरना-जीना भगवानके हाथमें है।

दुखराम—जो मरना-जीना भगवानके हाथमें होता, तो दवा-दारू करने की जरूरत न होती। फिर सन्तोखी भाई! तुम्हें खानेकी जरूरत नहीं, जो भगवानको जिलाना होगा, तो तुम्हें हवा पिलाकर भी जिला देंगे!

भैया—कोई आदमी बहुत बूढ़ा सरीरसे मजबूर होकर मरता है, तो उसके लिए कहा जा सकता है, कि बुढ़ापेको कोई नहीं रोक सकता, बूढ़ेको मौतसे कोई नहीं बचा सकता। लेकिन बूढ़ेको भी बीमार पड़ने पर हम भागके ऊपर छोड़ नहीं देते। उसकी दवा करते हैं, पथ्य देते हैं। बिहारके तीन जिलोंमें एक लाखसे अधिक आदमी मर गए, वह बूढ़े नहीं थे। बीमारीने इसलिए उन्हें धर दबाया, कि साल-साल तक आधा पेट और भूखे रहते-रहते उनके सरीरमें सकती नहीं रह गई थी। मलेरियाके कीड़ोंने जब उनके ऊपर धावा बोल दिया, तो उन्हें रोकनेके लिए भीतर ताकत नहीं रह गई। हैजाके कीड़े जब पानीके रास्ते साँससे होकर भीतर पहुँचे, तो उन्हें निकालनेके लिए उनके पास कोई ताकत नहीं बच रही थी। तन्दुरुस्त आदमीको

बीमारी कम लगती है।

सन्तोखी—बीमारी न होनेसे आदमी तन्दुरुस्त होता है।

भैया—नहीं सन्तोखी भाई! यह बात नहीं है, पुस्टईवाले खान-पानसे आदमी तन्दुरुस्त होता है और तन्दुरुस्त होने पर बीमारी उसके पास नहीं आती।

दुखराम—तो अन्नही मूल हुआ?

भैया—अन्नही मूल है, अन्न ही परान है, अन्नके मिलनेसे जीवन रहता है, अन्नके मिलनेसे इज्जत बचती है।

दुखराम—तो जो अन्न मिले, तो दुनियाका आधा नरक खतम हो जाएगा।

भैया—हाँ दुक्खू भाई! इस बातको गाँठमें बाँध रक्खो। हम आगे बतलाएँगे, कि क्यों अन्न रहते भी अन्न नहीं मिलता, पथ्य रहते भी पथ्य नहीं मिलता, दवा रहते भी दवा मयस्सर नहीं होती।

सन्तोखी—"सन्तोखी परम् सुखम्," हमने तो यही सुना था।

भैया—तुम्हारे ऊपर भी वह आ सकती है, आती तो देसमें कौन बँच सकता, कल बंगालकी बारी थी, आज मिथिला तिरहुतकी और बिहान हमारी तुम्हारी भी बारी आ सकती है। "सन्तोखं परम् सुखम्" को उसने लिखा होगा, जिसे कभी भूखसे पाला न पड़ा होगा। उसका पेट भरा न होगा, वह निश्चिंत सोया रहा होगा। लेकिन इतनेहीसे दुनियाका नरक होना पूरा नहीं हो जाता।

दुखराम—हाँ, खाना कपड़ा तो मूल है, लेकिन औरभी पचासों चिन्ताएँ हैं, पचासों बिपदाएँ हैं।

भैया—ठीक है दुक्खू भाई! चिन्ताकी कुछ मत पूँछो। माँ-बाप हैं, घर में चार बीघा खेत है, किसी तरह गुजारा चल जाता है। फिर हो जाते हैं चार लड़के और चार लड़कियाँ। अब चार बीघे खेतसे दस मुहोंका काम कैसे चल सकता है। फिर जैसे-जैसे उमर बीतती जाती है, वैसे-वैसे मुँह भी बढ़ते जाते हैं, आहार भी बढ़ता जाता है। लड़कोंका ब्याह करना, गरीब होने पर लड़की

खरीदने हीमें खेत बिक जाएगा, इज्जतदार होनेपर एकही लड़कीके ब्याहमें सारा खेत चला जायगा, फिर परिवारको भी भूखा रहना पड़ेगा। दो हाथ की चादर सिर ढाँको तो पैर नंगा, पैर ढाँको तो सिर नंगा।

दुखराम—चार बीघा क्या चालिस बीघा वालोंको भी चिन्ता खाये जाती है।

भैया—क्यो न खायेगी? चार लड़के हुए, तो दूसरी पीढ़ीमें दस-दस बीघा रह जायगा, मानों उनको जो एक पीढ़ी या पन्द्रह सालके लिए कुछ कम चिन्ता हुई, लेकिन तीसरी पीढ़ीमें तो फिर दो-दो बीघा खेत और आठ-आठ लड़के लड़की। जिसके घरमें आज दाल भी है, तो नमक नहीं है।"

दुखराम—और फिर भैया! गाँवमें आधेसे अधिक तो ऐसे घर हैं, जिनके पास खेती-पथारी भी नहीं है। दिन भर मजूरी करते हैं, सामको जो सूखा-रूखा मिल गया, तो लड़कों-बालोंके मुँहमें अन्न पड़ा। रोज कमाना, रोज खाना। एक दिन गाड़ी बैठ गई, तो हाहाकार। तीस दिन मजूरी भी तो नहीं मिलती और सालमें छ महीना भी करनेके लिए काम नहीं रहता। सिरिफ बोने काटनेके वक्त काम रहता है।

भैया—मजूर-पेसा आदमियोंकी तो और आफत है। जेठ, असाढ़, सावनका दिन काटना मुस्किल हो जाता है। जो महुआ उस साल रहा, तो कुछ अवलम्ब लगा।

दुखराम—और महुआ भी तो अब नोहर (दुर्लभ) हो गया है। कहाँ पैसेका दो सेर और कहाँ वह भी अब दो आना सेर लग गया। आमकी गुठली जमा करके कुछ दिन रोटी पकाते खाते थे, और अब उसके खानेवाले इतने अधिक हैं, कि सबको गुठली कहाँसे मिलेगी?

भैया—दुक्खू भाई! इसे भी क्या कोई जीना कहोगे? यह नरककी जिन्दगी नहीं तो और क्या है? फिर देखते नहीं, मजूर-घरोंकी क्या दसा है? फूसकी छत भी उन्हें ठीकसे मवस्सर नहीं। एक बार छा पाये, तो चाहे सड़ गल जाय, और बरसातका आधा पानी भीतर ही जाता हो, लेकिन फिर उसको नया करना मुस्किल है। कितनी छोटी छत, कितना छोटा दुवार,

भीतर सीड़ बाहर नाबदान और कूड़े-करकटकी बदबू ! यह क्या आदमियोंके रहने लायक घर है ? इन्हीं सड़ी झोंपड़ियोंमें बच्चे पैदा होते हैं। जब वह आँख खोलते हैं, तो उनके आस-पास क्या दिखलाई पड़ता है ? गरीबीका नंगा नाच, तिलमिलाती अँतड़ियाँ, सूखा मुँह, नंगा बदन !

दुखराम—आजकल लड़ाई के जमानेमें दस दस रुपयेकी साड़ी कौन खरीदेगा ? फटा-चीथड़ा भी तो नसीब नहीं होता। जान पड़ता है, टाट भी पहिननेको नहीं मिलेगा।

भैया—हाँ, और बच्चा नङ्गा-भूखा-सरीर और वही गरीबी चारों ओर देखता है। सूखे थनोंसे दूध निकालना चाहता है। इसपर भी जो हमारे देसके आधे बच्चे बचपन हीमें न मर जायँ, तो बड़े अचरजकी बात है।

दुखराम—हाँ ! भैया, सतमीके बच्चोंको नहीं देखा ? दो तीन बरसोंके भीतर उसका लड़कोंसे भरा घर खाली हो गया।

सन्तोखी—मैं समझता हूँ, बच्चोंके लिए अच्छाही हुआ ! पेट भर खाना किसे कहते हैं, क्या इसे उन्होंने कभी जाना ? जाड़ेमें बेचारे जो किसीके कोल्हुआड़ेमें आग तापने जाते, 'ऊख चुराकर ले जायगा' कह कर दुतकार दिये जाते। मानों वह आदमी नहीं कुत्ते थे। कोदोका पुवाल या ऊखकी पत्तियोंमें घुस कर रात बिता देते। भूख लगती, तो किसीके द्वार पर खड़े होते। दया आई, तो किसीने एक कौर दे दिया, नहीं तो फिर फटकार। जड़ैया (मलेरिया) में सब गिर जाते, तिल्ली बढ़ती, पेट फूल कर कुंडा जैसा हो जाता, मुँह पीला और आँखें फूल जातीं। फिर एक-एक करके पके पत्तेकी तरह झड़ने लगते ! क्या यह आदमीका जीवन है ?

भैया—अब समझा न, यही नरकका जीवन है ! तुम समझते होगे कि सहरके साफ़ कुर्त्ता-धोती पहिननेवाले बाबू लोग अच्छी जिन्दगी बिताते होंगे ?

दुखराम—हाँ, भैया ! हम तो ऐसाही समझते हैं—वह तो पान भी खाते हैं, सिनेमा भी देखते हैं, हम लोगोंको देख कर गन्दा-गँवार कह कर हट जाते हैं।

भैया—उन सफेद कपड़ोंके भीतर ही भीतर कितना धुआँ उठ रहा है, यह तुम्हें नहीं मालूम है दुक्खू भाई ! पहिले कभी जमाना था कि विद्या का मोल जियादा था । इन्ट्रैन्सभी नहीं पास होते थे, कि लोग वकील, मुंसिफ, सदर-आला हो जाते, लेकिन अब एम्० ए०, बी० ए० पास कर चालीस-चालीस रुपल्लीकी नौकरीके लिए इधर-उधर मारे-मारे फिरते हैं । डेढ़ सेरका आटा, सवासेरका चावल, चार रुपया सेर घी, अढ़ाई रुपया मन ईंधन, बताओ चालीस रुपयेमें तो अकेले आदमीका भी पेट नहीं भर सकता । फिर मकानका किराया तिगुना । पैर पसारने पर इस दीवारसे उस दीवार पहुँच जायँगे, ऐसी-ऐसी कोठरियोंका किराया ! पाँच रुपया महीना । कपड़ेका दामभी चौगुना । फिर बाबू अकेले नहीं होते । माता-पिता अपने पैर पर खड़ा करनेसे पहिले लड़केका ब्याह कर देते हैं और पचीस बरसके होते-होते बाबूके चार-पाँच बच्चे भी हो जाते हैं ।अब बताओ चालीस रुपयेमें वह क्या अपने खायँगे, क्या बीबी और बच्चोंको खिलायेंगे ? कहाँसे घर भरके लिए कपड़ा ले आयेंगे ? मकानका किराया कैसे दें ? लड़कोंकी फीस कहाँसे आयेगी ? यदि लड़के लड़कियोंको पढ़ाया नहीं, तो उन्हें भीख भी नहीं मिलेगी । फिर लड़कियोंके ब्याहके लिए दहेजका रुपया कहाँसे आये ? उनके घरके घर तपेदिकमें उजड़ जाते हैं । ठीकसे खाना नहीं, चिन्ताके मारे दिन-रात कलेजा सुलगता रहता है, दवाका भी ठिकाना नहीं । इतने कमजोर सरीरमें तपेदिक क्यों न घुसे ? ठीक कहता हूँ दुक्खू भाई ! बाबू लोगोंके घरके घर साफ़ हो गए ।

दुखराम—मैं तो समझता था भैया ! कि बाबू लोग बहुत अच्छी तरहसे होंगे, ख़ूब लोगोंसे रुपया ऐंठते हैं ।

भैया—सौ में पाँच तो सभी जगह अच्छे मिल जायँगे । जानते नहीं हो, वकालत पास करके कचहरीमें आधे लोग सिर्फ मक्खी मारने जाते हैं । इधर-उधरसे माँग-जाँचके पैसे दो पैसेका पान खाकर मुँह पर रोब और रोसनी लाना चाहते हैं ? लेकिन दुक्खू भाई ! रोसनी मुँहमें खैर-चूना लपेटनेसे नहीं आती । जब आदमीको पेट भर खानेको मिलता है, निचिंत रहता है, रोसनी अपने आप झलकने लगती है ।तुम समझते होगे कचहरीके मुहर्रिर, थाना

के मुंसीजी—जिनसे तुम्हें भी कभी पाला पड़ा होगा।

दुखराम—हाँ, भैया! वह तो अपने बापसे भी पैसा लिये बिना नहीं छोड़ते, हड्डी पेर कर पैसा निकालते हैं।

भैया—तो उनका ऐसा करना क्या हद दरजे का कमीनापन नहीं है? गरीब आदमी किस्मतका मारा न्याय पानेके लिए थाना-कचहरी जाता है, और उसे जेवर बेंच कर, खेत रेहन रख कर रुपया लानेके लिए कहा जाता है।

दुखराम—देह बेंच कर देना पड़ता है भैया! क्या करें, नहीं तो जेल भेज दें, मुकदमा खराब कर दें।

भैया—यह तो पापकी कमाई है न दुक्खू भाई! लेकिन आदमी क्यों ऐसा करता है? इसीलिए न कि तनखासे उसका पेट नहीं भरता। उसे अपने बाल-बच्चोंको पढ़ाना है, और सबसे बड़ी आफत है; आजकल लड़कियोंका ब्याह करना। बाबू लोगोंके लड़के बिना पढ़ी-लिखी लड़कीसे ब्याह नहीं करते इसलिए लड़कीको भी पढ़ाना पड़ता है।

सन्तोखी—बनारसमें हमारी अग्रवाल बिरादरीके हैं एक भाई, जिनकी लड़की ने एम० ए०, बी० ए० पास किया है।

भैया—हाँ, कोई-कोई लड़कियाँ एम० ए०, बी० ए० भी पास कर लेती हैं। माँ-बाप तो चाहते हैं, कि बारह-तेरह ही वर्ष में ब्याह हो जाय, लेकिन जानते हो न लड़कोंका मोल-भाव? तिलक-दहेज नहीं जुटता, आजकल करते दिन बीत जाता है। लड़की पढ़नेमें लगी है, वह कहते हैं, चलो तब तक पढ़ती रहे। फिर जानते हो न विद्याका चसका। जब आँख पर पट्टी बँधी रहती है, तो मरद हो चाहे मेहरी; उसको दुनिया-जहानका कोई पता नहीं रहता, लेकिन विद्या आँख खोल देती है। कुछ पढ़ लिख लेने पर लड़कीको विद्याके घरमें सजाकर रक्खे जगमग जगमग करते रतन दिखाई देने लगते हैं। उसे खुद और पढ़नेका लोभ हो जाता है और जब बेचारी एम० ए०, बी० ए० पास कर लेती है, तो ब्याह होना और मुसकिल हो जाता है।

सन्तोखी—क्यों भैया? तब बाबू लोगों को बहुत पढ़ी-लिखीसे ब्याह करनेके लिए तो और उतावला होना चाहिए।

भैया—घबराते हैं, घबराते मेहरी जो एम० ए०, बी० ए० तक पढ़ी होगी, उसके दिमागमें गोबर नहीं न भरा रहेगा? वह खुद अदबसे बात करेगी। लेकिन बाबूको भी अदब सीखना होगा। वहाँ "ढोल गँवार सूद्र पसु नारी" से काम नहीं चलेगा, झूठा रोब भी नहीं गाँठा जा सकेगा।

दुखराम—एम० ए०, बी० ए० की क्या बात कर रहे हो भैया! हमारी बुधुआकी माईको नहीं देखते, बलिस्टर बन जाती है बलिस्टर। मुँहसे बात नहीं निकलने देती। उसके सामने हम क्या ढोल गँवारकी बात कर सकते हैं?

भैया—इसीसे समझ जाओ, जियादा पढ़ी लिखी औरतको ब्याहनेसे बाबू-भैया लोग क्यों घबराते हैं। अभीसे पचास-पचास बरस तक कुँवारी बैठी रहनेवाली मेहरियाँ देखी जाने लगी हैं, आगे न जाने क्या होगा!

दुखराम—तो माँ-बापके लिए भी बड़ी चिन्ता है।

भैया—कुफुत है कुफुत, तीस ही पैंतिस बरसमें बाबू लोग बूढ़े हो जाते हैं, इसी सब चिन्ताके कारन। लड़कियाँ तो ब्याहे बिना जवानी बिताने लगती हैं और लड़कोंको जल्दी ब्याह कर देनेके लिए लड़कीवाले घेरने लगते हैं। बापको ऐसे ही गिरस्ती चलाना मुस्किल है, ऊपरसे लड़केकी बहू बनकर एक और घरमें पहुँच जाती है।

दुखराम—और वह अकेलीभी तो नहीं रहती।

भैया—बस बरसही भर बादसे घर में नए-नए मुँह आने लग जाते हैं। पहिले जितने मुँह थे, उन्हींके खानेका ठिकाना न था, अब पोता-नाती और बढ़ने शुरू होते हैं। फिकरकी बात क्या पूछते हो? हर बखत मन परेसान रहता है, फिर घरमें बिना बातहीका झगड़ा क्यों न होता रहे? मेहरी मर्दसे लड़ती है बाप बेटासे लड़ता है और सब आपसमें लड़ते हैं। मार-पीट, गाली-गलौज क्या कोई बात उठा रखते हैं? सारा मुहल्ला सुनता है, ज्यादा सिर-विर फूटा या किसीने अफीम-संखिया खा ली, तो जेलकी भी हवा खानी पड़ती है। यह घर नरक नहीं तो क्या है?

सन्तोखी—हाँ भैया! मेरे भी सहरमें कुछ रिस्तेदार हैं। हमको तो गाँवका

गँवार समझ कर नाक-भौं सिकोड़ते हैं, लेकिन मैं जानता हूँ, कि चूनाकली किए उनके सफेद घरों, धोबीके घरसे, आयेबगुलेके पर जैसे धुले कपड़ोंके भीतर आग धाँय-धाँय जल रही है, चिन्ताके मारे परेसान हैं। व्यापार मन्दा, दिवालेका डर, सिर पर महाजन, घरमें लड़की सयानी। क्या करें बेचारे, यही सोचते हैं कि किसको लूटें, किसको मारें।

भैया—देखा न दुक्खू भाई! जो सफेद दिखाई देता है, उसके भीतर भी ढोलकी पोल है। चालिस-पचास पानेवाले बाबुओंकी बात नहीं, जो चार-सौ पाँच सौ पानेवाले बड़े-बड़े हाकिम हैं, उनके घरमें भी नरककी आग धाँय-धाँय जल रही है।

दुखराम—चार-पाँच-सौ रुपया महीना जो पाएगा, उसको क्या दुख होगा भैया?

भैया—चार-पाँचसौ पानेवालेके घरमें मेहरी बच्चे मिलाकर चार-पाँच आदमी तो होंगे। कितना ही बच्चा पैदा करनेसे हाथ रोकें, लेकिन घरमें इतनेसे कम परानी कहाँ होंगे?

दुखराम—हाथ रोकनेकी बात क्या है भैया! बाल-बच्चा देना भगवानके हाथमें है।

भैया—भगवान अपने कितनेही कामोंसे इस्तीफा दे चुके हैं, हमारे सामने नहीं, उन लोगों के सामने, जो भगवानकी नस-नाड़ी पहचानते हैं। एक बुन्द पुरुखका और एक बुन्द तिरियाका मिलकर बच्चा पैदा होता है। आजकल बहुतसे तरीके निकल आये हैं, जिनके इस्तेमालसे दोनों बुन्द मिलने ही नहीं पाते। लेकिन अभी हमारे देसमें पुरुखोंमें न हो, लेकिन तिरियोंमें पूतकी लालसा बेसी होती ही है। इसलिए चार-सौ पाँच-सौ पानेवाले हाकिमके घरमें भी चार-पाँच परानी तो होते ही हैं। बेचारोंको आदमीका धरम छोड़ना पड़ता है।

सन्तोखी—धरम क्यों छोड़ना पड़ता है भैया?

भैया—माँ-बापने पढ़ाया लिखाया कि लड़का कमाएगा, तो बुढ़ापेमें उनकी भी खबर लेगा। एक उदरसे पैदा हुए भाई-बहिनोंने समझा था, कि

यह हमारे अपने हाड़-माँस हैं; लेकिन हाकिम बनते ही लड़केकी आँख बदल जाती है। उसे साहबसे हाथ मिलाना है। उसे कलट्टर साहब के सामने पूँछ हिलाना है। अच्छा कोट चाहिए, अच्छा बूट चाहिए, नहीं तो दरसन मिलना मुसकिल हो जायगा। यहींसे लिबास और लिफाफा बढ़ना सुरू होता है। पाँच सौमें चार सौ तो बँगला-भाड़ा, टोप-कोट, घोड़ा-गाड़ी या मोटर ही पर खर्च हो जाते हैं—आज कल लड़ाईके दिनोंकी तो बातही मत पूछो। फिर बताओ सौ रुपयेमें अपने खाएँ, बीबी बच्चोंको खिलाएँ या नौकर चाकरको।

सन्तोखी—तो वहाँ भी सचमुच लिफाफा ही है!

भैया—लिफाफा मत कहो, सन्तोखी! वहाँ भी नरककी आग धाँय-धाँय कर रही है। बेचारे माँ-बापकी भी आसा तोड़ते हैं, भाई-बहिनकी ओरसे भी तोताचसम बनते हैं; सिरिफ अपना और अपने अंडे-बच्चेका ख्याल करते हैं। तुम्हीं बताओ, बचे सौ रुपयेमें वह और क्या कर सकते हैं? वह मजबूर हैं, पढ़े-लिखे आदमीसे जानवर बननेके लिए। लोग कहते हैं कि यह परले दरजेकी खुदगरजी और कमीनापन है। लेकिन बेचारे करें तो क्या करें? जो लिफाफामें कम करें तो बड़े अफसर खास करके अँगरेज घिनकी नजरसे देखेंगे, फिर आगेकी तरक्की-बरक्कीकी आसा गई। नहीं तो घूस रिसवत लें।

सन्तोखी—इतनी इतनी तनख्वाह पानेवाले हाकिमोंको तो रिसवत नहीं लेनी चाहिए।

भैया—मैंने लेखा-जोखा बतलाया न? उसीसे लेना पड़ता है? पाँच सौ वाले भी लेते हैं, पाँच हजारवाले भी लेते हैं और पचीस हजारवाले भी, इस दुनियाँमें घूँस-रिसवत का बाजार ही सबसे तेज है। सब इसे जानते हैं, सब एक दूसरेकी आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं, कहीं-कहीं इस घूँस-रिसवतका नाम है बड़ा-बड़ा भोज और मेम साहबकी अंगुलीमें हजारोंकी अंगूठी, लाखों की मोती रतन-माला।

सन्तोखी—भैया! मैं क्या सुन रहा हूँ?

भैया—चुपचाप सुनते जाओ, बड़े घरोंकी बड़ी पोल, बड़ी फिकर, बड़ी

दोजखकी आग। सब जानते हैं, घूँस-रिसवत बुरी चीज है। कभी-कभी पकड़े जाने पर सबसे बड़ी मछलियोंको तो कुछ नहीं होता, लेकिन छोटी-मझोली मछलियों पर हाथ उठाना पड़ता है, आखिर न्यायका ढोंग तो कुछ दिखलाना ही पड़ेगा। लेकिन दुक्खू भाई! तुम खुद समझ सकते हो, जो सौकी आमदनीपर डेढ़ सौ खर्च करनेकेलिए मजबूर है और उसे घूँस रिसवत, जैसे भी हो तैसे, पूरा करना चाहता है, उसका चित्त सान्त होगा या असान्त, वह भयभीत होगा या निरभय?

दुखराम—वह भीतर ही भीतर काँपता रहेगा भैया!

भैया—फिर उसकी जिनगी सुखकी जिनगी नहीं हो सकती, चाहे उसके मुँह पर मुसकुराहट दीख पड़ती हो, चाहे उनके चारों ओर सुन्दरताई फैल रही हो। इन बड़े लोगोंके लड़के-लड़कियाँ बड़े ठाटमें पलते हैं। लड़कियों को इन्द्रपुरीकी परी बनानेका उदजोग बचपन हीसे सुरू हो जाता है। जवानी में पैर रखते रखते वह अप्सरा बनभी जाती हैं, लेकिन कितना मँहगा सौदा!

सन्तोखी—सहरमें जाता हूँ तो मैं भी कभी कभी इसे देखता हूँ! मेरी ही जातिके लोग हैं. जातिके चौधरी हैं, उनकी ओर उँगली कौन दिखला सकता है। लेकिन जान पड़ता है सील-संकोच, धरम-करमसे उन्हें वास्ता नहीं।

भैया—लेकिन सन्तोखी भाई! तुम समझ रहे हो कि यह अपने मनसे ऐसा करते हैं। नहीं, ऐसा नहीं, बड़े दामाद चाहिए, दामाद अप्सरायें पसन्द करते हैं, नाच गाना, हाव-भाव चाहते हैं। जो यह सब बातें लड़क
तो उसे कौन पूछेगा? इतना होनेपर भी तो कितनी ही लड़कियोंको कुँआर ही जिनगी बिता देनेके लिए मजबूर होना पड़ता है।

सन्तोखी—नहीं भैया! मैं यहाँ तुम्हारी बातको नहीं मानता। जो साहब-बहादुर बन जाते हैं, उनमें बराबर एक दूसरेकी औरत भगा ले जानेका रोग होता है।

भैया—रोगसे तुम्हारा मतलब है महामारी? लेकिन ऐसी कोई महामारी नहीं है। यह लोग हैं तो हमारे देसके, लेकिन इनका दिमाग सातवें आसमान

पर रहता है। कलट्टर हो गए, पन्द्रह सौ रुपयेमें अपनी देह और आत्माको विदेसियोंके हाथमें बेंच दिया, इसके लिए उन्हें सरम होनी चाहिए थी; लेकिन यह हमारे भाई—काले साहब गोरोंका भी कान काटते हैं और हम लोगोंको जंगली, उजड्ड गँवार समझते हैं। हमभी आदमी हैं, हमभी समझते हैं, आखिर "हित अनहित पसु पंछिहु जाना"। हम उनसे घिना करते हैं।

सन्तोखी—यह बात ठीक कही भैया।

भैया—और जब आदमीके दिलमें घिना हो जाती है, तो उदा छिद्दर ढूँढ़ने लगता है, और जरा भी छिद्दर मिल गया, तो बातका बतंगड़ बना डालता है। मैं मानता हूँ कि इनमें कभी-कभी एक दूसरेकी औरतको भगाने की बात भी देखी जाती है। लेकिन वह भी क्यों? उन्हें अप्सरा बनाओ, उन्हें बिलायतवालोंके लिखे गन्दे-गन्दे उपन्यास पढ़वाओ या सिनेमाकी रासलीला दिखलाओ। पुरुखोंको तो कचहरीके दफ्तरमें कुछ कामभी रहता है, इनकी तिरियोंको तो कोई काम भी नहीं रहता। काम करने लगें, तो मक्खनकेसे हाथ कहाँ रहें? बेकार रहनेका मतलब है, दिलमें हमेसा खुराफात पैदा करना। इसके बाद दूसरे भी लोभ होते हैं। किसीके पास दो हजारकी मोटर है, तो किसीके पास दस हजारकी। किसीके पास इतना पैसा नहीं, कि नैनीताल-मंसूरी जाय और कोई वहाँ जाकर ५०) रोज खर्च कर सकता है। किसीके लिए २०) की साड़ी खरीदना मुस्किल है और कोई दो सौकी साड़ी ले सकता है, जो सिनेमा सुन्दरियों के सरीर पर देखी जाती हैं। यह निठल्लापन, लोभ और उपन्यासों की कामुकताका कारन हैं, जिनसे तिरियोंके भागनेकी नौबत आती है। इनके घरोंकी लड़कियोंकी तो और दुरदसा है। वह सिरिफ माता-पिताके भरोसेपर पति नहीं पा सकती, इसीलिए उन्हें अप्सराकी तरह सजना पड़ता है।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया! हमने अब तक सुना था, कि महावर पैर में लगाया जाता है, लेकिन अब सुनते हैं, कि इनके घरकी लड़कियाँ ओठमें भी महावर लगाती हैं।

भैया—इनका सारा जीवन नाटक है सन्तोखी भाई! और सुखका नाटक सायद सौमें दो-चारका, बाकी सबका ही दुखका नाटक है। लड़कीको पढ़ाया-

लिखाया, बी० ए०, एम० ए० कराया। बंसी फेंकी जा रही है, कि कोई कलट्टर मजिष्टर या लाख-दो-लाख वाला आदमी फँसे, लेकिन यह सबके भागकी बात तो नहीं है। उनके लड़कोंकी तो और बुरी हालत होती है।

दुखराम—लड़कोंका मिजाज तो बापसे भी बढ़-चढ़ कर होता है।

भैया—यही मिजाज तो उनके लिए और घातक होता है। यह पान-फूल की तरह पाले-पोसे जाते हैं, मेम लोगोंके इस्कूल में पढ़नेके लिए भेजे जाते हैं, वह नहीं हुआ तो देवफोफी-समाज वालोंके इस्कूलमें जाते हैं।

दुखराम—देवफोफी समाज क्या भैया?

सन्तोखी—अरे सखीसमाजकी तरह कोई होगा?

दुखराम—यह सखी माज क्या है सन्तोखी भाई?

सन्तोखी—अरे तुम तो गाँवसे बाहर कहीं जाते भी नहीं।

दुखराम—वही एक बार कलकत्ता गया था, बरस दिन चटकलमें काम किया, बीमार होकर घर पर आया, बचनेकी उम्मेद नहीं थी। अब यहीं पुरखों के गाँवमें मट्टी पीट-पाट कर चाहे आध पेट खायें चाहें भूखे रहें।

सन्तोखी—अजोध्यामें एक बार हम गए थे, हमारे बनारसके रिस्तेदार थे, महात्माका दरसन कराने ले गये। लेकिन महात्माको देखकर देहमें आग लग गयी। मेहरीकी तरह सोलहों सिंगार करके बैठे थे—आँखमें मोटा मोटा काजल, सिरमें टीक, मटक-मटक कर चलना, मीठा-मीठा बोलना। मैंने उनसे पूछा "वह महात्मा कहाँ है?" उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर कानमें कहा—"चुप, यही तो महात्मा हैं।" पीछे बतलाया कि यह महात्मा रामजीसे मिल चुके हैं। रामजी रोज इनके पास आते हैं।

दुखराम—धत्तेरे की! रामजी राजा रहे, उनको हजार-हजार सुन्दर जोरू मिल जातीं, लेकिन सीताजीको छोड़ कर किसीकी ओर नजर उठाकर नहीं देखा, वह भला इन जनखे मर्दोंके पास आयेंगे! मैं होता, सन्तोखी भाई! तो कुछ जरूर बोल उठता।

सन्तोखी—कुफुत तो मुझेभी हो गई थी, क्या करता। रिस्तेदारका खयाल करके चुप रह गया। यह लोग अपनेको सखी कहते हैं।

दुखराम—तो यही है सखी समाज, और देवफोफी समाज भी इसी तरह-का क्या कोई है भैया ?

भैया—कुछ फरक है, सखी समाज हमारे काले भाई लोगोंकी करतूत है और देवफोफी समाज गोरे लोगोंकी।

सन्तोखी—किरिस्तानका धरम तो नहीं है ?

भैया—नहीं सन्तोखी भाई ! यह सतनजा है सतनजा। कुछ हिन्दू धरम-से लिया, कुछ किरिस्तानसे लिया, कुछ मुसलमानसे लिया ! लेकिन इतना ही रहता तो कुछ काम चल जाता।

सन्तोखी—तब तिननजा ही न रह जाता। सतनजा कैसे बना भैया ?

भैया—अरे इन्होंने ओझा-सोखा भूत-परेत, चुड़इल-डाइन सब मिलाकर बहुत बड़ा धरम खड़ा कर दिया।

दुखराम—बहुत बड़ा धरम, यह तो ताड़से भी बड़ा धरम होगा। तो पढ़े-लिखे लोग यह ओझा-सोखा, भूत-परेत वाली बात मानते हैं।

सन्तोखी—देवफोफी सुना नहीं है, नाम देवता लोगोंसे बात करनेको फोफी है, इसलिए न भैया ! नाम देवफोफी पड़ा है ?

भैया—नाम तो वह लोग थेयोसोफी कहते हैं, लेकिन मतलब वही देवफोफीका।

सन्तोखी—तो देवफोफीका भी अपना स्कूल है भैया।

भैया—देवफोफीके स्कूलमें मामूली घरके लड़के थोड़े ही पढ़ सकते हैं, बड़े घरके लड़के जाते हैं। हवा-बतास धूप-घामसे बचाकर उनको रखा जाता है।

दुखराम—तब तो एक ही झकोरामें मुरझा जायेंगे ?

भैया—मुरझा तो जाते ही हैं। हाकिमके लड़के हैं तो हाकिम भी तो हजारों हैं और सबके घरमें दो-दो चार-चार लड़के हैं। एम० ए०, बी० ए०, तो किसी तरह ठोंक पीटकर खुशामद-बरामद करके बना लिए जाते हैं लेकिन सबको नौकरी कहाँसे मिले !

सन्तोखी—तब बैठे-बैठे मक्खी मारते होंगे।

भैया—मक्खी मारना भी तो इन्होंने नहीं सीखा। लड़की होते तो शायद कभी भाग भी खुल जाता। राजकुमारी की तरह पाले गये, मिजाज आसमान पर रहा। पढ़-लिखकर तैयार हुए, तो बड़ी नौकरी मिली नहीं। पचास-पचीस की मुहर्रीपर मन ही नहीं जाता। बापके मत्थे खाये। पेंसिन ले ली, तो घर का चलाना और मुश्किल और दो-चार बेटा-बेटी गले में लटक गये बस।

दुखराम—जीते ही नरक।

सन्तोखी—तो मालूम होता है सब जगह यही हाल है।

दुखराम—हम तो अपना ही दुख देखकर दुनिया को नरक कहते थे।

भैया—नहीं दुक्खू भाई! नरककी आग घर-घर जल रही है, किसीका घर आज बचा हुआ है तो कल नहीं बच पायेगा।

सन्तोखी—शायद राजा-महराजा लोग अच्छी हालतमें होंगे, उनके पास बहुत धन...

भैया—बहुत रानी-महरानी रंडी-मुंडी नौकर-चाकर होते हैं, इसलिए उनके यहाँ बैकुंठ है यही न कहते हो सन्तोखी भाई? लेकिन जानते हो न? इन्दौर निकाले गये, अल्वरके महाराज निकाले गये, नाभावाले न जाने कहाँ जाकर मरे।

दुखराम—बिल्लायतके बादसाह तो बहुत सुखसे होंगे भैया?

भैया—मैं कब कहता हूँ कि सौ में दो-चार आदमी भी सुखी न मिलेंगे। लेकिन कलके लिए निश्चिंत, ऐसा सुख तो दोरंगी दुनियामें कहीं नहीं है। तुमने सुना नहीं है दुक्खू भाई! अभी बहुत दिनकी बात तो नहीं है, बिलाइतके बादसाह प्रिंस आफ वेल्स निकाल दिये गये।

सन्तोखी—हाँ, हाँ! आजकल जो बादसाह हैं, इन्हींके तो बड़े भाई थे और सिर्फ ब्याह करनेके कसूरमें।

दुखराम—ब्याह करनेमें कौन कसूर था?

भैया—कसूर तो नहीं था। बेचारा कुँआरा था, अपने मनकी स्त्रीसे ब्याह करना चाहता था।

दुखराम—साहब लोग तो अपने मनका ब्याह करते ही हैं फिर इसमें क्या

बुराई थी ?

भैया—साहब लोग कर सकते हैं लेकिन बादसाह नहीं।

दुखराम —कलकत्तामें सुना था कि टोप-टोप सब एक जाति होती है।

भैया—बिलायतमें भी राजाका खून दूसरा होता है और परजाका दूसरा।

दुखराम—तो राजाका खून लाल नहीं सुनहले रंगका होगा ?

भैया—खून तो सबका ही लाल होता है लेकिन कोई समझता है हमें भगवानने दाहिने हाथ से बनाया है और दूसरेको बाएँ हाथसे।

सन्तोखी—तो साहेब लोगोंमें भी बेवकूफोंकी कमी नहीं है ?

भैया—चालाकोंकी कमी नहीं है कहो, इसे मैं पीछे बताऊँगा। जैसे हमारे घर-घरमें नरक बन गया है वैसे ही बिलायत में भी है।

सन्तोखी—सुनते हैं कि अरब रुपया हर साल हिन्दुस्तानसे दूर बिलायत जाता है फिर वहाँ के लोग इतने तकलीफमें क्यों हैं ?

भैया—वह सब रुपया बिलायतके चारों करोड़ आदमियोंमें नहीं बाँटा जाता। वहाँ पाँच सौ-छः सौ परिवार हैं जो करोड़पति, अरबपति हैं। ताल-तलैया, ऊसर-डाबर, नदी-नाला, सबका पानी बहकर समुद्रमें चला जाता है; वैसे ही दुनियाके बहुतसे भागका और हिन्दुस्तानका भी धन पाँच सौ छः सौ परिवारोंके पास चला जाता है। बिलायतमें तो गरीबी और असह हो जाती है। १९३०-३१ में तीस-तीस चालीस-चालीस लाख आदमी बेरोजगार हो गए थे, दस-पाँच लाख आदमी तो वहाँ बराबर ही बेरोजगार रहते हैं। वहाँ बेरोजगार रहनेका मतलब और भी साँसत। बारह आनेमें जहाँ एक प्याला चाय और एक टुकड़ा रोटी मिले वहाँ नातेदार-रिश्तेदार भी कैसे किसी की खातिर कर सकते हैं। लोग बुरी तरहसे मरते हैं।

दुखराम—जैसे बंगालमें साठ लाख आदमी मर गए।

भैया—नहीं, वैसा हो तो दूसरे ही दिन उन छः सौ परिवारों के महलों-दरबारोंको लोग जमीनसे खोदकर फेंक दें। इक्के-दुक्के करके हजारों आदमी मरते हैं। कोई रेलके नीचे कटकर मरता है, कोई गैसका पाइप खोलकर नाक रखकर मर जाता है, कोई टेम्स नदी या समुन्दरके हवाले

अपने शरीरको कर देता है। छः सौ परिवार और उनके साथी समाजी घबड़ा कर खैरात बाँटने लगते हैं!

दुखराम—खैरात खाके जीना तो और बुरा है।

भैया—बुरा है, वह भी नरकका जीवन है, लेकिन जीवन बहुत प्रिय है, नरकवाले भी जीवनको छोड़ना न चाहते होंगे।

दुखराम—तो घर-घर मट्टीका चूल्हा है, किसीके यहाँ सोनेका चूल्हा नहीं है?

भैया—हाँ ज्यादातर मट्टीका ही चूल्हा है, और जिनके पास आज सोने-का चूल्हा है, उनके बेटे-पोतोंके लिए ठिकाना नहीं है कि मट्टीका भी चूल्हा मिलेगा।

दुखराम—तो मैंने ठीक कहा न? दुनिया नरक है।

भैया—नरक है लेकिन बनानेसे नरक बनी है।

अध्याय २

दुनिया क्यों नरक है?

दुखराम—सन्तोखी भाई, कल रात तो बहुत देर हो गई थी, लेकिन भैयाने बात खूब बतलाई।

सन्तोखी—हम लोगोंको दुक्खू भाई! दुनिया जहानका क्या पता है, हम तो गूलरके कीड़े हैं, हमारी दुनिया बस उतनी ही बड़ी है। लेकिन भैया रजबली कितना समझा-समझाकर बतलाते हैं। नरक-नरक तो हम सुनते चले आए थे।

दुखराम—लेकिन सुना न भैयाने क्या कहा था?

सन्तोखी—हाँ, कि दुनिया नरक बनानेसे बनी है। अच्छा अब सावधान हो जाओ भैया आ गए।

भैया—कहो, दुक्खू भाईको रातको तो सोनेका वखत बहुत कम मिला होगा।

दुखराम—बखत ही कम मिला था भैया ! फिर दो घड़ी दिन गिरे तक हल चलाते रहे, हल छोड़कर एक घन्टा सो लिए हैं। तुम्हारी बात सुननेका बहुत मन रहता है भैया।

भैया – मैं क़िस्सा-कहानी नहीं कहता दुक्खू भाई ! दुनिया नरक है, यह तो बहुत दिनसे सुनते आए हैं, लेकिन अब जानना है कि यह दुनिया नरक क्यों बनी। किसने बनाई। इसके बाद हमें यह भी जानना होगा, कि दुनिया अच्छी कैसे बनाई जा सकती है।

सन्तोखी – हाँ भैया ! हम वही सुनना चाहते हैं, और हमारी तागत ही क्या है, लेकिन जो बन पड़ेगा करेंगे। सुना है जब कन्हैयाजीने गोबरधन उठाया था, बालगोपालोंने भी अपनी-अपनी लाठी लगा दी थी।

भैया—कन्हैयाजीका गोबरधन नहीं है सन्तोखी भाई ! यह है दुक्खू भाईकी छान।

दुखराम – दस-पाँचका हाथ लगनेसे छान भी उठ जाती है भैया।

भैया —बस यही बात है सन्तोखी भाई ! लाखों हाथ लग जाएँगे, तो बिगड़ी दुनिया बन जायेगी। लेकिन पहले तो यह देखना है कि दुनिया नरक कैसे बनी ! घाघकी कविता सुनी है न।

> "गेहूँके रोटी जड़हनेके भात।
> गल-गल नेमुआँ ओ घिउवा तात।
> तिरछी नजर परोसे जोय।
> ई सुख सरग पैठिले होय।"

दुखराम हाँ भैया ! गेहूँकी रोटी महीन चावलका भात गरम घिउ-हरख-प्रसन्नसे अपनी स्त्री परोसकर खिलाए, नेमूँ न भी रहेगा तो भी यही दुनिया बैकुंठ हो जायेगी।

भैया – तो दुनियाको बैकुंठ बनानेके लिए कौन चीजकी जरूरत है ! पेट भर खानेको मिले अच्छा अन्न, घर भरको लाज ढाँकने जाड़ा गर्मीसे बचनेके लिए कपड़ा मिले; घरनीके मुँहपर चिन्ता और फिकिरकी छाँह न पड़े। इतना हो जानेपर दुनिया नरक नहीं रह जायगी ?

दुखराम—चिन्ता न रहे, घर भरको सुन्दर कपड़ा खाना मिले फिर क्या चाहिए भैया ?

भैया—दुक्खू भाई हमारे गाँवके बगलमें यह गड़ही है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यह भी नरक है। जब माघ-फागुनमें पानी सूख जाता है, तो गाँव भरके पाखानेकी जगह बन जाती है, गाँव भरकी लुतहर हाँड़ी और सब गन्दी-गन्दी चीज इसीमें फेंकी जाती हैं, असाढ़में पानी यदि खूब जोरका नहीं बरसा तो सब बज बज करने लगता है।

भैया—अभी हम बजबजकी बात नहीं कहते, यह गड़ही बनती क्यों है ?

दुखराम—हम लोग घर बनानेके लिए मिट्टी जो निकालते हैं।

भैया तो यह जो पासमें ऊँचे-ऊँचे घर खड़े हैं। इसीलिए न यह जमीन गड़ही बन गई ? इसी तरह तुमको जो खाना नहीं मिल रहा है, नंगा रहना पड़ता है वह क्यों ? तुम जितना गेहूँ अपने खेत में पैदा करते हो, यदि सब तुम्हारे पास रह जाय तो गेहूँकी रोटी मिलेगी कि नहीं ?

दुखराम—मिलेगी ! हम एक सालकी कमाई दो साल तक खाएँगे। लेकिन हमारे पास गेहूँ रहने कहाँ पाता है ? खलिहानमें उतनी बड़ी रासि देखते हैं, लेकिन बैसाख बीतते-बीतते घर में चूहे डंड पेलने लगते हैं, न जाने कहाँ वह रासि अलोप हो जाती है ?

भैया—कहाँ अलोप हो जाती है, क्या तुम जानते नहीं हो ? जो सब रासी तुम्हारे पास रहे तो कुछ गेहूँको सुक्खू अहीरको देकर तुम घी भी ले सकते हो, कुछसे अपने लिए कपड़ा भी खरीद सकते हो ! लेकिन आधेसे बेसीको बेचकर तो तुम मालगुजारी भी नहीं दे पाते फिर जमींदारकी हर हकूमत, जरिबाना-तलवाना, पटवारी-मुन्सीको घूँस-रिसवत, थानेदारको मास मलीदा, कचहरीके वकील-मुख्तारको मुँहसुँघाई, और सैकड़ों तरहके दूसरे खर्च किये बिना तुम्हारी जान नहीं बचेगी।

दुखराम—और आजकल लड़ाईके लिए तो और पचास तरहके डंड लगे हुए हैं। सरकारको चन्दा दो, लड़ाईमें खर्चा दो, नहीं तो तहसीलदार साहब आँख निकाल लेंगे, थानेदार एक सौ दसमें चालान करनेकी धमकी देंगे। एक

आफत है हम लोगोंके सिर पर ?

भैया—तो तुम्हारे सामनेकी परोसी थाली खींच ली जाती है न ?

दुखराम—हाँ भैया ! यही कहना चाहिये ! परोसी थाली तो खींच ली ही जाती है।

भैया—दुनियामें जितना धन है उसको पैदा करते हैं कमेरे लोग। किसान न हों तो मिट्टीका सोना कौन बनावे ?

दुखराम—हाँ, गेहूँ सोनासे भी बढ़कर है। अनाज न रहे तो सोना खा-कर कोई नहीं जी सकता है, न सोना पहनकर जाड़ा काट सकता है ?

भैया—मजूर न रहें तो चटकल पटकलमें सूत कौन कातेगा ? तांत (करघा) कौन चलाएगा ? किसान कपास पैदा करता है, उसीका भाई मजूर कपड़ा तैयार करता है। लेकिन दोनोंको तन ढाँकनेके लिए पूरा कपड़ा भी नहीं मिलता।

दुखराम—दस रुपया जोड़ा धोती कौन खरीदेगा भैया ?

भैया—दस रुपया नहीं कुछ ही दिन पहले पन्द्रह-सोलह रुपया जोड़ा धोती बिकती रही है। आध सेर कपास लगा होगा, किसानको आठ आना दे दिया। मजूर ताँत पर दिनमें दो जोड़ेसे भी बेसी कपड़ा बुन सकता है। मँहगाई मिलाके तीस रुपया महीना मिलने पर धोतीके दाममेंसे आठ आना मिला।

सन्तोखी—आठ आना आठ आना, एक रुपया तो भैया ! चौदह रुपया-के धोती जोड़ामें एक रुपया न मजूर किसानको मिला बाकी तेरह रुपया ?

भैया—बाकी तेरहका हिसाब समझ लोगे तो पता लग जायगा कि इस दुनियाको नरक किसने बनाया। लड़ाईसे पहिले यह धोती जोड़ा साढ़े तीन-चार रुपयेमें मिलता था, उस वक्त किसान मजदूरको दस-बारह आना मुश्किल-से मिलता था, बाकी तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे।

सन्तोखी—पहले तीन सवा तीन रुपया उड़ जाते थे, अब तेरह-तेरह रुपये और धोतीके बनाने वाले हैं मजूर-किसान !

भैया— किसी चीजके पैदा करने में जो देह चलाता है, खून पीसना एक करता है, वह है कमकर, कमेरा, कारीगर। घरके लोग काम कर रहे हों और

कोई आदमी छाँह में बैठा रहे तो उसे क्या कहेंगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—जांगरचोर कहेंगे, कामचोर कहेंगे, देहचोर कहेंगे और क्या कहेंगे भैया ? घरके लोग खून-पसीना बहा रहे हों और वह छाँहमें बैठा सोवे, वह भी कोई आदमी है ?

भैया—और, दुक्खू भाई ! जो वह कहीं शामको आकर कहे कि हम तो बासमतीका भात खायेंगे दालमें एक छटाँक घी डालकर, और उसके साथ आधसेर सजाव दही भी चाहिये, नेबुआ भी चाहिए, और छम-छम करके कोई गोरी परोसनेके लिए आए। तब क्या कहोगे दुक्खू भाई ?

दुखराम—कहनेकी बात पूछ रहे हो भैया ? उस कामचोरसे एक भी बात नहीं कहेंगे, उसका दोनों कान पकड़ेंगे, गाँवके सिँवानेके बाहर ले जाएँगे और गालपर खूब जोरसे दो-दो थप्पड़ लगाएँगे। फिर कहेंगे—"कामचोर, जा मुँह काला करके चला जा, फिर हमारे घरकी ओर मुँह नहीं करना।"

भैया—तुम्हारा बेटा जीवे दुक्खू भाई। तुमने ठीक किया और ठीक कहा। किसान-मजूर, कमकर हैं, कामचोर नहीं हैं, उनके पल्ले पड़ा रुपया बारह आना और तेरह रुपया कामचोरोंके हाथमें गया, जो बासमतीका चावल खाते हैं, जिनकी थालमें गोरी छम-छम करके घी और सजाव दही परोसती है। वह तुमसे माँगने नहीं आते, तुम्हारे सामने हाथ नहीं पसारते कि तुम उनका कान पकड़कर गाँवकी सीमाके बाहर कर आओ।

सन्तोखी—भैया ! हम लोग तो छोटी मोटी धौरी-दूकान करते हैं, रुपयेपर एक पैसा मिल गया तो उसीको बहुत समझते हैं। लेकिन एक असली काम करनेवालोंको एक रुपया थमाकर तेरह रुपया अपनी जेबमें रख लेना यह रोजिगार नहीं है भैया ! यह तो सीधी लूट है !

भैया—लेकिन यह तेरहो रुपया एक आदमीकी जेबमें नहीं जाता सन्तोखी भाई ! इसमें बहुत लोगोंको हिस्सा मिलता है।

दुखराम—चोरीका माल अकेले नहीं न पचता।

भैया—अच्छा तीनका हिसाब बताएँ कि तेरहका ?

दुखराम—तीन-तेरह क्या भैया ?

भैया—अरे यही लड़ाईके पहले एक-एक जोड़ेपर तीन रुपयेकी लूट थी और अब तेरहकी।

दुखराम—पहिले तीनके ही बारेमें बतलाओ भैया। पहिले हथौड़ीकी मार सह लें, फिर घनकी सहेंगे।

भैया—तीन रुपयेमें जाते तो सभी कामचोरोंके पास हैं, लेकिन उनमेंसे चार आना चला जाता है कल-मशीन बनानेवालोंके पास ! जानते हो न ? कल-मशीन बिलायतसे बन कर आती है।

दुखराम—तो यह चार आना कल-मशीन बनानेवाले मजूरोंके पास चला जाता है ?

भैया—दुक्खू भाई ! क्या तुम समझ रहे हो बिल्लाइतमें सतयुग चल रहा है ? दुनिया भरमें सबसे ज्यादा जो परान देकर काम करते हैं, वही सबसे ज्यादा भूखे-नंगे रहते हैं। बिलायतके मजूरोंकी तनखाह बेसी है, उनको एक दिनका सात-आठ रुपया मिल जाता है।

दुखराम—जनु हमारे यहाँका एक महीना और वहाँका एकदिन बराबर है।

भैया—तो तुम समझते हो कि उनके पास रुपया रखनेकी जगह भी नहीं रह जाती होगी ?

दुखराम—हाँ भैया। दो-दो ढ़ाई-ढ़ाई सौ रुपया महीनेमें जिसके घर आता हो उसके घरमें तो तोड़ेका तोड़ा रुपया गँज जाता होगा।

भैया—तोड़ा गाँजनेवाले दूसरे हैं, वे सब बिलायतके कामचोर हैं। मैंने बतलाया नहीं था, कि बारह आनामें तो वहाँ एक प्याला चाय और एक टुक्का रोटी मिलती है, और यह लड़ाईसे पहलेकी बात कह रहा हूँ।

दुखराम—तो क्या बेचारोंके पास बचता होगा ?

भैया—तो धोती जोड़ेका चार आना जो बिलायत जाता है उसमें से एक-आना कलबनानेवाले मजूरोंको मिलता है, यानी तीन आना वहाँके कामचोरोंकी जेबमें।

सन्तोखी—तीन रुपयेमें चार आनेका हिसाब तो मालूम हुआ बाकी पौनेतीनका ?

भैया—चार आना और देना-पावना सूद-सादमें चला जाता है, आठ

आनामें सरकारी टिकस, खुदरा बेचनेवालोंके नफाको रख लो बाकी दो रुपया सीधा चटकलके मालिकके जेबमें जाता है।

दुखराम—तब भी भैया! बहुत है। मैं तो किसान हूँ ही, एक साल कलकत्ता में पटकलमें कामकरके मजूरोंके भी दुखको जानता हूँ। कमेरोंको दस-बारह आना मिले और सेठ लोग दो रुपया अपनी जेबमें रख लें यह क्या कम लूट है; लेकिन तेरह रूपयेकी लूटके सामने तो यह कुछ भी नहीं है। वह कैसे हुई भैया!

भैया—लड़ाईके पहिले जिस धोती-जोड़ेका दाम चार-साढ़े चार रुपये था अब चौदह हो गया। वह इस तरह से हुआ, सरकारने कलवाले मालिकोंसे कहा कि बहुत भारी लड़ाई हमारे सरपर आई है, उसके लिए हमें खर्च चाहिए, लड़ाईके कारण तुम्हें भी बहुत ज्यादा नफा होगा, इसलिए हम तुमसे टिकस लेंगे।

सन्तोखी—एकम टिकस न भैया!

भैया—हाँ इनकम टिकट लेकिन लड़ाईवाला एकम टिकस। सरकारने कहा कि रुपयेमें पौने पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा।

दुखराम—लेकिन यह सोरहो आना तो हम लोगोंके ही मत्थे न पड़ा?

सन्तोखी—जो जो कपड़ा पहिनता है उसीके मत्थे पड़ा, इसमें भी कोई पूँछनेकी बात है।

भैया—सरकारने यह तो कह दिया कि सोलह आनेमें पौने पन्द्रह आना हमारा और पाँच पैसा तुम्हारा, लेकिन यह नहीं हुकुम दिया कि धोती जोड़ा ही बेंचनी पड़ेगी।

सन्तोखी—तो मिलवालों का हाथ खुला छोड़ दिया?

भैया—चार रुपयाकी धोती बेंचते तो साढ़े-उन्नीस आना सरकार के पास चला जाता, और पटकलवालेको मिलता दस पैसे। उसने धोती जोड़ेका दाम आठ रुपया लगा दिया। अब उसको मिलने लगा पाँच आना। फिर उसने सोचा कि जितना ही दाम बढ़ाओ, उतना ही हमारा पैसा ज्यादा होगा। सोलह रुपया करनेमें उसको दस आना मिलता। सरकारको भी नुकसान नहीं

था उसे भी सात रुपया छः आना मिल सकता था।

दुखराम—अब मालूम हुआ भैया ! कैसे कपड़ेको इतना मँहगा कर दिया।

भैया—लासा या रबड़ ताननेसे बढ़ता है, लेकिन उसकी भी हद होती है कोस दो कोस तक कोई लासाको थोड़े ही तान सकता है ?

दुखराम—कोस दो कोस क्या हाथ दो हाथ भी नहीं खींच सकते।

भैया—कारखानेवालोंने नफा कमानेके लिए चीजोंका दाम चौगुना-पचगुना कर दिया। अब तुम्हीं बताओ, सोलह रुपया जोड़ा खरीदनेमें एक छोटी मोटी भैंस बेचनी पड़ती न ? दस सेरका गेहूँ बेंचते तो चार मन गेहूँ घरसे निकालना पड़ता। किसान गँवार होते हैं, उनको समझ नहीं होती। सब कहा जाता है; लेकिन जब वह देखते हैं कि बाजारमें जिस चीजपर भी हाथ लगाते हैं, उसी-का दाम चौगुना-पचगुना है, तो वह गेहूँको दस सेरका कैसे बेचते ? गेहूँका दाम भी महँगा होने लगा। जब ढाई दो सेरका होने लगा, तो पहिले उन लोगोंमें घबराहट हुई, जो कि न किसान हैं, न सेठ हैं, न सरकार। अनाज महँगा होना उसके लिए उतना बुरा नहीं होगा जिसको देना पावना बेबाक करके खाने भरको घरमें अन्न रह जाता है। लेकिन जिसके घरमें बैसाखमें ही अन्न नहीं रह जाता, वह क्वार तक कैसे काटेगा ? बंगालमें यही हुआ, चावल रुपयेका दो सेर नहीं दो रुपये सेर हो गया। अब तुम बताओ जिसके पास बैसाखमें ही अनाज खतम हो जाता है, वह दो रुपये सेर अनाज खरीदकर कितने दिनों तक खा सकता है ?

दुखराम—घरमें दस परानी हुए तो पेट जिलानेके लिए भी तीन सेर चावल चाहिये। छः रुपया रोज लगनेपर तो असाढ़ ही तक हल बैल, घर दुआर, जर जमीन सब बिक जायगी।

भैया—सब बिक जायेगी तब घरवाले क्या करेंगे ?

दुखराम—वही भैया जो तुमने कहा है, लाज-सरम भी चली जायगी, इज्जत भी बिक जायगी, और तब भी नैया पार होगी कि नहीं इसमें भी सक है।

भैया—तो जो साठ लाख आदमी बंगालमें मर गये उसका कारन तुम्हें मालूम हुआ ? उनका खून किसकी गर्दन पर है।

दुखराम कारखानेवालों और सरकारके ऊपर उन्होंने ही अन्धेर-गरदी की, तभी न अन्नका दाम बढ़ा ?

भैया—दो गरदन तो तुमने ठीक बतलाई लेकिन एक गरदन अभी और बाकी है। नहीं बल्कि एक मद कहो, यह चोरबाजारका मद है।

सन्तोखी साहु लोगकी बाजार लगती है यह तो सब जानते हैं, क्या चोरोंकी भी बाजार होती है भैया ?

भैया—होती है और सरकार बहादुरके राजमें दिन दहाड़े लग रही है। कपड़ेके कारखानेवालोंने देखा, यह तो दस आना हमारे हाथमें थमाकर सात रुपया छः आना सरकार ले लेती है, क्यों न हम अपने मालको चोरी-चोरी बेंच लें। लाखों गाठोंके बेचनेका सवाल था, सेर दो सेर चीनी नहीं थी कि लुका छिपाके काम चल जाता।

सन्तोखी लेकिन सरकारने तो कारखानेवालोंका हाथ खुला छोड़ दिया था ?

भैया—खुला छोड़ दिया था कि जितना चाहें दाम रखें, लेकिन दामको बिक्रीखातेमें लिखना पड़ता, फिर धोती पीछे दस आना और सात रुपये छः आनाका हिसाब रहता। मालिकोंने सोचा, बिना खाताबहीपर लिखे माल बेच डालो।

दुखराम—न रहेगा बाँस न बजेगी बासुरी।

भैया—उन्होंने जाली बहीखाते रखे, बहुत अधिक मालको चोरी चोरी बेंचा, इसीको कहते हैं चोर बाजार। तुम कहोगे बहीखाता जाली बनाना और सरकारी टिकिस अदा करनेमें धोखा देना यह तो बहुत भारी कसूर है। लेकिन जहाँ करोड़ोंका वारा न्यारा हो, वहाँ लाखोंकी घूस रिसवत चलती है। फिर कौन है जो घर आई लक्ष्मीको लौटायेगा ? हजार दो हजार नहीं एक लाख एक मूठ घूस दिया जाता है ! बताओ कितने मिलेंगे इन्कार करनेवाले ? कालों हीके बारेमें नहीं कहता गोरे साहबोंकी भी बात पूछ रहा हूँ।

सन्तोखी—तब तो भैया ! सबका ईमान-धरम डिग गया होगा ?

भैया—लाख ही नहीं सन्तोखी भाई ! करोड़की भी रिश्वत चली है, उसने

हिमालयकी सबसे ऊँची चोटियों तकको भी ढाँक दिया है। लोग टुक-टुक देखते रहे, सब जानते हुए भी; लेकिन करें क्या किसके पास फरियाद ले जाएँ ?

दुखराम—चोर बाजारवालोंने कहर किया भैया !

भैया—इन कपड़े और दूसरी चीजोंके कारखानेवालोंने करोड़ों रुपये बनाए, मालामाल हो गये। कितनोंने तो पाँच सौ पाने लायक नौकर पन्द्रह सौ रुपयेमें रक्खा, पाँच सौ उसे दिया, डेढ़ हजारकी रसीद लिखाई और एक हजार अपनी जेबमें रख लिया। बताओ इन करोड़पतियोंको कौन पकड़ सकता है, यहाँ कागज पत्तर भी ठीक है। फिर अनाजके चोरों के अपराधको तो कोई भूल ही नहीं सकता।

सन्तोखी—अनाज चोरोंने क्या किया भैया ?

भैया—जानते हो न ! चैतमें गेहूँ तैयार हुआ या अगहनमें धान। घर आया, दो महीनेके भीतर ही खाने या भूखे मरनेके लिए जो कुछ अन्न घरमें रह गया वह रह गया, नहीं तो सब झार-झूरकर बनिएके पास चला गया। सन्तोखी दास ! तुम भी अनाज खरीदते हो, बताओ उसे कितने महीने तक अपने घरमें रखते हो !

सन्तोखी—महीने और घरमें रखना ! हमारे पास तो उतना पैसा भी नहीं होता। किरानावाले बड़े बड़े-से हैं, हम उनके लिए अनाज खरीदते हैं। रुपया पीछे पैसा दो पैसा बच गया तो बहुत है।

भैया—तुम्हारे सेठ लाख वाले होंगे ?

सन्तोखी—हाँ, यही लाख दो लाख का रोजगार होगा और क्या ?

भैया—किरानाके असली मालिक लाख-दो-लाख नहीं पाँच-दस करोड़का रोजगार करते हैं। चैतमें तुमने खरीदा, तो बैसाख-जेठमें वह अनाज करोड़पति सेठोंका हो जाता है। और दाम तो असाढ़-सावनमें न बढ़ाकर आठ सेर-के भावसे खरीदा और दो सेर तीन सेर कर दिया। अब यह दुगुना-तिगुना नफा किसके पेटमें गया ?

सन्तोखी—उन्हीं करोड़पति सेठोंके मुँहमें।

दुखराम—लेकिन भैया ! अन्न तो जीवका अहार है । अन्नको महँगा करके यह तो लोगोंको जबह करना है । सरकार एक आदमीके खून करनेपर फाँसी चढ़ा देती है, फिर लाख-लाखके खूनपर चुप क्यों है ?

भैया—अब आदमी मरने लगे, हाय-हाय मचने लगी तो सरकारने भाव पक्का किया । लेकिन भाव पक्का करनेसे क्या होता है ? अनाज तो करोड़-पतियोंके हाथमें था । जो एक करोड़ नफा हो तो बीस लाख घूस-रिसवत कौन नहीं दे देगा ।

सन्तोखी—तो छोटे-छोटे बच्चोंके बिलख-बिलखकर मरनेका ख्याल नहीं किया, पेटके लिए औरतोंकी इज्जत बेचनेका ख्याल नहीं किया, ख्याल किया तो एक अपने ही नफेका ? छी ! धिक्कार है ऐसे पापियोंको !!

भैया—धिक्कार मत कहो सन्तोखी भाई । वे बड़े धर्मात्मा हैं । उनके बड़े-बड़े मन्दिर हैं, तीर्थोंमें सदाबरत और धरमसाला चलती है, गोसालामें चन्दा देते हैं । साधू-सन्त और पंडित-पाधा लोग सेठकी जयजयकार मनाते हैं मौलवी लोग सौदागरके लिए दुआ माँगते हैं ।

दुखराम—तो इन कसाइयोंमें हिन्दू-मुसलमान दोनों हैं ?

भैया—हाँ, सब अपने-अपने धरमके चौधरी हैं । हिन्दू सेठ दोनों साँझ ठाकुरजी का दरसनकर चरनामिरित लेते हैं, मुसलमान सेठ पाँच बेर नमाज पढ़ते हैं ।

दुखराम—भैया रजबली ! यह क्या है ?

भैया—मुँहमें राम बगलमें छुरी, और क्या ? लाखों औरतोंने अपनी इज्जत बेची खानगी बनी; लाखों बच्चोंने तड़प-तड़पकर जान दी, साठ लाख आदमी मर गए लेकिन इन मोटी तोंदवालोंके कानपर जूँ भी न रेंगी ।

सन्तोखी—इनके कानपर न जूँ रेंगी, तो भगवानके कानपर तो जूँ रेंगनी चाहिए थी ? राछछ आततायी ! साठ-साठ लाख आदमियोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाले ! भगवान अब भी अवतार न लें तो कब लेंगे ?

भैया—भगवान बहुत दूर रहते हैं सन्तोखी भाई ! कौन समुन्दरमें रहते हैं,

मुझे तो याद नहीं आता।

सन्तोखी—छीर समुन्दरमें भैया ! सेसनागके ऊपर सोते हैं और लच्छिमी चरन दबाती हैं।

भैया—एक तो दूर बहुत दूर छीर समुन्दर न जाने कहाँ है, भूख के मारे बोल भी न सकनेवाले इन लाखों आदमियोंकी सिसकीकी आवाज वहाँ तक पहुँचती भी कैसे ? फिर वह सेख (शेष) नागपर सोये हैं, गुलगुल बिछौने-पर नींद जल्दी आ जाती है ? तिसपरसे अपने नरम-नरम हाथोंसे लच्छिमीजी चरन दबा रही हैं, तो क्या मामूली नींद आएगी ?

सन्तोखी—लेकिन भैया ! प्रह्लादके ऊपर गाढ़ पड़ा, तो तुरन्त खम्भ फाड़कर निकल आए, ध्रुवने पुकारा, तो तुरन्त दरसन दे दिया, द्रौपदीकी चीर खींची जाने लगी तो आके उसमें समा गये !

भैया—पहलाज और धुरुब राजाके लड़के थे द्रौपदी रानी थी। राजा-रानी कोई मरता, तो जरूर भगवानकी नींद टूट जाती, वह नंगे पैर दौड़ पड़ते।

सन्तोखी—भगवानका राजा-रानीके साथ इतना प्रेम क्यों है भैया ?

दुखराम—मूर्ख चपाट। तुमको इतना भी पता नहीं है ? हमारे तुम्हारे बूतेका है कि भगवानके लिए मन्दिर बनवा दें। जो उनके लिए बड़े-बड़े मन्दिर बनाता है, छप्पन परकारका भोग बनवाता है, दान-दच्छिना देता है; भगवान उसके लिए अवतार न लेंगे तो क्या तुम्हारे-हमारे लिए लेंगे ?

भैया—दुक्खू भाई ! तुमने बड़ी कड़ी बोली मारी !

दुखराम—बोलीकी चोट गोलीसे भी बढ़कर होती है भैया ! लेकिन सन्तोखी भाईका हम पैर पकड़ते हैं, वह हमारा अपराध जरूर छिमा कर देंगे।

सन्तोखी—नाहीं दुक्खू भाई ! हम तुम्हारे ऊपर भला नराज होंगे ? हम दोनों लड़कपनके सँघतिया।

भैया—तनिक कड़ा कहा लेकिन दुक्खूभाई, कहा तुमने बावन तोला पाव रत्ती ठीक ही।

दुखराम—भैया ! और तनिक आँख खोलो, चारों ओर मालूम होता है किसीने जकड़बन्द कर दिया है, साँस लेनेकी भी छुट्टी है। उधर सेठ लोगों की

धरमसाला और सदाबरत इधर अजोधियाजीका सखी समाज, फिर छीरसागर-के भगवान जो राजा-रानीके लिए नंगे पैर दौड़े-दौड़े आवें और पचास-पचास लाख गरीब कुत्तेकी मौत मार डाले जायँ, और वह सुग बुगाएँ भी नहीं !

भैया—लेकिन दुक्खू भाई। यहाँ हमारे सामने भगवान नहीं हैं कि उनको गाली फजीहत दें। भगवान बेचारेका दुनिया के बनाने-बिगाड़ने में कोई हाथ नहीं है।

दुखराम—तो वह हैं किस वास्ते ?

भैया—अभी हमें यह जानना है कि दुनिया को नरक किसने बनाया।

सन्तोखी—हाँ ठीक तो है दुक्खू भाई ! राजबली भैयाने तो कह दिया कि भगवानका दुनियाके बनाने-बिगाड़नेमें कोई हाथ नहीं। हम लोगोंको यह जानना चाहिए कि दुनिया को नरक बनाया किसने ? भगवानको लेकर हम क्या करें।

दुखराम—साँच ही कह रहे हो सन्तोखी भाई ! मुझे तो मालूम होता है कि भगवान-बगवान कोई नहीं है, यह केवल धोखाकी टट्टी है।

भैया—भगवानके बारेमें फिर किसी दिन पूँछना दुक्खू भाई ! आज दुनिया को नरक बनानेवालोंकी बात सुनो। साठ लाख आदमियोंको किसने मारा ? कमेरों-कमकरों किसान मजूरोंने ? या कामचोरोंने ?

सन्तोखी—कामचोरोंने मारा। किसान-मजूरोंने तो अन्न-कपड़ा तैयार करके रख दिया था, लेकिन इन सेठोंने, इन घूसखोरोंने और अंधी लालची सरकारने यह सब कहर किया। लेकिन इन कामचोरोंके ऊपर साठ ही लाखों-का खून नहीं चार हजार बरससे इनके दाँतमें बेकसूरोंका खून लगा हुआ है।

दुखराम—चार हजार बरससे ? न जाने कितने करोड़ कितने अरब बेकसूरोंका खून किया ?

भैया—इन्हींके जुलुमसे यह दुनिया नरक हो गई है। मैंने पहिले ही नहीं पूँछा था कि हमारे गाँवके पासमें गड़हो कैसे बन गई ? जो बड़े-बड़े कोठे-अटारी, मोटर-हाथी लाव-लसकर, नोकर-चाकर और छप्पनछूरीका नाच तुम देख रहे हो, यह धन कहाँसे आता है ? लाख रुपया महीना लाट साहब और

दो लाख रुपया महीना बड़े लाटपर जो खरचा होता है, यह कहाँसे आता है। पाँच-पाँच सालमें एक चीनीकी मिल खोलकर दस-दस लाख रुपया कमा लेना, यह कहाँसे आता है यह चिकने-चिकने गाल और लाल-लाल ओठ किसके खूनसे रँगे जाते हैं ?

सन्तोखी—कहते हैं, धन-वैभव भगवान देते हैं।

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देखो हमारी-तुम्हारी बिगड़ जायेगी। चाहे तो पहिले ही भगवानके बारेमें फैसला कर लो, नहीं तो भगवानका नाम अभी मत लो।

भैया—झगड़ो मत दोनों जने। सन्तोखी भाई जो कहते हैं, वह दूसरोंकी सुनी-सुनाई बात है। अच्छा दुक्खू भाई ! जो हमारे गाँवमें यह घर-दीवार उठी है, इनके बारेमें कोई आकर कहे, कि यह सब माटी भगवानने दी है; तो क्या जवाब दोगे ?

दुखराम—पहिले जवाब नहीं दूँगा भैया। पहिले देखूँगा कि उसके आँख है कि नहीं। और आँख जो हुई, तो कान पकड़कर ले जाऊँगा गड़हीके पास और कहूँगा—"देख आँखके अंधे। यह जो जमीन गड़ही बन गई है, वह इन्हीं घरोंके कारण, यहाँकी माटी वहाँ गई हैं।

भैया—सन्तोखी भाई ! किसीके आँगनमें सोनेका पेड़ नहीं है कि हिला दिया और आँगन भर गया, किसीके घरमें हम सोनेकी बरखा होते नहीं देखते; फिर हम कैसे मान लें, कि जो यह भोग-विलास करोड़-करोड़ रुपयेपर पानी फेरना हो रहा है, वह भाग और भगवानकी ओरसे उनके पास आता है ? किसान ऊख पैदा करता है, मिलवाले ऊखका दाम कितना मन देते थे दुक्खू भाई ?

दुखराम—एक बार तो चार आना मन भी नहीं दे रहे थे, फिर हम सब किसानोंने एका किया तब कुछ हल्ला-गुल्ला हुआ, रजबली भैया ! तुमने ही तो मदद की थी ? तब जाकर आठ आना मन हुआ था।

भैया—मन भर ऊखमें जानते हो कितनी चीनी होती है, चार सेर।

दुखराम—तो हमें आठ आना थमाके चार सेर चीनी ले लिया न ! डाकू

कहीं का।

भैया—तुम्हें भी लूटा और जो यह चार-चार आना मजूरीपर दस-दस घंटा खटते हैं, इन मजूरोंको भी लूटा। उसका दस-बारह आनासे बेसी नहीं खर्च हुआ।

सन्तोखी—और बेंचा डेढ़ रुपयेपर न? जनु दूनाका नफा।

दुखराम—जो जेठ-बैसाखकी धूपमें खून-पसीना एक करे, जो मसीनमें हाथ-पैर कटावे, और देह भर कोइला-कालिख लगावे, उसको तो चार आना और आठ आना मिले और यह ठंडे-ठंडे घरमें बैठे बिना हाथ-पैर डुलाए आधा हमारा लूट लें।

भैया—और जानते हो, वह लूट रहे हैं दस-दस बीस-बीस हजार किसानोंको, सैकड़ों मजूरोंको तब न एक-एक सालमें दो-दो तीन-तीन लाखका नफा करके रख देते हैं? यदि यह कहें कि यह तीन लाख रुपया भगवानने छीरसागरसे भेजा है, तो यह माननेकी बात है?

दुखराम—नहीं भैया! यह हमीं लोगोंके खूनको पीकर मोटे होते हैं।

भैया—यह जोंक हैं जोंक दुक्खू भाई!

दुखराम—जोंक! ठीक कहा भैया! यह जोंक ही हैं और कितनी होसियार जोंक है कि लाखों आदमीका खून पी रहे हैं और किसीको पता भी नहीं लगता। एक बात कहें रजबली भैया! मैं तो समझता हूँ कि जोंकोंके छिपाने-के लिए ही भाग-भगवानको किसीने गढ़ा है।

सन्तोखी—मैंने भगवानका जब नाम लिया, तो दुक्खू भाई! तुम नाराज हो गये?

दुखराम—अच्छा सन्तोखी भाई! जीभ लुटपुटा गई छिमा करना। हम पीछे यह बात पूछेंगे।

भैया—जबसे आदमियोंमें जोंक पैदा हुई, तभीसे यह दुनिया नरक बनी।

दुखराम—जोंक माने कामचोर, जाँगरचोर, सेठ, राजा, नवाब यही न?

भैया—हाँ, इन्हींने खून चूस-चूसकर किसानोंको, मजूरोंको, गरीब बना दिया, उनको किसी लायक नहीं रहने दिया। सरकारमें सब जगह यही कामचोर

बैठे हैं; पलटन, पुलिस सब जोकोंकी रक्षाके लिए बनी है।

दुखराम—जिसमें अपनी देहमें लगी जोंकको भी हम निकालकर फेंक न सकें !

भैया —जोकोंको निकालकर फेंक दोगे, तो वह जियेंगी कैसे ? उनके हाथ-पैर भी नहीं, वह घासपात भी नहीं खाती, उन्हें चाहिए तुम्हारा गरम गरम खून। इसीलिए तो यह सब सरकार-दरबार बनाया गया है, यह लावलसकर रखी गई है, कि जिसमें तुम जोकोंको निकालकर फेंक न सको। जिस दिन तुमने जोंकोंको निकाल फेंका, उसी दिन यह दुनिया नरकसे सरग हो जायगी।

दुखराम भैया रजबली ! अब आँख कुछ-कुछ खुलती है, कितना बड़ा पट्टर बाँधा हुआ था।

भैया —एक पीढ़ीका नहीं डेढ़ सौ पीढ़ीका पट्टर, और हर पीढ़ीमें जोकोंने नया-नया पट्टर तुम्हारी आँखोंपर चढ़वाया।

दुखराम—हाँ भैया, यह पट्टर उखाड़ फेंके बिना काम नहीं चलेगा।

सन्तोखी—इतनी जोंकें जिसके सरीरमें लगी हों, उसके पास कहाँसे खून बचा रहेगा।

भैया—और जोंकें दिन पर दिन बढ़ती गई सन्तोखी भाई ! पहिले एक अंगुलकी थी, फिर दो अंगुलकी और अब तो हाथ-हाथ भरकी हो गई हैं।

दुखराम—पूरी भैंसिया जोंक, देखके डर लगता है। जब भैंसको लग जाती है तो यह नहीं कि पेट भर खाके छोड़ दे।

भैया पेट भी तो उनका सरीरके छोटेसे कोने-अँतरेमें नहीं होता।

दुखराम—हाँ भैया, जोंकका तो सारा सरीर ही पेट होता है। जितना पीती है, उससे भी ज्यादा खून तो बाहर गिरा देती है। लेकिन भैया एक अंगुलकी जोंक एक हाथकी कैसे बन गई ?

भैया—बतलाता हूँ, लेकिन यह भी मनमें रखना, कि जैसे-जैसे जोंकें बढ़ी वैसे-वैसे दुनिया और नरक बनती गई। लेकिन पहले एक समय था दुक्खू भाई ! जब आदमियोंमें जोंकें नहीं थीं। और अब भी दुनियाका छठा भाग है, जिसमें जोंकें नहीं हैं।

दुखराम — तब तो वहाँ नरक नहीं होगा भैया, लेकिन कैसी जगह है वह जहाँ जोंकें नहीं हैं।

भैया रूसका नाम सुना है न ?

दुखराम — हाँ भैया, रूसका नाम किसने नहीं सुना होगा ? वही न जहाँ आदमी पीछे पाँच बीघा (३ एकड़) खेत और गाय बाँटी गई !

भैया—हाँ वही, लेकिन बाँटनेकी बात सुरू-सुरूमें रही, पीछे तो उन्होंने गाँवके गाँवका सारा खेत साझेमें जोतना सुरू कर दिया।

सन्तोखी—वही न भैया, जहाँ की लाल सेनाकी वीरताकी खबर रोज अखबारोंमें सुननेमें आती है।

भैया—हाँ सन्तोखी भाई ! जो लाल सेना नहीं रही होती और रूस बे-जोंकवाला राज न रहा होता, तो आज दुनिया भरमें रावनका राज हो गया होता। लेकिन रूस और रावनके बारेमें फिर किसी दिन बात करेंगे। आज तो अभी जोंकोंके बड़ा होनेकी बात थोड़ी सुन लो।

दुखराम—हाँ सुनाओ भैया !

भैया हम जानते हैं रात ज्यादा हो गई है फिर कातिककी भीड़ है। कल फिर तुम्हें दुक्खू भाई, हल नाँधना पड़ेगा। पहिले जोंकें नहीं थीं, यह बहुत पुरानी बात है, लेकिन लाख दो लाख बरस नहीं किसी देसमें जोंकोंको पैदा हुए दो हजार बरस हुआ, किसी देशमें चार हजार और ज्यादासे ज्यादा सात-आठ हजार समझ लो।

सन्तोखी—तो सात-आठ हजार बरससे पहिले दुनियामें जोंकोंका कहीं नाम नहीं था ?

भैया—बिल्कुल नाम नहीं था। जब आदमी इतना ही कमा पाता था कि दिन भरके खानेसे निचिंत हो जाय, तो जोंक कैसे पैदा हों ? कलमुँहा और ललमुँहा बानरोंको तुमने देखा है न दुक्खू भाई ?

दुखराम—कलमुहाँ बानर तो हमारे ही गाँवमें बहुत हैं।

भैया—तो देखते हो न बानर पेड़से तोड़कर या जमीनसे बीनकर अपना पेट भरता है, वह जमा नहीं कर पाता। इसीलिए दूसरेकी पैदा की हुई चीज-

को हड़पनेवाली जोंकें वहाँ नहीं।

दुखराम—हाँ भैया ! उनमें जो सबसे बलिष्ठ हनुमान होता है, उसे हम लोग खेखर कहते हैं। लेकिन खेखरको भी आहारके लिए उतनी ही मेहनत करनी पड़ती है, जितनी दूसरे बानर-बानरियोंको।

भैया—लेकिन जिस समय आदमीमें जोंक नहीं थीं, उस समय भी उसमें और बानरोंमें अन्तर था। आदमी अपने लिए पत्थर, सींग या लकड़ीका हथियार बनाता था। इन हथियारोंसे वह अपने शत्रुओंसे लड़ता और अपने लिए सिकार या फल गिरा कर आहार जमा करता।

दुखराम—तो भैया ! उस समय लोहेका हथियार नहीं था ? तीर-धनुष भी नहीं था।

भैया—लोहाको तो दुनियामें पैदा हुए चौंतीस सौ बरससे ज्यादा नहीं हुआ।

दुखराम—और भैया, उससे पहले खाली सींग, लकड़ी-पत्थरका हथियार चलता था ?

भैया—नहीं लोहासे पहले आदमीको ताँबेका पता लग गया था, लेकिन उसे भी पाँच हजार बरससे ज्यादा नहीं हुआ। और यह भी दुनिया भरमें एकही बार सब जगह नहीं हुआ। अकबरके दादा बाबरके हिन्दुस्तानमें आनेके पहले हमारे यहाँ बारूदका कोई हथियार नहीं था, दूर तक मार करनेके लिए सिर्फ तीर-धनुष था। तीरके मुँहपर तिकोना लोहा लगा रहता जिसको लोग बिखसे बुझाकर रखते थे। लेकिन जब तोप-तुपुक (बन्दूक) आई तो तीर-धनुषका रिवाज उठ गया, लेकिन भील-संथाल लोगोंमें अब भी तीर-धनुष चलता है।

सन्तोखी—हाँ भैया, यह तो हम भी संथाल परगनामें देख आए हैं।

दुखराम—तो पहले लोग सिकार और फलसे ही गुजारा करते थे क्या ?

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! पहिले सिकार-फल फिर लोग पसु पालने लगे।

दुखराम—गाय, घोड़ा, भेड़, बकरी ?

भैया—हाँ, पसु पालने लगे। और जानते हो सिकार एक दिनसे ज्यादा रखा नहीं जा सकता। फल भी बहुत महीनों तक नहीं रह सकता। लेकिन पसु-

धनको सालों तक रखा जा सकता है और जितने ही दिन रक्खे वह उतने ही दिन और बढ़ते जाते हैं।

दुखराम—सूअर तो भैया सालमें एकसे बीस हो जाती...

सन्तोखी—और दूसरे साल बीससे चारसौ ?

भैया—जो खाये-पकायेसे बच जाये या मरे-बरे नहीं। हाँ, तो जब आदमीके पास पसु-धन हुआ जो बरसों तक उसके पास रह सकता है; तब पहिले-पहल जोंक पैदा हुई। बल्कि वह पूरे रूपमें जोंक नहीं थी, वह ज्यादातर दूसरे आदमियों जैसी ही थी।

सन्तोखी—यह कौन जोंक थी भैया, राजा या सेठ या कौन ?

भैया—अभी न राजा थे, न सेठ थे, वह पहिली जोंक थी पुरखा या पितर। जब आपसमें झगड़ा-झंझट होता, तो एक पंचाइत देखनेवालेकी जरूरत पड़ती थी। जब बाहरसे झगड़ा होता, तो सेना चलानेके लिए एक नेताकी जरूरत होती। यह दोनों काम जो आदमी करता, उसे पितर या महा-पितर कहते थे। अभी उसके सिरपर मुकुट नहीं आया था, अभी भी वह चटाईपर साथ बैठनेवाला बिरादरीका चौधरी था। लेकिन उसके पास धीरे-धीरे पसु बढ़ रहे थे, धन बढ़ रहा था।

सन्तोखी—तो भैया पसु-पालनेसे पहिले ज्यादा दिन रहनेवाला धन तो किसीके पास था नहीं, फिर धनी-गरीबका फरक भी नहीं रहा होगा ?

भैया—पसु-पालनके युगसे पहिले मेरा-तेराका सवाल ही नहीं था। एक जगह रहनेवाले लोग साथ मिलकर सिकार करते, साथ मिलकर फल जमा करते और साथ ही खाते-पीते थे।

दुखराम—माँ-बाप, बहिन-भाई, चाचा-चाची सब न साथ रहते होंगे ? कितना बड़ा कुनबा रहता होगा।

भैया—अभी बाप नहीं बना था दुक्खू भाई !

दुखराम—बाप नहीं था इसका क्या मतलब भैया।

भैया—ब्याहका रवाज नहीं था। माँको सब जानते थे।

दुखराम—माँको क्यों नहीं जानेंगे ? माँके उदरसे तो बच्चा पैदा होते

देखा जाता है।

भैया—तो जंगलमें गाय, घोड़े, भेड़, बकरी रहा करते थे, उन्हींमेंसे कुछ को लोगोंने पालतू बनाया। आखिर रोज-रोजका सिकार मिलना तो आसान नहीं था। पसु पालनेका काम मर्दने सुरू किया, उससे पहले परिवारकी मुखिया माँ होती। अब अधिक धनवाला पुरुख मुखिया हो गया।

दुखराम—जनुक तिरियाके राजकी जगह मरदका राज, माताके राजकी जगह पिताका राज सुरू हुआ।

भैया—अभी इतना ही समझो, कि नारीको हटाकर मरद मुखिया बन गया! लेकिन अभी जोंक नहीं तैयार हुई थी। जब पसुधन और बढ़ा, भीतरी और बाहरी झगड़े और बढ़े; तब मुखियाका जोर बढ़ा, और कभी-कभी घर बैठे लोग उसके पास खानपान पहुँचाने लगे। बस छोटे रूपमें जोंक शुरू हो गई। मैंने बतलाया था न, कि जोंकोंने दुनियाको नरक बनाया।

दुखराम—हाँ भैया।

भैया--तो जोंकोंका अवतार कैसे हुआ यह मैंने तुमसे कहा। लेकिन पूरा जोंक-पुरान आज नहीं कह सकता।

सन्तोखी—हाँ, भैया आज रात बहुत हो गई है।

भैया—कल रातको इसी बखत जोंक-पुरानकी कथा होगी।

अध्याय ३

जोंक-पुरान

सन्तोखी—भैया! बेचारा दुखराम आज बड़ी देर तक हल चलाता रहा। कातिक की भीड़ है न, आता ही होगा।

भैया वह देखो पेट पर हाथ फेरते दुक्खू भाई आ रहे हैं। कहो दुक्खू भाई! आज बहुत डकार लेते चले आ रहे हो।

दुखराम—क्या पूँछते हो भैया, आज मलकिनने पूरी-व खीर बनाई थी,

हम गरीबों को छठे-छमाहे कभी कुछ अच्छा खाना मिल जाता है, तो अपनेको धन्न-धन्न समझने लगते हैं।

भैया—जो जोंकें न रहें तो छठे-छमाहे क्यों रोज अच्छा अच्छा भोजन मिल सकता है और तेलकी पूरी और गुड़की बखीर नहीं खालिस घीकी बनी पूड़ी और दूध-चीनीकी बनी खीर।

दुखराम—हाँ भैया! यह हो सकता है, इतनी-इतनी जोंकें जो हमारे गेहूँ घी-चीनीको छोड़ देंगी, तो क्यों नहीं हम मौजसे खायें-पियेंगे?

भैया—तो कल हमने जोंकका जनम बतलाया था? अब उसकी बाल-लीला, जवानी, और मरनेकी घड़ीकी बात सुनो।

सन्तोखी—मरनेकी घड़ी भी? क्या भैया जोंकोंके मरनेकी घड़ी आ गई?

भैया—मैंने बतलाया नहीं कि दुनियाके छ भागमेंसे एक भाग रूसमें अब जोंकें नहीं हैं। वहाँ जोंकोंके मरनेकी घड़ी आजसे सत्ताईस बरस पहले बीत चुकी, लेकिन बाकी पाँच भागमें जोंकें अब भी हैं और बड़े जोरसे। यही समझ लो कि सिर्फ एक सूबामें पाँच-छः महीनेके भीतर साठ-साठ लाख आदमियोंकी जान ले लेना बतला नहीं रहा है, कि वह कितनी भयंकर है।

सन्तोखी—हाँ भैया! हम तो भगवानसे रोज मनाते हैं कि कब यह जोंकें जाएँगी।

दुखराम—फिर सन्तोखी भाई, तुमने भगवान का नाम लिया।

सन्तोखी—दुक्खू भाई, नाराज मत हो। न हमने भगवानसे अवतार लेनेके लिए कहा और न पाव-पियादे दौड़नेके लिए। भैयाकी बात हमें ठीक मालूम होती है; भगवान इतनी गाढ़ी नींदमें सोये हैं, कि लाख दो लाख बरसमें भी उनके जागनेकी उमेद नहीं है।

दुखराम—वह सदाके लिए सो गए हैं सन्तोखी भाई! मैं तो यही मानता हूँ।

भैया—तो दुक्खू भाई जोंकोंकी बाल-लीला और पहिलेकी कथा मैं बहुत सनछेपमें कहूँगा, पीछेकी कथाको तुम्हें जियादा सुनना चाहिए!

दुखराम—हाँ भैया, पीछे ही की जोंकोंसे तो हमें पाला पड़ा है।

भैया—मैंने बतलाया था कि पहिले इसतिरी मुखया होती थी, सारा परिवार उसका होता था, सबको ठीकसे रखना, सबकी देख-भाल करना उसीका काम था। पचीस, पचास या सौका जो भी परिवार होता, उसकी मुखया या महामातर इसतिरी होती थी। कभी दो-दो परिवारोंमें खूँन-खराबी भी होती थी।

दुखराम—खून-खराबी क्यों होती थी भैया, वहाँ तो जोंकें नहीं थीं।

भैया—जंगलके लिए झगड़ा हो जाता था। जिसका परिवार बढ़ जाता, उसे अधिक सिकार, अधिक फल बटोरनेकी जरूरत पड़ती थी!

सन्तोखी—तो वे उन्हीं पत्थर, सींग और लकड़ीके हथियारोंसे लड़ते होंगे?

भैया—वही तो उनके पास हथियार थे, उन्हींसे वे बैल, हरिन और भालूका सिकार करते थे, लेकिन जानते हो न जिसके पास आदमी ज्यादा, वही लड़ाईमें जीतता था, हथियार तो सबके पास एकसे थे। इसी वास्ते बलवान परिवारसे बचनेके लिए कितने ही छोटे-छोटे परिवार एक हो जाते हैं। इसको कहा जाने लगा जन।

सन्तोखी—हम लोग तो एक जन दो जन कहते हैं एक आदमी दो आदमीके वास्ते।

दुखराम—और जन-मजूर भी कहते हैं, कमकरके वास्ते।

भैया—लेकिन पहले-पहल जन एक आदमी या मजूरके लिए नहीं बोला जाता। उस वक्त कई परिवारोंको मिलाकर जो एक बड़ा परिवार बनता, उसीको जन कहते हैं।

दुखराम—माने कई महामाताओंके परिवारकों इकट्ठा कर दिया जाता था।

भैया—हाँ, इसीको जन कहते थे। जनवाले जुगमें भी जोंकें नहीं पैदा हुई थीं। जोंकें तब पैदा हुईं जब पसुओंको पालके मरद धनवाला बन गया, वह महापितर बन गया और दूसरोंकी कमाई उसे मुफतमें मिलने लगी। धीरे-धीरे आदमीने खेती करना सीखा, फिर चमड़ेका सीना, फिर सूत कातना और आखिरमें कपड़ा भी बुनने लगा। अब उसके पास ऐसी चीजें आने लगीं कि

जिन्हें वह बरस दो बरस रख सकता था। सिले चमड़ेको देकर खाने-पीनेकी चीजें बदल सकता था, कंबलसे भी अपने मनकी चोज़ बदल सकता था। जनके भीतर, या महापितरके बड़े गिरोहके भीतर कभी-कभी झगड़ा-वगड़ा हुआ, तो उसका फैसला तो आपस ही में हो जाता था लेकिन बाहरके लोगोंसे जब-तब लड़ाई हो पड़ती थी। खेती सुरू करनेके बाद तो आदमी घरमें रहने लगा।

सन्तोखी—पहिले क्या घरमें नहीं रहता था।

भैया—पहिले सिकार और फलके पीछे एक बनसे दूसरे बनमें घूमता रहता था। जब ढोरडंगर पोसने लगा, तो जहाँ चराईका सुभीता होता वहाँ चला जाता। लेकिन खेती सुरू कर देनेपर वह कैसे जाता?

दुखराम—तो खेती आदमीके लिए खूँटा हो गई, अब वह बँध गया।

भैया—हाँ बँध गया, अब उसने अपने लिए घर बनाया। दूसरे गरोहसे बचनेके लिए सब लोगोंने अपना घर पासमें बनाया, जिसमें दुसमनसे लड़नेके लिए जल्दी एक दूसरेकी मदद कर सकें। पास-पासके घरोंको गाँव कहा गया, क्योंकि ग्रामका मतलब है झुन्ड।

दुखराम—घरोंका झुण्ड, यही मतलब है न गाँवका?

भैया—हाँ, महापितरोंके जुगमें लड़ाई और बढ़ी, क्योंकि दुसमनको हरानेसे सब पसु, सारा धन उसे मिल जाता था। महापितर मुखिया था। उसको लूटका माल ज्यादा मिलता था और दूसरोंको थोड़ा-थोड़ा।

सन्तोखी—तो धनी-गरीबका फरक और बेसी हुआ। हारे लोगोंके बचे हुए आदमियोंको क्या करते थे?

भैया—पहिले तो, जो मरद मिलता, सबको मारते, जो औरत हाथ आती उन्हें अपनेमें बाँट लेते।

दुखराम—तो मरद कोई नहीं बचने पाता था?

भैया—हाँ मरदका परान नहीं छोड़ते थे। लेकिन पीछे खेतीके कामके लिए, चमड़े-जूतेके कामके लिए, कपड़ा-मिट्टीका बर्त्तन बनानेके वास्ते आदमियोंकी अधिक जरूरत पड़ने लगी।

दुखराम—बेसी माल तैयार हुआ तो बदलकर खूब बेसी माल हाथ लगेगा, यही सोचकर न भैया ?

भैया—हाँ, इसीलिए पहिले लड़ाईमें हारे सतरूको कैदी नहीं बनाते थे, कौन उसे घर बैठाकर खिलाता। लेकिन जब देखा कि आदमी हाथसे मेहनत करके अपने खानेसे दुगुना-तिगुना पैदा कर सकता है, तो हारे मरदोंको कैदी बनाने लगे। इन्हींको दास या गुलाम कहा जाता।

दुखराम—तो यह गुलाम दूसरे लोगोंमें बाँट दिए जाते होंगे ?

भैया—हाँ, अच्छे-अच्छे दास और दासी महापितरको मिलते, बाकीको और लोग बाँट-चोट लेते।

सन्तोखी—तो यह दास-दासी भी ढोरकी तरह ही हुए ?

भैया—वह भी मालिकके धन थे, वह मालिकके लिए काम करते थे। यह जुग हुआ गुलामीका।

दुखराम—जनु तबसे गुलाम बनानेका रवाज हुआ।

भैया—गुलामको मालिक खाना-कपड़ा देता था। नहीं देता तो वह मर जाता, फिर उसका नुकसान होता। जानते हो न दुक्खू भाई ! गुस्सा होनेपर बैलको मारते भी हैं, लेकिन इतने नहीं मारते कि वह मर जाय।

दुखराम—हाँ भैया ! कौन अपना नुकसान करेगा ?

भैया—गुलामोंके आनेसे अब कम्बल, जूता-चमड़ा और कई तरहकी चीजें बहुत इफरात बनने लगीं। लोग उन्हें आपसमें बदलने लगे। बदलनेके सुभीतेके लिए हाट लगने लगी। सब लोग अपना-अपना माल ले आते थे और जिसको जो लेना होता, उसे अपनी चीजसे बदल लेते थे। लेकिन कभी-कभी हाटमें आदमीको अपने कामकी चीज जल्दी नहीं मिलती या अपनी चीजके खाहिसमन्द नहीं मिलते, तो आदमीको बहुत हैरान होना पड़ता। सब काम-धन्धा छोड़कर दो-दो, तीन-तीन दिन हाट अगोरना पड़ता। फिर लोगोंने गाँव पीछे एक-दो आदमीके जिम्मे अपनी चीज लगाके छुट्टी ली। जो आदमी हाट अगोरता, उसने दूसरोंके लिए भी अपना काम-धन्धा छोड़ा, इसलिए सब लोग अपने मालमेंसे उस आदमीको कुछ दे देते थे।

दुखराम जैसे भँड़भूजाको भूननेके लिए हम लोग थोड़ा-थोड़ा अनाज दे देते हैं।

भैया—हाँ, तो पहिले तो हाट अगोरनेवाला अपने गाँवके दो-चार घरों-की जिम्मेवारी लेकर बैठता था और सो भी कभी-कभी। फिर वह गाँव भरकी जिम्मेवारी लेने लगा, और बराबर हाटमें बैठा रहता। उसका रूप अब कुछ-कुछ बनिया जैसा था। लेकिन अभी दो आदमियोंकी चीजोंकी अदला बदली-में वह खाली एक ओरका बिचवई था, फिर वह दोनों ओरका बिचवई बन गया। जब उसके पास बेसी नफा जमा हो गया, तो वह हर तरहकी चीजोंको अपने पास रखने लगा। इस चीजको मँहगा किया और दूसरी चीजको सस्तेमें खरीदा, अब वह पूरा बनिया हो गया।

सन्तोखी—लेकिन रोजिगार तो था चीजका चीजसे बदलना ही न?

भैया—लेकिन जब ताँबा मिल गया, लोगोंने देखा कि उसकी धार पत्थर और हड्डीसे ज्यादा तेज है, उसकी मार आदमी और पेड़को काटकर गिरा सकती है, तो सभी लोग ताँबेके हथियार रखना चाहने लगे। लेकिन ताँबा पैदा होता था, थोड़ा चाहनेवाले ज्यादा थे। एक दूसरेने चढ़ा-ऊपरी करके ताँबेका दाम और बढ़ा दिया। दस मन गेहूँके लिए दस सेर ताँबा काफी समझा जाने लगा। अब बहुतसे लोग दस मन गेहूँ ढोकर ले जानेकी जगह दस सेर ताँबा ले जाने लगे। एक छटाँक ताँबा भी पास रहनेसे अढ़ाई सेर गेहूँ ढोनेका काम नहीं था।

सन्तोखी—तो ताँबा पैसे-रुपयेका काम देने लगा।

भैया—हाँ, पहले-पहल पैसे-रुपयेने इसी सरूपमें औतार लिया। महा-पितर गुलामोंके कमाए धनसे और मोटी जोंक बन गया और इधर बनिया दूसरी जोंक तैयार हो गया।

दुखराम—उस बखत जो जोंकें न पैदा हुई होतीं भैया!

भैया—तो बहुत बुरा हुआ होता दुक्खू भाई! गाड़ी ही रुक जाती आदमी पत्थर और सींगके हथियार ही चलाता रहता और हारे दुसमनको बीन-बीनकर मारता रहता।

सन्तोखी—तो जोंकोंने कुछ फायदा भी किया था।

भैया—जो फायदा न पहुँचाया होता, तो जोंक पैदा ही नहीं होतीं। लेकिन देख रहे हो न, जोंकोंकी दो जाति अब तैयार हो गई।

दुखराम—गिरोहका सरदार और बनिया, यही दोनों न भैया?

भैया—ठीक! गुलामोंके जुगसे हम और आगे बढ़े। महापितर या सरदार तो भी अभी साथ चटाईपर बैठनेवाले चौधरी थे, लेकिन उसके पास धन ज्यादा था, लौंडे गुलाम ज्यादा थे। वह खिला-पिलाके बिरादरीके लोगोंमेंसे भी कितने हीको फोड़ लेनेमें सफल हुआ। वही आगे चलकर राजा बन गया।

सन्तोखी—तो अब राजसी ठाट और हजार हजार रनिवासोंका युग आ गया।

भैया—अब बड़ी ही मोटी और बड़ी ही भयंकर जोंक तैयार हो गई। वह सभी छोटी-बड़ी जोंकोंको अपने छतरछायामें रखने लगी। लेकिन लोग तो समझते थे कि यह कल तक हमारी बिरादरीका चौधरी था, एक साथ चटाईपर बैठता था। राजाने समझा कि हमारी नींव अभी मजबूत नहीं है, जातिका चौधरी होनेसे तैंतीसों कोटि देवताके सामने बलि देना, पूजा करना, महापितर हीका काम था। वह ओझा भी था, पुरोहित भी था और जातिका चौधरी भी।

दुखराम—ओझा भी था! जोंक ओझा भी हो जाय, तो खैरियत नहीं।

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! महापितर अपने कामकी जो कोई बात करवाना चाहता, तो आँख लाल-लाल करके सिर हिला देवताके नामसे कह देता। और उस समय आजकलसे बहुत बेसी देवता थे।

दुखराम—लोग भी बहुत सीधे-सादे रहे होंगे भैया?

भैया—बहुत सीधे सादे लेकिन जब लड़ पड़ते तो उनका दिल भी बहुत कठोर होता। लेकिन महापितर या जातिका बड़ा चौधरी एक खूनकी बिरादरी-का ही अगुआ होता था। राजाकी तागत ज्यादा थी, हथियार भी चोखे थे। वह अपने धनका लोभ दिखा बिरादरीमें बेसी फूट डलवा सकता था। उसको एक बिरादरीपर संतोख नहीं हुआ, वह कई बिरादरियोंको हराकर उनका राजा

बन गया।

दुखराम तो जमात बढ़ती ही रही?

भैया—हाँ, माईसे महामाईकी जमात बड़ी थी, महामाईसे पितरकी जमात बड़ी थी, पितरसे सैकड़ों गुलाम रखनेवाले महापितरकी जमात बड़ी हुई। और महापितरसे भी बड़ी जमात राजा की बनी। लेकिन महापितर तक कुछ भाई-चारा था। अब राजाने बिरादरियोंसे अपनेको ऊपर कहना सुरू किया। लेकिन लोग कैसे मान लेते, इसलिए उसने ओझा-सोखासे मदद ली। किसी बड़े होसियार ओझाको अपना पुरोहित बनाया। उसने देवताके नामसे राजाको देवता बनाना सुरू किया, इसके लिए राजा पुरोहितको भेंट चढ़ाने लगे।

दुखराम—तो भैया! पुरोहित एक और बड़ी जोंक पैदा हो गया।

भैया—देखा न दुक्खू भाई! कैसी हमारी-तुम्हारी आँखपर एकके बाद एक नए-नए पट्टर बाँधे जाने लगे।

संतोखी—जोंकोंने चारों ओर अपना जाल फैला दिया।

भैया—और कमेरे उस जालमें फँसने लगे। उनका बल घटने लगा। कमेरे देस भरमें बिखरे हुए थे, उनका कोई मजबूत दल नहीं था। राजाने लोभ देकर कमेरोंके बहुतसे लड़कोंको सिपाही बना लिया।

दुखराम—इसीको कहते हैं काँटेसे काँटा निकालना। कमेरे जिसमें कान-पूँछ न हिलाएं, इसलिए उन्हींके लड़कोंके हाथमें तलवार दे दी।

भैया—दुनियामें राजा लोग खूब मजबूत होने लगे। अपना राज बढ़ानेके लिए, और बेसी लोगोंका खून चूसनेके लिए एक दूसरेसे लड़ने लगे, फिर बड़े-बड़े राज कायम हुए। दूर-दूरके देसोंपर हाथ फैलाये। पुरोहितोंका बल और धन भी बढ़ा, व्यौपारियोंको व्यौपार भी खूब चमका। इसी बीचमें लोहा निकल आया और खूब तेज-तेज तलवारें बनने लगीं। पत्थरके रूपमें पड़ा सोना-चाँदी भी अलग करके निखालिस रूपमें तैयार होने लगा। असरफी रुपया और ताँबेका पैसा बनने लगा। व्यौपारमें और तरक्की हुई। लखपती सेठ जगह-जगह दिखलाई देने लगे। सेठ, पुरोहित और राजाका खूब गठबंधन था।

दुखराम—चोर-चोर मौसियाउत भाई, सभी जोंकें मिलकर कमेरोंका खून चूसने लगीं।

भैया—व्यौपारी-कारीगरों-किसानोंके पैदा किए हुए धनको दुगुने-तिगुने दामपर दूर-दूर देसोंमें ले जाकर बेंचने लगे। गङ्गामें बड़ी-बड़ी नाँव, समुन्दरमें बड़े-बड़े जहाज चलने लगे। बढ़िया कपड़ा, बढ़िया गहना और सौककी हजार तरहकी चीजोंकी माँग बढ़ी। कमेरों, मजूरों, किसानोंको इतनी ही मजूरी मिलती, जिसमें उनका बंस खतम न हो जाय, लाख दो लाख भूखे मर जायँ तो उसकी कोई परवाह नहीं, लेकिन देसके देसमें कोई दिया-बत्ती जलाने वाला न रह जाय इस बातको जोंकें पसन्द नहीं करतीं। जब जोंकें प्रजापर दया करनेकी बात कहती हैं, तब उनका मतलब यही है कि चिराग न बुझ जाय।

सन्तोखी—उनका अपना मतलब पूरा होना चाहिये, दुनिया जाये चूल्हा भाँड़ में!

भैया—व्यौपारसे बनियोंको खूब फायदा होने लगा जिसमें राजाको भी भाग मिलता। हर राजा अपने बनियोंकी सहायता करनेके लिए तैयार रहता था। काठके बड़े-बड़े जहाज कपड़ेके बड़े-बड़े पाल उड़ाते समुन्दरको छान डालते थे। नफाकी कुछ न पूँछो। ढाकाका मलमल बिलायतमें जाकर दुगुने-तिगुने नफामें बिकता था। यूरुपके बनियोंने देखा कि इस व्यौपारसे हमें भी नफा उठाना चाहिए। पहिले इटलीवाले व्यौपार करने लगे फिर पुर्तगालवाले बनिये चढ़ दौड़े। उसके बाद तो हालैण्ड भी, फ्रांस भी, इंग्लैण्ड भी कैसे पीछे रहता। सब जगहके बनियोंने अपनी-अपनी गुट्ट बनाई। उनके राजाओं-ने मदद दी। वह काले लोगोंके देसकी ओर दौड़ पड़े। लेकिन जो समुन्दरमें जहाज दौड़ाने और मोल-तोल करनेकी ही चतुराईसे ही काम चल जाता, तो हिन्दुस्तानके बनिये भी पीछे नहीं रहते।

संतोखी—तो उनके पास और कौनसी बात थी भैया, जिससे वह दुनियाके राजा बन गए?

भैया—उनके पास बारूदका हथियार था, अच्छी-अच्छी तोपें, बन्दूकें,

तमन्चे ।

दुखराम—क्या हमारे देसके लोग बारूदको नहीं जानते थे ?

भैया—हमारे देसवाले तो नहीं जानते थे, लेकिन हमारे पड़ोसी चीनवाले जानते थे ।

सन्तोखी—तो चीनवालोंने क्यों नहीं बारूदसे काम लिया ?

भैया—वह समझते थे कि यह आतिसबाजीके खेलके ही कामकी है । चंगेजखाँ नामका एक मंगोल सरदार था, उसने अपने घुड़सवारोंकी मददसे चीनको जीत लिया । बारूदकी बन्दूकें पहले-पहल उसीने बनवाईं । उसकी फौज दुनियाको जीतती हुई यूरुपमें घुस गई । मंगोलोंसे ही यूरुपवालोंने बारूदका भेद पाया, उन्हींसे ही यूरुपवालोंने किताब छापनेका ढंग सीखा ।

सन्तोखी—तो किताब छापनेकी विद्या यूरुपवालोंको पहले नहीं मालूम थी ?

भैया—चीन छोड़कर किसीको नहीं, हिन्दुस्तानको भी नहीं मालूम थी । हमारे यहाँ भी उल्टा अच्छर पोतकर लोग अपनी-अपनी मुहर बनाते थे, लेकिन उन्हें यह सूझ नहीं आई कि पूरी किताबको लकड़ीपर उलटा खोदकर छापा जा सकता है ।

सन्तोखी—तो चीनी लोग लकड़ीपर उलटा अच्छर खोदकर किताब छापते थे ।

भैया—हाँ, फिर यूरुपवालोंने सोचा कि लकड़ी पर एक किताबको उल्टा खोदनेसे अच्छा यह होगा कि एक एक अच्छर उल्टा बनाकर रख लिया जाय और उतने ही अच्छरोंके जोड़नेसे तो बड़ीसे बड़ी पोथी बन जाती है, इस तरह एक बारके बनाये उल्टे अच्छर बहुतसी किताबोंके छापनेका काम देंगे लकड़ीका अच्छर टिकाऊ नहीं होता, इसी वास्ते उन्होंने सीसेका अच्छर बनाया ।

सन्तोखी—तो यूरुपवालोंने दूर तक सोचा !

भैया—बारूदके हथियारोंके बारेमें भी यूरुपवालोंने बहुत दूर तक सोचा और अच्छे-अच्छे हथियार बनाए । आज-कलके इतने अच्छे-अच्छे हथियार

तो नहीं, लेकिन उस समय जो हथियार दुनियामें बनते थे, उनसे यह बहुत अच्छा था।

दुखराम—तो भैया। पत्थर-लकड़ीके हथियारसे ताँबेकी तलवारोंका जमाना आया, फिर लोहेकी तलवारें, तीर और भाले, फिर बारूदकी तोपें ढलने लगीं?

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! ताँबे, लोहे और बारूदके हथियारोंपर जोकों ने ही पूरा कबजा किया।

दुखराम—तभी तो हजार आदमीकी नकेल एक आदमीके हाथमें है।

भैया—बिलायतके व्यौपारी भी हिन्दुस्तानके व्यौपारीके साथ व्यौपार करने लगे। खूब दुगुना-चौगुना नफा कमाने लगे। हमारे यहाँके राजा, नवाब आपसमें लड़ रहे थे। उन्होंने बिलायतवालोंके हथियारोंको बहुत मजबूत देखा। वह गोरोंको लड़नेके लिए किरायेपर रखने लगे। गोरे व्यौपार भी करते थे और किरायेपर लड़ते भी थे।

सन्तोखी—हमारे देसवाले अपने ही क्यों नहीं उन हथियारोंको बनाने लगे?

भैया—हमारे यहाँ तो सनातन धरम चलता है न? जो चीज जितनी ही पुरानी है, उतनी ही ठीक है। जब नाक तक पानी आ जाता है, तब सनातन धरम का नसा टूटता है। लेकिन "अब पछताये होत का जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत"। गोरोंने कुछ लड़ाइयोंमें अपने हथियारोंकी सफलता देखा, हिन्दुस्तानवालोंको एक-दूसरेके साथ खूब लड़ते देखा; फिर बिलायती बनियों-की कम्पनीने व्यौपारके साथ-साथ देस जीतनेका काम भी अपने हाथ-में ले लिया!

सन्तोखी—तो इस तरह हिन्दुस्तानमें कम्पनी बहादुरका राज कायम हो गया?

भैया—हाँ, बिलायती बनियोंके गुटको कम्पनी बहादुर कहते हैं।

दुखराम—मैं तो समझता था कि कम्पनी बहादुर कोई राजा है।

भैया—कम्पनी कहते हैं, गुट्टको दुक्खू भाई! १७५७ ई० से कम्पनीने

हिन्दुस्तानमें अपने राजकी नींव मजबूत कर ली और तबसे आज तेरह कम दो सौ बरस हुए।

दुखराम—राजा भी जोंक, बनिया भी जोंक और जब वही आदमी राजा और बनिया दोनों हों, तो देहमें कहाँसे खून बच पाएगा !

भैया—आज सौ बरस हुये, मरकस बाबाने लिखा था कि हिन्दुस्तानके छ करोड़ आदमी जो कुछ साल भरमें कमाते हैं, वह सब बिलायती कम्पनी बिलायत ढो ले जाती है।

सन्तोखी—छ करोड़ आदमीकी सारी कमाई।

भैया—उस समय हिन्दुस्तानमें बीस करोड़से कम ही आदमी रहते थे; इसलिए हर तीन आदमीमें एक आदमी बिलायतवालोंके लिए कमाता था। और इस रकममें वह धन सामिल नहीं है, जो कम्पनीके नौकर घूस-रिसवत, चोरी-ठगीसे जमा करते थे।

दुखराम—यह मरकस बाबा कौन हैं भैया ?

भैया—मरकस बाबाके बारेमें दुक्खू भाई ! फिर हम किसी दिन बताएँगे। मरकस बाबा हीने जोंक-पुरानका परदा खोला। उनके ही परतापसे कमेरोंकी आँखका पट खुला। उन्होंने ही बतलाया कि दुनियाको नरक बनानेका कारन यही जोंकें हैं। उन्होंने ही रास्ता दिखलाया कि कैसे जोंकोंसे पिण्ड छूटेगा, और दुनिया नरकसे सरग बनेगी।

सन्तोखी—तबतो मरकस बाबा कोई औतार हैं भैया ?

दुखराम—किसके औतार हैं सन्तोखी भाई ? उन्हींके तो नहीं जो छीर सागरमें सदाके लिए सो गए हैं।

भैया—सन्तोखी भाईका मतलब है कि मरकस बाबा बहुत भारी परउपकारी जीव रहे हैं और उनकी सूझ ऐसी रही, जैसीकि और आदमियोंमें देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—हाँ भैया ! यही मतलब है, क्या करें जो लबज लोग बोलते हैं, जान पड़ता है उसीमें बहुत खामी है।

दुखराम—खामी ही नहीं बहुत धोखा है सन्तोखी भाई ! और यह सब

धोखा जोंकोंका फैलाया हुआ है। अपने जान जोंकोंने हमें साँस लेनेका भी कोई रास्ता नहीं छोड़ा था। लेकिन उनको क्या पता था कि कमेरोंका पच्छ करनेवाले मरकस बाबा दुनियामें पैदा होंगे। भैया! तो जो तुम हम लोगोंके आँखका पट्ट खोल रहे हो, यह सब मरकस बाबा हीने बताया है?

भैया—हाँ, दुक्खू भाई! दुनियामें इतना बड़ा नबज पहचाननेवाला कोई वैद नहीं हुआ। उसने दुनियाके रोगका कारण बतलाया, फिर दवाई भी बतलाई। उस दवाईको दुनियाके छठे भागके लोगोंने खाया, वह आज निरोग हो गए हैं। मरकस बाबाने यह भी बतलाया कि अब तक जितनी जोकें पैदा हुईं थीं, अब उन सबकी कान काटनेवाली सबसे बड़ी जोंक दुनियामें आ गई। इसको घड़े दो घड़े खूनसे सन्तोख नहीं हो सकता, इसके लिए समुन्दरका समुन्दर खून चाहिए।

सन्तोखी—वह सबसे बड़ी जोंक कौन है भैया?

भैया—पहले जनम होता है तब नाम रखा ज ता है। सुनो जनमकी बात। बिलायती बनिये हिन्दुस्तानमें राज और ब्यौपार दोनों करने लगे—बल्कि राज भी वह ब्यौपार हीके लिए करते हैं। हिन्दुस्तानका माल वह खरीद-खरीदकर और बहुत कुछ नजर-सौगातमें ढो-ढोकर बिलायत ले जाने लगे। हिन्दुस्तानका कपड़ा आजसे सौ बरस पहिले भी बिलायत बहुत जाता था। हिन्दुस्तानके धनसे बिलायत कितना धनी हो गया, यह इसीसे समझ सकते हो, कि जहाँ १८१४ ई० में बिलायतकी सारी सम्पत्ति ३० अरब रुपया (२३० करोड़ पौण्ड) थी, वहाँ ६१ साल बाद १८७५ ई० में बढ़कर ११ खरब ५ अरब रुपया (८५०० करोड़ पौण्ड) हो गई। इस धनकी जो इतनी बढ़ती हुई, उसमें थोड़ा ही बहुत और जगहसे आया बाकी अधिक भाग हिन्दुस्तानसे गया।

दुखराम—माने अरब खरब रुपया हमी लोगोंके देहका खून न खींच करके गया?

भैया—इसे भी क्या पूछना है? कम्पनी बहादुरने धरम कमानेके लिए थोड़े ही हिन्दुस्तानको अपने हाथमें लिया है। बंगालमें कम्पनीका राज कायम

होनेके बाद १७६४-६५ ई० में जहाँ १ करोड़ ६ लाख ३४ हजार रुपया (८ लाख १८ हजार पौण्ड) मालगुजारी आई थी, वहाँ दूसरे ही साल वह गुना कर दी गई (१४ लाख ७० हजार पौण्ड) और कम्पनीके ६३ वर्षों के राज्यमें मालगुजारी बीस गुना बढ़ गई । और जानते हो इसका फल ? अकाल हर दूसरे-तीसरे साल दौड़ने लगे । कम्पनी बहादुरके राज कायम होनेके छठवें ही साल (१७७०) में बंगालमें एक करोड़ आदमी भूखों मर गए ।

दुखराम—भैया ! तुम चाहे कुछ भी दबाओ और सन्तोखी भाई कितना ही नाराज हों, मैं तो समझता हूँ कि भगवान कहीं भी नहीं हैं, और सागर-में भी नहीं हैं । कभी पैदा भी हुए हों तो उनको मरे-मिटे हजारों बरस हो चुके ।

सन्तोखी—इतना तो मैं भी कहूँगा दुक्खू भाई, कि एक-एक सालमें एक-एक करोड़ या साठ-साठ लाख आदमियों को जोंकें चूसकर मार डालें फिर भी भगवान औतार न लें, तो उनके सब औतारोंकी कथा झूठी है ।

भैया—हिन्दुस्तानसे जो धन दुहा जाता था, उसमें कपड़ेका भी बहुत भाग रहता था । विलायतके कुछ व्यौपारियोंने सोचा कि यदि हम हिन्दुस्तान-से भी सस्ता और अच्छा कपड़ा दे सकें, तो उल्टी गंगा बहा देंगे ।

सन्तोखी—मानो कपड़ेके नइहरमें कपड़ा बनाकर भेजेंगे ।

भैया—इतना ही नहीं, नइहरकी ही रुई लेकर, क्या कि विलायतमें कपास नहीं पैदा होती है । विचार करनेवालोंने बुद्धि लड़ानी शुरू की । अठारहवीं सदीके अन्त तक भापके इंजनका पता लग गया और कपड़े बुनने-के करघे भापसे चलाये जाने लगे । मशीनकी चीज हाथकी बनी चीजसे सस्ती होती है ।

दुखराम—यह क्यों होता है भैया ? हम देखते हैं कि मिलकी बनी चीज देखनेमें बुरी नहीं होती मजबूत भी होती, फिर सस्ती क्यों होती है ?

भैया—आदमीका जाँगर (परिश्रम या मेहनत) जितना लगता है, चीज-का दाम भी उतना ही होता है । गाढ़ा कपड़ा सस्ता होता है और बनारसी

किमखाब बहुत मँहगा, क्यों कि गाढ़ेमें आदमीका उतना जाँगर नहीं लगता जितना कि किमखाबमें। अब हाथके करघेपर पुराने ढंगसे कपड़ा बुननेमें एक आदमी पाँच गजसे ज्यादा कपड़ा नहीं बुन सकता और वह भी हाथ सवा हाथ अरजका। और कपड़ेकी मिलमें एक आदमी दोसे चार करघे तक सँभाल सकता है।

दुखराम—हाँ भैय। उसमें हाथसे ढरकी थोड़े ही चलानी पड़ती है। सब तो अपने ही आप होता है, कहीं सूत टूट जाता है तो उसे जोड़ देना होता है।

भैया—बुनाई कितनी तेजीसे होती है? एक दिनमें एक आदमी करघों-के मुताबिक सौ, डेढ़ सौ, दो सौ गज तक कपड़ा बिन सकता है। १०० गज लेने पर भी हाथके करघेसे जितना काम १० आदमी करेंगे मशीनपर उतने कामके लिए सिर्फ एक आदमी चाहिए। अब तुम्हीं बतलाओ १० आदमी के जाँगरसे बना कपड़ा सस्ता होगा या एक आदमीके जाँगरसे बना उतना ही कपड़ा?

सन्तोखी—एक आदमीके जाँगर वाला भैया! क्यों कि उसमें मजूरी कम देनी पड़ेगी!

भैया कलवाले कारखानोंने हाथकी कारीगरीको तबाह कर दिया, इसी-लिए कि कल लगानेसे थोड़े ही आदमी ज्यादा काम कर सकते हैं। कुछ दिनों पहले जानते हो न, चीनी और गुड़ करीब-करीब एक भाव बिकते थे? वह इसीलिए कि मिलोंमें चीनी बनानेमें बहुत कम आदमी लगते हैं। देखा नहीं है, एक ओरसे बोझाकी बोझा उख खींची जा रही है और पच्चीसों कलोंमें होते दूसरे छोर पर दानादार सफेद चीनी बोरेमें बन्द होती जा रही है।

दुखराम – कल-मसीनसे भैया, चीज बहुत सस्ती तैयार होती है, यह तो हम रोज देखते हैं।

भैया—सस्ती ही नहीं होती दुक्खू भाई! वह इतनी इफरात होती है कि अगर मिलवालोंको सस्ती पड़ जानेसे घाटा होनेका डर न होता, तो थोड़े ही जोर लगानेसे आदमी पीछे एक मन चीनी हर साल हिन्दुस्तानमें बाँटी जा

सकती है। कल-मसीनने आदमीके खाने, पहिनने, रहनेकी चीजोंको इतना इफरात कर दिया है, कि जो जोंकें बाधा न डालें तो दुनियामें एक भी आदमी भूखा-नंगा नहीं रह सकता। लेकिन इस बातको अभी हम आगे कहेंगे दुक्खू भाई! अभी तो यही हम बतला रहे थे कि सबसे बड़ी जोंक कैसे पैदा हुई। जब कल-मसीनों को दिमागवालोंने सोचकर बनाया, तो व्योपारी तुरंत दौड़ पड़े। उन्होंने सोचा कि अब धुनिया, जुलाहा, लुहारके पीछे दौड़नेकी हमें कोई जरूरत नहीं। हम रुई खरीद कर कारखाने लाएँगे और कल उसका सूत कातकर कपड़ा बना देगी। इसी समय रेल और जहाजवाले इंजन भी बन गये, इसलिए माल एक जगहसे दूसरी जगह भेजना भी सस्ता हो गया। व्यापारियोंके पास करोड़ोंकी पूँजी थी, दिमागवालोंकी सोची चीजको तुरंत ले लिया और सब तरहके लाखों कारखाने खोल दिये। अब नफाका क्या ठिकाना? किसानसे रुई खरीद रहे हैं, उससे भी कारखानेवालेको नफा। रेलसे भेजते हैं, रेल भी कारखानेवालोंकी है, उसका भी नफा। जहाजसे सामान बिलायत भेजते हैं, उसका किराया लगता है; जहाज भी कारखानेवालोंका फिर कपड़ेकी मिल भी कारखानेवालोंकी है, उसका भी नफा है उन्हींको। उसके बाद कपड़ा हिन्दुस्तानको लौटता है, वहाँ भी हर जहाज और रेल में हर जगह पूँजीपतिका नफा भरा हुआ है। पुराने व्यापारी इतना नफा नहीं कमा सकते थे, क्योंकि वह सिर्फ तैयार मालको एक जगहसे दूसरी जगह भेजते थे और आजके यह पूँजीपति कच्ची रुईमें हाथ लगानेसे लेकर हर पग पर नफा कमाते हैं।

सन्तोखी—यह ठीक कहा भैया! हम लोग रुपया पीछे पैसा दो पैसा बहुत समझते हैं और यह तो आठ आनेके कपासमें चौदह रुपयेकी धोती बेचते हैं, फिर इनके नफेका क्या पूछना।

भैया—बिलायतवाले पूँजीपति ...।

दुखराम—पूँजीपति क्या है, सो अच्छी तरह नहीं समझा भैया?

भैया—पूँजी तो समझते हो दुक्खू भाई?

दुखराम—रुपया-पैसा, जमा-पूँजी यही न भैया?

भैया — हाँ, यही रुपया-पैसा लेकिन जो रुपया-पैसा कल कारखानेमें लगा है, जिसके कारण पूँजीवाला आठ आनेकी कपासको चौदह आनेमें बेचता है, उसे पूँजी कहते हैं। और जो अपनी पूँजीसे इन कल-कारखानोंको खड़ा करते हैं उन्हींको कहते हैं पूँजीपति। पूँजीपतियोंके नफेके सामने व्यौपारियोंका नफा कुछ नहीं है।

सन्तोखी—ठीक कहा भैया! जो मारवाड़ी, सेठ लोग खाली व्यौपार करते थे, अब सब अपनी चीनी-मिल, कपड़ा-मिल, जूट-मिल, सीमेन्ट-मिल, कागज-मिल खोलते जा रहे हैं। अब उनका ध्यान कोई दूसरी ओर जाता ही नहीं।

भैया—बिड़ला, डालमिया सिंघानियाँ, एक ही पीढ़ी पहले खाली व्यौपारी थे, दूसरे कारखानेका माल खरीद कर बेंचते थे, थोड़ासा उन्हें भी नफा हो जाता था। लेकिन अब देख रहें हो न? बिड़लाके कितनी ही चीनीकी मिलें, कपड़ा और जूटकी मिलें हिन्द-बाइसिकल कारखाना और अब मोटरका भी कारखाना रहा है। पूँजीपतिके नफेके सामने व्यौपारीका नफा कुछ भी नहीं है दुक्खू भाई!

दुखराम—मैंने तो एक ही बात गाँठ बाँध ली है। जो आठ आनेके कपासको लेकर उसे १४) की धोती बना सकता है, उसके नफेके बारेमें क्या कहना है।

भैया—बिलायतवाले पूँजीपति दुनिया भरका धन लूटकर अपने घरमें गाँज रहे थे, इसे देखकर दूसरे मुल्कवाले कैसे चुप रहते? फ्रांसने भी कारखाने खोले, अमेरिकाने भी कारखाने खोले, रूसने भी कारखाने खोले।

सन्तोखी—जापानने भी कारखाने खोले।

भैया—हाँ जापानने भी खोले-लेकिन अभी हमको जो समझाना है, उसमें जापानका उतना काम नहीं है। बिलायतने कारखाना खोला था। पहिले तो दुनियामें और किसी मुल्कमें कारखाने खुले ही न थे, इसीलिए 'चारों मुलक जगीरीमें' उसीके था? लेकिन जब फ्राँसने कारखाना खोला तो दुनियामें जिन-जिन मुल्कोंको फ्रांसीसियोंने अपना गुलाम बनाया था, वहाँ फ्रांसके कारखानेका ही माल बिक सकता था। अमेरिकाके पास अपना ही

आठ आनाका चौदह रुपया बनायेंगे। पूँजीपति तभी इच्छा भर खून पीने पायेंगे। बल्कि इच्छा भर मत कहो, यदि समुन्दर भर भी खून मिले, तो भी इन जोंकोंकी इच्छा पूरी नहीं होगी। और इन जोंकोंके खूनके प्यासके लिए तीस साल पहिलेवाली लड़ाईमें इतने लोग मरे और घायल हुए:—

	मरे	घायल
अँगरेजी राज्य	१०,८६,६१६	२४,००,६८८
फ्रान्स	३०,६२,३८८	४०,६०,०००
जर्मनी	२०,५०,४६६	४२,००,०३०
अमेरिका	१,१५,६६०	२,०५,७००

यह है जोंक-पुरानका भयानक अध्याय लेकिन यही आखिरी अध्याय नहीं है।

अध्याय ४

जोंकोंके दुसमन मरकस बाबा

दुखराम—आज तो भैया मरकस बाबाके बारेमें कुछ बताओ!

सन्तोखी—हाँ, भैया जोंकोंकी बात सुन करके तो हमारा दिल खौलने लगा। उनके सामने गाय, भैंसकी देहमें लगनेवाली जोंकें तो कुछ भी नहीं।

भैया—देखा न सन्तोखी भाई, जोंकोंकी सकल-सूरत चाहे कितनी ही देखनेमें सुन्दर हो, उनके आस-पास कितनी ही दया-धरमकी बात चलती हो, लेकिन उनके चारों ओरकी धरती खूनसे लथपथ रहती है।

सन्तोखी—इनके बड़े-बड़े महलोंके नीचे न जाने कितनी जिन्दा लासें पड़ी हुई हैं और पग पगपर उनके खूनकी प्यास बढ़ती ही गई है।

भैया—हाँ पहिले बिरादरी-बिरादरीकी छोटी-मोटी लड़ाई होती थी फिर राजाओंकी बड़ी-बड़ी लड़ाई हुई। लेकिन इन जोंकोंकी लड़ाइयोंके सामने तो पहिलेकी लड़ाइयाँ कुछ भी नहीं? आज भी जो इतनी बड़ी लड़ाई हो रही है सो भी उन्हीं जोंकोंके कारन। जबसे जोंकोंका त्रास बढ़ा तभीसे कितने ही दया

रखनेवाले महात्मा सोचने लगे कि कैसे दुनियाका दुख कटे। उन्होंने सोचा कि जब तक धनी गरीब रहेंगे, तब तक लोगोंको सुख-चैन नहीं मिलेगा, क्योंकि धनी होते ही हैं बहुतसे लोगोंको गरीब बनाकर। जो धनी-गरीबका भेद मिटा दिया जाय तो दुनियामें इतना दुःख नहीं रह जायगा।

दुखराम—क्यों भैया, ऐसे महात्मा लोग दुनियामें पहिले भी पैदा हुए हैं?

भैया—पैदा हुए, लेकिन उन्हें ठीकसे नबज नहीं मालूम हुई। वह रोगके असली कारणका पता नहीं लगा सके।

दुखराम—कारणका पता नहीं लगेगा तब दवा कैसे बतायेंगे!

भैया—खूनके भीतरके रोगको पानीसे धोनेसे क्या होता है? अढाई हजार बरस पहले हमारे ही देसमें बुद्ध नामके महात्मा हुए थे?

सन्तोखी—वही बौधावतार भैया?

दुखराम—बस सन्तोखी भाई! मालूम पड़ता है कि औतार तुम्हारे मुँहसे नहीं छूटेगा। कौन औतार? किसका औतार? कहीं उसका पता भी है? बिलायती बनियोंने एक बरसमें एक करोड़ आदमियोंको मार डाला, लेकिन औतारका कहीं पता नहीं! जोंकोंने पारसाल साठ लाख आदमियोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला, लाखों तिरियोंसे इज्जत बेंचवाई, तब भी उस औतारका पता नहीं! छोड़ो औतारकी बात। औतार होता है राजाओं-रानियोंके। दुनिया भरकी जोंकोंको बचानेके लिए हमें औतारसे कोई मतलब नहीं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! बुद्धने अपनेको किसीका औतार नहीं कहा, वह मानुख थे और मानुखोंका हित चाहते थे। उन्होंने सोचा कि सारी दुनियाको धनी-गरीबका भेद मिटानेके लिए तैयार करना मुस्किल होगा, राजा और सेठ दोनों बड़ी-बड़ी जोंकें खिलाफ हो जायँगी; इसलिए उन्होंने चाहा जो थोड़ेसे समझदार और त्यागी आदमी अपने भीतरसे धनी-गरीबका भेद मिटाकर अपने सुन्दर जीवनसे दिखला दें, तो क्या जानें दूसरे लोग भी पसन्द करें और उसी रास्तेपर चलें।

सन्तोखी—तो बुद्धने ऐसे लोगोंकी जमात बना ली थी, जिसमें धनी-

गरीबका कोई भेद न था ?

भैया – हाँ, ऐसे औरत-मरदोंकी जमात बनाई थी, जिसमें न कोई धनी था न गरीब । उनका घर-द्वार, खटिया बिछौना, खाना-पीना सब साझेमें रहता । बाभन हो या चंडाल उनके भीतर कोई जात-पाँतका भेद न था, सब एक साथ खाते, एक साथ सोते, एक दूसरेके दुख-सुखमें सरीक होते ।

दुखराम — बड़ी सुन्दर जमात बनाई थी भैया !

भैया - लेकिन जोंकोंका इससे क्या बिगड़ा । बड़ी-बड़ी जोंकोंने इस जमातके लिए बड़े-बड़े महल बनवा दिए थे, गाँव और जमीन दे दी, खाने-पीनेका आराम कर दिया । फिर कहने लगे यह तो महात्मा लोग हैं, संसार-त्यागी भिच्छु सन्यासी हैं, इनमें सब सामरथ हैं ।

सन्तोखी – माने उनके चारों ओर दीवार घेरकर उसीमें उनको बन्द कर दिया, जिसमें उनके आचरनका दूसरोंपर कोई असर न पड़े ।

भैया—और असर नहीं पड़ा, क्योंकि लोग समझने लगे कि ऐसा जीवन तो साधू सन्यासी ही बिता सकते हैं, यह सारी दुनियाके लिए सम्भव नहीं । इस तरह बुद्धकी दवा सारी दुनियाके लिए नहीं रह गई और फिर जोंकोंने उस जमातको बिगाड़ना शुरू किया । बुद्धने कहा था कि जिस किसीको कुछ दान देना हो तो सारी जमात (संघ) को दे, एक आदमीको नहीं । लेकिन बुद्धके देह छूटने के बाद जोंकोंने बड़ा-बड़ा दान जमात के नाम नहीं, आदमीके नाम देना सुरू किया । जमातमें फूट पड़ गई, धनी गरीबका भेद फिर सुरू हो गया, जोंकोंका बाल भी बाँका न हुआ । जैसे बुद्धने हमारे देसमें किया वैसे दूसरे देसों-चीन, ईरान, यूरप—में भी कितने ही महात्मा पैदा हुए, जिन्होंने धनी-गरीबका भेद मिटाना चाहा पर कोई सफल नहीं हुआ । अन्तमें कल मसीनकी विद्याका पता लगा । व्योपारियोंने कारखाने खोल लिये । एक-एक कारखानेमें एक छतके नीचे हजार-हजार दो-दो हजार मजूर काम करने लगे । कारीगरोंका रोजगार कलोंने चौपट कर दिया । धुनिया, जुलाहा, बढ़ई, लोहार, रंगरेज, कुम्हार, लहेरा, ठठेरा कलकी चीजोंके सामने सबको हार माननी पड़ी । सब का घर उजड़ा और कारखानेमें मजूरी करना छोड़ जीनेका कोई रास्ता नहीं

दिखाई दिया। लाखों मजूर बिलायतके कारखानोंमें मजूरी करने लगे। मालिक तो गुलाम चाहते हैं, मजूर नहीं चाहते। गुलामको चाहे मारो-पीटो उसको कहीं ठौर नहीं है। उसकी देह तो मालिकके हाथमें बिक चुकी है। मजूरोंके साथ भी मालिक ऐसा ही सलूक करना चाहते थे। जब चाहा किसीको नौकर रख लिया, नराज हुए तो निकाल दिया। लेकिन कारखाने वाले मजदूरोंका घर तो पहले ही उजड़ गया था, अब मालिकके निकालने पर जायें तो कहाँ जायँ? अपने भाई मजूरके ऊपर जुलुम करते देख दूसरे मजूरोंका भी दिल पसीज गया। वह भी समझने लगे जो आज इसकी गति है वही कल हमारी होगी। मजूरोंमें एका होने लगा, उन्होंने कहा कि हमारे भाईको कामसे निकालना ठीक नहीं, निकालोगे तो हम काम नहीं करेंगे।

दुखराम—हड़ताल करेंगे।

सन्तोखी—हड़ताल क्या दुक्खू भाई?

दुखराम—सब तुम्हीं समझ लोगे? मजूर कारखानेका काम छोड़ देते हैं, इसीको हड़ताल कहते हैं।

भैया—पूँजीपति जोंकोंको यह पता नहीं था। उन्होंने समझा कि जिनका घर-द्वार नहीं, ठौर-ठिकाना नहीं, उनकी क्या मजाल है कि हमें आँख दिखायें। लेकिन उन्हें यह नहीं समझमें आया, कि जिन कल-कारखानोंने उनके घरोंमें करोड़ोंकी बरसा की, उन्होंने इन हजारों मजदूरोंको एक जगह कर दिया, एक नावमें बैठा दिया। अब सबका अच्छा-बुरा भाग एकही तरहका था। एकके ऊपर संकट पड़नेपर दूसरे चुप कैसे रह सकते थे? मजूरोंकी एक बिरादरी बन गई। उन्होंने हड़तालें कीं, हड़ताल करने पर उनके बाल-बच्चोंको भूखा मरना पड़ता, लेकिन मालिकका भी लाखोंका नुकसान होता। सरकार भी मालिकोंकी, पुलिस और पलटन भी पूँजीपतियोंकी। सबने मजूरोंको एक ओरसे दबाया। कितने ही गोलीसे मरते, कितनोंहीको जहलखाना भेजा जाता और कितने ही भूख के मारे तड़पते; लेकिन यह एक दिनकी आफत तो नहीं थी कि मजूर सिर नवा देते। 'बुढ़ियाके मरनेका डर नहीं था, डर था जमके परक जानेका'। हारते,

तकलीफ सहते भी मजूरोंकी बहुतसी माँगोंको पूँजीपति माननेके लिए मजबूर थे। यह अठारह सौ ईसवीसे कुछ पहिले और कुछ पीछेकी बात है। इसके बाद ही आजसे सवासौ वर्ष पहले (५ मई १८१८ ई०) मरकस बाबाका जनम जर्मनीमें हुआ। राइनलैंड इलाकेके ट्रेवेज नगरमें उनके पिता एक यहूदी वकील थे। मारकस यह खान्दानका नाम था! बाबाका नाम था कारल।

दुखराम—पूरा नाम कारल मारकस हुआ न भैया?

भैया—हाँ लेकिन दुनियामें मारकस नाम हीको सब जानते हैं।

दुखराम—और यहूदी क्या है?

भैया—यहूदी एक जाति है, जिनमें बड़े-बड़े पूँजीपति भी हैं, बड़े-बड़े पंडित भी हैं, लेकिन सबसे अधिक मजूर हैं। दुनिया में हर जगह वह बिखरे हुए हैं। १६४४ बरस पहले कुछ यहूदियोंने चुगली करके ईसा मसीहको फाँसी पर चढ़वा दिया, इसी वास्ते ईसा मसीहके माननेवाले किरिस्तान लोग यहूदियोंसे घिनाते हैं। मरकस बाबाके पिता वकील थे, जब मरकस बाबा छ ही बरसके थे, तभी उनके पिता यहूदी धरम छोड़ कर ईसाई हो गए थे। मरकस बाबा लड़कपन हीसे बुद्धिके बड़े तेज थे।

दुखराम—तेज न होते तो जोंकोंके चार हजार बरसके जालको तोड़ पाते!

भैया—मरकस बाबा अपने सहरके इसकूलमें पढ़े। कभी-कभी अपने पिताके दोस्त एक तालुकदारसे भी सतसंग होता। तालुकदार विद्वान थे और विद्याका आदर करते थे। इसकूलकी पढ़ाई खतम करके सत्रह बरसकी उमरमें वह बोन सहरके विस्सविद्यालयमें वकालत पढ़ने लगे। लेकिन एक साल बाद मरकस बाबाका मन उच्चट गया। तब वह जर्मनीके सबसे बड़े सहर बर्लिनके विस्सविद्दालयमें चले गये। वकालत पढ़ना छोड़ दिया, अब वह पढ़ने लगे इतिहास, कविता और दरसन।

दुखराम—दरसन क्या है भैया!

सन्तोखी—दरसन भी नहीं जानते? रोज हम लोग दरसन-परसन करते हैं।

दुखराम—तो इस दरसन-परसनमें पढ़ना क्या है? यह कोई दूसरा ही

दरसन होगा। सखी-समाजवालोंको जैसे भगवान दरसन देते हैं, वैसा दरसन तो नहीं है भैया!

भैया—हाँ, कुछ वैसा ही है। है तो यह अँधेरी कोठरीमें काली बिल्लीका पकड़ना, बल्कि खाली अँधेरी कोठरीमें काली बिल्लीका पकड़ना। लेकिन इसको लोग समझते हैं कि वहीं पहुँचकर विद्याका ओर होता है।

दुखराम—यहाँ भी तो जोंकोंकी माया नहीं है भैया?

भैया—बहुत भारी माया है। दरसनवाले कहते हैं कि यह दुनिया सब माया है।

दुखराम—उनके सामने जब थाली परोसकर रख दी जाती है, तो वह अपना हाथ उधर फैलाते हैं कि नहीं?

भैया—फैलाते हैं, खाते हैं, मौज करते हैं।

दुखराम—बस बस हो गया भैया! यह भारी धोखा है। जोंकोंका बड़ा भारी जाल है। जोंकोंका छप्पन परकार तो छिनाएगा नहीं। उनका सराब और परियोंका नाच चलता ही रहेगा। वह लोगोंका खून पी-पीकर सालमें करोड़-करोड़ आदमी मारते रहेंगे। उनके भोग-विलासमें यह दरसन कोई दखल नहीं देगा। वह बस यही चाहता है, कि जोंकोंसे जुलुमको लोग माया समझें। दुनियाको नरक बनानेका सारा कसूर जोंकोंका है, लेकिन वह लोगोंको बतलाना चाहते हैं, कि यह सब माया है।

भैया—तुम्हारा कहना ठीक है दुक्खू भाई! लोगोंको भूल-भुलैयामें डालने के लिए हिन्दुस्तानमें भी दरसनवाले ग्यानी पैदा हुए, यूरुपमें भी पैदा हुए। मरकस बाबाने जवानीमें दरसन पढ़ा, तो अच्छा ही किया। जब मरकस बाबा उन्नैस सालके थे, तभी कांट और फिखटे जैसे चोटीके पंडितोंका दरसन उन्हें थोथी कल्पना मालूम होने लगी। फिर मरकस बाबाको एक और दरसनके पंडित हेगलकी किताब पढ़नेको मिली। हेगलकी यह बात मरकस बाबाको बहुत पसन्द आई कि दुनिया जो यह चित्तर-विचित्तर दिखाई दे रही है, वह इसीलिए कि वह हर छन बदल रही है। दुनियाकी कोई चीज छोटीसे छोटी या बड़ीसे बड़ी ऐसी नहीं जो न बदले। हमारे यहाँ भी हेगलसे चौबीस सौ

बरस पहले बुद्ध महात्माने यह कहा था।

दुखराम—चौबीस सौ बरस पहिले! और बुद्ध महात्मा भी तो धनी-गरीब का भेद मिटाना चाहते थे। वह भगवानको मानते थे कि नहीं भैया!

भैया—नहीं, बिलकुल नहीं। वे कहते थे कि "है" कहकर जिसे हम पुकारते हैं वह सभी चीजें छिन-छिन बदलती हैं। जो बदलती नहीं, ऐसी दुनियामें कोई चीज़ नहीं है।

दुखराम—बुद्ध महात्मासे जो सन्तोखी भाई पूछते कि भगवान हैं कि नहीं तो क्या जवाब देते?

भैया—पहले सन्तोखी भाईसे पूँछते कि भगवान बदलते हैं कि नहीं, माने बिल्कुल मर जाते हैं कि नहीं और फिर उनकी जगह कोई दूसरा बिल्कुल नया भगवान पैदा होता है कि नहीं? पहले बुद्ध महात्मा सन्तोखी भाईसे यह सवाल करते।

दुखराम—सन्तोखी भाई! बताओ तुम क्या जवाब देते?

सन्तोखी—जो भगवानको मानता है, वह उन्हें जनम मरनसे परे मानता है।

भैया—तो ऐसी चीजके बारेमें बुद्ध महात्मा कहते, कि वह अफीमचीकी पिनक है। ऐसी चीज दुनियामें कोई नहीं हो सकती?

दुखराम—तो सब चीज बदलती रहती है, दुनियामें न बदलनेवाली चीज कोई नहीं है, यही बात मरकस बाबाको पसन्द आई न भैया?

भैया—बरलिनसे फिर मरकस बाबा जेना सहरके बिस्सबिद्यालयमें चले गए और तेईस बरसकी उमरमें विद्या-पारंगत होनेके लिए उनको डाक्टरको पदवी मिली।

दुखराम—दवाई देनेवाले डाक्टर भैया?

भैया—ग्यानके डाक्टर दुक्खू भाई! मरकस बाबाने ग्यान तो सब पढ़ लिया, लेकिन दुनियामें देखा, सब जगह नरककी आग धाँय-धाँय जल रही है। उनकी कलममें बज्जरकी ताकत थी। उनकी नजर इतनी पैनी थी कि गहरीसे गहरी जगह में घुस जाती थी। विसविद्दालयसे पढ़कर निकलनेके बाद

मरकस बाबा एक अखबारके सम्पादक हो गये।

दुखराम—सम्पादक क्या है भैया?

भैया—अखबारके सब लेखोंके परखने और रास्ता दिखलानेके लिए मुक्ख लेख लिखनेकी जिसपर जिम्मेवारी हो, उसे ही सम्पादक कहते हैं। इसी सम्पादक रहते वक्त मरकस बाबाको मजूरोंकी दुख-तकलीफ जाननेका और मौका मिला। फिर दो-साल तक उन्होंने उसके कारण ढूँढ़ने और दवाईका पता लगाने के लिए खूब सोचा, खूब पढ़ा, खूब गुना। जब मरकस बाबा पच्चीस बरस (१८३५) के थे तभी अपने एक दोस्तको खत लिखा था—"बटोरने और व्योपार करनेका जो ढंग दुनियामें चल रहा है, मानुख जातिको गुलाम बनाने और खून चूसनेका जो ढंग चल रहा है, वह सारे समाजकी जड़को भीतर ही भीतर जल्दी-जल्दी कुतुर रहा है; जितनी जल्दी-जल्दी आदमियोंकी तादाद बढ़ रही है, उससे भी जल्दी-जल्दी वह कुतुर रहा है। इस घावको पुराना (जोंकोंवाला) ढंग भर नहीं सकता, क्योंकि उसके पास भरनेकी कोई तागत ही नहीं। वह (जोंकोंका ढंग) तो सिरिफ भोग करना और अपने जीना, बस इतना ही जानता है।" मरकस बाबाने उसी साल अपने पिताके दोस्त तालुकदारकी लड़की, जेनीसे ब्याह किया।

दुखराम—जोंककी लड़कीसे ब्याह किया?

भैया—जोंक आदमीसे पैदा हुई है। और जोंकोंमें भी कोई-कोई आदमी पैदा हो सकता है कि नहीं?

दुखराम—हो सकता है भैया।

भैया—जेनी उसी तरहकी आदमी थी। जोंकोंके घरमें उसने जनम लिया। तेइस-चौबिस बरस तक जोंकोंके सुख और भोग में पली, लेकिन बाकी सारा जीवन उसने कितनी तपेस्सा की, कितना कष्ट सहा, उसको सुनकर रोआँ खड़ा हो जाता है। पच्चीस बरसके ही मरकस बाबा हो पाये थे, कि जर्मन सरकार उनके विचारोंको जानकर घबराने लगी। जानते हो न दुनिया भरकी सरकारें जोंकोंकी सरकार हैं। जोंकोंके स्वारथको बचाना ही उनका सबसे पहला काम है जर्मन सरकारने मरकस बाबाको जेहलमें डाल देना चाहा।

लेकिन बाबा और जेनी दोनों उनके हाथमें नहीं आये, वे फ्रांसकी राजधानी पेरिसमें चले गये।

दुखराम—चावस (शाबस)! बाबा जर्मन जोंकोंके पंजेसे बच गये।

भैया—लेकिन जर्मन जोंकोंकी सरकारने फ्रांसकी जोंकोंकी सरकारपर दबाव डालना सुरू किया, और डेढ़-दो साल बाद फ्रांसकी सरकारने उन्हें अपने देससे निकल जानेका हुकुम दिया। बाबाको वहाँसे (१८४५ में) बेल्जियमके सहर ब्रसेल्समें चला जाना पड़ा। दो बरस बेल्जियममें रहे। बड़ी गरीबीकी जिन्दगी बिताई। जेनीको सब काम अपने हाथ करना पड़ता, बाबा खाली जोंकोंसे कमेरोंकी मुकती कैसे हो इसीपर सोचते और लिखते रहे। १८४२ में "न्याव वालों की सभा" (जिसे पहले ही से विदेसमें भागे जर्मन मजूरोंने कायम किया था) की बड़ी सभा लन्दनमें हुई थी, उस सभामें मरकस बाबा और जिनगी भरके साथी ऐङ्गल बाबा भी बुलाये गये थे। मरकस बाबासे वहीं सभा-वालोंने कहा, कि हम लोगोंका एक ढिंढोरा-पत्तर (घोषणापत्र) लिख दीजिए, जिससे जोंकोंको भी पता लग जाय, कि कमेरे क्या करना चाहते हैं; और दुनिया भरके कमेरोंको भी पता लगे, कि दुनियाके इस नरकको ढहानेके लिए उनको क्या करना है, जोंकोंको देहसे छुड़ानेके लिए कौनसा रास्ता पकड़ना है। मरकस बाबाने बत्तिस सालकी उमरमें यह ढिंढोरा पत्तर लिखा, जो हिन्दीमें भी 'कमूनिस्ट घोषणा' के नामसे छप गया है। बीस पचीस पन्नेकी इस छोटी-सी पोथामें जो तागत है, वह दुनियाकी किसी बड़ी-सी-बड़ी किताबमें भी नहीं देखी गई। दुनियाके कमेरोंकी आँख खोलनेमें इस ढिंढोरा-पत्तर जितना काम किसीने नहीं किया। किताब खतम करते हुए बाबाने कहा "कमेरो! अपने पैरकी बेड़ियोंको छोड़कर तुम्हारे पास खोनेके लिए रखा ही क्या है? (जोंकोंको खतम कर देनेपर) यह सारा संसार तुम्हारा है। सभी देसोंके कमेरो! एक हो जाओ।"

दुखराम—वाह रे बाबा, आज तू मिलता, तो अपने आँसुओंसे तेरे पैर पोंछता।

भैया—अगले साल (१८४८) फ्रांसमें बड़े जोंकराजाके तखतको उलट

दिया गया। दुनियाके मुकुटधारी काँपने लगे। फ्रांसके लोगोंने पंचायती राज कायम किया। मरकस बाबाको सरकारके मुखियाने (१ मार्च १८४८ के) बड़े आदरभावसे आनेके लिए बिनती की। बाबा पेरिस सहरमें आये। जर्मनी में भी कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ बगावत की। उसके लिए एङ्गल बाबा और दूसरे कई साथियोंको बाबाने जर्मनी भेजा और अपने भी राइनलैण्ड इलाके-में पहुँच गये। वहाँसे कमेरोंको रास्ता दिखलानेके लिए एक अखबार निकाला। जोंकोंकी सरकार दब गई थी, इसलिए मरकस बाबाकी ओर उसने हाथ नहीं बढ़ाया। डेढ़ बरस अखबार निकालनेमें बाबाकी और जेनीमाईके पास जो कुछ भी कौड़ी पैसा था, सब चला गया। जर्मन जोंकोंकी सरकारका फिर कुछ हौसला होने लगा, इसलिए बाबा और जेनी पेरिस चले आये। लेकिन पेरिस-के कमेरोंने जोंकोंके स्वभावको ठीकसे पहचाना नहीं। उन्होंने जोंकोंको अँगूठे-से दबाया। खून निकल जानेसे वह सुटुककर पतली हो गई। कमेरोंने समझा अब यह कुछ नहीं कर सकती, इसलिए उन्हें उठाकर फेंक दिया।

दुखराम—जोंकोंका जीव बड़ा कड़ा होता है भैया! उनको तो जब-तक गत्तर गत्तर काट चाथकर न फेंका जाय, तब-तक वह मरती नहीं।

भैया—पेरिसमें फिर जोंकोंका जोर बढ़ गया और १८४९ में मरकस बाबाको फ्रान्ससे निकल जानेका हुक्म हुआ। बाबा और जेनी कमेरोंकी भलाईके लिए सब दुख सहनेके लिए तैयार थे। घर छूटा, देस छुड़ाया गया और जिस देसमें भी जाते वहाँकी जोंकें उनके पीछे पड़ जातीं। अब वह लन्दन चले गये। १८३९ से १८८३ तकके लिए (चौंतीस बरखोंके लिए) लन्दन ही मरकस बाबाका घर बना।

दुखराम—लन्दन तो सबसे बड़ी-बड़ी जोंकोंकी राजधानी है, वहाँ मरकस बाबाको कैसे जगह मिली।

भैया—जोंक सरकारोंका आपसमें भी झगड़ा है, यह तो तीस साल पहले-वाली लड़ाई और आजकी लड़ाईसे तुम्हें मालूम है। इसलिए भी अपने मुद्दई जर्मनी और फ्रान्सकी जोंकोंके दुसमन मरकसको अपने यहाँ रहने देनेमें उन्हें कोई हरकत नहीं मालूम हुई, और सारे अँगरेजोंके गुलाम देसोंका इतना

अधिक धन आता था कि अपने यहाँके मजूरोंको वह कुछ दे-दिवाकर संतुष्ट कर देते थे। मरकस बाबाने बड़ी-बड़ी पोथियाँ लिखीं। दुनिया भरके कमेरोंपर उनकी नजर रहती थी।

दुखराम—हिन्दुस्तानके रहनेवाले हम कमेरोंके बारेमें बाबाने कुछ सोचा और लिखा?

भैया—हाँ दुक्खू भैया! बाबाके सामने आजसे ६१ साल पहले भी हिन्दुस्तानका कोई रोग छिपा नहीं था। बाबाने उस वक्त लिखा था—"काहे अँगरेज हिन्दुस्तानके मालिक बन गये? मुगल सूबेदारोंने मुगलाई राज-संगठनको तोड़ा। सूबेदारोंकी तागतको मराठोंने तोड़ा। मराठोंकी तागतको (पानीपतकी लड़ाईमें) अफगानोंने तोड़ा और जब यह सभी सबके खिलाफ लड़ रहे थे, तो अँगरेज चढ़ दौड़े और उन्होंने सबको दबा दिया। (क्यों दबा सके?) यह देस सिर्फ हिन्दू, मुसलमानोंमें ही बँटा नहीं है, बल्कि खोम-खोम और जाति-जातिमें बँटा है। यहाँके समाजका ढाँचा इस तरह कसकर बाँधकर रखा गया है, कि आदमी-आदमीके बीच बिखराव और बेमेलपन फैला है। जो देस, जो समाज ऐसा हो, वह हारनेके लिए, गुलाम होनेके लिए नहीं बना तो किस लिए बना। चाहे हिन्दुस्तानका पुराना इतिहास हम न भी जानते हों, तो भी इस बातमें तो कोई दो मत नहीं है, कि इस छन भी हिन्दुस्तान अँगरेजोंकी गुलामीमें जकड़बन्द है। और उस जकड़बन्दीका काम करती है हिन्दुस्तानी फौज, जिसका खर्च भी हिन्दुस्तान ही देता है। ऐसा भारत गुलाम होनेसे कैसे बच सकता है?"

दुखराम—भैया! बाबाने सचमुच हम लोगोंके रोगको पहिचाना।

भैया—बाबाने एक और भी बात लिखी है। उन्होंने हिन्दुस्तानके पुराने जमानेमें गाँवका जो पंचायती इन्तजाम था, उसके बारेमें कहा "ये सुन्दर (गाँवके) प्रजातन्त्र सिर्फ पड़ोसी गाँवसे अपने गाँवकी सीमाकी रच्छाके लिए मुस्तैदी दिखा सकते थे, लेकिन वहाँके राजाओंकी मनमानीको रोकनेकी उनमें जरा भी ताकत नहीं थी।"

दुखराम—क्यों भैया! गाँवका पंचायती राज क्या बुरा था।

भैया—पंचायती राजको बुरा कोई नहीं कहता। बाबाने भी वही कहा। जो कनैलाकी कोई जमीन या तालपोखरीका हक भदया छीनने लगे, तो कनैलावाले कितना मनसे लड़ेंगे?

दुखराम—भैया! गाँवका बच्चा-बच्चा लाठी लेकर दौड़ पड़ेगा। भला कोई घर बैठा रह सकता है? न जाने कितनी बार कनैला नरेहतासे लड़ा, उसने उमरपुरका दाँत खट्टा किया, भदयाको सिवानामें घुसने नहीं दिया।

भैया—बाबा यही कहते हैं, कि जब देसमें इतना बिखराव हो जाता है कि लोगोंको सारा देस तो भूल जाता है, याद रहता है सिर्फ अपना गाँव; तो गाँवकी सीमाकी रच्छा भले ही हो जाय, लेकिन देसको सीमाकी रच्छा नहीं हो सकती। क्योंकि लोग अपनेको उतना ही मनसे देसका बासी नहीं समझते, जितना मनसे कि गाँवका बासी समझते हैं। इसीलिए हिन्दुस्तानकी सीमाकी रच्छाकी जिम्मेवारी सिर्फ राजाओंको रह गई। राजाओंका जुलुम और मनमानापन लाखों गाँवोंके पंचायती राज्योंमें बँटे हिन्दुस्तानी लोगोंके रोकनेकी चीज नहीं रह गया। गाँवकी पंचायतोंने कारीगरोंको हजारों बरस पुराने बसूलों और रुखानियोंसे चिपके रहने दिया, किसानोंको हँसुओं-फालोंसे एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने दिया। जबकि दूसरे मुल्कवाले अपने जुल्मी राजाओंकी गरदन कुल्हाड़ेसे काट रहे थे, उस वक्त सब जुलुम, सब अन्याय बरदास करते हिन्दुस्तानी लोग कहते थे—"कोउ नृप होइ हमैं का हानी"। इससे वह यही दिखलाते थे, कि हमारा हाथ-पाँव बँधा हुआ है, हम कुछ नहीं कर सकते। हमारे इस गाँव-गाँवके बिखराव, जाति-जातिके बिखराव, धरम-धरमके बिखरावने हमें बिलकुल कमजोर बना दिया। हम हिल-डोल नहीं सकते। हम समय देखकर अपनेको बदल नहीं सकते। हम अचल मुरदा बने रहना चाहते थे। लेकिन यदि कोई दूसरा न छेड़ता तब न? मुसलमानोंने राज किया, उससे पहिले सकों और यूनानियोंने भी राज किया था, लेकिन हिन्दुस्तानके समाजके पुराने ढाँचों, गाँव-गाँवके अलग-बिलग संगठनों और जाति-पाँतिको कोई नहीं तोड़ सका। लेकिन वह काम अँगरेजोंने किया। उन्होंने मुरदेको खूब झकझोरा। वह बिलकुल मुरदा नहीं था। उन्होंने

हजारों बरससे चले आये हमारे चरखोंको तोड़ डाला, पुराने करघेको बिदा किया। यह सब कैसे किया? अपने यहाँके मिलके बने सस्ते कपड़ोंको भेजकर। बाबा ने लिखा—"अँगरेजोंने कपासकी जनम भूमिमें कपड़ेकी बाढ़ ला दी। १८१८में उन्होंने जितना कपड़ा भेजा था, उससे ५२ गुना कपड़ा १८ बरस बाद १८३६में अँगरेजोंने हिन्दुस्तान भेजा। १८३७में मुस्किलसे दस लाख गज बिलायती मलमल हिन्दुस्तानमें आया था, लेकिन दस ही बरस बाद १८४७में ६ करोड़ ४० लाख गजसे ऊपर मलमल हिन्दुस्तान आया। लेकिन इसी बीचमें ढाका सहर उजड़ गया वह डेढ़ लाखकी जगह सिर्फ २० हजारकी बस्ती रह गया। इस तरह अपनी कारीगरीके लिए दुनिया भरमें मसहूर हिन्दुस्तानके सहर बरबाद हो गये।"

दुखराम—जोंकोंने बड़ा जुलम किया भैया!

भैया—बाबाने भी लिखा था—"यह सब देखकर आदमीका दिल व्याकुल हो जाता है। हिन्दुस्तान जो अनगिनत पंचायती गाँवोंमें सान्तीके साथ जिन्दगी बिता रहा था, उसके सारे संगठनको जोंकोंने तितर-बितर कर दिया, लोगोंको कस्टोंके समुन्दरमें फेंक दिया। पीढ़ियोंसे चले आते जीविका कमानेके रास्ते बन्द कर दिये। यह ठीक है, कि गाँवोंका पुराना पंचायती संगठन बहुत सुन्दर था, वह देखनेमें (दुधमुँहे बच्चेकी तरह) बहुत ही भोला-भाला था। लेकिन यह भी याद रखना चाहिये, कि पूरबी देसोंमें (जोंकोंको मनमानी करनेमें सबसे बड़ी मदद इसी भोले-भालेपनने दी। इसने आदमीके दिमागको नन्हीं-नन्हीं कोठरियोंमें बन्द कर दिया। गप्पों और झूठे बिस्वासोंको चुपचाप माननेके लिए वहाँके लोगोंको तैयार किया, उन्हें पुराने रवाजोंका गुलाम बनाया। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए, कि एक छोटी-सी जमीनकी टुकड़ीमें ही जब सारी ममता बटुर गई हो, तो बिसाल देसका बिधंस क्यों नहीं होता? इसी छोट ममताने लोगोंको कितना जुलुम सहनेके लिए मजबूर किया। बड़े-बड़े सहरोंमें भयंकर हत्या करवाई, (जिसमें लाखों बालक-बूढ़े, नर-नारी गाजर-मूलीकी तरह काट डाले गये) हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए, कि यह अपमान-भरा जीवन, मुरदे कीड़े-मकोड़ेका जीवन ही, बिलकुल जड़ जीवन ही

था, जिसको देखकर जंगलियों, अत्याचारियों, सत्यानासियोंको वैसा करनेकी हिम्मत हुई। हमें यह न भूलना चाहिए, कि भारतकी यह (गाँव-गाँवमें) बिखरी छोटी-छोटी जमात भी सैकड़ों जातोंमें बँटी थी, गुलामीके रोगमें फँसी थी। जहाँ मानुखका काम है ऊपर उठकर जो भी रास्तेमें बाधाएँ आएँ उनको परास्त करना, वहाँ हिन्दुस्तानियोंको परिस्थितियोंका गुलाम बनना पड़ा। उसीके कारण मानुख समाजको जहाँ बहती गंगाकी धाराकी तरह बराबर बढ़ते रहना चाहिए था, वहाँ वह अचल बनकर जमानेके हाथकी कठपुतली बन गया। मानुख अन्धे जमानेका दास हो गया। जिस मानुखको जमानाका राजा बनना था, वह इतना पतित हुआ कि बानर हनुमान और कपिला गायके सामने घुटने टेकने लगा।"

सन्तोखी क्यों भैया! बाबाको हनुमानजीकी पूजा और गोमूत्र पीनेकी बात मालूम थी?

दुखराम—खूब मालूम थी सन्तोखी भाई! और बाबाने हम मूढ़ोंके गालपर खूब चपत लगाया। लेकिन यह चपत ऐसे माँ-बापका था, जिसका हृदय भीतर ही भीतर रो रहा हो।

भैया—बाबाने और कहा "हिन्दुस्तानमें अँगरेज जो समाजमें उलट-पुलट कर रहे हैं, उसके पीछे उनका एक बहुत ही नीचा स्वारथ छिपा हुआ है। लेकिन हम पूछेंगे, कि क्या एसियावासियोंके समाजको बिना उलटे-पुलटे मानुख जाति अपने पहुँचनेकी जगह पहुँच सकती है? अगर नहीं पहुँच सकती तो अँगरेजोंने चाहे जितना भी पाप किया, उन्होंने अनजाने ही इस हितकारी उलट-पुलटको करनेमें सहायता की; फिर चाहे (हिन्दुस्तानमें) टूट-टूटकर गिरती हुई पुरानी जिन्दगीको देखकर हमारा दिल कितना ही बिकल क्यों न हो जाय, उसके खिलाफ हमारे दिलमें कितनी ही आग क्यों न लग जाय; लेकिन उसने उलट-पुलट करके हिन्दुस्तानका नया इतिहास बनानेमें मदद की है।"

दुखराम—बात तो भैया! बाबाने सच्ची-सच्ची कह डाली, चाहे किसीके गले उतरे या न उतरे।

भैया—बाबाने एक ओर जुगोंसे चले आये हिन्दुस्तानको लाखों गाँवोंमें छिन्न-भिन्न देखकर उसे बुरा कहा; गाँई संगठन और उलट-पुलटको आगेकी भलाईके लिए जरूरी बतलाया। साथ ही यह भी कहा—"अंगरेजोंने तलवारसे हिन्दुस्तानके ऊपर जो एकता जबर्दस्ती लाद दी है, उसे बिजलीके तार और भी मजबूत और बहुत दिन तक रहनेवाली बना रहे हैं। अंगरेज सरजन्ट जो हिन्दुस्तानी सेनाको परेड सिखला रहे हैं, उसका संगठन कर रहे हैं; वही हिन्दुस्तानी सेना बिदेसियोंके हमलेसे ही देसको नहीं बचाएगी, बल्कि वह देसको छुटकारा दिलानेका काम भी करेगी। अखबार और छापाखाना नया-हिन्दुस्तान बनानेके बड़े ही जबर्दस्त हथियार हैं। जो हिन्दुस्तानी अंगरेजोंसे पच्छिमी विद्या सीख रहे हैं, वह राज चलानेके काम और पच्छिमके साइंसमें भी चतुर हो रहे हैं। यह भी हित करनेवाला है। भापके इंजनने हिन्दुस्तानकी यूरपके साथ आने-जानेमें और सहायता की है। हिन्दुस्तानके मुक्खि मुक्खि बन्दरगाह इंगलैण्डके बन्दरगाहोंसे जुड़ गए हैं, जिसके कारन अब हिन्दुस्तान अलग-बिलग नहीं रह सकता और वह जड़ताईको जड़मूलसे उखाड़ फेंकेगा। वह दिन दूर नहीं है, जब भापसे चलनेवाली रेल और जहाज मिलकर इंगलैण्ड-को आठ दिनके रास्ते पर ले आ देंगे। उस समय हिन्दुस्तान भी पच्छिमी देसोंका पड़ोसी देस बन जायगा। बिलायतको राज करनेवाली जमातने हिन्दुस्तानमें जो कुछ तरक्कीका काम किया है, वह अनजाने और सिरिफ अपने स्वारथसे किया। बिलायती सरदार हिन्दुस्तानको जीतना चाहते थे, बिलायती थैलीसाह (बनिये) उसे लूटना चाहते थे और मिल-साह (पूँजीपति) गलाकट्टी कर रहे थे।...अब मिल-साह सारे भारतमें रेलोंका जाल बिछाना चाहते हैं। और वह ऐसा करके रहेंगे।...मैं जानता हूँ कि अंगरेज मिलसाह (पूँजीपति) हिन्दुस्तानमें रेल सिरिफ इसीलिए बिछाना चाहते हैं कि बहुत थोड़े खर्चमें हिन्दुस्तानके कपास और दूसरे कच्चे मालको अपने कारखानोंमें ले आएँ; लेकिन अंगरेज ऐसे देसमें कल-मसीनको ले जा रहे है, जहाँ कोयला और लोहा मौजूद है। फिर कोयला लोहाके धंधेको आगे बढ़नेसे कौन रोक सकता है?...हिन्दुस्तानियोंमें ऐसे बहुत लोग हैं जो कल-मसीनके इलिमको

समझ सकते हैं, वह पूँजी भी जमा कर सकते हैं, उनमें बड़ा दिमाग भी है; यह इसीसे मालूम है कि गिनती (हिसाब) जैसे इलिममें वे बहुत चतुर होते हैं। उनकी बुद्धि बड़ी तेज है।"

दुखराम--बाबाने देख लिया था, कि हिन्दुस्तानी लोगोंकी आँखें जरूर खुलेंगी और वह अपनी विद्याको अपनी भलाई, अपनी मुकतीके लिए इस्तेमाल करेंगे।

भैया--बाबाने यह भी सोच लिया था, कि हिन्दुस्तानको आजाद करने, उसके आगे बढ़नेमें बिलायतके कमेरोंकी भी सहायता जरूरी होगी।

दुखराम--बिलायतके कमेरोंमें भी क्या बाबाके माननेवाले लोग हैं?

भैया--बाबाने उनकी भी आँख खोल दी है दुक्खू भाई! बिलायतमें एक लाख तो बाबाके पार्टीके खास लोग हैं। वहाँकी जोंकें बहुत घबरा रही हैं कि लड़ाई खतम होते कहीं उनका भी तखता न उलट जाय। बाबाने ९१ बरस पहले लिखा था—"जब तक खुद बिलायतमें वहाँके कमेरे अपने जोंक-राजको हटाकर अपना राज न कायम कर लें या खुद हिन्दुस्तानी ही इतने मजबूत न हो जायँ, कि अंगरेजोंके जूएको उतार फेंकें (तब तक हिन्दुस्तानके लिए वह सुन्दर दिन नहीं आ सकता)। चाहे कुछ भी हो थोड़े या अधिक दूरके समयमें वह दिन जरूर आएगा, जब बिसाल मनोहर हिन्दुस्तान देसका नया जनम होगा। वह देस जिसके नरम सुभाववाले निवासियोंमें आजकी गुलामीमें भी एक तरहकी साँति और अभिमान है। आलसीसे दिखाई देने-पर भी जिन्होंने अपनी बहादुरीसे अंगरेजोंको चकित कर दिया। जिनका देस हमारी भाखाओंका हमारे धरमोंका मूल रहा; जिसके जाट अपनी बहादुरीमें पुराने जर्मनों जैसे हैं, जिसके बाम्हन ग्यानमें पुराने यूनानियों जैसे हैं, उस देसका जरूर उद्धार हो कर रहेगा।"

सन्तोखी--बाबा क्या हिन्दुस्तानमें आये थे भैया!

भैया--हिन्दुस्तान नहीं आये थे, लेकिन सैकड़ों बरसोंसे अँगरेज लोग हिन्दुस्तानके बारेमें लिख-लिख कर जो ढेर किये हुए थे, उस सबको बाबाने पढ़ा, हिन्दुस्तानसे जानेवाले आदमियोंसे बात चीत की; उसीसे उनको सब बातें

मालूम हुईं। हम कहते थे, कि बाबाको असली रोग और दवाका पता लगा। उन्होंने समझा कि रोग है यही जोंकें, जिनमें सबसे बड़ी हैं यह पूँजीपति, मिलमालिक, कारखानेवाले जो ॥)का १४) बनाते हैं और दुनिया भर राज करते हैं। बिलायतके मजूरोंने इन जोंकोंसे लड़ाई ठानी। जब पेट काटा जाय, बेकसूर आदमी निकाल बाहर किये जायें, तो भला वह कैसे चुप रहें? जोंकोंका अपार धन, उनकी पलटन, पुलिस, धरम और पुरोहित सब कमेरोंको पीस देना चाहते थे; लेकिन वे तीस चालीस बरससे बराबर लड़ते रहे। तोंद पचकती देख जोंकोंको कितनी बातें माननी पड़ीं और कमेरोंका बल घटनेकी जगह और बढ़ता गया। बाबाने समझा जोंकोंकी असली दवा यह कल-कारखानेके मजूर हैं। जो वह हजारों लाखों गाँवोंमें बिखरे रहते, तो जोंकोंका मुकाबिला नहीं कर सकते। अपने कारखानोंको चलानेके लिए जोंकोंने उन्हें सहरोंमें एक जगह जमा कर दिया। यह बड़ी तागत है। जोंकों हीने मजूरों को अपने स्वारथके लिए इकट्ठा किया और वही जोंकोंको तबाह करेंगे।

दुखराम—हाँ भैया! चटकल-पटकलमें लाखों मजूर काम करते हैं। जब मालिक कोई जुलुम करने लगते हैं, तो सब एका करते हैं। दस-दस बीस बीस दिन काम छोड़ने पर मजूरोंको तो तकलीफ बहुत होती है, लेकिन मालिकोंको झुकना पड़ता है।

भैया—झुकना क्यों न पड़े, जो मजूरोंका चार आना जाता है, तो जोंकोंका तेरह रुपया। लेकिन बाबाने कहा कि मजूरी बढ़वाने और छोटे-मोटे जुलुमको हटवानेसे काम नहीं चलेगा, दुनिया भरके किसानों मजूरों—सभी कमेरों-को एका करके जोंकोंका राज खतम करना होगा। पुलिस-पलटन, अदालत-कचहरी, कल-कारखाना सबको जोंकोंके हाथसे छीन लेना होगा। हवा-पानीकी तरह धरती-धन सब कुछ को सबका साझेका करना होगा; तब जाकरके दुनियाका यह नरक खतम होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया! बाबाने बड़े कामकी बात बतलाई।

भैया—अब सुनो बाबाका बाकी जीवन चरित्तर। २१ सालकी उमरमें

बाबा कहाँ-कहाँकी जोंक-सरकारोंसे बचते लन्दन पहुँचे। और वहीं ६५ बरसकी उमरमें बाबाका देह छूटा। बाबाने अमरीका, यूरप सब जगहके मजूरोंको जोंकोंसे लड़नेमें मदद दी, रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखीं। कोलोनके कमूनिसटोंके ऊपर मुकदमा चल रहा था।

दुखराम—कमूनिस्ट कौन हैं भैया।

भैया बाबाके चेला लोगोंको, बाबाके पार्टीवालेको कमूनिस्ट कहते हैं। दुनिया भरकी जोंकें कमूनिस्टोंसे बहुत डरती हैं। कमूनिस्टोंने कमेरोंकी लड़ाइयाँ खूब बहादुरीसे लड़ी हैं, अपना सरबस होम दिया है। रूससे जोंकोंका राज उन्होंने ही खतम किया।

दुखराम—तो भैया! हमारे देसमें भी ऐसे कमूनिस्ट होने चाहिएँ। बाबाके चेला हम लोगोंको रास्ता नहीं बतलाएँगे, तो हम कैसे लड़ पाएँगे।

भैया—हमारे यहाँ भी बाबाके चेला हैं दुक्खू भाई! लेकिन ४० करोड़की आबादीमें, २५, ३० हजार कमूनिस्ट तो बहुत कम होते हैं न? सरकारने अब भी एक हजार कमूनिस्टोंको जेलमें बन्द करके रखा है और जोंक और पुलिस दोनों उन्हें फूटी आँखसे भी नहीं देखना चाहती; लेकिन वह रकतबीजकी तरह बढ़ते रहेंगे। सहर-दिहात सबमें छा जायँगे। बाबाका पंथ कौन कमेरा है जिसको पसन्द न होगा?

दुखराम—हाँ भैया! वह अभागा ही होगा। बाबाने सब दुख-तकलीफ सहकर हमारे ही फायदाके लिए न काम किया?

भैया—बाबाने कमूनिस्टोंके मुकदमेके लिए किताब लिखी, लेकिन छापनेके लिए कागज नहीं था। उनके पास एक कोट बच रहा था, उसे भी उन्होंने बन्धक रख दिया।

दुखराम—तो बाबा बिना कोट हीके रह गए? सुनते हैं, बिलायतमें हाड़ चीरनेवाला जाड़ा पड़ता है।

भैया—बाबा अपने लिए कष्ट सहनेको तैयार थे। और जेनी माईकी तकलीफको सोचो दुक्खू भाई! एक तालुकदारकी लड़की, बड़ी लाड़-प्यारमें पली, वह भी बाबाके साथ गली-गली मारी-मारी फिरती रही; लेकिन उसने

एक दिन भी अफसोस नहीं किया। बाबा इतने पंडित थे, कि हजार दो हजार कमा सकते थे और अपने बाल-बच्चोंको आरामसे रख सकते थे; लेकिन बाबाने कमेरोंकी सेवाके लिए अपना जीवन दे दिया था। बाबाके दो लड़के चार लड़कियाँ हुईं; लेकिन दोनों लड़के और एक लड़की ज्यादा दिन नहीं जी सके। बीमार पड़ते तो दवाई और पथका पाना मुसकिल होता। बाबाने कमेरोंके लिए गरीबीकी जिन्दगी बिताई, जोंकें उनको फूटी आँखों नहीं देखना चाहती थीं। गरीबीके कारन बाबाके तीनों बच्चे मर गये; लेकिन बाबाने सोचा, हजारों बरसोंसे जोंकें कमेरोंके करोड़ों बच्चोंको मार चुकी हैं, उन्हीं बच्चोंमें मेरे भी तीनों बच्चे गये।

सन्तोखी—बाबा जैसी तपेस्सा कौन करेगा भैया? दूसरे तपेस्सा करने वाले तो जोंकोंकी जड़में पानी डालते हैं, जोंकोंको और मजबूत करते हैं।

दुखराम—बाबाने भी जोंकोंकी जड़में पानी डाला, लेकिन खूब खौलाकर गरम-गरम पानी।

भैया—बाबाके साथी एङ्गल बाबाने भी बड़ी तपेस्सा की। उन्होंने ब्याह नहीं किया, और कमा-कमाकर हर साल साढ़े तीन सौ गिन्नी मरकस बाबाको देते गए। जो एङ्गल बाबाने यह तपस्या न की होती, तो बाबाके ऊपर और आफत आती। बड़े बाबाने एङ्गल बाबाको एक चिट्ठीमें लिखा था—'तुम्हारे बिना मैं कभी अपने कामको पूरा न कर सका होता। सिर्फ मेरे लिए तुमने अपनी जबरजस्त बुद्धिको बेकार जाने दिया, और गलाघोटू व्यौपारी-जिनगी अपनायी।"

संतोखी—क्या एङ्गल बाबा व्यौपारी थे भैया?

भैया—हाँ, उनके बापका कारखाना था, उसीको एङ्गल बाबाने सँभाला लेकिन वह कितना ऊब गये थे, यह उनकी इस चिट्ठीसे मालूम हो जाता है—"मैं किसी चीजको उतना नहीं चाहता, जितना कि इस व्यौपारीकी जिनगीसे भाग निकलनेको।" बाबाके जीवनमें ही (१८ मार्च १८७१ में) पेरिसके कमेरोंने वहाँसे जोंकोंका राज कुछ महीनोंके लिए उठा दिया। कमेरोंकी तागत अभी उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंकोंने फिर हजारों मजूरोंको कतल करके

अपना राज जमा लिया। लेकिन पेरिसके कमेरोंने जितना अच्छी तरहसे अपना राज चलाया, उससे यह पता लग गया, कि कमेरे जोंकों को हटा सकते हैं और अच्छी तरह राज चला सकते हैं। पेरिसके कमेरोंने क्या गलती की थी, इसे बाबाने लिख दिया था। फिर ४६ बर्ष बाद जब रूसके कमेरोंने जोंकोंका राज उलटा, तो उस बखत बाबाकी वही सिच्छा बड़े काम आई। ४१ साल तक कमेरोंकी लड़ाई लड़ते लड़ते बाबाने आखिर ६५ सालकी उमरमें (१४ मार्च १८८३ को) देह छोड़ा। लन्दनके हाईगेटके कबरिस्तानमें अब भी बाबाकी समाधि है। कौन होगा जो बाबाकी समाधि पर फूल चढ़ानेकी लालसा न रखता हो? बाबाके मरनेपर एङ्गल बाबाने लिखा था— "मानुख जातके पास जितने दिमाग हैं, उनमें सबसे बड़ा दिमाग आज खो गया। कमेरा-दलकी लड़ाई चलती रहेगी, लेकिन वह दिमाग चल बसा, जिसकी ओर फ्रांस, रूस, अमेरिका, और जर्मनीके कमेरे गाढ़के समय आँख दौड़ाते थे और वह दिमाग सदा बहुत साफ दो-टूक सलाह देता था।"

दुखराम—धन्न है भैया! मरकस बाबा और धन्न है सती जेनी माई।

भैया—सती जेनीकी तपेस्साकी बहुत सी बातें हैं, जिनको सुननेपर आँसू रोकना मुसकिल है। अब दुक्खू भाई, बाबाकी मोटी-मोटी सिच्छा सुनो।

दुखराम—हाँ भैया! वह जरूर सुनाओ।

भैया—बाबाने पहली बात यह बतलाई कि रोटी, कपड़ा, घर आदमीको सदासे जरूर रहे हैं, इनको पैदा करना मानुखका सबसे पहला काम रहा है। मानुख इनके पैदा करनेके लिए नये-नये हथियार, नये-नये ढंग सोचता रहा है, जिससे रोटी-कपड़ा-घरके पैदा करनेका ढंग बदलता रहा है। वह पहले सिकार करके जीता था, फिर खेती करने लगा, खेतीसे फिर कारीगरीकी ओर बढ़ा, कारीगरीसे व्यौपार होने लगा, व्यौपारसे कारखानेके ढंगपर चला आया। पैदा करनेका ढंग जैसे-जैसे बदलता गया, वैसे-वैसे मानुखकी जमात भी बदतली रही और पहिली जमातबन्दी टूटती गई। सिकार और फल जमा करके जीविका करते समय माईका राज और सबका एक परिवार चलता था। लेकिन जब खेती आई, ताँबा आया, तब वह पुराना ढाँचा नहीं चल सकता था। रोटी-

कपड़ा वगैरह पैदा करनेके ढंगके बदलनेके साथही मानुख-समाजके ढाँचेको बदलनेसे रोका नहीं जा सकता। और जब ढाँचा बदलता है, तो उसका कानून आचार-विचार सब बदलता है, आदमीका मन तक बदल जाता है। बाबाने एक जगह लिखा है कि रोटी-कपड़ा इत्तादिके पैदा करनेका ढंग बदल गया। और जहाँ मानुख पुराने ढरेंको छोड़ना नहीं चाहता, पुराने ही तरहका मालिक-मिल्कियतका ख्याल रखता है, वहाँ तो दोनोंका संग्राम छिड़ जायगा।

दुखराम—भैया! थोड़ा समझा के कहो।

भैया—देखो, जब कपड़ा चरखा और करघासे बनता था, घर-घरमें लोग चरखा चलाते थे और गाँवका जुलाहा कपड़ा बुन देता था; उसी तरह बढ़ई लोहार भी अपना-अपना काम करते थे। तब गाँव अपने कामकी करीब करीब सभी चीजोंको पैदा कर लेता था, सबको चीज भी मिल जाती थी, सबको काम भी मिल जाता था। यह उस समयकी बात है, जब रोटी-कपड़ाके पैदा करनेका ढंग सिरिफ हाथसे किया जाता था। इसके बाद भापकी कल-मशीन बनी। कल-मशीनने इतना सस्ता कपड़ा और चीज तैयार किया, कि हाथकी कारीगरी चौपट हो गई।

दुखराम—यह तो देखा है भैया! हमारे देसके सब जुलाहे करघा छोड़-छोड़के चटकल-पटकलमें भाग गए।

भैया—तो अब पौनी-परजा मालिक जजमान औगैरहवाला गाँवका ढाँचा टूटने लगा कि नहीं।

दुखराम—बहुत टूट गया भैया! और टूटनेके लिए लोग हाय-हाय करते हैं, कलजुगका दोख देते हैं। लेकिन जान पड़ता है भैया! यह किसीका दोख नहीं है। पाथर, ताँबा, लोहा, कल, मसीन जैसे-जैसे नई चीज, नया ढंग आदमीके हाथमें आता गया, वैसी ही मानुख-जातिका ढाँचा भी बदलता गया। टिटिहिरीके पैर रोपनेसे आसमान ऊपर नहीं टँगा रहेगा।

भैया—इसी तरहका एक और भी संकट आया है। कल-मसीनसे अन्न भी बेसी पैदा किया जा सकता है। रूस और अमेरिकामें नई-नई खाद

और मोटरका हल लगाकर बिगहा पीछे चालिस-चालिस पचास-पचास मन अनाज पैदा करते हैं और एक-एक खेतमें नहीं समूचे देसमें। इसी तरह चीनी, कपड़ा, लालटेन दुनियाकी सभी खाने-पहनने और रहनेकी सभी चीजें कल-कारखानोंमें इतनी पैदा की जा सकती हैं, कि सारी धरतीके दो अरब लोग एक सालकी उपजसे दो दो साल तक खूब आरामसे रहें। लेकिन हो क्या रहा है? दुनियामें गरीबी बढ़ रही है, लोग और ज्यादा नंगे-भूखे रह रहे हैं।

दुखराम—इसका कारण तो जोंकें ही हैं भैया?

भैया—हाँ, जोंकें ही हैं दुक्खू भाई! लेकिन उसको इस तरह समझो। अब एक एक बढ़ई लोहार अपना-अपना हथौड़ा बसूला लेकर अलग-अलग काम तो नहीं कर सकता। कारखानोंके कारण अब सभी काम साझेमें एक दूसरेसे मिलकर करना होता है। यह छोटी-सी सुई जो बनकर आती है, वह भी सैकड़ों हाथोंमें तैयार होती है। काम साझेमें—सबको मिलकर करना होता है लेकिन चीजोंका मालिक है जोंक। जोंक कहती है, यह हमारी चीज है इसलिए हम १४)की चीज बनानेवाले मजूरको।) देंगे, किसानको उसके कपासका ॥) देंगे। और बाकी दामको वह अपने पास रखना चाहता है। लेकिन सुईवाली जोंक नफेमें सुई अपने पास नहीं रखना चाहती। वह चाहती है कि उसका सब माल बिक जाय। लकिन बिकनेके लिए पैसा चाहिए। किसानको उसने ॥) दिया मजूरको।) दिया, कमेरोंके हाथमें कुछ मिलाकर रुपया ही दो रुपया गया। अब बताओ १४)की चीज वह कैसे खरीदें।

दुखराम तो भैया! यही न हुआ कि जोंकें हमारे पास पैसा भी नहीं आने देतीं और बेसी माल पैदा करके खरीदनेको कहती हैं।

भैया—हाँ, इसीलिए तो जोंकोंका दिवाला निकलता रहता है। जब माल बेसी हो जाता है और खरीदनेवालोंके पास पैसा नहीं रहता, तब भारी सस्ती लग जाती है। याद है न तेरह चौदह बरस पहिलेकी बात?

दुखराम—मत कहो भैया! उस वक्त तो अनाज इतना सस्ता लग गया था, कि बेंचकर जमींदारकी मालगुजारी भी हम बेबाकनहीं कर सकते थे।

कितनोंको जमीन नीलाम हो गई। बड़ी सासत हुई।

भैया—एक ओर लोग सस्ती होने पर भी पैसे बिना कपड़ा नहीं खरीद सकते थे और दूसरी तरफ कपड़ा गोदाममें सड़ रहा था। जब पहिले हीका कपड़ा गँजा हुआ है, तो नया कपड़ा क्यों बनवाया जायगा? जोंकोंने उस मन्दीके दिनोंमें करोड़ों मजदूरोंको कामसे निकाल दिया। कारखाने बन्द हो गये।

सन्तोखी—तब तो भैया! इन करोड़ों मजूरोंके पास भी पैसा नहीं रहा कि मालको खरीदें। इससे तो माल गोदाम हीमें सड़ेगा न, कौन उसे खरीदेगा?

भैया—इसीको कहते हैं कबीर साहबकी उलटबाँसी 'पानीमें मीन पियासी।' एक ओर उसी अमरीकामें बेरोजगार होनेसे करोड़ों मजूर भूखे मर रहे थे, दूसरी ओर अमरीकाकी जोंकोंकी सरकारने १९३३में पचास लाख सूअर खरीदकर मरवाकर फेंकवा दिये—भूखोंको खानेके लिये नहीं दिया।

दुखराम—आततायी! जोंकोंको क्या दया-माया होगी!

भैया—डेनमार्क देसमें हर हफ्ता १५०० गाएँ मारकर उनका माँस जमीनमें गाड़ दिया जाता था, अरजनतीन देसमें लाखों भेड़ोंको मारकर नस्ट कर दिया गया? अमेरिकामें लाखों मन गेहूँको आगमें झोंक दिया, जहाजों भरी नारंगियाँ समुन्दरमें फेंक दी गईं।

सन्तोखी—भैया! क्या दुनिया बौरा गई।

भैया दुनियाकी बात मत कहो, सन्तोखी भाई! दुनिया तो भूखों मर रही है। यह जोंकोंका कसाईपन है। वह सोचते थे कि दो रुपया मन गेहूँ है, जो पचास लाख मन गेहूँ और बजारमें चला आया, तो वह और सस्ता हो जायगा? फिर नफा कहाँसे मिलेगा; इसलिए सचास लाख मन गेहूँ या पचास लाख सुअरोंको बरबाद कर दिया गया, जिसमें कि बाजारमें बाकी जो चीजें वह भेजेंगे उसका दाम ज्यादा मिलेगा।

सन्तोखी—हाँ भैया! बाजारमें माल कम और गाहक ज्यादा हो तो दाम चढ़ जाता है।

भैया—यही दाम चढ़ानेके लिए जोंकोंने आदमीके मुँहका आहार, तनका

कपड़ा सब चीज बरबाद किया।

दुखराम—और नये गाहक ढूँढ़नेके लिए जर्मन जोंकोंने तीस साल पहले-वाली लड़ाई छेड़ी।

भैया—और आजकलकी लड़ाई भी जोंकोने उसी मतलबसे छेड़ी है दुक्खू भाई! बाबाने कहा था, कि जैसे दुनिया भरकी चीजें सब मिलकर पैदा करते हैं, उसी तरह सबको मिलकर उन चीजोंका मालिक बनना चाहिए, तभी दुनियामें सुख-सान्ती होगी।

दुखराम—मिलकर मालिक बनना कैसे होगा भैया?

भैया – जैसे दुक्खू भाई! तुम्हारे घरमें पचास परानी हैं, कोई खेती देखता है, कोई गाय-भैंस देखता है, कोई रसोई बनाता है, मतलब कि परिवारका हर आदमी रोटी-कपड़ा आदिके लिए कोई न कोई काम करता है। घरमें तो कायदा है न, कि सब लोगोंके खाना-कपड़ा इत्तादिका काम किया जाय। अब तुम ऐसा कायदा चलाओ—नहीं, हम तो सबके कामकी मजूरी देंगे और दो रुपयाके कामकी चार आनासे बेसी नहीं। अब इसका फल क्या होगा? जितना काम लोगोंने किया है, उसका आठवाँ ही हिस्सा मजूरीमें उनके पास होगा, वह सब चीजको खरीद नहीं सकेंगे। अब वही जोंकोंवाली बलाय आएगी कि नहीं?

दुखराम—हाँ भैया! आठ भागमें सात भागको खरीदनेके लिए किसीके पास पैसा ही नहीं होगा, तब वह चीज सड़ेगी कि नहीं। लेकिन ऐसा परिवार कहाँ होगा?

भैया—हाँ यह जोंकें ही कर सकती हैं। मरकस बाबा कहते हैं, कि यह नफाकी बात उठा देनी चाहिए और लोग एक परिवारकी तरह साथ ही चीज पैदा करें और साथ ही भोगें।

दुखराम—तब जोंकें कहाँ रहेंगी भैया!

भैया—इसलिए तो बाबा कहते हैं, कि जोंकोंका काम खतम हो गया, उन्होंने राजाओंकी तागतको नस्ट करके कल-कारखानोंका रास्ता दिखला दिया; अब उनका एक दिन भी जीना करोड़ों आदमियोंको भूखों मारने और

लड़ाइयोंमें कतल होनेके लिए होगा !

दुखराम—यह बात बहुत पक्की है भैया !

भैया—दूसरी बात बाबाने बताई, कि मानुख जातिमें जबसे जोंकें पैदा हुईं, तभीसे जोंकों और कमेरोंका झगड़ा सुरू हुआ और यह तब-तक बन्द नहीं होगा, जब-तक कि जोंकें खतम न हो जाएँगी। जोंकें अहिंसा और दयाका ढोंग भले ही करें, लेकिन वह अहिंसा-दया पर कभी विस्वास नहीं करतीं। सौमें पंचानबे कमेरे (मजूर) हैं और पाँच जोंकें हैं। उन्होंने पंचानबे आदमियोंको पुलिस-पलटन-जेलके बल पर दबाकर रक्खा है। एड़ीसे चोटी तक जोंकें हथियारसे लैस हैं, उनका सारा राज-पाट हिन्सा, खून, लूट, झूठ और धोखापर है। वे किसी साधू-महात्माकी बन्चनमें आकर गलेमें कण्ठी बाँध लेंगी यह सोचना पागलपन है। जोंकोंको और बड़े हथियारसे और बड़े संगठनसे और बड़े त्यागके कल-बलसे पछाड़ना होगा, उनका हथियार छीनना होगा और पूरी तरह मीस-मास देना होगा।

दुखराम—देखता हूँ भैया ! मरकस बाबाने जो भी कहा है, वह एक एक बात मेरे दिलमें घुसती चली जा रही है। बाबाने धोखेवाली बात नहीं कही है। सुनते हैं महात्मा गाँधी तालुकदारों-जमींदारों, सेठों-साहूकारोंको कंठी पहिनाना चाहते हैं, और कितने लोग तो कहते फिरते हैं, कि गाँधी महात्माने सेर-बकरीको एक जगह पानी पिला दिया। लेकिन मुझे यह बात तो धोखेकी मालूम होती है। बच्चा जब नहीं सोता है, तो माँ लोरी गाती है, जिससे वह सो जाय। मुझे तो यह लोरी ही जैसी बात मालूम होती है।

भैया—गाँधी महात्माके रास्तेके बारेमें मैं फिर कहूँगा दुक्खू भाई ! और गाँधी बाबाने कोई नई बात नहीं कही है। महात्मा-बुद्ध, ईसामसीह और भी सैकड़ों महापुरुख कण्ठी बाँधकर सेरको भेड़ बनानेकी कोसिस करते रहे, लेकिन कोई सफल नहीं हुआ। जोंकोंको कहीं कंठ भी है, कि उसमें कण्ठी बाँधी जायगी ? घोड़ा घाससे यारी करेगा तो जिन्दा रहेगा ? जोंकोंको खतम कर देना बस यही एक रास्ता है।

अध्याय ५

वह देस जहाँ जोंकें नहीं हैं

दुखराम—सन्तोखी भाई ! देख रहे हो न कैसी-कैसी बात सुननेमें आ रही है। हम लोग समझे थे, कि धनी-गरीब भगवानने बनाया है; अब मालूम हो रहा है कि यह सब जोंकोंका जाल है। इस जाल-फरेबसे जोंकोंको ही फायदा है। बढ़िया खाना खाते और बढ़िया कपड़ा पहनते हैं, और हम लोग जो ढेला फोड़-फोड़कर मर जाते, भर पेट अन्न भी नहीं मिलता ।

सन्तोखी—हम लोग छोटी छोटी दुकान खोलकर जो दिन-रात चिन्तामें रहते हैं, यह भी तो जोंकोंकी ही ताबेदारी है। दिन-रात फिकरमें हम मरते हैं और सब नफा जोंकोंके पास चला जाता है। जो चारकी धोती चौदह रुपयापर दूकानदार बेंचता है, तो गिरस्त समझता है कि सब हम लूट रहे हैं। सब गाली हम लोग सुनते हैं और जिसके पास पौने चौदह रुपया चला जाता है उसको कोई नहीं पूछता ।

दुखराम—वह तो कलकत्ता बम्बईमें बैठे हुए हैं, उनसे कौन पूछने जायगा। लेकिन मजूर उनकी भी खबर ले रहे हैं। अब मोटी तोंद ज्यादा दिन नहीं चलेगी। अच्छा, भैया रजबली आ गये।

भैया—दुक्खू भाई ! कमेरोंकी जीतका रास्ता बहुत टेढ़ा-मेढ़ा है, उसको समझना-समझाना और भी मुस्किल है। मैं जो कुछ कहता हूँ, जो सोलह आनामें आठ आना भी तुम्हारी समझमें आ जाय, तो बड़ी बात है।

दुखराम—आठ आना नहीं भैया, मैं तो पन्द्रह आना समझ रहा हूँ। बात तो सब याद नहीं रहेगी, लेकिन एक-एक चीज दिलमें बैठती जा रही है।

भैया—याद होनेकी जरूरत नहीं है, बस दिलमें बैठना चाहिए। मरकस बाबाने बतला दिया था, कि पूँजीपतिके राजमें हर दसवें साल भाव गिर जाना, मन्दी पड़ना, करोड़ों मजूरोंका बेकार होकर भूखों मरना, करोड़ों किसानोंका अनाजके सस्ता होनेसे उजड़ जाना, और सबके ऊपर संसार भरको

लड़ाईमें झोंक देना यह बातें रोकी नहीं जा सकतीं। इन सबसे बचनेका उपाय यही है, कि जोंकोंकी सरकारको हटाकर कमेरोंकी सरकार बैठाई जाय, और देस भर को एक परिवार बना दिया जाय। बाबाने जो रास्ता दिखलाया था, उसीसे चलकर पेरिसके कमेरोंने जोंकोंको उलट दिया। लेकिन पेरिसके मजूरोंने यह नहीं समझा कि किसानोंको भी वही दुख तकलीफ है; उन्हें भी हमें अपने साथ मिलाना है। किसान ज्यादा भोले-भाले होते हैं, गाँवमें एक कोनेमें रहते हैं, दुनिया जहानका उन्हें पता नहीं रहता। अलग-बिलग रहनेसे उनका एका करना भी मुस्किल होता है। उनको पचास तरहसे भड़काया जा सकता है। जोंकोंने इसी तरह भड़काया। मजूर बड़ी बहादुरीसे लड़े, लेकिन जोंकोंने सारे फ्रांस भरकी पल्टनको उनके ऊपर झोंक दिया। उसी समय (१८७०-७१) जर्मन जोंकोंने फ्रांसीसी जोंकोंकी सरकारको हरा दिया था, लाखों सिपाहियोंको कैद कर लिया था, लेकिन जैसे ही मालूम हुआ, पेरिसमें मजूरोंने अपना राज कायम कर दिया, तो वह घबरा गई। जर्मन जोंकोंने फ्रांसके सभी कैदी सिपाहियोंको छोड़ दिया, जिसमें कि वह पेरिसमें जाकर मजूरोंके राजको बरबाद कर दें।

दुखराम—एक दूसरेके खूनकी प्यासी जोंकें आपसमें मिल गईं, जैसे ही उन्हें कमेरोंका डर मालूम होने लगा?

भैया—तीस साल बाद जो महाभारत जर्मनों ने छेड़ा था, पता है न, वह जर्मन जोंकोंके फायदाके ही लिए। इस वक्त तक मरकस बाबाके एक परतापी चेला लेनिन पैदा हो गए थे।

दुखराम—लेनिन कौन थे भैया—कहाँके थे?

भैया—लेनिनका जनम रूसमें हुआ था। मजूरों-किसानोंको उन्होंने मरकस बाबाका रास्ता बतलाया। मजूरोंके ऊपर होनेवाले जुलुमके लिए वह जोंकोंसे लड़ते रहे। जोंकोंकी सरकार और पुलिसने उनके बड़े भाईको फाँसी चढ़ाया और उनको भी काला-पानी भेज दिया। लेनिन जहाँ भी रहते, वहाँसे कमेरोंको रास्ता बतलाते रहते। जेहलखाना और काला-पानीमें रखकर भी जोंकें उन्हें रोक नहीं सकती थीं। ३६ वर्ष पहिले (१६०५) लेनिन अगुआ

बने और कमेरोंने जोंकोंके खिलाफ तलवार उठाई। उस वक्त इनकी ताकत उतनी मजबूत नहीं थी, इसलिए जोंक-सरकारने दबा दिया। हजारोंको गोलीसे उड़ा दिया गया, उनसे भी ज्यादा जेलोंमें ठूँस दिए गये। जोंकें जीत गईं, कमेरे हार गए। लेकिन जोंकोंका एक बारका हारना सदाके लिए उनका खतम हो जाना है, कमेरोंका एकबार हारनेसे कुछ नहीं होगा, वह तो धूल झाड़कर फिर-फिर लड़ते रहेंगे। कमेरे लड़ते हैं रोटी-कपड़ेके लिए, रोटी-कपड़ेका जब दुख मिटेगा तभी न वह लड़ाई करना छोड़ेंगे?

दुखराम—अंगरेजोंके राजमें रोटी-कपड़ा सबको कहाँसे मिल सकता है?

भैया—लेनिन महात्माको रूसकी जोंकें जो पकड़ पातीं, तो फाँसी चढ़ा देतीं, इसलिए वह रूससे बाहर चले गए थे; लेकिन उनके बहुतसे साथी देश के भीतर रहकर कमेरोंमें काम करते थे। लेनिन उनको रास्ता बतलानेके लिए किताबें लिखते थे और लोग जोखिम उठाकर उन किताबोंको रूसके भीतर ले जाते थे।

दुखराम—जोखिम क्या भैया!

भैया—पकड़े जाते तो फाँसी-डामलकी ही सजा होती।

दुखराम किताब कौन इतने खतरेकी चीज थी, भैया?

भैया—मरकस बाबा और उनके चेला लोगोंकी किताबोंसे जोंकें तोप बन्दूकसे भी ज्यादा डरतीं। वह समझती हैं, गोला-गंठा तो गरीबोंके लड़कोंके ही पास रहता है। जोंकोंके लड़के थोड़े ही पन्द्रह रुपयेके सिपाही बनते हैं! इसलिए जोंकें समझती हैं, कि जिस दिन गरीबों और उनके लड़कोंको जोंकोंके पापका पता लग गया, उस दिन फिर खैरियत नहीं। जब लेनिन महात्मा रूससे बाहर कभी लंडन, कभी फ्रांस, कभी स्वीजरलैण्ड इत्यादि देसोंमें मारे-मारे फिर रहे थे, उनके साथ उनकी स्त्री कुरुपसकाया (क्रुप्सकाया) भी दुख झेल रही थीं। उसी वक्त १९१४ में जर्मन जोंकोंने अपना माल बेचनेका कहीं रास्ता न देखकर दूसरी मोटी-मोटी जोंकोंपर धावा बोल दिया। इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस और पीछे अमेरिका एक ओर हुए, जर्मनी-आस्ट्रिया एक ओर हुए। जर्मन जोंकें कमजोर रहीं, और उनके दुसमन जीत

गए। लेकिन हमें जोंकोंके हारने-जीतनेकी बात नहीं समझाना है। समझाना यह है कि कैसे रूसमें लेनिन महात्मा और उनके कमेरे साथियोंने जोंकोंका टाट उलट दिया।

दुखराम—हाँ भैया! यह हमारे बहुत कामकी बात है।

भैया—रूसकी जोंकें जर्मन जोंकोंसे भिड़ रही थीं। नफा नुकसान तो जोंकोंका था, लेकिन लड़नेवाली जोंकें थोड़े ही होती हैं। जैसे भड़भूजा भाड़में पत्ती झोंकता है, उसी तरह रूसी जोंकें अपने देसके कमेरों और उनके लड़कोंको जर्मन-तोपोंके मुँहमें झोंकने लगीं। लेकिन जर्मन ज्यादा मजबूत थे। वह रूसियोंको हराने लगे। रूसी जोंकें घबराने लगीं, उन्होंने और कमेरोंको और उनके बच्चोंको लड़ाईमें भेजा। कितनोंको तो बन्दूक भी नहीं दिया।

सन्तोखी—बन्दूक बिना लड़ते कैसे भैया।

भैया—जोंकोंने कहा कि, वहीं जाके, जो सिपाही मरें, उनकी बन्दूकें ले लो। जोंकोंके अपने लड़के नहीं न थे, गरीबोंके लड़कोंको भाड़में झोंकनेसे क्यों हिचकिचाते! गरीबोंके बच्चे समझने लगे, जोंकें उनके साथ चाल चल रही हैं। उधर लेनिन महात्मा भी किसानों, मजूरों और उनके लड़के सिपाहियोंकी आँख खोलने लगे—जोंकों-जोंकोंकी लड़ाईमें नाहक गरीबोंका बध कराया जा रहा है। लेनिन महात्माने कहा कि जवानों! तुम्हारे दुसमन बाहर नहीं तुम्हारे घरकी जोंकें हैं। बन्दूकें खूब हाथमें आ गईं, बन्दूकोंका मोहड़ा फेर दो और घरकी जोंकोंको खतम कर दो।

दुखराम—मरकस बाबाके चेला लेनिन महात्मा भी कम नहीं थे!

भैया—लेनिन महात्मा मरकस बाबाके बड़े लायक चेला थे दुक्खू भाई! हाँ, तो मजूर-किसान उठ खड़े हुए। उन्हींके लड़के सिपाही थे, सबको वह तेईस बरससे समझा रहे थे। अब (नवम्बर सन् १९१७में) उनको बात समझमें आ गई। उस बखत पेतरोग्रात सहर रूसकी राजधानी रही। उसीका नाम पीछेसे बदल कर लेनिनग्राद हो गया। लेनिन महात्माने पेतरोग्रातमें कमेरोंकी सरकार कायम की। पेतरोग्रातमें लाखों मजूर कारखानोंमें काम करते थे।

वह लेनिन महात्माको खूब जानते थे और परानसे भी अधिक प्यार करते थे। जब मजूर बन्दूक लेकर अपना लाल झंडा गाड़ रहे थे, तो जोंकोंने पलटन-पर-पलटन उनके खिलाफ भेजी। लेकिन सिपाही अपने भाई-बहनोंको पहचनाते थे, वह जोंकोंकी बातमें नहीं आये। वह अपनी बन्दूक लिये दिये कमेरोंके साथ मिल गये। पलटनके अफसर जोंकोंके लड़के थे। लेकिन हजार सिपाहीमें दस अफसर क्या करते? अफसर सिपाही बन गये और उन्होने कमेरोंकी पलटनपर गोली चलाई, लेकिन गोली जल्दी खतम हो गई और वह भी ठंडे हो गये। फिर जोकोंने लड़ाईके मैदानसे पलटनें मँगवाईं, और उन्हें कमेरोंके साथ लड़नेके लिए भेजा? पचास-पचास हजार पलटन कूच करती चली आतीं, लेकिन जहाँ पेतरोग्रात राजधानीकी सीमामें पहुँचतीं, कि जेठकी दुपहरियामें मक्खनकी तरह पिघलकर लोप हो जातीं।

सन्तोखी—लोप कैसे हो जातीं भैया?

भैया—लोप हो जानेका मतलब है, कि सब सिपाही कमेरोंकी पलटनमें मिल गये। अफसरोंमें जिन्होने तीन-पाँच किया, वह वहीं मार दिये गये, बाकी भाग निकले। कमेरोंके राज सँभालनेकी खबर जहाँ-जहाँ पहुँची, वहाँ-वहाँ जोंकों और कमेरोंका दो-दल हो गया और सब जगह जोंकोंको निकाल बाहर किया गया। कमेरोंकी सरकाने तुरन्त कानून बना दिया, कि जितने तालुकदार-जमीदार, राजा-नवाब हैं, उनकी सारी जमीदारी आजसे सारे रूसके कमेरोंकी हुई। जितने कल-कारखाने हैं, आजसे जोंकें उनकी कुछ नहीं हैं, अब सारे कमेरे उनके मालिक हैं। जितने रेल, जहाज ओगैरह की कंपनियाँ हैं, वह सब अब कमेरोंकी हैं; जितनी कोयलेकी खानें, तेलकी खानें, हर तरहकी खानें हैं, वह सब कमेरोंकी हैं। जितने बंक और उनके पास करोड़ों-अरबोंका खजाना है, वह कमेरोंका है। जोंकोंके जितने महल-कोठा, अटारी, बाग, बँगले हैं, वह सब कमेरोंके हैं।

दुखराम—तो मरकस बाबाने जो बात बतलाई थी, उसे लेनिन महात्माने पूरा कर दिया।

भैया—हाँ, पूरा कर दिया। पेतरोग्रात राजधानीमें आधेके करीब गरीब

लोगोंके रहनेका कोई ठौर-ठिकाना नहीं था। लोग सड़ी गन्दी गलियोंमें रहते थे। लाखों मजूर तो फटे टीन और कनस्तरकी छतो-दिवारोंवाली सूअरकी खोभार जैसी छोटी-छोटी झोपड़ियोंमें रहते थे। पाँच हाथ लम्बी, चार हाथ चौड़ी झोपड़ियोंमें दस दस आदमियोंका परिवार रहता था। रूसका जाड़ा बहुत कड़ा तिसमें पेतरोग्राद तो और ज्यादा; सरदीके मारे वहाँ नदी, समुन्दर सब जमकर बरफ हो जाते हैं।

सन्तोखी—पत्थर जैसी बरफ ?

भैया—सन्तोखी भाई ! यदि तुम जाड़ामें वहाँ पहुँच जाओ, तो साँस लेनेसे जो भाप नाकसे बाहर निकलेगी, वह पहले पानी बनकर तुम्हारी बड़ी-बड़ी मूँछोंमें समा जायगी और छन भर हीमें मालूम होगा कि तुम्हारी मूँछें सीसेके भीतर जमी हुई हैं। इतनी सरदीपर भी मजूरोंको उन्हीं टीनोंकी खोभारोंमें रहना पड़ता, उनके पास आग जलानेके लिए कोयला भी नहीं रहता।

दुखराम—जोंकोंका कदम जहाँ गया, वहाँ नरक छोड़ और क्या होगा !

भैया—कमेरोंकी सरकारने तुरन्त हुकुम निकाला और जोंकोंके बड़े-बड़े महलों और कोठोंको कमेरोंके लिए खोल दिया। उन्होंने जोंकोंसे कह दिया कि जो कमेरोंकी सरकारके खिलाफ हैं, उनके ही ऊपर हम हाथ उठायेंगे। जो जोंकका धरम छोड़कर आदमी बननेके लिए तैयार हैं, उनको हम भाई मानेंगे और काम देंगे। जोंकोंमें जो मानुख बन गये, उनको उन्हींके घरोंकी एक कोठरी दे दी और बाकी मकानमें सूअरकी खोभारसे निकालकर कमेरोंको ला बसाया। कमेरोंका राज कायम होते ही रानियों, तालुकदारनियों और सेठानियोंकी लौंड़ियाँ काम छोड़कर अलग हो गईं।

सन्तोखी—जब जमीन, मकान, बंकका रुपया और कल-कारखाना सभी छीन लिया गया, तो लौंड़ियोंको कैसे रखतीं ?

भैया—नौकर-चाकर भी जोंकोंको छोड़कर हट गये।

दुखराम—अब रानी भरती होंगी पानी !

भैया—बिना देह हिलाये हरामका पैसा थोड़े ही मिल सकता था ? कमेरों-

की सरकारने सबको काम देनेका इन्तजाम किया। जब इङ्गलैण्ड, फ्रांस अमेरिका, जापान और दूसरे देसोंकी जोंकोंको पता लगा, तो उनकी नींद हराम हो गई। रूस छोटा-मोटा देस नहीं है, दुनियाके छ भागमें एक भाग रूसका है। उसके पूरबी किनारेसे पच्छिमी किनारे तक डाकगाड़ीसे जायँ तो १५ दिन १५ रात लगती है।

दुखराम—बम्बईसे प्रयाग तो भैया! एक दिन एक रात हीमें चले आते हैं, रूस बहुत भारी देस होगा।

भैया—हाँ, हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंकी धरती इकट्ठा जोड़ी जाय, तो रूसके बराबर होगी। इसीलिए बाहरी देसोंकी जोंकें बहुत घबराईं, लेकिन साल भर तक वह बहुत नहीं कर सकीं। जब जर्मनी हार गया, तो जीतनेवाली सारी जोंकें इतनी घबराईं, जितना कंस भी कन्हैयाके पैदा होनेसे नहीं घबराया होगा। उन्होंने अपनी फौज, गोला-बारूद सब लेकर बोलसेविकोंके ऊपर धावा बोल दिया।

दुखराम—बोलसेविक कौन हैं भैया!

भैया—रूसमें मरकस बाबाके चेलोंको बोलसेविक कहा जाता है।

दुखराम—तो बोलसेविक भी कमूनिस्तोंकी तरह हम कमेरोंके आदमी हैं।

भैया—बोलसेविक कमूनिस्त एक ही हैं। चर्चिल उस वक्त बिलायतका युद्ध-मंत्री था, वह तो बोलसेविकोंको कच्चा खा जाना चाहता था।

दुखराम—यही चर्चिल न भैया! जो आजकल बिलायतका महा-मंत्री है।

भैया—हाँ, यही जो चाहता है कि परलय तक तक हिन्दुस्तानकी छातीपर कोदो दरें। इसने भी अपनी पलटन और गोला-बारूद रूसमें उतारी। फ्रांसने भी अपनी पलटन भेजी। अमेरिकाने भी। जापानने भी। चौदह बादसाहोंने अपनी-अपनी पलटन कमेरोंकी सरकारको बरबाद कर डालनेके लिए रूस भेजी। क्यों भेजा? क्या रूसके कमेरे किसीकी एक अंगुल भी जमीन लेना चाहते थे?

दुखराम—दुनिया भरकी जोंकोंने समझा कि जो धरतीके छ भागमेंसे

एक भागकी जोंकोंको खतमकर कमेरों ने अपना राज कायम कर लिया, तो बाकी पाँच भागके कमेरोंका भी मन बिगड़ जायगा, फिर बकरीकी माँ कै दिन खैर मनायेगी ?

भैया—बड़े संकटकी बेला थी। दुनिया भरकी जोंकें गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रही थीं, अखबारोंमें छाप रही थीं, कि बोलेसेविक अधरमी है, बच्चोंको मार डालते हैं, बूढ़ोंको भी नहीं छोड़ते। उन्होंने सभी औरतोंको बेसवा बना दिया, मसजिदों-मंदिरोंको तोड़ दिया, हराम-हलालकी बात उठा दी इत्तादि हजारों झूठ फैलाये जाने लगे।

दुखराम—हिन्दुस्तानमें भी भैया वह यही बात करेंगे। जोंकें समझती हैं कि कमेरे मूरख-अनपढ़ होते हैं, उन्हें झूँठ-साँच कहकर मरकस बाबाके रास्तेके खिलाफ कर देंगे। भैया ! हम लोगोंको बहुत सजग रहना होगा। तुम भगवानकी बातको दबा देते रहे, अब उसका फायदा मुझे मालूम हो रहा है। भगवान और धरमसे हमें पहिले नहीं झगड़ना है। पहिले हमें जोंकोंसे निपट लेना है। कमेरे भाई बहुत दिनोंसे जालमें फँसे हैं, हम लोग धरम और भगवानके खिलाफ बोलनेमें ही ताकत लगा देंगे, तो जोंकें उन्हें बहकाने लगेंगी।

भैया—हाँ दुक्खू भाई ! सबकी जड़ यही जोंकें है, जड़ काटना अच्छा है कि पत्ता नोचना अच्छा है ?

दुखराम—जड़ काटना अच्छा है भैया !

भैया—लेकिन जोंकें सभी कमेरोंकी आँखोंमें धूल नहीं झोंक सकतीं, बिलायतके मजूरोंको जब मालूम हुआ, कि हमारे देसकी जोंकें रूसके कमेरा राज्यको सत्यानास करनेके लिए तोप-बन्दूक, गोला-बारूद भेज रही हैं, तो उन्होंने जहाजपर माल लादनेसे इनकार कर दिया। खलासियों-मल्लाहोंने जहाज छोड़ दिया। फ्रांसकी पलटनें लड़नेके लिए रूस पहुँचीं और सभी कमेरोंने जान जोखिममें डालकर फ्रांसीसी सिपाहियोंके पास पहुँच सब बात कही, तो पलटनें बिगड़ चलीं। अँगरेजी पलटनोंमें भी यही बात दिखाई देने लगी। रूसी कमेरे अब जोंकोंके लिए नहीं अपने लिए लड़ रहे थे, इसलिए जानपर

खेलना उनके लिए खेल था। बाहरकी जोंक-सरकारोंने समझ लिया, कि अपनी पलटनको जो वहाँ लड़नेके लिए भेजा, तो बोलसेविकोंकी बीमारी हमारे देसमें चली आयेगी। उन्होंने अपनी पलटनें लौटा लीं। लेकिन हाथपर हाथ धरकर बैठते कैसे? रूसी जोंकोंके कितने ही जरनैल और बच्चे कमेरोंके राजसे जहाँ-तहाँ लड़ रहे थे। बड़े-बड़े महंत भी तो जोंक ही हैं न? उन्होंने धरमके नामपर कितने ही किसानोंको बहकाया। बिलायत और दूसरे मुल्कों-की जोंक-सरकारोंने सोचा, कि रूसी जोंक जरनैलों और उनके आदमियों-को ही सिखण्डी बनाकर टट्टीकी आड़में सिकार करें। चर्चिल और दूसरे भी देसोंके जोंकराजोंके मंत्रियोंने जोंक जरनैलोंको रुपए-पैसे, गोला-बारूद, हवाई जहाज आदिसे खूब मदद की। जोंकें आखिर रूसमें रह न सकीं; लेकिन चलते-चलते भी उन्होंने रूसको भयानक नरक बना दिया, सहर और गाँव तबाह कर दिया। जोंक जरनैलोंने औरतों और बूढ़ोंपर दिल खोल कर हाथ साफ किया।

दुखराम—वह तालुकदारों, राजा-नबाबों, सेठ साहूकारोंके लड़के थे न? वह सोच रहे होंगे कि अब हमैं महल और अप्सरायें फिर कहाँ मिलेगीं?

भैया—हाँ, और यह बात सभी जगह दुहराई जायगी। जोंकें जल्दी हार नहीं मानेंगी। जोंक जरनैलोंने खेती बरबाद कर दी, अनाज जलादिया। बाहरके किसी मुलुकसे कमेरोंकी सरकार कोई चीज न मँगा ले, इसके लिए बिलायत और दूसरे मुल्कोंके जहाज पहरा देते थे और जहाँ कोई जहाज कमेरोंके लिए आता या जाता दिखाई देता उसे डुबा देते। जितने लड़ाईमें नहीं मरे थे, उससे कई गुना ज्यादा आदमी-बच्चे-औरतें भूखके मारे मर गईं—एक करोड़से ज्यादा आदमी मरे थे।

दुखराम—जब बिना लड़ाईके बंगालमें साठ लाख आदमी बलि चढ़ गये, तो वहाँके बारेमें क्या पूछना है?

भैया—पाँच बरस तक (१९१७-२२) रूसके कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकों और बाहरवाली जोंकोंके साथ लोहा लिया। लाखोंने हँस-हँस कर जान दी, अन्त में जयमाला कमेरोंके गलेमें पड़ी। लाल झंडा अचल हो गया

और लाल पलटनके नामसे जोकें घबड़ाने लगीं।

दुखराम—लाल झंडा और लाल पलटन क्या है भैया?

भैया—लाल झंडा तुमने देखा नहीं है दुक्खू भाई! कलकत्ताके मजूर भी जब कोई अपना जलसा या सभा करते हैं। तो लाल झंडा ही लेकर चलते हैं।

दुखराम—देखा तो था भैया, लेकिन मैंने समझा था महाबीरी झंडा है।

भैया—तुम्हारी चटकलके मुसलमान मजूर उस झंडेके साथ-साथ थे कि नहीं?

दुखराम—थे भैया! जुम्मन काका सुकरू भैया बहुतसे थे। और अब मुझे समझमें आता है उस झंडेपर महाबीरजीकी मूरत नहीं थी।

भैया—कमेरोंका झंडा लाल चौकोर होता है। रूसके झंडे पर हँसिया और हथौड़ाका चीन्ह बना रहता है। हँसिया है किसानोंका हथियार और हथौड़ा है मजूरोंका। झंडेका लाल रंग कमेरोंका खून है।

दुखराम—अब मालूम हुआ लाल झंडेका मतलब। हमें भी अपने झंडेको खूनसे लाल करना होगा। भैया, यह लाल रंग कमेरोंका अपना लाल रक्त है न?

भैया—हाँ, अपना रंग है, इसी वास्ते रूसके कमेरोंकी पलटनका नाम है लाल पलटन।

दुखराम—उस दिन भैया! तुमने अखबारमें पढ़कर सुनाया, कि लाल पलटनके सामनेसे भागते भागते जर्मन जोंकोंकी फौजें अपने घरमें घुस गईं।

भैया—हाँ, और लाल फौज उनके घरमें घुसकर जोंकों और उनकी सेनाका संहार कर रही है। रूसमें १८२ कौमें बसती हैं।

दुखराम—तो वहाँ एक खोम नहीं है?

भैया—एक खोम नहीं है, लेकिन कमेरोंका राज्य है न, इसलिए सभी १८२ खोमें मेलसे रहती हैं। बाहरकी जोंकोंने बाकी खोमोंको बहकानेमें कोई कोसिस नहीं बाकी रखी। किसीको मुसलमान कहके बहकाया, किसीको किरिस्तान कहकर, किसीको यहूदी कहकर, किसीको बौद्ध कहकर अलग करना

चाहा, लेंकिन कमेरे-कमेरे सब एक हो गये। लेनिन महात्माकी पारटीने लड़ाईसे पहिले ही बात पक्की कर दी थी, कि रूसमें १८२ खौमें हैं, १८२ भासा है, चार-चार धरम हैं, काले लोग भी हैं गोरे लोग भी हैं; लेकिन कोई छोटा-बड़ा नहीं है, सब बराबर है। जमीन-मकान, कल-कारखाना, रेल-खान सब १८२ खोमोंके हैं। जो किसी खोमको दबाया जाय, तो वह जब चाहे तब अपना देस अलग कर सकतो है।

दुखराम—दिल साफ था भैया! छल-कपटकी कोई बात नहीं थी।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई १८२ कौममेंसे किसीने अलग होनेका नाम नहीं लिया। बल्कि पाँच खोम बाहरसे आकर फिर मिल गईं।

दुखराम—बड़ा भारी परिवार है भैया!

भैया—बीस करोड़का परिवार है और सब एक दूसरेके वास्ते परान देते हैं। लड़ाई-झगड़ा करना खून चूसनेवाली जोंकोंका काम है। कमेरोंको तो खूब मेहनत करके अधिक अन्न उपजाना है, अधिक कपड़ा पैदा करना है, अच्छा घर बनाना है, सबके पढ़ने-लिखनेका, दवाई-दरपनका इंतिजाम करना है।

दुखराम—जिसमें सब सुखी रहें, कहीं नरकका निसान न रह जाय। दुनिया भरकी जोंकोंके मुँह पर कालिख पुत गया न भैया?

भैया—कालिख तो पुत गया, और उनका दिल भी थरथर काँपने लगा। वे समझने लगीं, कि जब तक रूसमें कमेरोंका राज रहेगा, तब तक हमारी जान हर वक्त खतरेमें है। लेनिन महात्मा पर उन्होंने गोली चलवाई, घाव तो भारी था, लेकिन उस वक्त वह बच गए, तो भी वह दिनपर दिन कमजोर होते गए, और कमेरोंके राजके कायम होनेसे सात बरस बाद (जनवरी १९२४) मर गये।

दुखराम—हत्यारे पापी!

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! मरकस बाबाका रास्ता इतना कच्चा नहीं है, कि एक नेताके मार देनेसे वह खतम हो जाएगा। लेनिन महात्माने रूसके कमेरोंको सिच्छा दी थी। कि एक-एक कमेरा नर या नारीको राज चलानेका

ढंग सीखना होगा। कमेरे लेनिन महात्माकी एक-एक बात पर जान देनेके लिए तैयार थे। रूसकी जोंकोंसे तो अब कोई आसा नहीं रह गई थी, इसलिए बाहरी देसोंकी जोंकोंने दूसरा रास्ता लेना चाहा। रूसके कमेरोंकी बातको सुन-कर हंगरी देसमें भी कमेरोंका राज कायम हुआ। लेकिन इंग्लैण्ड, फ्रांस और अमेरिकाकी जोंकोंने उसे दबा दिया। इटलीमें भी जब कमेरोंने जोर लगाया, तो राजा-तालुकदार, सेठ-महाजन काँपने लगे। उन्होंने एक गुण्डेकी पीठ ठोंकी, जिसका नाम मुसोलिनी था और राजकी लगाम उसके हाथमें दे दी। मुसोलिनी-ने कमेरोंका पच्छ लेनेवाले एक-एक आदमीको चुन-चुनकर मारा। बिलायती जोंकें खूब खुश हुईं, उनके बड़े बड़े मंत्री तक मुसोलनीको बधाई देने इटली गये। मुसोलनीने लाखों कमेरों और कम्निस्तोंके खूनकी होली खेली, लेकिन दुनियाकी जोंकोंने मुसोलिनीकी महापुरुष और क्या कह-कह कर तारीफ की। जर्मनीके भी कमेरे जोंकोंके पीछे पड़े। इसको देख कर भीतर और बाहरकी जोंकें खूब घबराईं। वह चारों ओर आँख फाड़-फाड़कर सहारा ढूंढ़ने लगीं। जब जर्मनीमें भी मुसोलिनीकी तरहका एक दूसरा गुंडा हिटलर पैदा हो गया, तो जोंकोंका दिल ठंड़ा हुआ। बिलायतकी जोंकोंने हिटलरकी हिम्मतको खूब बढ़ाया। हिटलर कहता था दुनिया भरके सबसे बड़े दुसमन यही बोलसेविक हैं।

दुखराम—दुनिया भरके दुसमन नहीं, जोंकोंके दुसमन हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई! सच्ची बात वह कैसे कहता? जरमनीके करोड़पति पूँजीपतियोंने हिटलरके लिए थैली खोल दी, तालुकदार पहले कुछ सन्देह करते थे।

सन्तोखी—तालुकदार क्यों सन्देह करने लगे? पूँजीपति और तालुकदार तो एक ही तरहकी जोंकें हैं।

भैया—बिलायतमें जैसे बड़े-बड़े जमींदार बड़े-बड़े पूँजीपति कारखानेदार भी हैं, जर्मनीमें अभी उतना नहीं हो पाया था। जर्मनीमें नवाब-तालुकदार अपनी अकड़में रहते थे और उनमेंसे बहुत कम कारखानेदार बनना चाहते

थे। कारखानेदार पूँजीपति हिटलरकी पीठपर थे, इससे वह समझने लगे कि कहीं पूँजीपतियोंका पलरा भारी न हो जाय। पूँजीपतियोंके पास जो करोड़ोंके कारखाने थे, उनके पास रुपयेका बल था; तो जर्मनीके तालुकदार-नवाबोंके हाथमें सारी सेना थी। जर्मन फौजके बड़े बड़े अफसरोंमें सभी और छोटोंमें-से भी अधिक तालुकदार घरानेके लड़के थे। इधर पूँजीपतियों और तालुकदारों-में अभी गठबन्धन नहीं हो पाया था उधर कमकरोंकी ताकत बढ़ रही थी। बाहरकी जोंकोंने भी समझाया, तालुकदारोंने भी झख मारा, और कमेरोंके भारी खतरेको देखकर जर्मनीके प्रेसीडेन्ट एक बड़े तालुकदार हिन्डन वर्गने हिटलरके हाथमें राज दे दिया। अब गुंडा-राज पूरीतौरसे अपना रूप दिखलाने लगा। कमेरोंकी सभाओं और जमात-बन्दीको खूनी हाथोंसे बन्द कर दिया गया। गोली और फाँसीसे मारे जानेवालोंकी गिनती नहीं हो सकती थी। हजारों हजार मरद मेहरारू नरकसे भी बुरे जेलोंमें डाल दिये गये, जहाँ उनमें से अधिक भूखे रहकर या पागल होकर मर गये।

दुखराम—तो हिटलर सबसे बड़ा खूनी निकला भैया! और उस दिन वह सफेद टोपीवाले बाबू हिटलरको देवता बना रहे थे।

भैया—वह क्या, दुनिया भरकी जोंकें हिटलरको देवता बना रही थीं। यह तो अँगरेज, फ्रांसीसी और अमेरिकावाली जोंकोंपर जब हिटलरने हल्ला बोल दिया, तब उसे गाली देने लगे। लेकिन हिटलरको मजबूत करनेमें सबसे बड़ा हाथ विलायतकी जोंकोंका था। उन्होंने उसे दिल खोलकर धन और बरदान दिया।

सन्तोखी—तो भैया, सिउजीसे बरदान पाकर भसमासुर उन्हींके सिरपर हाथ रखने चला?

भैया—हाँ दुक्खू भाई! हिटलरने जर्मनीके लोगोंका कान भरना सुरू किया कि भगवानने नीली आँखों और भूरे बालोंवाली जातिको ही दुनियामें राज करनेके लिए पैदा किया ऐसी जाति जर्मनीसे बाहर कहीं नहीं। जर्मन ही वह आर्य जाति है, जिसे भगवानने दुनियाका राजा बनाया।

सन्तोखी—तो हिटलर अपनेको अरिया कहता है भैया।

भैया—हाँ, वह अपनेको अरिया कहता है और स्वस्तिक (सतिया)का चीन्ह अपने झंडे पर लगाता है।

सन्तोखी—अब पता लगा, उस दिन महासय भड़ामसिंह उपदेसक बड़े जोर-जोरसे कह रहे थे, कि जर्मनीने भी अरिया धरमको मान लिया।

भैया—लेकिन महासय भड़ामसिंहको यह मालूम नहीं है कि हिटलर हिन्दुस्तानियोंको काला पसु जैसा मानता है, उसने अपनी किताबमें लिखा है कि हिन्दुन्तानी लोग सिरिफ गुलाम रहनेके लिए पैदा भये हैं। वह तो फ्रांस और इंग्लैंड जैसे गोरे-गोरे लोगोंको भी बरनसंकर कहता है।

दुखराम—बड़े-बड़े बहे जायँ गदहा कहै कितना पानी; भड़ामसिंह अरिया समाजी हैं और हिटलर अरिया है। छिः! छिः!! भड़ामसिंहने समझा होगा कि हिटलर और जर्मनीके अरिया बननेकी बात कहनेसे सारा हिन्दुस्तान अरिया समाजी बन जायगा।

भैया—हिटलरने जर्मनीके लोगोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए यह झूठी-झूठी बात गढ़ी थी। पिछली लड़ाईमें जर्मन हार गये थे, हिटलरने हजारों स्वयंसेवकोंको भूरी उरदी पहनाकर सड़कोंपर परेड कराना सुरू किया। जोंकों और उनके पिटठुओंने सोचा, कि राजा विलियम तो दुम दबाकर भाग गया, क्या जाने अब हिटलरके हाथसे जर्मनीका भाग फिर पलटे। इसमें कमेरोंके नेताओंने विसवासघात करके उसको मदद दी।

दुखराम—कमेरोंके नेताओंने कैसे धोखा दिया भैया?

भैया—इसमें हमेसा खतरा रहता है दुक्खू भाई! मरकसबाबा और लेनिन महात्मा दोनों कह गये हैं, कि कमेरोंको अपने नेताओंकी सदा परख करते रहना चाहिए। जोंकोंके पास करोड़ोंका धन है, वह लाखोंकी घूस-रिसवत दे सकती हैं। इसलिए यदि कमेरे सजग नहीं रहेंगे, तो बेईमान नेता उनको धोखा दे देंगे। बिलायतमें ऐसा ही हो रहा है। मजूर-नेताओंको हिन्दुस्तानके कमेरोंका ख्याल होना चाहिए, क्यों कि हिन्दुस्तान और बिलायत दोनों जगहके कमेरे एक ही नाव पर बैठे हुए हैं। यदि बिलायतके कमेरोंने अपने यहाँ जोंकोंका राज खतम किया, तो उनके पिछू हिन्दुस्तानमें राज नहीं

कर सकते। जो हिन्दुस्तानपर जोंकोंका राज मजबूत रहा तो बिलायतके कमेरे आजाद नहीं हो सकते। सात ही बरस पहले हमने असपेन देसमें देखा है कि जब वहाँके कमेरे जोंकोंका राज खतम करने लगे, तो असपेनकी गोरी जोंकोंने मराको (अफरीका)की काली फौज लेकर असपेनी कमेरोंपर धावा बोल दिया और जोंकोंका राजफिर कायम किया।

सन्तखी—तो भैया! तुम समझते हो, कि जो कभी विलायतके कमेरोंने अपने यहाँसे जोंकोंका राज हटाया तो बिलायती जोंकें यहाँसे हिन्दुस्तानी फौजको अपने भाइयोंके साथ लड़नेके लिए ले जायँगी?

भैया कमेरे जोंकोंके भाई बन्द नहीं हैं। जहाँ वे अपना महल, कल-कारखाना करोड़ों रुपया हाथसे निकलते देखेंगी, तो जानते हो वे चुप बैठी रहेंगी? वह कोई बात उठा न रक्खेंगी।

दुखराम—हाँ भैया! जोंकोंको न कोई लाज-सरम न दया-माया; उनके लिए तो टका ही भगवान है।

भैया—जर्मनीके कमेरोंके नेताओंमें कुछने तो अपनेको जोंकोंके हाथमें बेंच डाला, और कुछ हिजड़े थे। वह मरकस बाबाके नामकी माला जपते थे, इसलिए बहुतसे कमेरे धोखेमें पड़ गये। एक बार कमेरोंके हाथमें राज आ गया तो उनको चाहिए था कि जोंकोंका सब कुछ छीन लेते, उन्हें पीस-पास कर रख देते, लेकिन नकली सियारोंने कहना सुरू किया कि जल्दी मत करो, बहुत खून-खराबी होगी। धीरे-धीरे सब हो जायगा। जर्मनीमें कमूनिस्त भी थे, लेकिन कमेरोंके दूसरे नेताओंने कमेरोंके भीतर फूट डाल दी थी। सब एक नहीं हुये। लोग कितने बरस तक इन्तजार करते!

दुखराम—और बीचमें जोंकें चुप नहीं रही होंगी भैया!

भैया—चुप कैसे रहतीं? उनके मरने-जीनेका सवाल था। उधर हिटलरने जोंकोंके पैसेसे अपना बल बढ़ाया, इङ्गलैण्ड की जोंकोंसे खूब मदद मिली। अन्त में तालुकदारोंने भी राज उसके हाथोंमें दे दिया। राज हाथमें आते ही उसने अपनी सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। उसने कहा—मक्खन खानेसे बन्दूक रखना अच्छा है। फ्रांसकी जोंकें कुछ घबराईं क्योंकि पिछली

लड़ाईमें जर्मनोंने उनका बहुत नुकसान किया था, लेकिन बिलायतकी जोंकोंका हाथ बराबर हिटलरकी पीठपर रहा, उनको यह ख्याल नहीं था कि कहीं हिटलर हमारे ऊपर न दौड़ आये। हिटलरने राज संभालते ही कमेरोंको बेदरदी से दबा दिया, लेकिन बिलायतकी जोंकोंकी नजर रूसके कमेरोंपर थी। उन्होंने समझा था कि जर्मनीमें सात-आठ करोड़ आदमी रहते हैं, जो हिटलरने सबको तैयार करके रूस पर हमला कर दिया, तो बोलसेविकोंका राज नस्ट हो जानेसे दुनिया भरकी जोंकें चैनकी बन्सी बजायेंगी! लेकिन रूसके कमेरोंका नेता स्तालिन वीर गाफिल नहीं था।

दुखराम – स्तालिन वीर कौन है भैया!

भैया—लेनिन महात्माका सबसे लायक चेला। लेनिन महात्माके मरनेपर उसीको रूससे कमेरोंने अपना अगुआ माना। स्तालिनका मतलब है, फौलाद।

दुखराम—तो स्तालिन वीर फौलाद ही जैसा होगा भैया!

भैया—उसका मनसूबा फौलाद ही जैसा है दुक्खू भाई! और उसके ऐसा दूर देखनेवाला तो आज दुनियामें कोई नहीं है! उसने रूसके कमेरोंसे कहा, दुनियाकी जोंकें चार बरस तक आपसमें लड़कर बहुत कमजोर हो गईं, उन्होंने कमेरोंके राजको खतम करना चाहा, लेकिन वह उसे कर न सके। तो भी जैसे ही मौका मिलेगा वैसे ही वह कमेरोंके राजका गला गोटनेके लिए एक होकर दौड़ पड़ेंगे।

सन्तोखी—फिर स्तालिन वीरने क्या इन्तजाम किया भैया?

भैया—रोटी-कपड़ा और पढ़ने-लिखनेके साथ-साथ अपने देसको कल-कारखानासे इतना मजबूत कर दिया कि जिसमें जोंकोंके हमला करनेपर बाहरका मुँह ताकना न पड़े। पहिले तो राज हाथमें लेते ही लेनिन महात्माने और कामोंके साथ यह काम जरूरी समझा कि रूसमें जितने नर-नारी हैं उनमें कोई अनपढ़ न रह जाय। लेकिन पढ़ाई कौन भाखामें हो? दूसरेकी भाखामें पढ़ाई हो तो भाखा ही सीखनेमें बहुत दिन लग जायँगे। लेनिन महात्माने कहा कि हमारे यहाँ १८२ खौम हैं। सौमें नब्बे, पंचानबे अनपढ़ हैं; लेकिन कोई खौम गूँगी नहीं है।

दुखराम—एकाध आदमी गूँगा हो सकता है, सारीकी सारी खोम गूँगी कैसे होगी?

भैया—हाँ, उन्होंने कहा कि एकसौ बयासी खोमोंकी सबकी अपनी बोली है। बस जो बोली जो बोलता है, उसे उसी बोलीकी किताब पढ़ाना चाहिए। कमेरा राजसे पहले पाँच-छ खोमोंको छोड़कर किसीकी बोलीमें कोई किताब नहीं लिखी गई, न उनका कोई अच्छर था। पंडितोंने हरेक अवाजके लिए अच्छर चुना और फिर इसके बाद किताब लिख लिखकर छापने लगे।

दुखराम—अपनी भाखा हो, तब क्या सीखनेमें देर लगेगी भैया! दूसरेकी भाखामें पढ़ाई करनेका नतीजा देख रहे हो न, हम चार दरजा हिन्दी पढ़े हैं! लेकिन घरमेंतो हिन्दी बोलते नहीं; हमारी अपनी बोली है, उसीको बोलते हैं। और बड़ी मीठी बोली है भैया! हम लोग जो बोली बोलते हैं, इसका नाम क्या है भैया?

भैया—आजमगढ़, गाजीपुर, बनारस, मिरजापुर, जौनपुर ये सब पुराने जमानेमें कासी देस कहा जाता था। इसलिए हमारे यहाँकी भासाको कासिका कहना चाहिए।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया, जो कासिका बोलीमें पढ़ाई होने लगे, तो क्या कोई अनपढ़ रह जायगा? खाली अच्छर सीखना है। और अच्छर तो आदमी तीन दिनमें सीख सकता है। लेनिन मह तमाने ठीक कहा भैया! कि कोई खोम गूँगी नहीं है। लेकिन हम लोगोंको गूँगा बना दिया गया। हँसते, रोते, बोलते, गाते हैं हम अपनी कासिकामें और हमको पढ़ाई जाती है अरबी-फारसी भाखा।

भैया—हिन्दी पढ़ना खराब नहीं है दुक्खू भाई! लेकिन सुरूहीसे अपनी भाखाको छुड़ाके हिन्दी पढ़ानेका यही नतीजा होता है; कि लड़के मिडिल पास कर जाते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी लिख सकते हैं न हिंन्दीकी बड़ी-बड़ी किताबें समझ सकते हैं। आठ बरस पढ़ना अकारथ ही गया न?

सन्तोखी—अपनी भाखामें पढ़ाई होगी तभी भैया, कोई मरद-औरत अनपढ़ नहीं रहेगा और सब किताब, अखबार पढ़ समझ लेंगे।

भैया—लेनिन महात्माने सोचा कि अब हमारा राज जोंकोंका राज नहीं है, कमेरा लोगोंको अपना राज चलाना है, और जो कमेरा मरद-औरत अन-पढ़ रहेंगे, तो राज-काज कैसे चलायेंगे ? इसलिए उन्होंने पंडितोंको इस कामके लिए बैठा दिया। उन्होंने रोमन अच्छरका क-ख बनाया और किताबें छाप-छापकर स्कूलोंमें भेजना सुरू किया। लेनिन महात्मा और स्तालिन वीरका कहना सुनते ही समूचे देसके लोग बिद्दारथी बन गये। सत्तर सालके बूढ़े-बूढ़ियों तकने अपने पोतोंके साथ बैठकर अच्छर सीखा।

दुखराम—अपनी बोलीमें जो पढ़नेका इन्तजाम नहीं हुआ होता, तो बूढ़े-बूढ़ियों छोड़ जवानोंको भी पढ़नेकी हिम्मत न होती। हमारे यहाँ देखो न, अपनी भाखाको तो कोई पूछता ही नहीं, हिन्दी पढ़ाई जाती है, लेकिन वह भी नाम करनेके लिए, नहीं तो बड़ी-बड़ी पढ़ाई तो अब अँगरेजीमें होती है।

भैया—और अँगरेजी चौदह बरस पढ़नेके बाद भी बहुत थोड़े ही आदमी लिख बोल सकते हैं ?

दुखराम हमको तो मालूम होता है, जोंकें हमें पढ़ने देना नहीं चाहती। अपनी भाखामें पढ़ाई हुई तो सब मरद-औरत पढ़ जाएँगे, तब वह दुनिया जहानकी बात जानने लगेंगे, फिर उनकी आँखोंमें धूल कौन झोंकेगा ? हम लोग तो भैया, अपने ही देसमें पराए हो गए हैं। न थानामें हमारी बोली, न कचहरीमें, न इसकूलमें, न इस्टेसनमें। बेसी तो अँगरेजी ही है फिर जो हिंन्दी-उर्दू है, उसमें जो चार आना भी हम लोग समझ जायँ, तो धन भाग है। रूसमें तो ऐसा नहीं होगा भैया !

भैया—वहाँ चार आना नहीं सोलहो आने समझ जाते हैं दुक्खू भाई ! जौन इलाकामें जो बोली लोग बोलते हैं, वहाँ उसी बोलीमें इसकूल लगता है। थाना, डाकखाना, कचहरी, इस्टेसन सब जगह वही बोली चलती है। अखबार भी उसी बोलीमें छपते हैं, सिनेमा भी उसी बोलीमें चलता है। जो कोई दूसरी बोली भी सीखना चाहता है, उसके सीखनेका इन्दजाम है। १८२ भाखा बोलनेवाले सभी कमेरे तो अब सगे भाई हैं। इसलिए वह

एक-दूसरेसे बात भी करना चाहते हैं, इसके लिए रूसी भाखा जो पढ़ना चाहिए, उसका इन्तजाम है।

दुखराम—उसी तरह यदि हमारे यहाँ हिन्दी पढ़ना हो, तो कोई हरज नहीं। हम लोग सब कुछ अपनी कासिका भाखामें पढ़ें, ऊपरसे हिन्दी भी कुछ सीख लें, तो अच्छा ही है; दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जानेपर बात-चीतमें सुभीता होगा।

भैया—अपनी बोलीमें पढ़ानेका यह फायदा हुआ, कि आठ ही नव बरस-के भीतर वहाँ एक भी आदमी अनपढ़ नहीं रह गया।

दुखराम—हिन्दुस्तानसे सात गुना बड़ा देस है न भैया? और बीस करोड़ आदमी बसते हैं। तो सारे रूसमें अब कोई मूरख वेपढ़ नहीं है न?

भैया—इस बातको तो कई बरस हो गया।

दुखराम—यह बहुत बड़ा काम है भैया, अन्धेको आँख देना है।

भैया—जोंकें लोगोंको अन्धा रखना चाहती हैं। जितने कल-कारखाने लड़ाईके वक्त टूट गये थे, जितनी रेलकी सड़कें और खानें बिगड़ गईं थीं स्तालिन वीरने सबको फिरसे तैयार करनेको कहा। रूसके सारे मर्द-औरत सभी मिसतिरी-इन्जिनियर जुट गये और कमेरा-राज राज कायम हुए दस साल भी नहीं बीता, कि कल-कारखाना, रेल-खान सब पहिले इतना माल पैदा करने लगे। खेत भी फिरसे आबाद हो गये, और उतना ही अनाज पैदा होने लगा। अब स्तालिन वीरने कहा, कि पैर बढ़ाके चलनेसे काम नहीं चलेगा, अब सारे देसको दौड़ना होगा, जिसमें हमारे देसमें सब जगह हजारों नये बड़े-बड़े कारखाने खुलें; तेल, कोयला, लोहा इतना पैदा हो, कि कोई जोंकोंका देस हमारा मुकाबला न कर सके। गाँव गाँवमें बिजली और पानीका नल लग जाय। और खेतमें दिनमें दस बिस्वा (कट्ठा) जोतनेवाले हल नहीं तीस बीघा जोतनेवाले मोटरके हल चलें। सिंचाईके लिए जहाँ नदीसे नहर निकल सके वहाँ नहर निकालें, जहाँ धरतीमें पाइप गाड़नेसे पानी निकले, वहाँ पाइप गाड़कर सींचनेका इन्तजाम किया जाय।

दुखराम—लकड़ीके हलकी जगह मोटरका हल! और वह इतना बेसी

खेत जोतता है भैया ?

भैया—मोटरके हलमें सात-सात फार होते हैं और फार एक-एक हाथ गहरी जुताई करता है। तुम्हारे खेतमें जितनी जंगली घास कुसकास जमती है, उसकी जड़ खोदकर देखें कि वह धरतीमें कितने नीचे तक गई है, फिर फालको उतना ही बड़ा लगा दें। एक बार खेत जोत देनेपर सब घास जड़ मूलसे निकल जाएगी, और तीन बरस तक खेतमें कोई जंगली घास नहीं निकलेगा। गहरी जुताईका यह भी फायदा है कि सीड़ बनी रहती है, गेहूँ-चनेकी जड़ धरतीमें नीचे तक पैठती है, और बरसा-बुन्दी कम भी हो, तो भी नीचेकी सीड़से काम चल जाता है। नई-नई तरहकी खाद तैयार करनेके लिए भी स्तालिन वीरने हजारों कारखाने खुलवाए। उन्होंने किसानोंको समझाया, कि हजारों टुकड़ोंमें बँटे गाँवके खेतोंमें मोटरका हल नहीं चल सकता।

दुखराम—३० बीघा रोज जोतनेका मोटरवाला हल छोटे-छोटे कोलेमें कैसे चलेगा भैया ?

भैया—इसीलिए स्तालिन वीरने किसानोंसे कहा—गाँव भरका खेत इकट्ठा कर दो, मेंड़ें तोड़ दो, गाँव भरके लोग एक परिवारकी तरह मिलकर साझेमें खेती करें।

संतोखी—किसीके पास कम और किसीके पास बेसी खेत होता है भैया !

भैया—स्तालिन वीरने कहा, कि जो साझेकी खेतीमें नहीं सामिल होते, उनको खेत अलग दे दो और गाँवके जितने लोग इकट्ठा खेती करना चाहते हों, उनके खेतोंको एक जगह कर दो, और परतीसे खेत बनानेका हक उन्हींको हो। ज्यादा खेतवाले किसान कुछ समय अलग जोतते-बोते रहें, लेकिन उनके पास चार अंगुल खुरचनेवाला सतजुगसे चला आया हल था। उनके पास खाद और सिंचाईका उतना इन्तजाम नहीं था, जबकि उनकी बगलके बड़े-बड़े खेतोंमें मोटरके हल चल रहे थे, पाइपसे सिंचाई होती थी, कल खेत काटती और दाँवती थी। उन्होंने देखा कि बेसी खेत रहनेपर भी हम उतना नहीं पैदा कर पाते, जितना साझीवाले किसानको मिलता है; फिर

वे किसान भी आकर पंचायतके पैरों पड़े।

दुखराम—वहाँ सब काम पंचायतसे होता है भैया!

भैया—रूसमें लोग अपने देसको अब रूस नहीं कहते, अब उसे सोवियत कहके पुकारा जाता है। सोवियतका मतलब वही जो हमारी भाखामें पंचायत-का। वहाँ एकसौ बयासी खोमें बसती हैं, उनमेंसे एक है रूसी खोम; इसीलिए स्तालिन वीरने कहा कि हमें कई तरह की खोमोंवाले देसको किसी एक खोम-के नामसे नहीं पुकारना चाहिए। दुक्खू भाई! आसानीसे समझानेके लिए रूस-रूस कहते रह, नहीं तो अब उसका नाम है साम्यवादी-पंचायती-प्रजातन्त्र-संघ।

दुखराम—सामवादी क्या है भैया?

भैया—मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है न, कि देस भरके कमेरोंका एक साझा परिवार हो, और देस भरकी धन-धरतीका मालिक कोई एक आदमी नहीं बल्कि वही बड़ा परिवार। इसी सिच्छापर जो चले उसे सामवादी कहते हैं।

दुखराम—पंचायती तो हम समझ गये लेकिन परजातंतर क्या?

भैया—जहाँ राजाका काम न हो, प्रजा ही अपना राज चलाती हो, उसको प्रजातन्त्र कहते हैं।

सन्तोखी—और संघ तो जमातको कहते हैं न भैया!

भैया हाँ, वहाँ साम्यवादी पंचायती प्रजातन्त्र एक-एक खोमका अलग-अलग है, और सब प्रजातन्त्र एक जमात बन गया। इसीलिए संघ कहा गया।

दुखराम—तो वहाँ पक्का पंचायती राज है।

भैया—गाँव, जिला, देस और सारे १८२ खोमोंके, मुलुकका, इन्तजाम पंचायतें करती हैं। मरद हो चाहे औरत, सहर हो चाहे गाँव, अठारह बरस-से बेसी जिसकी उमर है, वह वोट देकर पंचायत (सोवियत) चुनता है। गाँव-के पंचायतमें पच्चीस-तीस या चालिस मेम्बर चुने जाते हैं। फिर इन मेम्बरों की पाँच-छः छोटी पंचायतें बना ली जाती हैं। इन छोटी पंचायतोंमें किसी-

का काम होता है आपसी झगड़ोंका फैसला करना और पुलिसका इंतजाम देखना, किसीका काम होता है असपताल और बीमारोंका ध्यान रखना, किसीका काम होता है इसकूल, सिनेमा, पुस्तकालय आदिका परबन्ध करना। किसीका काम होता है खेत-बारीका इन्तजाम करना।

दुखराम - तो भैया! सोवियतवालोंने इस कहानीको झूठा कर दिया "साझेके सुई संगड़ासे उठे"। भैया! मुझे तो मालूम होता है कि जोंकोंने जान बूझकर ऐसी-ऐसी कहावतें गढ़कर कमेरोंके भीतर फैला दीं। कमेरोंमें एकके पास उतना धन और नौकर-चाकर हैं नहीं, कि उसके बलपर कोई बड़ा काम उठावें, साझेका काम करनेसे उनका बल बढ़ता, उसीको तोड़नेके लिए जोंकोंने कहावत गढ़ी छोटी-सी सुई भी साझेकी होनेपर बड़े-बड़े बांससे उठानेकी तदबीर सोची जाती है।

भैया—हां दुक्खू भाई! कमेरोंको पैर फूँक-फूँक कर रखना है। हजारों बरसोंसे जोंकें राज कर रही हैं। उन्होंने हर जगह अपना जाल बिछा रखा है।

दुखराम—भैया ठीक कह रहे हो। मैंने ही न जाने कितनी बार दुहराया होगा और मैं समझता था कि यह कोई विधि-ब्रह्म का बचन है; लेकिन अब न मालूम हो रहा है, कि जोंकोंने इसे गढ़कर हमारे भीतर फैला दिया है, जिससे मिलकर हम कोई काम कर न सकें।

भैया—जुलाहा अकेले ही न कपड़ा बुनता था, और चटकल-पटकलमें कितने सौ जुलाहे एक साथ काम करते हैं। देखो साझेवाला काम कितना जोरसे चल रहा है और अकेले काम करनेवाले जुलाहे उजड़ गये।

दुखराम—तो भैया! सोवियत देसके किसानों और उनके गाँवोंकी सकल ही बिलकुल बदल गई होगी?

भैया—पहिली बात तो यह है, कि वहाँ अब छोटे-छोटे खेत नहीं रह गये हैं। तीन-तीन सौ चार-चार सौ बीघाके खेत हैं, जिनको जोतनेके लिए पाँच लाखसे ज्यादा मोटरहल और डेढ़ लाखसे ज्यादा काढ़ने-दाँवनेवाली कल हैं।

दुखराम - और यह मोटर और कल कहाँसे आती हैं भैया ?

भैया—१६२८ ई०से पहिले रूसमें एक भी मोटरहल नहीं बनता था, जोंकोंके राजके समय कोई मोटर कारखाना नहीं था। लेकिन स्तालिन वीरने कहा, कि हमें सब चीजें अपने यहाँ बनानी होंगी, नहीं तो किसी वक्त बाहरकी जोंकें गला दबाकर हमें मार डालेंगी। आज खाली एक गोरकी सहरके कारखानेमें हर साल एक लाख मोटरें बनती हैं। मोटरलारी, मोटरहल, हवाई जहाज, सब सोवियतके कारखानोमें बनते हैं। हर बारह-बारह चौदह-चौदह गाँवपर एक-एक मसीन-मोटरहलका इस्टेसन, उसे बड़ा गाँव समझो दुक्खू भाई! उस गाँवमें जितने लोग हैं सब मोटर मसीन चलाना, उनकी मरम्मत करना, बस यही काम करते हैं। गाँवकी पंचायत अपने गाँवका लेखा करती है; कितना बीघा खेत एक हाथ गहरा खोदना है, कितना बीघा पौन हाथ और कितनी बार जोतना है। इसका हिसाब करके मोटर इस्टेसनमें जाती है। जोताई आदिकी दर बँधी हुई है, दोनों ओरसे कागज-पत्तरपर दसखत हो जाती हैं, फिर मोटरहलवाले आकर खेत जोत-बो देते हैं। छोटे मोटे कामके लिए एकाध मोटरहल गाँवमें भी होता है।

दुखराम – तो गाँव घरके साझे खेती होती है। और काम कैसे बाँटा जाता है ?

भैया—हर कामका नाप बँधा हुआ है। जैसे समझ लो एक आदमीको एक दिनमें दस बिस्वा जोतना चाहिए, जो किसीने पन्द्रह जोत दिया, तो एक ही दिनके कामके लिए उसे डेढ़ दिन समझा जायगा; जो कोई पाँच बिस्वा ही जोत सका, उसका आधा ही दिन होगा। हर आदमीके कामका बहीखाता होता है, जिसमें रोज रोजका काम लिखा जाता है।

दुखराम—तो बड़ा हिसाब किताब रखना पड़ता होगा ?

भैया— सैकड़ों आदमियोंका काम, हिसाब किताब नहीं रखा जायगा, तो गड़बड़ी नहीं मचेगी ? मान लो किसी घरमें सौ औरत और एकसौ पचास मरद काम करनेवाले हैं। दस-दस आदमीकी एक एक टोली बन जाय, टोली अपना मुखिया बनायेगी। फिर दस-दस या पन्द्रह-पन्द्रह टोलीकी एक बड़ी

जमात होगी। जिसको वहाँ बिरगेड कहते हैं। बिरगेड अपनेमेंसे सबसे लायक औरत या मरदको अपना मुखिया चुनता है, जिसको बिरगेडियर कहते हैं। टोलीका मुखिया अपनी टोलीके साथ काम करता है, लेकिन बिरगेडियरको बहुत काम देखना-भालना होता है, आजके काममें कितना हुआ, कितना नहीं हुआ इसका हिसाब देखना और तन्देही करनी पड़ती है; इसलिए उसे और आदमियोंके साथ अपने हाथ जोतने-बोनेका काम नहीं करना पड़ता। लेकिन बिरगेडियर लोग उन्हीं कुदाल-फावड़ा चलानेवाले लोगोंमेंसे बनते हैं।

संतोखी—खाद, पानी, अच्छी जुताई, अच्छा बीजका इन्तजाम होनेसे वहाँ पैदावार भी ज्यादा होगी?

भैया—देखते नहीं गाँवको, गोएड़के खेतमें फसल कितनी पैदा होती है?

दुखराम—सुतर जाय तो मकईमें तीन-तीन मोटी बाल लगती हैं भैया!

भैया—वहाँ भगवानके भरोसेपर खेती नहीं करते। कहते हैं जब आसमानसे पानी नहीं बरसा तो धरतीमें तो पानी है ही। पाइप लगाकर धरतीके भीतरके पानीसे खेत सींच डालते हैं। और फसल कितनी होती है, यह इसीसे समझ सकते हो कि एक-एक बीघा ($\frac{2}{3}$ एकड़) में बीस-बीस मन तक चीनी उन्होंने पैदा किया है।

दुखराम—एक एक बीघामें बीस-बीस मन चीनी! हमने तो बीस मन गेहूँ भी पैदा होते नहीं देखा! वहाँकी ऊख बहुत मोटी होगी?

भैया—वह बहुत ठंडा मुल्क है दुक्खू भाई! वहाँ ऊख नहीं पैदा होती। हमारे यहाँ जैसे सकरकंद होता है, वैसे ही वहाँ एक चीज पैदा होती है, जिसको चुकंदर कहते हैं। वह बहुत मीठा होता है, उसीसे चीनी बनाई जाती है। ऊखकी चीनी जैसी वह भी मीठी, दानेदार और सफेद होती है। और कपास बीघामें बारह-तेरह मन खूब बारीक रेशावाला बिनौला निकालकर पैदा होता है। तीस-तीस मन बीघा धान पैदा कर लेते हैं और जानते हो न दुक्खू भाई! खाली हाथसे कुदाल चलानेसे ही काम नहीं चलता। जब कुदालके साथ दिमाग भी लगता है, तो धरती सोना उगलने लगती है। वहाँ ऐसा-

ऐसा गेहूँ निकाला है, कि एक बार बोनेपर तीन-तीन साल तक फसल काटते हैं। धानका बीज ऐसे तैयार किये हैं, कि अगहनी धान कातिकहीमें कट जाता है।

दुखराम—भैया! जो ऐसा बीज हमको मिलता, तो हमारी दस बीघाकी धानकी कियारी भी दोफसला हो जाती। चढ़ते कातिकमें धान कट जाय, तो खेत जोत-जातकर कातिकके अन्तमें गेहूँ बो सकते हैं।

भैया—जोंकोंका राज बिना हटाये यह नहीं हो सकता दुक्खू भाई! वहाँ जिस फसलको तीन-चार हफता पहले काटना चाहते हैं, उसके बीजको भिगोकर बड़े-बड़े गोदाममें फैलाकर रखते हैं और जानकार पंडित गरमी-सरदी नापते रहते हैं। दो दिन वैसा करके फिर बीजको सुखा लेते हैं। हिन्दुस्तानमें कहाँ उतने-उतने बड़े गोदाम, सरदी-गरमी नापनेकी कल और लाखों रुपयेकी दूसरी चीजें हैं, यहाँ भी सरकारने जो बड़े-बड़े खेतीके कालेज खोले हैं, उसमें पाव-आध सेर बीज तैयार करके देखा गया है कि रूसी बिदियमानोंका कहना गलत नहीं है। लेकिन जोंकें अगर करोड़ों रुपया लगाकर देहातमें वैसा इंतजाम करने लगें, तो उनकी तोंद ही पचक जायगी?

दुखराम—ठीक कहा भैया! बिना जोंकोंके हटाये हमारा दुख दूर नहीं हो सकता। जहाँ इतना अन्न, धन पैदा होता है, वहाँके लोग तो बड़े खुसहाल होंगे?

भैया—खुसहाल? वहाँ किसीकी हड्डी निकली दिखलाई नहीं पड़ती। आज जो अपने गाँवमें तुम आधे लड़कोंको हाड़-हाड़ निकले, फटी लँगोटी पहिने देखते हो, इसका वहाँ कोई पता नहीं। पहर भर रातसे आधीरात तक जो मरद-औरतको यहाँ खटना पड़ता है, वह भी वहाँ नहीं है। बिरगेडियर-को इस फसलमें कितना काम करना है, यह पंचायत बता देती है और देखती रहती है। बिरगेडियर हर टोलीको हफ्ते हफ्तेका काम बाँट देता है और देखता रहता है, कि काम ठीक-ठीक चल रहा है कि नहीं? टोली भी अपने कामका हिसाब मिलाती रहती है। टोली-टोलीमें होड़ लगी रहती है। एक टोली जब पाँच दिनमें सोहनी खतम करना चाहती है, तो दूसरी चार ही दिनमें

खतम कर चावसी (सावासी) लेना चाहती है। फिर एक गाँवके दूसरे गाँवसे, एक परगनेसे दूसरे परगनेकी होड़ रहती है कि कौन अपने कामको अच्छी तरह और जल्दीसे खतम करता है।

दुखराम—हाँ। गाँव और परगने-परगनेमें होड़ (लागडाट) लगती है, हमारे यहाँ तो कुस्तीमें, कभी-कभी दौड़ने और कूदनेमें होड़ लगती है।

भैया—वहाँ जिलाकी ओरसे लाल झंडा रखा जाता है, कि जो परगना सबसे पहले काम करे, सबसे अधिक फ़सल पैदा करे, उसको लाल झंडा दिया जाय। इसी तरह गाँवके लिए भी लाल झंडा रहता है मर्द-औरत सब जी छोड़कर काम करते हैं, कि झंडा उनके गाँवमें आये। झंडा जब किसी गाँवको मिलता है, तो मेला लग जाता है, आस-पासके गाँवोंसे हजारों मर्द-औरत अपने-अपने गाँवोंकी लारियोंपर चढ़कर आते हैं!

दुखराम—तो वहाँ गाँव-गाँवमें लारियाँ हैं भैया?

भैया—न अब वहाँ बैलवाले हल रह गये और न गाड़ियाँ। हर गाँवमें आठ-आठ सात-सात बड़ी-बड़ी लारियाँ रहती हैं। काम भी आदमीको ७ घन्टेसे वेसी नहीं करना पड़ता। और काम करनेमें आनन्द आता है दुक्खू भाई! लोग तरह तरहका गाना गाते हुए काम करते हैं। खानेका वक्त हुआ तो किसी पेड़के नीचे खाना लेकर लारी आ गई। सब लोग बैठ गये रोटी-तरकारी, भात, मांस-मछली, दूध-दही सब तैयार है। परोसनेवाले परोस रहे हैं, औरत-मर्द सब बैठकर भोजन कर रहे हैं। एक ओर रेडियो बाजा लगा दिया और दुनिया भरकी खबर और मीठे-मीठे गीत हो रहे हैं!

दुखराम—रेडिहा बाजा क्या है? क्या यह कोई फोनोगिलाफ है?

भैया—जानते हो न दुक्खू भाई। पत्थर हड्डीके हथियारों और तीर-धनुषके जुगसे मानुख-जाति अब बहुत आगे चली आई है। यह मानुखके दिमागकी करामात है, लेकिन, अफ़सोस है कि इस करामातका फायदा जोंकोंहीको मिल रहा है। रेडियो बाजा होता तो है एक चौकोर बाकस, लेकिन उसमें बिलायत, अमेरिका, रूस, कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली सब जगहका गाना और खबर चली आती है।

दुखराम—क्या वह तारकी तरहसे है भैया ?

भैया—तार नहीं लगा रहता दुक्खू भाई। जो यहाँ कनैलामें रेडियो-बाजा आज आ जाए, तो यहीं बैठे-बैठे सब तुम्हें सुनाई देने लगेगा।

दुखराम—बड़े अचरजकी बात है भैया! सोमारु राउत सुनेंगे तो कहेंगे कि इसमें जरूर कोई जादू है।

भैया जादू नहीं है दुक्खू भाई! देखो हम तीन हाथपरसे बोल रहे हैं। हमारे मुँहसे जो आवाज निकल रही है, वह तुम्हारे कानतक पहुँच रही है न ?

दुखराम—हाँ पहुँच रही है, मैं सुन रहा हूँ।

भैया—जो मैं सौ हाथसे बात करूँ, तो तुम्हें आवाज सुनाई देगी कि नहीं ?

दुखराम—बहुत कम, और शायद नहीं भी सुनाई दे।

भैया—आवाज तो तुम्हारे कानमें आती है दुक्खू भाई, लेकिन कान कुछ ऊँचा सुनता है, माने कान अच्छी तरह पकड़ नहीं पाता, कानकी तागत कमजोर हो जाती है। कानकी तागत और बढ़ा दी जाय, या आवाजको और तेज कर दिया जाय, तब तुम सुनने लगोगे दुक्खू भाई! कलकत्ता, दिल्ली या मास्को, लंदनसे जो आवाज निकलती है, वह हवा पर तैरते हुए हमारे गाँवमें भी पहुँचती है, लेकिन वह इतनी मन्द हो जाती है, कि हमारा कान उसे पकड़ नहीं पाता। रेडियो बाजाका यही काम है, कि जो आवाज दुनिया भरसे चलके हमारे यहाँ आई है उसे पहले पकड़े और फिर तेज करके फोनो-गिलाफ बाजाकी तरह निकाले। और कोई जादू-वादू नहीं है। रूसमें किसान जब खाना खाने बैठते हैं, तो उस वक्त रेडियो बाजा गाना सुनाता है, देस-देस की खबरें सुनता है और अब तो वह ऐसी तदबीर कर रहे हैं, कि आवाज ही नहीं रूप भी दिखलाई पड़ने लगे और लोग बैठे-बैठे मास्को और लन्दनका नाच और नाटक देखें।

दुखराम—क्या भैया! ऐसा भी होने लगेगा ?

भैया—देखते नहीं दुक्खू भाई। दस हाथपर खड़े रहते हो और तुम्हारा मुँह दरपनमें दिखाई पड़ता है। इसी तरह रूपवाला बाजा भी तैयार हो गया

है, लेकिन अभी रूप उतना साफ नहीं आता। कुछ दिनोंमें वह भी ठीक हो जायगा।

दुखराम—होगा भैया! लेकिन हम लोगोंको तो रेडियो बाजा भी देखनेको नहीं मिलता। कब जोंकोंका नास होगा? और वहाँ भैया! सब मेहरारू काम करती हैं?

भैया—बड़े-छोटे सब घरकी मेहरारू, यही न पूछ रहे हो दुक्खू भाई! लेकिन हमने बतलाया कि वहाँ कोई बड़ा छोटा नहीं, कोई जात-पाँत नहीं, सब बराबर हैं, भाई-भाई हैं। जोंकोंके राजमें मक्खन जैसे मुलायम हाथकी तारीफ की जाती है, सोवियतमें घट्टा पड़े कड़े हाथोंकी तारीफ होती है। जोंकोंके मुल्कमें कामचोर देहचोरकी इज्जत की जाती है, सोवियतमें मेहनती मजूर-किसान काम करनेवाले लोगोंकी इज्जत होती है—बीमार, बूढ़े, बच्चेको वहाँ काम करना नहीं पड़ता। नहीं तो जो कोई रानी बनकर बैठी उसे दूसरे दिन भूखा मरने पड़ेगा।

दुखराम—तो रानी फूलमती कुँअरिके लिए तो आफत हो जयगी, भैया!

भैया—इसीलिए न राजा-रानी, सेठ-सेठानी, महंथ-महंथिन, मोलवी-मोलवियानी सब एक ओरसे मरकस बाबाकी सिच्छाको बुरा कहते हैं, रूसको गाली देते हैं। लेकिन दुक्खू भाई! वहाँ जो काम करना पड़ता है, वह तकलीफका काम नहीं होता। गाँव भरकी औरतोंको काम करना पड़ता है, लेकिन बच्चा पैदा होनेसे महीना दो महीना पहलेहीसे उन्हें छुट्टी मिल जाती और बच्चा होनेके बाद भी डेढ़-दो महीने छुट्टी रहती है। उस बखत भी दूध-दवाई, डाक्टर-दाई सबका खरच पंचायतकी ओरसे मिलता है। औरतें खेत काटनेके लिए आती हैं तो बच्चोंका तम्बू पहले ही पड़ जाता है और दाइयाँ बच्चोंको सँभाल लेती हैं। वहाँ बच्चोंके लिये खिलौना रहता है, पालना रहता है, दाइयाँ कहानी सुनाती हैं।

दुखराम—तो वहाँ बच्चोंको पीटा नहीं जाता?

भैया—बच्चोंके पीटनेका काम नहीं, क्योंकि जब माँ-बाप काम करते हैं, तो बच्चे दाइयोंके पास रहते हैं। जब काम नहीं रहता, तब बच्चोंको ले आते

हैं। उनके साथ खेलते हैं, कहानी सुनाते हैं, लाड़-प्यार करते हैं।

दुखराम—सपना जैसा मालूम होता है भैया!

भैया—सरगको किसीने नहीं देखा, लेकिन हम हजारों सालसे सरगके नामपर ठगे जा रहे हैं। लेकिन मैं जिस सोवियतकी बात कर रहा हूँ, वह सरग जैसी सपनेकी चीज नहीं। जोंकें हमारा रास्ता न रोकें, तो यहाँसे पाँचवें दिन उस देसमें पहुँच सकते हैं।

दुखराम—हवाई जहाज, सुनते हैं, दो घंटेमें कलकत्तेसे चला आता है।

भैया—हवाईसे नहीं दुक्खू भाई, दो दिनमें रेलसे पेशावर और वहाँसे काबुल होते तीसरे दिन कमेरोंके राजमें पहुँच जाएँगे। किराया भी ४०)से बेसी नहीं लगेगा

दुखराम—तब तो भैया, बहुत नजदीक है।

भैया—नजदीक है, लेकिन जोंकोंने हजार तरहकी पहरा चौकी बैठाई हैं, जिसमें बाहरके कमेरे रूसको आँखोंसे न देख सकें, न वहाँकी बात ठीक तौरसे समझ सकें। वहाँके लोग बहुत खुशहाल हैं दुक्खू भई! गाँव-गाँवमें इस्कूल है, असपताल है, पुसतकालय है, सिनेमाघर है।

दुखराम—सिनेमाघर भी है गाँव-गाँवमें भैया?

भैया—हाँ! काम सब पंचायती होता है। इसलिए हर गाँवमें एक इतना बड़ा घर होता है जिसमें वहाँके सारे नर-नारी बैठ सकें; उसी घरमें सभा होती है। जो बड़े गाँव हैं, उनमें तो रोज सिनेमाका तमासा होता है, लेकिन छोटे गाँवोंमें सिनेमा मोटरसे घूमता रहता है। आज कनैलामें आया, और दो तरहका तमासा यहाँ दिखलाया फिर तीसरे दिन यहाँसे मदया चला गया, वहाँ भी दो तमासा दिखलाया। इसी तरह वह आगे बढ़ता गया, दूसरे हफ्ते दूसरी सिनेमामोटर आई और वह भी उसी तरह दो-दो तमासा दिखाती चली गई। गाँवमें पंचायतकी ओरसे दूकान होती है, जिसमें पचासों तरहकी चीजें बिकती हैं, और नफाका सवाल नहीं, क्योंकि दूकान गाँव भरकी है। गाँव भरके लोग मिलकर खेती करते; जूता, मोजा, सिलाईके भी कारखाने गाँवोंमें होते हैं, उनमें भी जितना काम किया, सबका काम बही-खाता पर लिखा

हुआ है और कितना पैदा किया वह भी सामने है। मान लो दस लाख रुपया-कासामान गाँवने पैदा किया और दो लाख दिन गाँव भरके लोगोंने मिलकर काम किया, तो इसका मतलब एक दिनके कामका ५) । लेकिन १ लाखमेंसे पहिले साझेका खर्च, अस्पताल, दाईघर, पुस्तकालय, नाटकमंडली आदिके लिए दो लाख या जितना हो, निकाल दिया जायगा। अब एक रोजके काम की ४) पैदावार हुई। गाँवमें जिसने जितना दिन काम किया है, उसीके अनुसार पंचायत उन्हें पैसा दे देगी। उससे आदमी घर घरके लिए कपड़ा बनवायेगा, जूता खरीदेगा या फोनोगिलाफ बाजा खरीदेगा, मेला-तमासा देखेगा, खाना खायेगा।

दुखराम—गाँव भरका चूल्हा एक नहीं हो गया है ?

भैया—कहीं-कहीं हो गया है, लेकिन बहुत जगह नहीं हुआ है। सहरोंमें ऐसा बहुत हुआ।

सन्तोखी—सहरोंकी भी एकाध बात बतलाएँ भैया !

भैया—सहरोंमें जानते हो न सन्तोखी भाई, सब मकान-जमीन बड़ी-बड़ी जोंकोंकी होती हैं। राज सँभालते ही कमेरोंकी सरकारने जोंकोंकी जायदातको छीन लिया। सहरोंके सब घर कमेरोंकी सरकारके हैं। जो झोंपड़ियाँ और गन्दी गलियाँ पहिले थीं, उन सबको तोड़कर पाँच-पाँच छः-छः तल्लाके बड़े-बड़े मकान बन गये। जोंकोंके राजके, समय राजधानीमें तेरह लाख आदमी बसते थे, जिनमें आधे सूअरकी खोभारोंमें रहते थे, आज उस लेनिनगराद की आबादी दुगुनासे भी अधिक तीस लाख है, लेकिन अब उन खोभारोंका पता नहीं है। अब सबकेलिए अच्छे अच्छे मकान, चौड़ी सड़कें, जगह जगह लड़कोंके खेलनेके लिए बगीचे तथा खेलके मैदान हैं। मकानकी मरम्मत, बिजली पानीका इंतजाम लोगोंकी चुनी हुई छोटी-छोटी पंचायतें करती हैं। महल्ले महल्लेके रसोई घर हैं, जिनमें हजार दो हजारसे दस-दस बारह-बारह हजार आदमियोंका खाना बनता है। सिरिफ दाल-भात उबाल कर रख नहीं दिया जाता, बल्कि पचास-पचास साठ-साठ तरहके भोजन बनते हैं। जिन औरत-मर्दों को रसोई बनानेका काम है, वह रसोई-घरमें जाते हैं। सबेरेका जलपान और दोपहरका

भोजन करा दिया बस छुट्टी, तिपहरीका जलपान और रातका भोजन बनाने-का इंतजाम आकर दूसरी टोली करेगी।

दुखराम—औरतोंको तो वहाँ और भी आराम है भैया! हमारे यहाँ तो बेचारी पहर भर रात रहते ही चक्की पीसने लगती है, चौका-बासन करना, खाना बनाके खिलाना, बीचमें लड़का रोने लगा, तो उसे दो थप्पड़ लगाना, चावल कूटना, दाल दरना, फिर चौका-बासन करना, गोएठेके धूएँ से आँखें फोड़ते खाना बनाना, खिलाते-पिलाते आधी रात हो जाती है। बेचारियोंको फिर पहर भर रात हीसे जागना पड़ता है। वहाँ तो इतना काम नहीं पड़ता भैया!

भैया—वहाँ इतना काम कहाँ? बतलाया नहीं, सबेरे ६ बजे ड्यूटी पर गई तो बारह एक बजे तक उनकी छुट्टी। आटा पीसना चावल कूटना तो कल-मसीनका काम है। बरतन धोनेके लिए भी बहुत जगह कल लगी हुई है। मसीन घूम रही है, एक ओरसे बर्त्तन डालते हैं, एक साबुन लगा देती है, बुरुसवाली मसीन मल देती है, दूसरी मसीन गरम पानीसे धो देती है, फिर साफ बर्त्तन दूसरी ओरसे बाहर चला आता है। औरतने जाकर छ-सात घंटे रसोई घरमें काम कर दिया। अब उसे अपने लड़केको लाड़-प्यार करना, मित्रोंसे बात-चीत करना, किताब पढ़ना या कोई और मन बहलाव छोड़कर कोई दूसरा काम करना। घरके लोग चाहे रसोई-घरके बड़े-बड़े मकानोंमें जाकर खाना खा सकते हैं और चाहें तो गरमागरम भोजन अपने घरमें लाकर खा सकते हैं।

सन्तोखी—दुकान-उकान तो वहाँ भी होगी भैया?

भैया—दुकान बहुत है सन्तोखी भाई, और इतनी बड़ी-बड़ी कि जिसमें हजार-हजार आदमी गाहकोंको सौदा बेचते हैं। लेकिन सब दूकानें पंचायती हैं, कमेरोंके पंचायती राजकी, चाहे छोटी-सी सिगरेटकी दुकान हो चाहे बड़ीसे बड़ी दूकान हो, जो लोग बेंच रहे हैं वह किसी साहु-महाजनके नफाके लिए नहीं कर रहे हैं। सब लोगोंकी ड्यिूटी है। घंटेसे काम करना पड़ता है वही छ-सात घंटा। फिर अपना मौज करें। बीमार होनेपर डाक्टर मुफ्त, दवा मुफ्त, पथमुफ्त, और तनख्वाह भी नहीं कटती। बूढ़ा होनेपर सबको पेन्सन।

सन्तोखी - तब काहेको वहाँ किसीको चिन्ता होगी।

भैया—चिन्ता बिलकुल नहीं! लड़के-लड़कियोंके पढ़नेके लिए फीस नहीं देना पड़ता, और सात बरस तक सबको पढ़ना होता है। दोपहरका खाना लड़कोंको स्कूलसे मिलता है और डाक्टर जैसा खाना बतलाए वैसा खाना। तीन बच्चोंके बाद जितने बच्चे पैदा होंगे, उनका सब खर्च कमेरा-सरकार देती है। सात रुपया रोजसे कम किसीकी मजूरी नहीं। जो घरमें मरद-औरत दो ही कमानेवाले हों, तो भी चौदह रुपया रोज या सवा चार सौ रुपया महीना तो जरूर ही आएगा। बताओ उनको क्या चिन्ता हो सकती है?

सन्तोखी—तभी तो भैया! रूसवाले इतनी बहादुरीसे लड़े हैं? उन्होंने अपने हाथसे धरतीपर सरग रचा, जर्मन जोंकोंके रूसमें बैठनेका मतलब क्या होगा, इसे वह अच्छी तरह समझते थे।

भैया—स्तालिन वीरने कह कर नहीं दिखा करके दिखाया। बीस बरससे रूसके कमेरोंका अगुआ है स्तालिन वीर। मरकस बाबाने जोंकोंके जाल-फरेब को देखनेके लिए आँख दी और लड़नेका ढंग बतलाया। लेनिन महात्माने कमेरोंको लड़नेके लिए तैयार किया, फिर पाँच बरस तक लड़ाई लड़ी और दुनियाके छठे भागसे जोंकोंका नाम मिटा दिया। स्तालिन महात्माने सरगको धरती पर उतारा। गाँवोंको बदल दिया। कारखानोंसे देसको भर दिया। लोगों-को दिखला दिया, कि जोंकोंके हटानेसे दुनिया नरकसे सरग बन जाती है। लेकिन स्तालिन वीरने यह भी आगेसे सोच लिया था, कि जोंकोंसे हमें लड़ना पड़ेगा। इसीलिए अपने हथियारको मजबूत किया, हर नौजवानके लिए फौजमें दो-तीन बरस रहना लाजिमी कर दिया। सब विद्या सिखाई गई। करोड़ोंकी पलटन तैयार हो गई। मरद ही नहीं औरतों तकने भी हथियार चलाना सीखा, हवाई जहाज उड़ाने लगीं। बच्चे बचपन हीसे सौ-सौ, डेढ़-डेढ़ सौ हाथ ऊँचे मीनारोंपरसे छतरीके सहारे कूद करके निडर होने लगे, जिसमें कि हवाई जहाजसे कूदनेमें उन्हें भय न मालूम हो। मोटरके हलोंको ऐसा बनाया कि ऊपरके थोड़ेसे हिस्सेको हटाकर दूसरा रख देनेसे वह टंक बन जाता था।

दुखराम—टंक क्या है भैया!

भैया—टंक आज-कलकी लड़ाईका बहुत जबर्जस्त हथियार है, जिसपर बन्दूककी गोली क्या तोपका गोला भी असर नहीं करता। उसके पहिएमें रबड़-की टायर नहीं, मोटी ज़ंजीर होती है। चारों ओर तीन अंगुल मोटे फौलादकी चद्दर लगी रहती है, भीतर ही तोप रहती है। वह ऊँची-नीची सब जमीनपर चला जाता है। बड़े-बड़े पक्के मकानोंको तोड़ते हुए तो ऐसे घुसता जाता है, जैसे सूखे पत्तोंके ढेरमें लोहेका लाल छड़। स्तालिन बीरने लड़ाईके लिए कमेरोंको पहले हीसे तैयार कर लिया था।

सन्तोखी—स्तालिन बीरका तो बहुत बड़ा दिमाग है भैया!

भैया—कमेरोंके लड़कोंमें बहुतसे ही बड़े-बड़े दिमाग पैदा होते हैं, लेकिन उनको काम करनेका मौका ही नहीं मिलता। जब सारी दुनियाको पछाड़नेवाली हिटलरी फौजको लाल फौजने तहस-नहस किया। उसे भगाकर जर्मनीके भीतर जाकर उसका सत्यानास कर दिया तो सारी दुनियामें लाल फौजके महासेनापति बीर यूसुफ स्तालिनका नाम लिया जा रहा है, सब उसकी बुद्धि और बहादुरीका लोहा मानते हैं। लेकिन स्तालिन बीर मजूरी करके खानेवाले एक चमारका लड़का है, और गोरे! नहीं काले चमारका लड़का है। स्तालिनने चौदह बरसकी उमरसे ही जोंकोंकी जड़ काटनेका काम सुरू किया। चौदह-चौदह बार उसे कालेपानीकी सजा हुई, तो भी वह जेलसे निकल भागता रहा और भेस बदलकर कमेरोंमें काम करता रहा। कमेरोंने रूसकी जोंकोंसे पाँच साल लड़ाई लड़ी। उसके जीतनेमें लेनिन महात्माके बाद जो सबसे बड़ा दिमाग था वह इसी चमारके लड़केका।

दुखराम—हमारे यहाँ भी भैया! हम कितनोंको चमार कहकर अछूत कहकर पशु बनाकर रखे हैं और उनके साथ जरा भी दया-मायाकी बात कहनेपर पंडित लोग पोथी लेकर मारने दौड़ते हैं। जो जोंकें न रहें, तो इनमें भी न जाने कितने-कितने बीर-बहादुर निकलेंगे, कितने दिमागवाले दिखाई पड़ेंगे।

अध्याय ६

भसमासुर भूतनाथपर चढ़ दौड़ा

भैया—उस दिन दुक्खू भाई, तुमने ठीक कहा था। सचमुच ही हिटलरने वही किया जो भसमासुरने भूतनाथके साथ किया। बिलायतकी जोंकोंने हिटलर-को अपना लाड़ला बेटा बनाया था। जब (३० जनवरी १९३३ को) जर्मनीका राज जोंकोंके इस गुण्डेके हाथमें आ गया, तो बिलायतकी जोंकें फूली न समाती थीं। उन्होंने सोचा हमने हिटलरको इतना मजबूत कर दिया कि वह रूसके बोलसेविकोंपर टूट पड़े और हमारा यह सबसे बड़ा दुसमन बरबाद हो जाय। पिछली लड़ाईमें जर्मनीने जो खूनी जंग छेड़ा था, उसको देखकर अँगरेज, फ्रान्सीसी और उनके दूसरे मित्रोंने जर्मनीसे ऐसी-ऐसी सरतें मनवाई थीं, जिसमें वह फिर सिर उठाने लायक न रह जाय। हिटलर एक ओर अपने देसवालोंसे कहता था कि हमें पंगु नहीं रहना चाहिए; दूसरी ओर बाहरी देसोंकी जोंकोंको खुस करनेके लिए वह बोलसेविकोंके सत्यानास करने की बात करता था। जर्मनी और फ्रांसके सरहदपर राइन नामकी एक नदी है। जर्मनीने यह सर्त मानी थी, कि वह राइनके इलाकेमें कोई फौज नहीं रक्खेगा और यह भी कि लोगोंको जबरजस्ती फौजी विद्दा सिखाकर अपनी सेनाको नहीं बढ़ायेगा। हिटलरने कमेरोंको अपनी तरफ खींचनेके लिए भी भूठ बोलना सुरू किया, कि हम भी अपनी खोमका सामवाद (जोंक बिना राज) चाहते हैं। कुछ लोग आसा रखते थे, कि हिटलर कमेरोंकी भलाईके लिए कुछ करेगा, लेकिन हिटलर तो जोंकोंके हाथकी कठपुतली था, उसने तो कमेरोंपर ही खूब जुलुम किया। इसपर भूठी आसावाले लोग कुछ तिलमिलाने लगे, फिर तो राज सँभाले डेढ़ बरस भी नहीं हुआ, कि उसने ३० जून १९३४ को हजारों अपने ही साथियोंको बड़ी बेदरदीसे कतल करवा डाला। इनमें उसके ऐसे भी साथी थे, जिनकी मदतके बिना वह इतना बढ़ न सकता था। बिलायतकी जोंकें और भी खुस हुईं।

सन्तोखी—क्यों न खुस होतीं, उन्होंने सोचा होगा कि हिटलरके आस-पास जो थोड़े-बहुत जोंकोंके विरोधी रह गये थे, वह भी खतम हो गये !

भैया—हिटलरने दो साल और तैयारी की और मार्च १९३५ में जबरजस्ती सेना बढ़ानेवाली सर्त्त भी तोड़ दी। पड़ोसी फ्रांस बहुत घबराया। बिलायती जोंकें कहने लगीं, कि जो हिटलर फौज न बढ़ायेगा, तो बोलसेविकोंसे लड़ेगा कैसे ? हिटलरने अब बड़े जोर-सोरसे सेना और हथियार बढ़ाना सुरू किया। साल भर और बीता और ७ मार्च १९३६ को राइनके इलाकेमें उसने एक बहुत बड़ी फौज भेज दी। फ्रांस बहुत फड़फड़ाया। लेकिन बिलायती जोंकें समझने लगीं कि बोलसेविकोंसे लड़नेके लिए हिटलरको ऐसा करना ही चाहिए। दुनियाके लोग आँख मलमलकर देखने लगे। उन्हें साफ मालूम होने लगा कि अब फिर दूसरा महाभारत होगा। बूढ़े बाल्डविन बिलायतकी जोंकोंके बड़े सरदार वहाँके महामंत्री थे। बुढ़ापेके कारण उन्होंने गद्दी छोड़ी और उनकी जगहपर जोंकोंका सरदार नेविल चेम्बरलेन ३१ अगस्त १९३७ को बिलायतका महामंत्री बना। जोंकोंका सरदार होनेके लिए जितने गुनोंकी जरूरत है, वह सब इस आदमीमें थे। और उसके साथी भी उसीकी तरह एकसे एक छँटे थैलीसाह थे। साइमन, होर, और हेलीफाॅक्स (जो पहिले हिन्दुस्तानका बड़ा लाट इरविन था) सभी एक ही हाँड़ीके नहलाये हुए थे, "कोउ बड़ छोट कहत बड़ दोसू।"

सन्तोखी—इरविन वाइसराय ! ऐसे ही ऐसे न हिन्दुस्तानमें बड़ा लाट बनकर आते रहे।

भैया—और क्या ! जोंकें बेवकूफ थोड़े ही हैं, छँटे आदमियोंको वह हिन्दुस्तान भेजती हैं। चेम्बरलेन और उसकी गुटका यही मंत्र था "थैली माता थैली पिता, थैली बंधू, थैली सखा" चेम्बरलेनने हिटलरको और बढ़ावा दिया। वह समझ गया कि बिलायतकी जोंकें हमारे रास्तेमें कोई बाधा न डालेंगी। उसने १२ मार्च १९३८ को आस्ट्रिया के राजपर कब्जा कर लिया। बिलायतकी कुछ जोंकें घबराईं, लेकिन उनके सरदारोंकी चंडाल-चौकड़ी तो आसा बाँधे हुए थी कि हिटलर बोलसेविकोंके नास करनेकी बड़ी

भारी तैयारी कर रहा है। हिटलरने पाँच बरसोंमें अपने सारे कारखानोंको लड़ाईका सामान तैयार करनेमें लगा दिया था, और नौजवानोंको फौजमें भरती कर लिया था। उसके टंक, तोप, हावाई-जहाज और लाखोंकी पलटन का तमासा देखनेके लिए बिलायतकी भी जोंकें जर्मनी जाती थीं, और बहुत खुस होती थीं। छ महीने और बीते। सितम्बर १६३८ में हिटलरने अपने पूरबके पड़ोसी चेकोस्लोवाकियापर लाल-लाल आँख की। चेम्बरलेन बिलायतसे दो-दो बार उड़कर हिटलरके दरबारमें गया। और अन्तमें १६ सितम्बरको उसने, दलादिए (फ्रांस) आदि जोंक सरदारोंने चेकोस्लोवाकियाकी बलि दे दी। पहले हिटलरने थोड़ा-सा हिस्सा लिया, फिर १५ मार्च १६३९ को सारे चेकोस्लोवाकियाको हड़प गया।

सन्तोखी—दूसरे-दूसरे मुल्कोंको हिटलर हड़पता जा रहा था, तो क्यों बिलायती जोंकोंको भय होता; आखिर यह देस भी तो जोंकों हीके थे।

भैया—चेम्बरलेन जैसे जोंक-सरदारोंका ख्याल था, कि चेकोस्लोवाकियासे ही रूस नजदीक है, इसलिए बोलसेविकोंको नास करनेके लिए हिटलरको वह मिलना ही चाहिए। चर्चिल जैसी कुछ जोंकें घबड़ा रही थीं, क्योंकि वह समझती थीं कि जर्मनीकी तागत बहुत बढ़ जानेपर जो कहीं उसने हमारी ओर मुँह मोड़ा, तो कैसे जान बचेगी।

सन्तोखी—यह बात चेम्बरलेन और उसकी चंडाल-चौकड़ीकी समझमें क्यों नहीं आई?

भैया—स्वारथी अन्धा होता है। चंडाल-चौकड़ी करोड़पतियोंकी गुट थी। चेम्बरलेनका बाप अपने समयमें बिलायतका एक मंत्री था। उसका अपना एक लोहेका कारखाना था। १६००ई०में दक्खिनी अफरीकामें लड़ाई हो रही थी। चेम्बरलेन मंत्री भी था, उसने कारखानेकी चीजोंका दाम दुगना-तिगुना कर दिया। फौजके लिए उसीके यहाँसे सामान खरीदा जाता। उसने दोनों हाथसे खूब लूटा। उस वक्त बिलायतमें कहावत थी, "जितना ही अँगरेज राज बढ़ता है, उतना ही चेम्बरलेनका ठेका बढ़ता है"। यह तो बाप चेम्बरलेन-

की बात हुई। बेटे चेम्बरलेनकी भी सुनिए। उसके हथियारके एक कारखाने (बर्मिंघम स्माल आर्म्स)को १९३५में दो-सौ गिन्नी नफा हुआ था, लेकिन उसी कम्पनीने १९३८में साढ़े चार लाख गिन्नी नफा लूटा—इस वक्त चेम्बर-लेन विलायतका महामन्त्री था।

सन्तोखी—सरम होनी चाहिये थी भैया! अपने ही सरकारका मुखिया और सरकारी खजानेसे इतना-इतना रुपया अपने रोजगारको दिलवाना।

भैया—जोंकोंके समाजमें ऐसी बातको सरम नहीं कहा जाता, इसे कहते हैं ईमानदारीका व्यौपार! चेकोस्लोवाकियापर हिटलरने जब दाँत गड़ाया था, उस वक्त चंडाल-चौकड़ीको थोड़ा डर तो लगा, लेकिन चेम्बरलेन, बाल्डविन, होर, साइमन बरसोंसे रुपया बटोरनेमें लगे हुए थे। तोप, बन्दूक, टंक, हवाई-जहाज बनानेके लिए करोड़ों रुपया चाहिए और यह रुपये जोंकोंकी ही तोंद काटनेसे आते, इसलिए वह उसके लिए क्यों तैयार होते? उधर हिटलरके पास पलटन और हथियार अनगिनत थे, जब कि बिलायती सूमड़ोंने मुट्ठी बाँध ली थी, और अपने कारखानोंसे चौगुने दामपर खरीदे थोड़ेसे हथियार दिख-लानेके लिए रख छोड़े थे। हिटलर जानता था, कि यह लोग बंदरभभकी देनेसे और अधिक कुछ नहीं कर सकते। अब हिटलरने यूरपके एक बड़े भागपर कबजा कर लिया था। जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया सभी देसोंके हथियारोंके कारखाने उसके लिए काम कर रहे थे। बीस बरससे सिर झुकाए हुए जर्मनोंको यह सब जादू जैसा दिखाई पड़ने लगा। हिटलरने जर्मन आरिया जातिको सारी दुनियापर राज करनेके लिए भगवानकी ओरसे भेजा गया कहा था, और साथ ही यह भी कि हर जातिमें नेता भी भगवान ही भेजते हैं। हिटलर सारी मानुख-जातिपर राज करनेके लिए भेजा गया था। जर्मन जातिको इसका गर्व होने लगा। हिटलरने मक्खनकी जगह बन्दूक बनवानेकी बात कह-कहकर जर्मनोंको आलू खानेके लिए मजबूर किया। उसने दिलासा दिया था कि जब संसार भरपर जर्मन जातिका झंडा गड़ जायगा, तब दुनियाके सभी लोगोंका धरम जर्मन जातिके आराम और भोगके लिए काम करना होगा। हिटलर उतावला हो रहा था संसार विजयके लिए। अब उसके सामने दो

रास्ते थे, एक तो अपने पहले कहे मुताबिक बोलसेविकोंके ऊपर दौड़े और दूसरा रास्ता था बाहरी जोंकोंके ऊपर झपटनेका। फ्रांस, इंग्लैंड सब जगहकी जोंकोंने पैसा बचा-बचाकर रखा था। फौजके मदमें जो रुपया मंजूर भी किया था, उसे भी चौगुने दामपर रद्दी-सद्दी हथियार देकर लौटा दिया था। जोंकोंके पास न हथियार था न पलटन थी, जो हिटलरकी फौजका सामना कर सकतीं। लेकिन बोलिसेविकोंके यहाँ आँखमें धूल झोंकनेकी कोई बात नहीं थी, वह समझते थे कि दुनियाकी जोंकें हमें खा जानेके लिए तैयार बैठी हैं। हमारी तभी रच्छा हो सकती है, जब हमारे पास अच्छे-अच्छे हथियार और पलटन हों। उन्होंने बीस बरससे बराबर इसके लिए तैयारी की थी। जिस वक्त जर्मनीको निहत्था बना दिया गया था, और वह नाम मात्रके लिए थोड़ीसी पलटन रख सकता था और जर्मन जरनैल टके-टकेपर मारे-मारे फिरते थे; उस वक्त बोलसेविकोंने उन्हें अपने यहाँ नौकर रखा और लड़ाईकी विद्या सिखानेके लिए कहा। यह जरनैल कई-कई साल रूसमें रह चुके थे। उन्होंने वहाँकी लाल फौजको बहुत नजदीकसे देखा था। हिटलरको मालूम था कि लाल फौजकी ओर बढ़ना अक्लमंदी नहीं है।

दुखराम—बेचारी जोंकें ताकती ही रह गईं।

भैया—पोलैंड, जर्मनी और रूसके बीचमें पड़ता है। पोलैंडने बीस सालसे अपने यहाँ तालुकदारोंका खूनी राज कायम कर रखा था और किसानों और मजूरोंको हर तरहसे पीसना ही अपना काम समझा था। हिटलरने दो-चार मरतबे इन तालुकदारोंको चाय पीनेके लिए बुलाया, फिर क्या था इनका मिजाज आसमानपर चढ़ गया। यह भी तीसमारखाँ बन गए। जब हिटलरने चेकोस्लोवाकिया पर कबजा किया, तो इन तालुकदारोंने भी बढ़कर एक परगना पर झपट्टा मारा। हिटलर मुस्कुरा रहा होगा, मेंढक मच्छरको निगलनेके लिए मुँह बा रहा है; उसे यह मालूम नहीं कि उसकी पिछली टाँगे साँप के मुँहमें हैं।

दुखराम—तो हिटलर पोलैंड लेनेका निहचय कर चुका था क्या?

भैया—हिटलर जानता था कि अब आगेका कदम ऐसा होगा कि बिलायत

और फ्रांसकी जोंकें चुप नहीं बैठ सकेंगी। वह फ्रांसपर हमलाकर सकता था लेकिन फ्रांसकी पलटनके बारेमें बहुत लम्बी-चौड़ी बातें कही जाती थीं। अंग्रेज कहते थे कि दुनियामें तो दो ही पलटन हैं—धरतीकी पलटन फ्रांसके पास और समुन्दरकी पलटन हमारे पास।

दुखराम—और धरतीकी सबसे बड़ी पलटन हिटलरसे कितने साल तक लड़ी भैया!

भैया—तीन हफ्ता।

दुखराम—तीन साल भी नहीं, तीन महीना भी नहीं, तीन हफ्ता! और लाल पलटनके बारेमें क्या कहते थे।

भैया—वह लड़नेवाली पलटन नहीं है, वह खाली तमासा देखनेके लिए है। लेकिन आखिरमें बिलायत और फ्रांस और दुनियाकी सभी जोंकोंको लाल पलटनका लोहा मानना पड़ा। बिलायती जोंकोंके सरदार चर्चिलने कहा कि लाल पलटन न होती तो हमारा कहीं ठौर-ठिकाना न रहता। लेकिन हिटलर ऐसा नहीं समझता था। वह सोचने लगा कि बाकी दो रास्ते हैं—पोलैंडकी ओर दौड़ा जाय तो पच्छिमकी जोंकें गला फाड़ती भले ही रहें, लेकिन वह मदद कुछ भी नहीं कर सकतीं। फ्रांस, बेल्जियम या हालैंडकी ओर बढ़नेपर इन जोंकोंको कुछ करनेका मौका मिलेगा।

दुखराम—काँत (दाव) बैठा रहा था।

भैया—लेकिन पासा डालनेसे पहिले उसे कुछ और भी सोचना था। बोलसेविकोंने सुरूसे ही दूसरी सरकारोंको समझाया था, कि दुनियाकी सांतीके लिए सबको मिलकर कोसिस करनी चाहिए। लेकिन जोंकोंको सान्तीसे क्या मतलब? जब तक अपने घरमें नहीं लगती तब तक आग बेसन्तर होती है; लेकिन जब हिटलरका खतरा साफ दिखाई देने लगा, तब फ्रांस और इंग्लैंडने रूसको अपनी ओर मिलाना चाहा। रूसने सोचा कि जोंकोंका गुंडा ज्यादा खराब होता है, इसलिए इस गुंडे हिटलरको खतम करनेके लिए कुछ किया जा सके तो अच्छा है। फ्रांस और इंग्लैंडने अपने अफसर मास्को भेजे। लेकिन वह हिटलरसे लड़नेके लिए बात करने नहीं गए थे, बल्कि चाहते थे

कि हिटलर उतावला होकर रूसपर दौड़ पड़े। लेकिन कमेरोंके नेता कच्चे गुँइयाँ नहीं थे। स्तालिन बीरने कह दिया कि हम दूसरेकी आगमें जलनेके लिए तैयार नहीं हैं। जोंकोंके मुखिया मास्कोसे खाली हाथ लौट आए। उधर हिटलरने २३ अगस्त १९३९ को अपने लड़ाईके मंत्रीको मास्को भेजकर बोलसेविकोंसे कहा कि न हम तुमपर हमला करें न तुम हमारे ऊपर करो। कागजपर दोनों ओरकी दस्तखत हुई। ११ दिन बाद ३ सितंबर १९३९को हिटलरने पोलैंड पर हमला कर दिया। बिलायत और फ्रांसकी जोंकोंके लिए कोई चारा नहीं था, उन्होंने भी हिटलरके खिलाफ लड़ाई छेड़ दी, लेकिन पोलैंडके तालुकदारोंको कोई मदद नहीं पहुँचा सके। कुछ ही दिनोंमें सारे पौलैण्डको हिटलरने ले लिया। लेकिन पोलैंडने २१ साल पहिले रूसके कुछ जमीनको दबा लिया था। जब हिटलरकी फौज ने उधर बढ़ना चाहा, तो लाल फौजने आगे बढ़कर अपने पुराने इलाके को ले लिया। हिटलर मुँह ताकता रह गया। बिलायती जोंकें बकने लगीं, कि बोलसेविकोंने तो पोलैंडकी जमीन ले ली और घायल पोलैण्डकी बेबसीको देखकर ऐसी कायरता दिखलाई। लेकिन इन जोंकोंको यह कहनेमें जरा भी सरम न आई, कि उन्हींके सरदार लार्ड कर्जनने रूसकी सीमा जहाँ तक ठीक की थी, लालसेनाने उतना ही लिया। हिटलरको इस तरह बढ़ते हुए देख बोलसेविकोंको अपनी सीमाकी रच्छाका पूरा ख्याल करना ही था। रूसकी पुरानी राजधानी और मास्कोके बाद सबसे बड़ा सहर लेनिनग्राद खतरेमेंथा। फिनलैण्डकी सीमा उससे १४ ही मीलपर थी। फिनलैण्ड भी तालुकदारोंके हाथमें था, जिन्होंने ४० हजार कमेरोंके खूनसे अपने हाथको रंगा था और जो हिटलरके छुटभैया बननेके लिए बराबर तैयार थे। सोवियतने फिनलैण्डसे कहा कि इस सीमाको थोड़ा और पीछे हटाओ, हम तुम्हारी बगल हीमें तुम्हें तिगुनी जमीन बदलेमें देते हैं। लेकिन वह इसके लिए क्यों तैयार होने लगे? वह भी तो समझते थे, कि जब तक पड़ोसमें कमेरोंका राज है, तब तक हमारी गद्दीकी खैरियत नहीं। फिनलैण्डने जब किसी तरह बात नहीं मानी और सरहदकी लाल फौजपर गोली भी चला दी, तब कोई रास्ता नहीं था। लाल फौजको फिनलैण्डके

तालुकदारोंसे लड़ाई छिड़ गई। उस वक्त चेम्बरलेनको फिर जोश आया।

दुखराम—हिटलरसे लड़नेके लिए?

भैया—हिटलरसे नहीं, रूससे लड़नेके लिए। लाखसे ऊपर पलटन फ्रांस और इंगलैण्डसे भेजी जानेवाली थी, लेकिन बीच हीमें फिनलैण्डका दिमाग ठंढा हो गया और उसने सोवियतकी बात मान ली। कमेरोंका राज कायम होनेपर चार जातियाँ और बिछुड़ गई थीं, जिनमें एस्तोनियाँ, लतविया, लिथुआनियाँ इन तीनों देसोंकी जोंकोंने अपने मतलबके लिए अपने देसको अलग किया था। वहाँके कमेरोंने देखा कि उनकी सीमाके उस पार कैसा सरग तैयार हो रहा है। तीनों देसोंके कमेरोंने अपने यहाँकी जोंकोंको बिदा किया और वोट देकर तय किया कि हम भी सोवियत राजमें सामिल होंगे, और वे १९४०में सोवियतमें सामिल हो गए। दक्खिन-पच्छिममें बेसराबियाका इलाका था, जिसे रूमानियाँकी जोंकोंने दखल कर लिया था। सोवियतने रूमानियाँसे अपनी जमीन लौटानेके लिए कहा रूमानियाँकी जोंके पसंद तो नहीं करतीं थीं, लेकिन करें क्या? बेसराबियाको छोड़ना पड़ा। सोवियतमें अब सब मिलाकर सोलह बड़े-बड़े पंचायती राज हैं।

दुखराम—नाम क्या-क्या है भैया।

भैया—(१) रूस, (२) उक्रइन, (३) बेलोरूसिया, (४ करेलोफिन, (५) एस्तोनिया, (६) लतविया (७) लिथुवानिया, (८) बेसराबिया, (९) जार्जिया, (१०) आरमेनिया, (११) आजुरबाइजान, (१२) तुर्कमानिस्तान, (१३) उज्वेकिस्तान, (१४) ताजिकिस्तान, (१५) किरगिजिस्तान, (१६) कजाकस्तान।

दुखराम—यह तो बड़े-बड़े परजातंतर हैं और कितने ही छोटे-छोटे भी होंगे?

भैया—हाँ, लेकिन उनका नाम देनेसे क्या फायदा? कभी नकसा मिलेगा तो तुम्हें दिखला देंगे।

दुखराम—हिटलरने आगे क्या किया भैया!

भैया—हिटलर चुप तो नहीं बैठ सकता था। वह जानता था कि जब

तक फ्रांस और इंग्लैंडको नहीं पछाड़ते तब तक दुनियाके आधे भागको हम अपनी जोंकोंको चूसनेके लिए नहीं दे सकते।

सन्तोखी—तो हिटलर भी जोंकों हीके लिए सब कुछ कर रहा था ?

भैया—जोंकोंका ही तो वह आखिरी नायक था। इंग्लैंड और फ्रांसकी पूँजीपति जोंकोने सौ बरस पहिले अपने यहाँके तालुकदारों (सामंतो) को पछाड़नेके लिए जनताकी गुहार उठाई थी। काम बन जानेपर तो उन्होंने जनताको चूसनेके सिवाय और कोई काम नहीं किया। लेकिन यह काम वह परदा डालकर करते आए थे और वोट और चुनावका नाटक करते थे।

सन्तोखी—नाटक क्यों भैया ?

भैया—जानते हो न, जोंकोंके राजमें वोटकी बिक्री होती है। कोई करोड़पति कौन्सिल एसंबलीके लिए खड़ा होगा, वह वोटरोंको रुपया बाँटता फिरेगा। अपने दलालोंको रुपया देकर वोट लेनेकी कोसिस करेगा। उसके सामने कोई किसान-मजूर कैसे खड़ा हो सकेगा ?

दुखराम—उसकी जमा-पूँजी तो मोटरके तेलमें ही बिक जायगी।

भैया—इसीलिए मैंने कहा कि जोंकोंके राजमें ईमानदारीसे वोट नहीं दिया जा सकता। लेकिन, कभी-कभी इस वोटसे जोंकें घबराती भी हैं। जर्मनीमें हिटलरने कहा—नेताको भगवान चुनते हैं, इसलिए उसको किसी पाखंडकी जरूरत नहीं, लेकिन तब भी अपनी गीत सुनानेके लिए वह कभी-कभी वोटका नाटक खेलता था। उसके गुंडे देखा करते थे कि कोई आदमी वोट देनेसे जी तो नहीं चुराता या गड़बड़ तो नहीं करता। जहाँ पता चला तो बेचारेपर आफत।

सन्तोखी—गुंडोंको भी भैया, जोंकें ही पैदा करती हैं ?

भैया—हिटलरने डेनमार्क और नारवे जीता। फिर बेल्जियम और हालैंड-को खतम किया और तीन ही हफ्तेमें फ्रांसकी जबरजस्त सेनाने भी हथियार रख दिया।

दुखराम—जबरजस्त सेना होनेपर इतनी जल्दी हथियार क्यों रख दिया भैया ?

भैया– सुना है, हिन्दुस्तानके किसी राजाका अफसर अंगरेजोंसे मिल गया और उसने किलेमें बारूदकी जगह भूसी भरवा दी थी।

दुखराम—इसी तरहका विसवासघात फ्रांसमें हुआ क्या ?

भैया—फ्रांसका राज दो सौ जोंक परिवारोंके हाथमें था। यही वहाँके करोड़-पति थे। फ्रांसमें तीन बार कमेरोंने अपना जोर दिखलाया और आखिरी बार तो कई महीने पेरिसमें राज भी किया। फ्रांसकी जोंकोंको डर था कि फिर कहीं कमेरे उठ खड़े न हों, इसलिए भीतर ही भीतर वह जरमन जोंकोंसे मिल गए। फ्रांसीसी बहुत बहादुर जाति है। वहाँ सिपाही डरना नहीं जानते लेकिन उनके हथियार निकम्मे थे और जरनैल तो और भी निकम्मे थे। जो तीन महीने में हिटलरने फ्रांसको हरा दिया, इसमें हिटलरी फौजकी बहादुरी उतना कारन नहीं थी, जितना कि फ्रांसकी जोंकोंका विसवासघात। फ्रांसके खतम होनेके बाद तो अब जर्मन गुंडोंको दौड़ लगानेकी जरूरत थी। मसोलिनी पहले ही गिद्धकी तरह ताक लगाए हुए था। अभी वह इंग्लैंड और फ्रांसके जंगी जहाजोंसे डरता था। लेकिन अब पीछे रहनेका मतलब था, लूटमें हिस्सा न पाना, इसलिए वह भी हिटलरके साथ मिल गया। हंगरी, रूमानियाँ और बोल्गारियाने बिना लड़े ही हिटलरकी गुलामी मान ली। यूगोसलाविया और यूनानको उसने पीस दिया। लड़ाई अफ्रीकामें चली आई। अब सोवियतसे बाहरका सारा यूरप हिटलरके हाथमें था। सभी मुल्कोंके कल-कारखाने उसके लिए काम करते थे।

सन्तोखी—तो यूरपमें कोई नहीं बच रहा था ?

भैया—बच रहा था इंग्लैंड, क्योंकि वह यूरपसे बाहर समुन्दरके बीचका टापू था। हिटलरके पास उतने जंगी जहाज नहीं थे। अपने हवाई जहाजोंको वह भेजकर लन्दन और दूसरे सहरोंको तहस-नहस करता रहा।

सन्तोखी—फ्रांसकी जोंकें तो हिटलरके जूते चाटने लगीं, लेकिन चेम्बर-लेनका क्या हुआ ?

भैया—जानते हो न जोंकोंमें भी बेसी धनी और कम धनीका फरक होता है। दोनों एक दूसरेसे घिना करते हैं। हाँ, जब जोंकोंके धनपर कमेरे

दाँत गड़ाने लगते हैं, तब सभी जोंकें एक हो जाती हैं। हिटलर और इंग्लैंडके बीचमें एक पतलीसी खाड़ी रह गई थी। बिलायतकी जोंकें घबरा गई। फ्रांसकी दसा क्या हुई, इसको उन्होंने अभी-अभी देखा था। उन्होंने समझा सांतिके समय जिस जोंकसे काम चल सकता है, लड़ाईके समय उसीके काम नहीं चल सकता। चेम्बरलेनका पाप एक-एक करके गिनाया जाने लगा। बेचारेको गद्दी छोड़नी पड़ी और चर्चिल उसकी जगह महामंत्री बना।

दुखराम—चर्चिल भी तो जोंक है भैया!

भैया—बड़ी जोंक और हिन्दुस्तानके लिए तो वह काला साँप है। लेकिन इसके बारेमें हम फिर किसी दिन कहेंगे। इतनी बात जरूर है, कि हिटलरको बहुत आगे बढ़ते देखकर चर्चिल पहिलेसे ही बोलने लगा था—हमें लड़नेके लिए तैयार होना चाहिए। जोंकोंमें वही आदमी था, जो इंग्लैण्डको कुछ आसा दिला सकता था। वह पिछली लड़ाईमें भी लड़ाईका मन्त्री था?

दुखराम उसीने न कमेरोंके राजको खतम करनेके लिए पलटन भेजी थी?

भैया—और वह बीस बरस तक सोवियतको गाली देता रहा। लेकिन बिलायती पारलियामेंट सभामें जोंकोंका ही जोर था। इसीलिए उसको महामंत्री बना दिया गया।

अध्याय ७

पागल सियार गाँवकी ओर

भैया—दुक्खू भाई! बहुत नाम कहनेसे समझनेमें गड़बड़ मच जाती है। यूरपके छोटे-मोटे कितने देसोंका नाम मैंने गिना दिया है। कहनेसे नकसा दिखानेमें बात जल्दी समझमें आती। देखो जो कहीं नकसा मिल गया, तो मैं

ले आकर दिखाऊँगा । लेकिन एक नाँव और सुन लो । अमेरिका नाम सुना है ?

दुखराम—हाँ भैया ! नाम सुना है सोमारू काका कहते थे, कि परागराजमें अमेरिकाकी पलटन आई है । लेकिन भैया ! अमेरिका अँगरेजोंकी इतनी मदद क्यों करता है ?

भैया—कमाके खानेवालोंमें सच्ची दोस्ती हो सकती है, लेकिन लुटेरोंमें कभी नहीं हो सकती । जब हिटलर इतना बढ़ने लगा, तो अमेरिकाको भी भय लगने लगा । उसने समझा जो फ्रांस और इंग्लैण्डको चित करके आधी दुनियापर कबजा हो गया और फिर दलबलके साथ हमारे ऊपर झपटा, तो तेरह करोड़ आबादीका अमेरिका उसके सामने कितने दिनों तक डटेगा । इसीलिए अमेरिका पहिले हीसे इङ्गलैण्ड और फ्रांसको हथियार बेंच रहा था ।

सन्तोखी - बेंचनेमें तो नफा ही है न भैया ?

भैया—और खतरा भी है । जो कहीं हिटलर जीत जाता, तब तो पहिल हीसे उसे नाराज कर लिया न ? अमेरिकाके परधान रूजवेल्टने कई बार हिटलरको जली-कटी भी सुनाई ।

दुखराम—दोनोंकी भेंट हुई थी क्या भैया ?

भैया—दोनोंके भेंट होनेका क्या काम है दुक्खू भाई ! रेडियो बाजा एक-की बात दूसरी जगह पहुँचानेको तैयार ही है । अब सुनो, हिटलर क्या सोच रहा था ? सारे फ्रांस और सारे यूरपके ले लेनेके बाद अब वह सोचने लगा कि इङ्गलैण्डकी ओर बढ़ूँ या क्या करें । अमेरिका इङ्गलैण्डकी ओरसे लड़ाईमें कूदनेके लिए तैयार दिखाई पड़ता था । उसने सोचा जो मैं इङ्गलैण्ड और अमेरिकासे भिड़ गया तो, अमेरिकाकी तागत बहुत बड़ी है । उसके पास इतने बड़े-बड़े कारखानें हैं, कि वह पतंगकी तरह चुटकी बजाते-बजाते हवाई जहाज बनाते जायेंगे । जर्मनोंसे करीब-करीब दूनी अमेरिका-की आबादी है । वहाँ तक पहुँचनेमें मुस्किल पड़े । और जो कहीं लड़ाई ज्यादा दिन चली और लड़ते-लड़ते जर्मनी बहुत थौस (निरबल) गया । और

इधर बोलसेविक चुप-चाप अपनी फौज बढ़ा रहे हैं, हथियारपर सान लगा रहे हैं, फिर तो सब कुछ कर-धरके भी हमें मरना ही होगा। बात यह थी कि बोलसेविकोंकी कोई ऐसी नियत नहीं थी। हाँ, वह हिटलरकी बातपर कभी विसवास नहीं कर सकते थे।

दुखराम—जब जोंकोंपर ही विसवास नहीं कर सकते थे, तब जोंकोंके गुंडेपर कैसे करते?

भैया—यूरप जीतनेसे हिटलरका दिमाग फिर गया। उसने सोचा—फ्रांस बेल्जियम, जर्मनी, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकियाके बड़े-बड़े गोला-बारूद बनानेवाले कारखाने हमारे लिए हथियार बना रहे हैं। हमारे सामने फ्रांस तीन हफ्ते नहीं ठहर सका। अब हमारी ताकत इतनी है कि बोलसेविकोंको पीस सकते हैं। उसके जरनैलोंमेंसे कुछने समझाया कि लाल पलटनके बारेमें ऐसा सोचना अच्छा नहीं है। लेकिन वह जरनैलोंकी बातको माननेके लिए तैयार नहीं था।

दुखराम—क्यों मानेगा? भगवानने दुनियापर राज करनेके लिए जरनैलोंको भेजा था या हिटलरको?

भैया—हिटलर यह भी ख्याल करता था, कि चारों खूंट तक विजयपताको गाड़े बिना मेरे लिए खैरियत नहीं। जो इतने दिनों तक मक्खनकी जगह आलू खाते आये हैं वह मुझे ही खाने लगेंगे। और इंग्लैंड, अमेरिकाके हरानेमें कमजोर हो जानेपर हम फिर बोलसेविकोंका कुछ नहीं कर सकेंगे।

दुखराम—और बोलसेविकोंके हरानेकी आसामें जर्मनीवाले पचीसों साल तक न आलू खानेके लिए तैयार होंगे और न यही आसा थी कि हिटलर अमिरतकी घरिया पीकर आया है।

भैया—हिटलरके लिए कागजपर दसखत करना कोई चीज नहीं। वह कह ही चुका था, कागजपर दसखतकी जाती है फाड़नेके लिए।

दुखराम—जोंकोंका यही धरम है।

भैया—आखिर २८ जून १९४१को हिटलरने कमेरोंकी धरतीपर हमला कर दिया। हिटलरने जितनी तैयारी की थी, अभी लाल सेना उतनी तैयार न

थी। लाल सेनाको पीछे हटना पड़ा। और कभी-कभी तो दस-दस बारह-बारह मील एक दिनमें पीछे हटना पड़ा। लाल सेना बहुत बहादुरीसे लड़ी। कितनी ही बार ऐसा देखा गया, कि लालसेनाने किलेको तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि एक सिपाही जिन्दा रहा। लेकिन उसे अपार हानि उठानी पड़ी।

सन्तोखी—उस वक्त तो भैया! मैंने भी सुना था कि रूस कुछ ही दिनोंमें खतम हो जाएगा।

भैया – हिटलरने खुद कहा था कि मैं तीन मासमें रूसको पीस दूँगा। रूसके ऊपर हमला होते ही चर्चिलके जानमें जान आई। चेम्बरलेन बेचारा तब तक मर गया था, नहीं तो न जानै उसे क्या होता। चर्चिल को अभी तक आसा पूरी नहीं थी। लेकिन अब उसे विसवास होने लगा, कि रूसके कारण इंग्लैंड बच जायगा। हिटलरने अपने दाहिने हाथ हेसको बिलायत भेजा था। हेस जिस बड़ी जोंकके घरके पास उतरना चाहता था, वहाँसे दूर किसी जगहमें उसे हवाई जहाजसे उतरना पड़ा। लोगोंने पकड़ लिया! बात पहिले हीसे खुल गई। तब भी बिलायतकी जोंकोंको उसनेब हुत समझानेकी कोसिस की—हिटलर इंग्लैंडसे दोस्ती करना चाहता है, वह सिर्फ बोलसेविकोंको खतम करना चाहता है। वह पक्का बचन देनेको तैयार है कि वह कभी इंग्लैंड और उसके राजकी ओर आँख नहीं लगायेगा। लेकिन आप लोग हिटलरसे दोसती कर लें। उसने बहुत समझानेकी कोसिस की कि बोलसेविक ही हम सबके सबसे बड़े दुसमन हैं। हिटलरके इस काममें सबको मदद देनी चाहिए।

दुखराम—तो बिलायती जोंकोंने हिटलरकी बात क्यों नहीं मानी भैया? वह तो उन्हींकी भलाईकी बात कह रहा था।

भैया—हिटलरकी बातपर कैसे विसवास कर लेते। चर्चिल जानता था कि जो रूस भी खतम हो गया, तो हम अकेले हिटलरसे कभी नहीं बच सकते। उस वक्त अकेले लड़ना अपने ही हाथों अपने गलेमें फाँसी लगाना होगा।

सन्तोखी—यह तो ठीक है, लेकिन बिलायती जोंकें बोलसेविकोंको भी तो

अपना दुसमन समझती थीं।

भैया— रूसपर हमला होते ही चर्चिलने रेडियोबाजामें तुरन्त कहा, कि इंग्लैंड तन-मनसे रूसके साथ है। साथ ही उसने कहा था कि बीस बरसमें मैंने बोलसेविकोंके खिलाफ जो कुछ कहा है, उसमेंसे एक अच्छर भी लौटानेके लिए तैयार नहीं। यह सब कहते हुए भी चर्चिल इतना जानता था, कि बोल-सेविक हिटलरकी तरह दूसरे देसोंमें अपनी फौज भेजकर वहाँके सहरोंको उजाड़कर बच्चों-बूढ़ोंको मारकर रूसका राज कायम करने नहीं जायँगे। इसी-लिए चर्चिलने उस बखत हिटलरके छुटभैया हेसकी बातको ठुकरा दिया और स्तालिनसे हाथ मिलाया।

सन्तोखी—और हिटलरकी फौज जोरसे आगे बढ़ती गई।

भैया—जोरसे बढ़ती गई। और मैं कहूँ सन्तोखी भाई! मुझे एक छनके लिए भी कभी मनमें नहीं आया, कि हिटलर लाल सेनाको हरा सकेगा; किन्तु जितनी तेजीसे वह मास्को और लेनिनग्रादकी ओर बढ़ रहा था, उससे दिल घबरा रहा था। मास्कोके बीस मील नजदीक पहुँचनेपर जब लाल पलटनकी मार पड़ी और जिस बखत जोंक गुंडोंको पीछे हटना पड़ा, तो लोगोंको पता लगने लगा कि लाल पलटनने पहिलेसे अपने लड़नेका ढंग सोच लिया था।

सन्तोखी—लेकिन भैया! लाल पलटन इतना पीछे क्यों हटती गई? पहिले ही क्यों नहीं पूरी तागतसे लड़ी?

भैया—सन्तोखी भाई! जो कोई आदमी जोरसे बेल फेंक रहा हो और तुम सीधे अपनी हथेलीपर ओड़ने (रोकने) जाओ, तो पत्थरकी तरह चोट लगेगी; लेकिन तुम दोनों हथेलीके बीचमें उसको आने दो और जैसे ही हाथको छुए वैसे ही हाथको बित्ता दो बित्ता पीछे हटा लो, तो फिर बेलका सारा जोर खतम हो जायगा। इसी तरह लाल पलटनने सोचा कि हिटलर अपनी सारी तागतसे हमला कर रहा है। कहाँ ज्यादा हमला करना है और कहाँ कम यह बात भी वही जानता है, इसलिए इस बखत सरबसकी बाजी लगाकर लड़नेमें हमारा नुकसान ज्यादा पड़ेगा। इसलिए वह हिटलरकी चोटको सहते

हुए पीछे हट गई। लेकिन कहाँ पहुँचकर फिर पीछे नहीं हटना है, यह भी वह जानती थी। हिटलरने गाल बजाया था कि रूसको तीन महीनेमें खतम कर दूँगा। मास्को पहुँचनेका दिन तक धर दिया था और सिपाहियोंमें बाँटनेके लिए ढेरके ढेर तमगे भी ढाल लिए गए थे। लेकिन मास्कोके नजदीक पहुँचते जैसे ही लाल पलटन अपना पंजा बाहर निकालकर झपटी, कि हिटलरको लाखके करीब बढ़िया जवानवाली अपनी मजबूत पलटनको मरवाकर पचासों मील पीछे हट जाना पड़ा। लेनिनग्रादसे दस मीलपर हिटलरी पलटन पहुँच गई। और नौ सौ दिज तक घेरा डालकर बैठी रही, लेकिन मजा कि एक कदम आगे बढ़े। इन दोनों बातोंने बतला दिया, कि लाल पलटनका पीछे हटना हारे हुए जोधाका भागना नहीं था।

दुखराम—तो यह उसको दाँव-पेंच न थी भैया?

भैया—हाँ, दाँव-पेंच थी। इस तरह हिटलरको जब सीधे मास्कोपर चढ़ाई करनेकी उम्मेद न रही, तो वह आगेसे घेर लेनेके लिए वोरोनेजपर कचकचाके पड़ा, लेकिन लाल पलटनने उसका दाँत तोड़ दिया और हिटलरी गुंडोंको पीछे हटना पड़ा। यह तीसरी जगह थी, जिसने बतला दिया कि लाल फौजके तरकसमें अभी बहुत तीर हैं।

दुखराम—सचमुच ही भैया! हिटलर और उसकी सेना गुंडोंकी सेना है, नहीं तो इस तरह बचन देकर तोड़ते।

भैया—बचन तोड़नेकी ही बात नहीं है दुक्खू भाई! हिटलरने जो जुलुम रूसमें किया है, वैसा कभी नहीं सुना गया। वीरका काम है लड़नेवालोंसे लड़ना न कि बरस बरसके बच्चोंको मारते जाना?

दुखराम—क्यों भैया! हिटलरने बच्चोंको भी मरवाया?

भैया—एक दो नहीं, पचासों हजारको। कितनोंको बिखवाली हवा देकर मारा, कितनोंको खून निकाल-निकालकर मारा।

सन्तोखी—क्या खून भी पीते हैं भैया?

भैया—वह पीने ही जैसा था। लड़ाईमें जो बहुत घायल होते हैं, उनको ताजा खून पिचकारीसे देना पड़ता है। सब जगह आजकल खून जमा करनेका

इन्जताम है। जवानहट्टे-कट्टे आदमीके शरीरसे खून लिया जाता है। दस सेर खूनमेंसे छटाँक दो छटाँक खून लेनेसे आदमी नहीं मरता। मैं भी दो-तीन बार खून दे आया हूँ।

दुखराम—तो भैया ! तुम्हें तकलीफ नहीं हुई ?

भैया—तुमने कभी दवाईकी सुई ली है दुक्खू भाई !

दुखराम—हाँ भैया ! एक बेर तिल्ली (बरवट, पिलही) बढ़ गई थी, उसीके लिए चार-पाँच सूई ली थी।

भैया—तो सुई देनेमें तकलीफ हुई थी कि नहीं ?

दुखराम—क्या तकलीफ होगी, जरा-सा छुन्न-सा काँटा-सा लगा, और फिर सूईके पीछे पिचकारीमें भरी दवाको नसमें डाल दिया।

भैया—उसी तरह सूई चुभाकर पिचकारीमें खून निकालनेसे कोई तकलीफ नहीं होती, लेकिन जो ज्यादा खून निकाल लिया जाय तो आदमी मर जाता है।

दुखराम—तो राछसोंने ज्यादा-ज्यादा खून निकालकर बच्चोंको मार डाला ?

भैया—हजारों बच्चोंको खून निकालके मारा, हजारों बच्चोंको गोली लगाके मार दिया, हजारों बेकसूर बूढ़ोंको मारा और औरतोंको तो लाखोंकी तादादमें मारा। हाथ बाँधकर लोगोंको सहरके बाहर ले जाते और हुक्म देते कि खाईं खोदो। खाईं खोदनेपर, फिर तड़-तड़ गोली चला देते, और सब उसी खाईंमें गिर जाते।

सन्तोखी—आदमीका दिल कैसे इतना राच्छस जैसा हो सकता है ?

भैया—मैं भी सन्तोखी भाई ! इन बातोंपर विसवास नहीं करना चाहता था। जानते हो न, लड़ाईमें झूठ-साँच भी बहुत चलता है; लेकिन जब लाल फौजने हिटलरी गुंडोंको पीछे ढकेलना सुरू किया और कमेरोंके सहर और गाँव फिर आजाद होने लगे, तो उन खाइयोंको खोदा गया। पिघली हुई बरफके नीचेसे सैकड़ों लासें निकलीं। उनका फोटो लिया गया। मैंने उन फोटुओंको बम्बईमें देखा, तो सच कहता हूँ दिल खौलने लगा। नन्हे-

नन्हे बच्चे, दो बरस, तीन बरस, चार बरसके नन्हें-नन्हें एक नहीं, दो-दो नहीं, पाँच-पाँच, सात-सात सौ मरकर सूखे पड़े हुए थे। औरतोंको पेट फाड़कर बेइज्जती करके मारा गया। सैकड़ों बेकसूर आदमियोंको फाँसीपर झुलाकर महीनें-महीनें तक सहरके चौरस्तेपर लटका के छोड़ दिया गया।

दुखराम—तो इन राच्छसोंको गुंडा ही कहनेसे काम नहीं चलेगा, और कोई नाम ढूँढ़ना चाहिए।

भैया—उनका जुलुम भी ऐसा है दुक्खू भाई, कि जुलुम कहनेसे वह पूरा समझमें नहीं आ सकता। लेकिन जब गुंडोंने इस तरह जुलुम करना सुरू किया एक-एक सहरमें चालिस-चालिस पचास-पचास हजार निहत्थे आदमियों-को मार डाला; तो सोवियत निवासियोंने भी जानपर खेलना सुरू किया, बारह बरसके लड़कोंसे सौ बरसके बूढ़ों तकने जान हथेलीपर रखकर गुंडोंके साथ मुकाबिला करनेका निहचय किया। जो इलाका जर्मनीके भी हाथमें चला गया था, वहाँकें कितने ही नरनारी जंगलोंमें भाग गये। उन्हें तो अपने इलाकेका कोना- कोना मालूम था, गाँवकी गली-गली अँगुलीपर थी। वह रातको जिस वक्त भी मौका मिलता, जर्मन पलटनियोंपर छापा मारने लगे। छापा मारके सिपाहियोंके बन्दूक मसीनगन सब छीन लेते थे। कुछ ही समयमें सारा इलाका छापामारोंसे भर गया और जर्मनोंको अपनी छावनियोंसे बाहर निकलनेकी हिम्मत न रही।

दुखराम—छापामार क्या भैया ?

भैया—अपने दुसमनोंसे बदला लेनेके लिए यह बहादुर लोग दिन या रातको, इक्के-दुक्के या गफलतमें पाकर हमला करते, इसीको छापा मारना कहते हैं। इसीलिए इन बहादुरोंको छापामार कहते हैं।

सन्तोखी—हाँ भैया! जब बराबरका जोर नहीं हो और एकके पास बड़े-बड़े हथियार और दूसरेके पास मुसकिलसे कहीं एकाध बन्दूक हो, फिर यह छोड़ दूसरा रास्ता क्या था ?

भैया—हाँ सन्तोखी भाई! जर्मनोंके पास हजार-हजार पन्द्रह-पन्द्रहसौ मनके टंक थे अनगिनत हवाई जहाज थे, बड़ी-बड़ी तोपें थीं, मिनट-मिनटमें

हजार गोली चलानेवाली मसीनगनें थीं। उधर लाल पलटन पीछे हट गई थी, और वहाँ रह गये थे गावों-सहरोंके निहत्थे नर-नारी। किन्हीं-किन्हीं गावोंमें तो बन्दूकें भी न थीं, क्योंकि जर्मन गाँवमें पहुँचते ही बन्दूक छीन लेते थे, फिर खाने पीने की चीजें, रुपया-पैसा सब छीन लेते थे। लेकिन सोवियतके कमेरे जानते थे कि हमारे सरगमें यह राच्छस घुस आए हैं। इनको सान्तिसे नहीं बैठने देना होगा। कभी-कभी तो बिना एक भी बन्दूकके छापामारोंने अपना काम सुरू किया। जंगलमेंसे आकर कहीं अँधेरेमें छिपे रहते। जोखिम तो था, लेकिन गाँवके लोग जंगलमें छिपे छापेमारोंके पास खाना पहुँचाते थे, गुन्डे कहाँ-कहाँ हैं, इसकी खबर देते थे। गुन्डे सिपाही चौबीस घन्टा तो सजग नहीं रह सकते और न चौबीसों घन्टा एक जगह एक हातेमें बन्द रह सकते थे। छापेमार अचानक उनके ऊपर कुल्हाड़ा, कुदाल, भाला कोई चीज लेकर टूट पड़ते। चार गुन्डोंको मारा, तो चार बन्दूक और गोली-गन्ठा मिला।

सन्तोखी—फिर तो सूद-मूर लेकर इसी तरह बढ़ता चला जायगा।

भैया—हाँ, दो बन्दूक छीनी, फिर दो बन्दूक लेकर छापे मारे और चार नई बन्दूकें हाथमें आईं। इस तरह सैकड़ों, हजारों बन्दूकें, मसीनगनें हाथके बम, पिस्तौल और बहुतसे हथियार छापामारोंके हाथमें चले आए। टैंक और बड़ी तोप भी कभी-कभी पकड़ लेते थे, लेकिन उनको जंगलमें ले जाकर छिपाना आसान नहीं था। बाकी हथियारोंको छापेमार खूब चलाते थे।

दुखराम—खूब जवाब दिया भैया! रूसके कमेरोंने और खूब बहादुरी दिखलाई।

भैया—दुनिया चकित है दुक्खू भाई! उनकी बहादुरीसे। जर्मन सिपाहियों हीको वह नहीं मारते बल्कि रास्तेकी सड़कों, पुलों, रेलोंको तोड़ देते थे, जिसकी वजहसे जर्मनोंको सामान पहुँचाना मुश्किल होता था। उनके सामनेसे लाल पलटन लड़ रही थी, और पीछेसे लड़ रहे थे लाखों छापामार और छापामारिनें। इतने बहादुर लड़नेवाले साथी अँगरेजोंको मिले, तब उनका भी हौसला बढ़ा।

सन्तोखी—भैया, रूसके कमेरोंकी बहादुरी और उनका मरकस बाबाके रास्तेपर चलनेकी बात देखकर तो मैं समझता हूँ कि दुनिया भरके कमेरे उनके साथ प्रेम करते हैं। सगे भाईकी तरह समूची दुनियाके कमेरोंका दुख-सुख एक-सा है, और हैं भी वे सगे भाई। लेकिन अँगरेज जोंकें जो अबकी बच गईं, यह अच्छा नहीं हुआ।

भैया—जब पहिले जोंकोंही जोंकोंकी लड़ाई थी, तो सन्तोखी भाई, मैं तुमसे क्या कहता था?

सन्तोखी—यही कि तालुकदारों-तालुकदारोंके झगड़ेमें हमको मरनेकी जरूरत क्या? भले दोनों लड़ मरें।

भैया—हाँ, तो उस वक्त लड़ाई जोंकों-जोंकोंकी थी, बिलायती जोंकें दो सौ बरसोंसे हमारा खून चूस रही हैं, उन्होंने हमारी छातीपर कितना कोदो दला है, उस सबको देखकर हम क्यों इन जोंकोंकी मदद करने जाते। लेकिन जब गुन्डा हिटलर कमेरोंके राजपर चढ़ दौड़ा तो बिलकुल रंग बदल गया। पानीकी नाली बह रही हो, तुम उसमेंसे अँजली भरकर पियोगे, प्यास बुझाओगे; लेकिन, उस नालीमें जैसे लाल जहरकी पुड़िया डाल दी जाय तो उस पानीका गुन बदल गया न?

दुखराम—हाँ भैया, हिटलरने जिस दिन हमारे कमेरे भाइयोंपर हमला किया, बच्चोंको खून निकाल-निकालकर मारा, निहत्थोंको उनके हाथ कबर खुदवाकर गोली चलवाई, तो दुनियामें कौन कमेरा—किसान-मजूर—होगा जिसकी आँखसे आग न निकलने लगे और हिटलरको कच्चा खा जानेके लिए तैयार न हो?

भैया—ठीक कहा दुक्खू भाई! हिटलरने जिस दिन सोवियतके कमेरों-पर हमला किया, उसी दिन दुनिया भरके मजूरों-किसानोंपर हमला कर दिया। हिटलर जोंकोंका सबसे बड़ा खूनी राज कायम करना चाहता था, उसने अपने यहाँ के किसानों-मजूरोंको पीसा। पहिले हीसे हम यह सब जानते थे और हिट-लरको फूटी आँखों भी देखना नहीं चाहते थे, लेकिन जब तक उसकी लड़ाई सिर्फ जोंकोंसे रही, तब तक एक जोंकको छोड़कर दूसरी जोंकको हम कैसे पसन्द

करते ? लेकिन अब बात वैसी नहीं थी। जो हिटलर रूसको जीत लेता तो दुनियासे मजूर-किसान-राज खतम हो जाता। हजारों बरसोंसे बड़े-बड़े महात्माओं और त्यागियोंने सपना देखा था कि एक ऐसा मानुख-समाज हो, जिसमें जोंकों-का नाम न रहे। उनका सपना ठीक था, लेकिन वह ठीक रास्ता नहीं जान सके।

दुखराम—रास्ता तो भैया मरकस बाबा हीने बतलाया।

भैया—हाँ, मरकस बाबा हीने बतलाया। फिर पेरिसमें लाखों मजूरोंने प्राण दिया कमेरा राज्य कायम करनेके लिए; फिर रूसमें करोड़ों कमेरोंने लड़ाई और भूखसे जान दी, तब जाकर दुनियामें पहले पहल एक मजबूत कमेरा-राज कायम हुआ। पच्चीस बरसमें उसने दुनियाके छठे हिस्सेको बहुत कुछ सरगसा बना दिया। उसको देखकर दुनिया भरके कमेरोंकी हिम्मत बढ़ी कि हम भी किसी दिन जोंकोंको निकालकर बाहर करेंगे। जो रूससे कमेरा-राज खतम हो जाता, तो दुक्खू भाई ! यह सारी दुनियाके कमेरोंका नुकसान होता कि सिर्फ रूस ही वालोंका ?

दुखराम—सारी दुनियाके कमेरोंका भैया ! मैं तो जानता हूँ कि खूँटेके बलसे बछरू (बछड़ा) कूदता है। जब हमने रूसके कमेरा राजके बारेमें सुना, तो उसीसे हमारी भी हिम्मत बढ़ी, और हम भी लाल झण्डा लेकर कूदने लगे।

भैया—एक सड़ी मछली सारा तालाब गन्दा कर देती है, दुनियामें एक भी जोंक बच जाय, तो भी कमेरोंके लिए खतरा है। और एक बार मानुख-जातिमें जोंकें इतनी भारी हारके बाद जो फिर पहिलेकी तरहसे सारी दुनियापर छा गईं तो लाल झण्डा फहराना सैकड़ों बरसोंकी बात हो जायगी। दुनिया जोंकोंके लिए अकण्टक हो जायगी।

भैया—इसलिए दुक्खू भाई, जिस दिन हिटलरने सोवियतपर धावा बोला, उसी दिन मैंने अपने दोस्तोंसे कह दिया कि अब जोंकों जोंकोंकी लड़ाई नहीं रही। हिटलरके हरानेका मतलब है, कि जोंकोंके सबसे बड़े गुन्डेको खतम करना, ऐसे गुन्डेको खतम करना जिसकी ओर सारी दुनियाकी जोंकें आसा

लगाये बैठी हैं। सोवियतका जीतना दुनिया भरके कमेरोंकी जीत है।

सन्तोखी—यह बात साफ मालूम हो रही है भैया!

भैया—हिटलरने जब मासको लेनिनग्राडका रास्ता बन्द देखा, तो दक्खिन-से बढ़ा और बढ़ते-बढ़ते वोल्गा गंगाके किनारे बसे स्तालिनग्राद सहर तक पहुँच गया। स्तालिन वीरने अपने लाल जरनैलोंको हुकुम दिया, कि अब एक कदम भी पीछे नहीं हटना है। और वह एक कदम भी पीछे नहीं हटे। यहीं-पर हिटलरको सबसे बड़ी हार खानी पड़ी। उसके दो लाख सिपाही मारे गये और एक लाख सिपाहियोंको लाल पलटनने कैद किया। हिटलरको जो वहाँ हार नहीं हुई होती, तो वह बाकू होते बाकूकी तेलकी खानोंको लेते ईरान में पहुँचता और फिर उसके बाद हिन्दुस्तान ही रह जाता था।

दुखराम—तब तो भैया स्तालिनग्रादकी लड़ाई रूसके ही कमेरोंके लिए खतरेकी चीज नहीं थी बल्कि हिन्दुस्तानके लिए भी खतरा हो गया था।

भैया—फिर हिटलरी गुंडे हिन्दुस्तान भी आते। यहाँ भी वे लाखों औरतों की इज्जत लूटते, बच्चों-औरतोंके खूनसे अपने हाथ रंगते और सैकड़ों सहर और गाँव जलाकर छार कर डालते। लेकिन लाल पलटन पूरी तैयारीके साथ हिटलर-का दाँत खट्टा करनेके लिए तैयार थी। स्तालिनग्रादपर मार खाकर जो हिटलर पीछेकी ओर भगा, तो भागता ही गया; फिर उसका पैर कहीं नहीं ठहरा। हिटलर एक हजार मील तक सोवियतकी धरतीमें घुस आया था, लेकिन अब पिटाई सुरू हुई। एक एक जगहसे पिटता वह घरकी ओर भगा। पागल सियार गाँवकी ओर आया, जब लाठी पड़ने लगी, तो अपनी माँदकी ओर भगा। सोवियतकी अंगुल-अंगुल धरतीसे पापी निकाले गए। अब वह अपनी धरतीपर भगकर गये, लेकिन लाल फौज इन पागल सियारोंकी माँदमें बैठकर भी जीने नहीं देगी। उसने तय किया है कि पागल सियारोंमेंसे एकको भी नहीं छोड़ा जाय।

दुखराम—और भैया, इन गुंडोंने जो बच्चोंको मारा है, औरतोंको इजत बिगाड़कर गोली मारी है, इसका भी बदला खूब लेना चाहिए। इन गुंडोंको कुत्तेकी मौत मारना चाहिए।

भैया—लाल पलटन बदला लेगी दुक्खू भाई, लेकिन पागल बनकर बदला नहीं लेगी। स्तालिन वीरने कह दिया है, कि जर्मनीके कमेरोंको वहाँकी जनताको हम अपना दुसमन नहीं मानते। राच्छस आततायी हैं हिटलरी गुंडे, हम इन्हीं गुंडोंको उनके कियेका मजा चखायेंगे। फिर जर्मनीकी जनता गुंडों-के हाथसे छुट्टी पायेगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, जर्मनीमें भी अब जोंकोंकी खैरियत नहीं है, वहाँ भी हिटलरी गुंडोंके खतम होनेके बाद कमेरों हीका राज कायम होगा; लेकिन बिलायत और अमेरिकाकी जोंकें इसको क्या पसन्द करेंगी?

भैया—जोंकें क्यों पसन्द करने लगीं? लेकिन स्तालिन वीरने कह दिया है, कि वहाँ कैसा राज कायम हो। इसे वहाँ हीके लोगोंपर छोड़ देना चाहिए लाल पलटन अपने मनका राज कायम करनेकी कोसिस नहीं करेगी और न इंग्लैंड-अमेरिकाको ऐसी कोसिस करनी चाहिए।

सन्तोखी—लेकिन, भैया, बाहरकी जोंकोंने जो मदद नहीं किया और उधर जर्मनीकी बड़ी-बड़ी जोंकें और उनके नायक हिटलरी गुंडे खतम हो गये, तो वहाँ कमेरोंका राज छोड़ दूसरा कौन राज क़ायम हो सकता है?

भैया—लेकिन संतोखी भाई इंग्लैंड और अमेरिकाकी जोंकें चुप तो नहीं रहेंगी। सोवियत और लाल पलटनको देखने हीसे उनका प्राण निकल रहा था, जो सात करोड़के जरमनीमें भी कमेरा-राज कायम हो गया, तो दुनियामें जोंकें कै दिन टिकेंगी?

दुखराम—तो कहीं ऐसा न हो भैया, कि जोंकें हिटलरसे सुलह कर लें।

भैया—सुलह नहीं कर सकतीं सन्तोखी भाई। जिस दिन चर्चिल सुलहकी बात भी जीभ पर लायेगा, उस दिन ही बिलायतके जोंकोकी खैरियत नहीं। बिलायतके लोगोंने तीस साल पहिलेकी लड़ाईमें भी अपने लाखों बेटोंको मरवाया, उस वक्त भी बिलायती जोंकोंने उनके सामने बड़ी लम्बी-लम्बी बातें कहीं, जिनसे मालूम होता था, कि अब कमेरोंकी जिन्दगी सरगकी जिन्दगी हो जायगी। लेकिन जब वह लड़ाई खतम हुई, उसके बादके इक्कीस सालोंमें उनकी जिन्दगी और अधिक नरक बन गई। तीस-तीस चालिस-चालिस लाख

तक आदमी बेरोजगार हो गए, उन्हें भूखे मरना पड़ता था और बाल्डविन चेम्बरलेन जैसी जोंकोंने हजारोंकी जगह लाखोंका नफा कमाया । जब तक हिटलर खतम नहीं हो जाता, तब तक बिलायती जोंकोंको पैंतरा बदलनेके लिए कोई जगह नहीं है ।

सन्तोखी—लेकिन हिटलरके खतम होनेके बाद सायद वह रूससे लड़ पड़े ।

भैया—तुम यही ख्याल करके कह रहे हो न सन्तोखी भाई ! कि जोंकें नहीं चाहेंगी कि जरमनी जैसे बड़े मुल्कमें कमेरोंका राज हो, जिससे सारी दुनिया की जोंकोंके आगे अँधेरा छा जाय । लेकिन इस लड़ाईका फल क्या होगा, इसके बारेमें हम किसी दूसरे दिन बतलायेंगे । अब तुमको यह जानना चाहिए कि क्या बात थी कि हिटलरी फौजके सामने फ्रांसकी जैसी जबरदस्त सेना तीन हफ्ते भी नहीं ठहर सकी । हिटलर तीन महीनेमें रूस ले लेनेकी बात कहकर गाल बजाता ही रहा, लेकिन अब उसको रूसकी धरती छोड़कर अपने घरमें लड़ना पड़ रहा है ।

सन्तोखी—और अब तो जान पड़ता है भैया, कि गुंडे बहुत दिन तक नहीं डट सकते, उनके सिरपर काल नाच रहा है ।

भैया—ठीक है और इसका कारण यही हुआ कि पागल कुत्ता रूसकी ओर दौड़ा । मैंने बतलाया न कि सोवियतके कमेरे कितने तैयार हैं । लाल सिपाही तनखाहके लिए नहीं लड़ता ।

दुखराम—तनखाहके लिए लड़ते हैं जोंकोंके सिपाही । जोंकें तनखाह छोड़कर कोई ऐसी चीज उनके सामने नहीं रखती, जिसके लिए वह जी जानसे लड़ें ।

भैया—रूसमें कमेरे अपने ही अपनी पंचायत चुनते हैं और यही पंचायत राज चलाती है । गाँवमें भी १८ बरससे बेसीके मर्द-औरत वोट देकर पंचायत चुनते हैं, जिलेकी भी पंचायत वही चुनते हैं, अपने-अपने प्रजातंत्रकी भी पंचायत उन्हींको चुनना होता है । फिर हिन्दुस्तान ऐसे सात देसोंके बराबर सारे सोवियत देसकी सबसे बड़ी पंचायत वही चुनते हैं ।

दुखराम—तो नीचेसे ऊपर तक सब पंचायती ही काम है भैया !

भैया—हाँ, सब पंचायत है। सबसे बड़ी पंचायत (महासोवियत)के लिए तीन लाख आदमीपर एक लाख आदमी चुना जाता है। उस पंचायतके दो हिस्से या घर हैं, एक घरके लिए हर तीन लाखपर एक आदमी चुना जाता है, दूसरे घरके लिए हर खोमका आदमी चुना जाता है, चाहे कोई खोम पचास ही हजार आदमियोंकी हो। रूसी खोमकी आबादी बारह करोड़के करीब है। और हिन्दुस्तानके पड़ोसमें रहनेवाली ताजिक खोम चौदह ही लाख है, लेकिन दोनों पचीस ही पचीस पंच चुनते हैं; इसीलिए कि जिसमें ज्यादा आदमी रहनेवाली खोमके ही पंच न अधिक चुन लिए जायँ। यही बड़ी पंचायत सारे सोवियत देसके मन्त्रियोंको चुनती है। स्तालिन वीरने सोवियतको जितना धनवान, बलवान बना दिया है, उसके कारन सोवियतका बच्चा-बच्चा उसे प्रानसे भी अधिक प्यारा समझता है। लेकिन इस लड़ाईके पहिले स्तालिन वीरने कोई सरकारी दर्जा नहीं लिया था। जब लड़ाईका खतरा बहुत बढ़ गया, तो बड़ी पंचायतने स्तालिनको ही अपना महामंत्री और महासेनापति बनाया।

दुखराम—और स्तालिन वीरने वह करामात दिखाई, कि सोवियत क्या दुनियाभरके कमेरे कभी उसका उपकार नहीं भूलेंगे।

भैया—सोवियतने अपनेको फौलाद जैसा मजबूत बनानेका काम बहुत पहलेसे सुरू कर दिया था। जरनैल, जानते हो, पलटनका सबसे बड़ा अफसर होता है, उसके ऊपर मार्सल होता है। जोंकोंके राजमें पचास बरसकी उमरसे पहिले कोई जरनैल बननेका सपना भी नहीं देख सकता। लेकिन सोवियत-में बत्तिस-बत्तिस तैंतिस-तैंतिस बरसके जरनैल हैं। पैंतिस-छत्तिसके तो वहाँ मार्सल हैं। चार साल पहिले जो यह बात सुने होते, तो बिलायतकी जोंकें जानते हो क्या कहतीं ?

दुखराम—क्या कहतीं भैया ?

भैया—कहतीं, कि जिनको अभी माँका दूध पीना चाहिए, उन छोकरोंको जरनैल बना दिया।

दुखराम — तो जोंकोंके यहाँ बूढ़ों हीका मान ज्यादा है ?

भैया — सोवियतमें भी बूढ़ोंका मान करते हैं, लेकिन जवानोंपर उनका विसवास ज्यादा है। जानते हो न लड़ाईके हथियार और लड़ाईके दाँव-पेचमें रोज नई बातें निकलती आती हैं। नई बातोंको नया दिमाग जितनी जल्दी पकड़ सकता है, उतना जल्दी बूढ़ा दिमाग नहीं पकड़ सकता।

दुखराम—हाँ भैया ! तीर-धनुसके जमानेके जरनैल जो आजकी लड़ाईमें जरनैल बना दिए जायँ, तो उनके दिमागमें तीर-धनुस ही ज्यादा रहेगा, उनकी पैंतराबाजी भी उसी जुगकी होगी। जुमराती दादाको देखते नहीं, नब्बे बरससे इधरकी कोई बात ही नहीं करते। लड़के साबुन लगाते हैं, तो उसपर भी गाली देते हैं। बहुओंके साबुन लगानेकी बात सुनते हैं, तो कह देते हैं—बस सब बेसवा हो गईं। बूढ़ोंका दिमाग ऐसा ही होता है न ? मैं तो समझता हूँ भैया ! फ्रांसके इतना जल्दी हारनेके भी कारण ऐसे ही बूढ़े जरनैल रहे होंगे।

भैया—यह बात बिल्कुल ठीक है दुक्खू भाई ! बिलायतके जरनैलोंकी भी वही हालत है। पाँच हिस्सामें चार हिस्सा हिटलरकी फौज लाल सेनासे लड़नेमें लगी हुई है। लेकिन पाँचवे हिस्से की पलटनसे भी लड़नेमें यह बूढ़े जरनैल चींटीकी चालसे बढ़ते हैं। अफरीकामें यही देखा, इटलीमें यही देख रहे हैं और फ्रांसमें भी अँगरेजोंकी पलटन यही करती रही। एक तो इनके जरनैल पचास-साठ बरसके बूढ़े होते हैं, ऊपरसे तालुकदारों और करोड़पतियोंके बेटे।

दुखराम—एक तो करैला (तितलौकी) दूसरे नीमपर चढ़ा, लेकिन जोंकोंका इसमें भी मतलब होगा कुछ भैया !

भैया—कुछ नहीं, बहुत मतलब है। एक तो बिलायतके तालुकदारों-जमींदारोंमें बापकी मिल्कियतका मालिक सिर्फ बड़ा लड़का होता है, छोटे लड़कोंको कोई नहीं पूछता; उनके लिए भी खाने-चबानेका कोई इन्तजाम होना चाहिए। दूसरे जोंकें भी समझती हैं, कि सिपाही तो कमेरोंके बेटे हैं, जो अफसर भी कमेरोंके बेटे हो गये, तो पलटन हमारे हाथमें न रहेगी।

पलटन हीके बलपर न जोंकें कमेरोंका खून चूस रही हैं ? इसी वास्ते तालुक-दारों और जोंकोंके ही लड़कोंको अफसर बनाया जाता है। जो कहीं मामूली आदमी किसी तरह घुसकर छोटा लफ्टेन्ट हो गया, तो बिना बड़े अफसरोंके सिफारिसके तरक्की होती नहीं और बेचारेको कप्तान और मेजर तक ही जिन्दगी बिता देनी पड़ती है। दूसरी ओर सिफारिसके बलपर तालुकदारोंके नालायक लड़के भी खट-खट ऊपर चढ़ते चले जाते हैं।

दुखराम—तब तो भैया पलटनमें भी जोंकोंने 'छीया छीया' कर दिया ?

भैया—ऊपर-भीतर, अगल-बगल सब जगह जोंकोंकी लास सड़ रही है। नाक बिना लोग परख नहीं पाते। यही भाग्य समझो कि लाल पलटन लड़नेके लिए चली आई, नहीं तो ये नवाबजादे कहींके नहीं रहते। अँगरेज कमेरोंके लड़के लड़नेमें किसीसे कम नहीं हैं। लेकिन सोवियतका कुछ दूसरा ढंग है। वहाँ जवानोंपर पूरा विसवास किया जाता है वहाँ। तालुकदार, नवाब जोंकें रह ही नहीं गई हैं कि उनके लड़के पलटनमें आवें और सिफारिसके बलपर जरनैल बन जायँ। वहाँ सिपाहीसे लेकर जरनैल-मार्सल तक सभी कमेरोंकी सन्तान हैं। तरक्की होनेमें कोई देर नहीं लगती, यदि आदमी लायक है। कोयलेकी खानका मजूर वोरोसिलोफ आज मारसल है। सोवियतमें लड़कोंके पढ़ने-लिखनेका इन्तजाम ही ऐसा है, जिसमें जिस कामके लायक काब्लियत है, वह वहाँ पहुँच जाते हैं।

सन्तोखी—क्या बात है भैया ?

भैया—मैंने पहले बतलाया है न, कि वहाँ हर लड़के-लड़कीको जबर-दस्ती पढ़ाया जाता है। मास्कोमें नौ बरसकी जबरजस्ती पढ़ाई है और बाकी सारी सोवियत भूमिमें सात बरसकी—सातवें बरससे पढ़ाई सुरू होती है और चौदहवेंमें खतम होती है।

सन्तोखी—हिन्दुस्तानसे सातगुना बड़ा सोवियत देस है न भैया ? तो क्या वहाँ सब जगह एक-एक गाँवमें मदरसा है ?

भैया—हाँ, जैसे हवा, पानी वैसे ही वहाँ पढ़ाई समझी जाती है। फिर लड़के तो मदरसामें सात बरसके होकर जाते हैं, लेकिन उनकी पढ़ाई पैदा

होते ही होने लगती है।

दुखराम—पैदा होते कैसे लड़का पढ़ेगा भैया ?

भैया--हमने कहा था न, कि वहाँ बच्चोंके रखनेके लिए दाईघर बने हुए हैं। माँ जब काम करने जाती है, तो बच्चेको दाईघरमें दे आती है। दाइयाँ बेपढ़ औरतें नहीं हैं, वह भी पढ़ी-लिखी रहती हैं और यह भी सीखे रहती हैं, कि बच्चोंको कैसे रखना चाहिए। पालनेवाला बच्चा पालनेमें झूलता है, आँखसे जिस चीजके देखने, कानसे गाना सुनने या तरह-तरहके खिलौनोंको देकर उनको बहलाया ही नहीं जाता, बल्कि हर तरहकी चीजका ग्यान कराया जाता है। जब लड़के कुछ बोलने और बात समझने लगते हैं, तब उन्हें ग्यान बढ़ानेवाली छोटी-छोटी कहानियाँ सुनाई जाती हैं। लड़कोंके खेलनेके लिए हरेक दाई-घरमें सैकड़ों खिलौने होते हैं, मोटर होती हैं जो चाभी देनेसे चलती हैं। रेल और हवाई जहाज होती हैं, वह भी चलते हैं। कुछ बड़ा होनेपर लड़कोंकी अपनी रेलवेलाइन हैं जिसमें इञ्जन चलानेवाला भी लड़का है, गार्ड भी लड़का ही है और तीन-तीन चार-चार मील तक वह अपनी रेल चलाकर लौटा लाते हैं।

दुखराम—भैया! इतने छोटे-छोटे बेबूझ लड़कोंको इंजन थमा दिया जाता है, तो खतरा नहीं होता ?

भैया – खतराकी बात उनको पहले बतला दी जाती है। और उनका इंजन भी पाँच-छ मीलसे बेसी घन्टेमें नहीं चल सकता। लड़के तो देखते ही हो कि पहिले खड़े होते हैं तो गिरते भी हैं, तो क्या पैर टूटनेके डरसे उनको खेलने न दिया जाय। कितने माँ-बाप लड़कोंको पेड़पर चढ़ने नहीं देते, पानीमें तैरने नहीं देते, लेकिन यह ठीक नहीं है। आदमीका बच्चा पान-फूल बनाकर रखनेके लिए नहीं है। जवान होनेपर न जाने वह कहाँ-कहाँ जाएगा, कहीं जंगलमें जान बचानेके लिए उसे पेड़पर चढ़ना होगा, नाव डूबनेपर तैरना पड़ेगा।

दुखराम—लो सन्तोखी भाई, तुम भी सामूको पान-फूल बनाकर रखते हो न ?

सन्तोखी—हाँ भैया, हमें भी यह बात ठीक नहीं मालूम होती, हाथ-पैर तो चारपाईसे गिरकर भी टूट सकता है।

भैया—लड़कोंको बहुत तरहका खिलौना मिलता है, फिर कागज-पेंसिल मिलती है, वह अपने मनकी तसवीर खींचते हैं, गानेका खेल खेलाया जाता है। तरह-तरहके गानोंको सीखते हैं, नकलका खेल खेलते हैं, लेच्चर (व्याख्यान) देते हैं, गिन्ती सीखते हैं और मुँहजबानी हिसाब लगाते हैं। फिर लड़कोंके अपने सिनेमा होते हैं।

सन्तोखी—अपने सिनेमा क्या भैया !

भैया—चार-छ बरसके लड़के सयानोंके सिनेमाको देखकर क्या समझ पाएँगे ? इसलिए उनके सिनेमामें कुत्ते, बिल्ली, भालू, गदहा इत्यादि आते हैं। और वह तरह-तरहकी हँसानेवाली बात कहेते हैं, गाना गाते हैं, हँसी-हँसीमें ही जोंकों और कमेरोंके झगड़ेकी भी बात चली आती है। छ बरस तक उनको अच्छर नहीं सिखलाया जाता। अपने जो कहीं लुक-छिपकर किसी बड़े लड़केसे अच्छर सीख लें तो दूसरी बात है। दाई-घरमें रहते बखत ही गजबकी जेहनवाले बच्चे छाँट लिए जाते हैं। चार-चार साल तक उनकी खींची तसबीरें और उनकी तरक्कीको देखकर पारखी पहचान लेते हैं, कि यह लड़का आगे चलकर गजबका तसबीर बनानेवाला होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया ! लड़के चीन्हा बहुत खींचना चाहते हैं, लेकिन हम लोग डाँट देते हैं कि कागज-पेन्सिल खराब करेगा।

भैया—वहाँ डाँटते नहीं हैं, उन्हें रंग-बिरंगी पेंसिल और कागज देते है। दाई घरमें एक उमरके लड़के एक कोठरीमें रहते हैं। एक बरसवाले एक कोठरीमें, दो बरसवाले दूसरी कोठरीमें, तीन बरसवाले तीसरी कोठरीमें। जो तुम किसी-दाई-घरमें पहुँच जाओ सन्तोखी, भाई तो बहुत हँसोगे। चार-चार बरसके दस-बारह लड़के कागज पेन्सिल लिये तसबीर खींच रहें हैं। कोई बिल्ली बना रहा है, कोई कुत्ता। कोई साँप बना रहा है, कोई चिड़िया। बीचमें एक दूसरेकी तसबीरकी ओर झाँक भी लेते हैं, फिर अपनी तसबीर बनानेमें लग जाते हैं। दाई छड़ी लेकर तसबीर नहीं बनवाती। सबने "अम्मा ! मुझे

कागज-पेन्सिल दो, मुझे कागज पेन्सिल दो" कहकर कागज-पेन्सिल लाए हैं और सब अपने मनसे तसवीर बना रहे हैं। अम्मा यह चालाकी जरूर करती हैं, कि उनके समझने लायक चीन्हेवाली कुत्ता बिल्लीके छपे कागजको जब तब फेंक देती है। बच्चे कितने ही बार समझते हैं, कि पड़ा हुआ कागज है और उसे आँखसे देखकर कागजपर उतारनेकी कोसिस करते हैं। वह जितने कागजको रद्दी करते हैं, सबको फेंका नहीं जाता, एक-एक लड़केके कागजको नाम लिखकर जमा किया जाता है। तीन-चार बरसके बाद कौन लड़का गजबका तसवीर बनानेवाला होगा, यह समझना आसान हो जाता है। तसबीरकी ही तरह गाने, नकल करने, लेक्चर देने, हिसाब लगानेमें गजबकी जेहनवाले लड़कोंको भी छाँट लिया जाता है। लड़कोंके झगड़ेका फैसला लड़कोंकी पंचायत करती है और वह अपने ही अपना नेता भी चुनते हैं। दाई-घरमें रहते ही उन गजबकी जेहनके लड़कोंको पहचान लिया जाता है, जो कभी हजारों-लाखों आदमियोंके नेता बनेंगे।

दुखराम—भैया! हमारे यहाँ तो गरीब घरमें, चमार और अछूत कहे जानेवाले माँ-बापके घरमें, न जाने कितने गजबकी जेहनवाले बच्चे पैदा होते हैं, लेकिन कूड़े परके फूलकी तरह वहीं पैदा होकर बिना फूले ही कुम्हला जाते हैं।

भैया—यही समझो दुक्खू भाई, कि २० करोड़ आदमियोंमें एक भी गजब की जेहनवाला बचा न मुरझाने पायेगा, न जेहनवाला मुरझाने पायेगा, न कम जेहनवाला। गजबकी जेहनवले लड़कोंके पढ़नेका अलग इन्तजाम होता है। घुड़-दौड़में दौड़नेवाले घोड़ेको बैलके साथ नाधनेमें नुकसान है। यह बत्तीस बरसके जो जरनैल हैं, वह कमेरा राज्य कायम होते समय चार-पाँच बरसके रहें होंगे। उनको भी नई सिच्छा पानेका मौका मिला, और पीछेके लड़कोंको तो और भी।

सन्तोखी—जो ऐसा इन्तिजाम हमारे देसमें हो, तो हमारी ४० करोड़की आबादीमें न जाने कितने गजबके तसबीर बनानेवाले, गजबके गानेवाले, गजबके नाटक खेलने, गजबके हिसाब लगाने वाले, गजबके नेता मिलेंगे।

भैया—यह है सन्तोखी भाई, जो लाल पलटनके जरनैल लड़नेका इतना जबरजस्त दाँव-पेंच जानते हैं। जब दुसमन और दुनिया जानती है कि लाल पलटन हारके भाग रही है, उस बखत वह दुसमनपर जाल फैलाकर चुपचाप बैठे हुए हैं। जोंकोंकी पलटनमें छोटा लपटेन या थानेदार भी मामूली सिपाहीसे रे छोड़कर दूसरी तरहसे बात नहीं करेगा, लेकिन लाल पलटनका सबसे बड़ा अफसर जरनैल और मामूली सिपाही दोनों सगे भाई जैसे हैं। जब उरदी डिउटीपर हैं तब वह सिपाही और वह जरनैल, बाकी बखतमें दोनों एक चारपाईपर बैठेंगे, साथ खेलेंगे, कूदेंगे-नाचेंगे, हँसी-मजाक करेंगे। उस बखत देखनेवालेको पता ही न चलेगा, कि यह जरनैल है और यह सिपाही।

दुखराम—जोंकों तुम्हारा सत्यानास हो।

भैया—स्तालिन वीरने अपने जरनैलोंको एक बार कहा था, कि वह अफसर ठीक अफसर नहीं हो सकता, जो सिपाहीसे ऐसा काम कराना चाहता है; जिसे वह खुद नहीं कर सकता। अमेरिकाका एक अखबारवाला सोवियतकी लड़ाई देखने गया था। मैदानके पास पहुँचा, तो वहाँ मोटरका कोई ठीक रास्ता नहीं था। मोटर रुक गई। उसी बखत एक आदमी आया उसने फावड़ेसे काटकर रास्ता ठीक कर दिया। अमेरिकन अखबारवालेने आदमीकी उरदीको देखा, तो मालूम हुआ वह मेजर है। उसको बड़ा अचरज हुआ।

दुखराम—भला जोंकोंके मुलुकमें कपतान और मेजर फावड़ेपर थूक भी सकते हैं।

सन्तोखी—हिटलर सचमुच ही पागल सियार बनकर गाँवकी ओर चला। लेकिन भैया, पागल कहकर छोड़ नहीं देना होगा। जर्मन गुंडोंने खून सुखा देनेवाले जैसे-जैसे जुलुम किए हैं, उसके लिए उनकी पूरी सजा होनी चाहिए।

भैया—अब तीनों लोकमें कोई उन्हें नहीं बचा सकता।

अध्याय ८

जोंकोंके मन्सूबे

सन्तोखी—आज भैया एक और सरोता (सुनवैया) बढ़े। मैंने तो सोहन-लालसे कहा कि क्या सुनके करोगे, हमारे दिहाती लोगोंकी बातचीत है। लेकिन वह कहने लगे—"मामा! मैं बनारसमें पैदा हुआ तो क्या हुआ, मेरी माँ तो दिहाती थी"। वह बी० ए० तक पढ़ चुके हैं।

भैया—सन्तोखी भाई, सोहनलाल बाबूके सोता बननेमें तो कोई हरज नहीं है लेकिन वह हैं बी० ए० पास, सहरमें सदा रहे और अरबी-फारसी बोलते हैं! बीचमें जो ऐसा सवाल पूछने लगे, जिसमें तुमको और दुक्खू भाईको सुननेमें कोई लज्जत नहीं आये, तो बताओ हमारी कथा ठीकसे चलेगी?

सोहनलाल—रजबली भैया! मामासे सब बातें सुन ली हैं। मैं भी मरकस बाबाके रास्ताको मानता हूँ। मैं कोई अरबी-तरबी नहीं बोलूँगा, न कोई ऐसा सवाल करूँगा, जिसमें सन्तोखी मामा और दुखराम मामाके न समझमें आनेवाली बोलीमें बोलना पड़े। मरकस बाबाने कभी विसवास नहीं किया कि बड़े आदमी, लम्बी नाकवाले बगुलेके परकी तरह साफसूफ कुरता-टोपी पहिरनेवाले लोग जोंकोंको खतम करेंगे। किसान और मजूरके ही भीतर वह तागत है जिससे वह जोंकोंका टाट उलट सकते हैं। रजबली भैया, मैं तुमसे सीखने आया हूँ, कि कैसे मरकस बाबाकी सिच्छा किसानोंके पास पहुँचाई जाय?

दुखराम—मैं तो जरा भैने भानजा), डरने लगा, कि कहीं तुम अपनी पढ़ी-लिखी बोलीको यहाँ छाँटने लगे, तो हम कोरे ही रह जायँगे; लेकिन जान पड़ता है, मरकस बाबाका एक भी छींटा जिसके ऊपर पड़ा है, वह बन गया है। लेकिन भैने! हमने जो कुछ मरकस बाबाकी बात सुनी है, भैया रजबलीने जो बताया है, उससे जान पड़ता है, कि मरकस बाबाकी सिच्छाको जितना पढ़ना-सुनना है, उससे भी बेसी उसको गुनना है और गुननेसे भी बेसी उस

पर चलना है। चलना सबसे मुसकिल है, ठठ्ठा नहीं, तलवारकी धारपर चलना है।

भैया—दुक्खू भाईने एक लाखकी बात कही है। अच्छा तो सन्तोखी भाई! तुमने कल पूछा था, कि लाल पलटन जो हिटलरी गुन्डोंका इतना संहार कर रही है और साथ ही जोंकोंका भी आगम अंधकार होता जा रहा है, तो इससे क्या दूसरी जोंकें कुछ कर न बैठेंगी। आज इसी बातको मैं तुम्हारे सामने कहना चाहता हूँ।

दुखराम—हाँ भैया! यही बात बताओ। लाल पलटन तो पागल सियार-को खदेड़कर माँदमें ढकेल ले गई, और अब सियार मरनेवाला है, इसमें अब सक-सुबहा नहीं है। लेकिन पागल सियारको पैदा करनेमें तो बाहरकी जोंकोंका ही सबसे बड़ा हाथ रहा। कौन-सा नाम बतला रहे थे, वह बड़ी जोंक चमरलेन, जो दो-दो मरतबे उड़-उड़कर हिटलरके पास जुहार करने गया था। वह और उसका बाप न जाने कितने सालसे इस गुन्डे और इसकी सेनाको पालने-पोसने और बढ़ानेमें लगे थे।

भैया—चमरलेनका बाप नहीं दुक्खू भाई! बालडविन, उसी तरहकी एक बड़ी जोंक था। यह ठीक है कि बिलायतकी जोंकें और अमेरिकाकी जोंकें पुरानी दुनियाको जैसाका तैसा रखना चाहती हैं, उसमें एक जौ भी फेर-बदल करना नहीं चाहतीं। फ्राँसकी जोंकें भी जोर लगातीं, लेकिन अब बेचारी उतनी जोरदार नहीं हैं।

दुखराम—क्यों भैया! फ्रांसकी जोंकें क्यों जोरदार नहीं हैं?

भैया—"उघरे अंत न होहिं निबाहू" उनका परदा उघर गया। कमेरोंके डरके मारे उन्होंने हिटलरको फ्रांसमें बुलानेमें पूरी तरहसे मदद की। जब हिट-लर फ्रांसमें आकर बैठ गया, तो वह अपने देसवालोंके खूनसे धरतीके रँगने-में हिटलरी गुन्डोंके आगे-आगे रहे। जानकारोंने पहिले भी देसको सजग किया था कि हमारी पलटन और हथियार मजबूत नहीं हो रहे हैं। फौजके मदका रुपया बड़े-बड़े कारखानेवाले आँख मूँदकर लूट रहे हैं। बूढ़े-निकम्मे जनरैल कोई हितकी बात सुननेके लिए तैयार नहीं हैं। फ्रांस तो हिटलरी गुन्डों

और उसके कुत्तोंके पैरोंके नीचे रौंदा जाने लगा, लेकिन एक जरनैल बाहर निकल आया। उसने बचे-खुचे फ्रांसीसी देस-भगतोंको इकट्ठा किया और मरते दम तक लड़नेका बीड़ा उठाया। उधर मरकस बाबाके रास्तेपर चलनेवाले लाखों नर-नारी फ्रांसके भीतर रहकर हिटलरी गुन्डोंको तबाह करने लगे। उनके पचास हजार आदमियोंको मार डाला, तो भी मरकस बाबाके चेले दबे नहीं। जब अफ्रीकासे गुन्डे भगा दिये गये, तो फ्रांसके कबजेका मुलुक अलजीरिया जरनैल और उसके साथियोंका अड्डा बना। उन्होंने अपनी सरकार बनाई, जिनमें कम्निस्ट भी मिल गए। सैकड़ों बरसों से काले-गोरेका जो भेद-भाव चला आता था, उसको उन्होंने खतम कर दिया और काले (अफ्रीकावाले) सिपाहियोंकी वही तनखाह कर दी, जो फ्रांसीसी गोरे सिपाहियोंकी थी।

सन्तोखी—और हमारे हिन्दुस्तानमें तो काले-गोरे सिपाहियोंमें अब भी वही फरक है।

भैया—हाँ, तीस और डेढ़ सौका। यह इसीलिए हो सका कि वहाँ अब जोंकोंका बल नहीं रहा, नई फ्रांसीसी सरकारने कानून पास किया, कि रेल, जहाज खान, बड़े-बड़े कारखाने, बड़े-बड़े बंक और उनके करोड़ोंका खजाना अब धनियोंके हाथमें नहीं बल्कि सारी फ्रांसीसी जनताकी सम्पत्ति होगा।

दुखराम—तो मरकस बाबाकी कितनी ही बातोंको मान लिया?

भैया—इसीलिए तो जब अमरीका और इंग्लैंडकी पलटन जून (१९४४)-में फ्रांसकी भूमिपर जर्मनोंसे लड़नेके लिए उतरी, तो उन्होंने पहले नई सरकारको नहीं माना। लेकिन जोंकोंकी बात नहीं चली। तो भी यह मालूम होता है, कि एक-एक अंगुलके लिए बिना अड़ंगा लगाए जोंकें पीछे हटनेके लिए तैयार नहीं होतीं, लेकिन अन्तमें झखमारके उन्हें पीछे हटना पड़ता है। सिवाय उन फ्रांसीसियोंके जो हिटलरके हाथमें बिक गए थे, बाकी सभी नई सरकारसे प्रेम रखते हैं। इंग्लैण्ड-अमरीकाकी जोंकोंने देखा कि बिना नई सरकारको साथ लिए काम नहीं चलेगा। उधर इंग्लैण्ड और अमेरिकाके लोगोंने हल्ला सुरू किया। बेचारी जोंकें अछताईं-पछताईं

और उन्हें नई सरकारको मानना ही पड़ा।

सन्तोखी—साँपका जीव बहुत कठोर होता है भैया !

भैया—हाँ, जल्दी नहीं मरता। इटलीमें भी मुसोलिनी और उसके गुन्डे जब भागनेके लिए मजबूर हुए, तो बाईस बरससे मुसोलिनीके साथ लड़नेवाले देस-भगतोंने चाहा कि, देसका इन्तिजाम वह अपने हाथमें लें। लेकिन इंग्लैंड और अमेरिकाकी जोंकोंको डर लगने लगा, कि राज उनके हाँथमें देनेपर वहाँ जोंकोंका नाम-निसान नहीं रह जायेगा, और कमेरे मजबूत हो जाएँगे। इसी-लिए राजको इटलीके बादसाह और उसके पिट्ठू बोदोगलियोंके हाथमें रहने दिया। बाईस सालसे यह दोनों गुन्डे मुसोलिनीके दाएँ-बाएँ हाथ थे। मुसोलिनीने इटलीके लाखों कमेरोंके खूनसे अपने हाथको रँगा और यह दोनों भी उसके सभी पापोंमें सामिल थे। तो भी इँग्लैंड-अमेरिकाकी जोंकोंने राजको इनके हाथमें इसीलिए रहने दिया, कि इटलीमें जोंकें बनी रहें। उसके साथ बहुत-सा राजका इन्तिजाम उन्होंने अपने पिनसिनिहा फौजी अफसरोंके हाथमें दे दिया। जैसे हिन्दुस्तानके लोग आज जर्मन और जापानी गुन्डोंसे लड़नेके लिए तैयार हैं, वह चाहते हैं कि हमारी अपनी सरकार बने और पच्चीस लाख नहीं दो करोड़की पलटन बनाकर हिन्दुस्तानी इन गुन्डोंसे लड़ने जाय। लेकिन, चर्चिल और दूसरी बिलायती जोंकें यह नहीं चाहतीं, कि हिन्दुस्तानी अपने मनसे लड़ाई लड़ें। उनको डर है कि जो हिन्दुस्तानी अपने मनसे लड़ेंगे, तो उनका मन बहुत बढ़ जायगा, वह अपनेको अँगरेजोंका नहीं समझेंगे और हथियार तो उनके हाथमें आ ही जायगा, फिर स्वराज किसको देना किससे लेना ? यही बात वह इटलीमें भी सोच रहे थे और चाहते थे कि वहाँ कमेरोंका जोर न बढ़ने पाये। इटलीके मामलेमें वह सोवियतको भी नहीं पूछना चाहते थे, लेकिन स्तालिन वीरका दिमाग जोंकोंसे कहीं बढ़-चढ़कर है। बोदोगालियोंकी इटलीमें जो सरकार थी, उसे जोंकें कमेरोंके हाथोंमें तागत जानेसे रोकनेके लिए मानती थीं, दूसरी ओर राजकाज चलानेकी बहुत-सी बातें अपने हाथमें रखती थीं, और उसे पूरी सरकार नहीं मानती थीं। स्तालिनवीरने सोचा कि किला बाहरसे हमला करनेसे न टूट रहा हो, तो भीतर

घुसकर तोड़ना चाहिए। उसने बोदोगोलियोंकी इटली-सरकारको मान लिया और अपना राजदूत इटलीमें भेज दिया। चर्चिल और उसके साथी तिलमिलाये बहुत, लेकिन क्या करते, उसीके साथ स्तालिनने कमूनिस्तों, सोसलिस्तों और दूसरे इटालियन देस-भगतोंको कह दिया, कि अलग रूठकर बैठनेसे काम नहीं चलेगा। यह जिद्द मत करो, कि जब तक सरकारसे दोनों खूनी-इटलीका बादसाह और बोदोगोलियो नहीं हटते, तब तक हम सरकार नहीं बनायेंगे। देस-भगतोंके समझमें बात आ गई। वह सरकारमें सामिल हो गये। कुछ ही दिनोंमें बोदोगोलियो और बादसाहको सरकार छोड़कर भागना पड़ा और इटलीके देस-भगतोंने राज सँभाल लिया। चर्चिल और उसके साथी जोंकोंकी चाल नहीं चली।

सन्तोखी—इस तरह फ्रांस ही नहीं इटलीमें भी जोंकोंको पछताना भर ही हाथ आया।

भैया—जोंकोंको बहुत जगह पछताना पड़ा और आगे भी पछताना पड़ेगा, लेकिन इससे वह अपने जोंक-धरमको छोड़नेके लिए तैयार नहीं। यूगोस्लावियामें भी उन्होंने यही चाल चली। हिटलरने जब यूगोस्लावियाको ले लिया। तो वहाँकी जोंकोंकी सरकार भागकर लन्दन चली गई। जो जोंकें देसमें रह गई थीं, उन्होंने हिटलरका साथ दिया। कमेरोंपर खूब जुल्म होने लगा। उस बखत कमेरोंका नेता और पक्का कमूनिस्त तीतो देससे बाहर नहीं भागा। किसानोंने मजूरोंने जानपर खेलके तीतोको अपने घरोंमें जगह दी। तीतोने देस-भगतोंकी छापेमार पलटन तैयार की।

दुखराम—वैसी ही छापा मार पलटन भैया, जैसी रूसमें तैयार हुई?

भैया—हाँ, यह एक छोटी-सी चिनगारी थी, लेकिन बढ़ते-बढ़ते बनकी आग बन गई। यूगोस्लावियाके जवान तीतोके पास जमा होने लगे। तीतो आज उनका मारसल (सबसे बड़ा) सेनापति था। डेढ़-दो लाख जरमन पलटन और बहुतसे घरके बिभीखन तीतोसे लड़ रहे हैं, लेकिन चिनगारी अब वह छोटी चिनगारी नहीं है। लन्दनमें बैठी यूगोस्लावियाकी सरकार बराबर झूठी-झूठी खबर फैलाती रही कि तीतो कुछ नहीं है, वह तो डाकू है, जर्मनीसे तो

हमारा सेनापति जरनैल मिखाइलोविच और उसके चेतनिक लड़ रहे हैं। इङ्गलेंड और अमेरिकासे कितना ही हथियार भी मिखाईलोविचके पास पहुँचाया गया। अभी (अगस्त १९४४) तीन महीना पहले तक हिन्दुस्तानके सिनेमाघरों में "चेतनिकों"की बहादुरीका फिल्म दिखलाया जाता था। बिलायत और अमेरिकाकी जोंक-सरकारें तीतोको इसलिए नहीं मानना चाहती थीं, कि वह कमूनिस्त है और उसका जोर बढ़नेपर यूगोस्लावियामें नवाब और जोंकें नहीं रह जायँगी। लेकिन असली लड़नेवाला था तीतो और उसके जवान। मिखाइ-लोविच और उसके चेतनिक हिटलरसे लड़ नहीं रहे हैं, उसके जूते चाट रहे हैं; वह लड़ रहे हैं तीतोके बहादुरोंके साथ! तीतोने यूगोस्लावियाके बहुतसे भागको हिटलरी गुंडों और उसके कुत्तोंसे आजाद कर लिया, तो भी अभी बिलायती और अमेरिकन सरकारें तीतोको माननेके लिए तैयार नहीं थीं, लेकिन अन्तमें मिखाइलोविच और चेतनिकोंका भंडाफोड़ हुआ। चर्चिलके अपने बेटेने तीतोके जवानोंकी बहादुरीको देखकर बापसे कहा। चर्चिलको लाचार होकर तीतोकी सरकारको मानना पड़ा।

दुखराम—तो यूगोस्लावियामें भी जोंकोंकी चाल नहीं चली।

भैया—यूगोस्लावियामें जब जोंकोंका राज रहा तो क्रोस, सर्व, मुसलमान वगैरह जातियोंको एक दूसरेसे बराबर लड़ाया जाता था, और अब उस खून-खराबीका कहीं पता नहीं। तीतोने जो आजादीका झंडा उठाया है, उसके नीचे सभी जातियाँ अपना खून बहा रही हैं आज यूगोस्लावियाके लोग जिस देसपर सबसे अधिक बिसवास करते हैं, जिसके साथ सबसे अधिक प्रेम करते हैं, वह है सोवियत।

दुखराम - तो भैया जूगोसलैयासे भी जोंकोंका डंडा-कुंडा उठा ही समझो।

भैया—वहाँकी राजधानी बेलग्राद्के छोरपर लाल सेना पहुँच गई है। लेकिन देखा न, बिलायती जोंकोंने वहाँ भी अपना मतलब साधनेके लिए कोई बात उठा नहीं रक्खी। पोलंदमें भी ऐसे ही हुआ। मैंने पहिले कहा था कि वहाँ खूनी जमींदारोंका राज था, जो हमेशा हिटलरी गुंडोंकी नकल करनेके लिए तैयार थे और जब सोवियत-संघ अपना परान बचानेके लिए भीतरी-

बाहरी दुसमनोंसे लड़ रहा था, उस बखत सोवियतकी भूमि और एक करोड़ दस लाख आदमियोंको उन्होंने अपना गुलाम बना लिया। जब हिटलरने पोलैंडपर चढाई की तो लड़नेकी जगह ये जमीदार हवाई जहाजों और मोटरोंसे सोने और बाल-बच्चोंके ढोनेमें लगे हुए थे। पोलैंडके सिपाहियोंसे जो कुछ बना लड़े। लाखों पोल नर-नारियोंको जर्मन गुंडोंने मौतके घाट उतारा। पोल नवाबोंकी सरकार भागकर लन्दन पहुँची। उसका सबसे बड़ा काम था, सोवियतको दुनिया भरमें बदनाम करना और उसपर झूठे-झूठे दोख लगाना। बिलायतकी जोंकें बराबर उसकी पीठ ठोंकती रहीं। पोलैंडकी बहुत-सी फौज रूसमें भाग गई थी। रूसने उन्हें सरन दी थी। जब हिटलरने सोवियतपर हमला कर दिया, तो सोवियतने पोलैंडके सिपाहियोंको फिर हथियार-बंद कर दिया। पोल सिपाही लाल सेनाके साथ मिलकर हिटलरी गुंडोंसे लड़ना चाहते थे लेकिन जमीदार-नवाबोंके लड़के ही तो उनके जरनैल थे। उन्होंने यह सोचकर उन्हें लड़नेसे मना किया, कि हिटलर कुछ महीनोंमें बोलसेविकोंको खतम कर देगा, बोलसेविकोंका नाम निसान नहीं रह जायगा। फिर हमारा सबसे बड़ा दुसमन तो खतम हो जायगा।

सोहनलाल—लेकिन इन अकलके दुसमनोंने यह नहीं सोचा, कि फिर पोलैंडके आजाद होनेकी उम्मेद भी नहीं रह जायेगी।

भैया—वह मानते थे कि हिटलर हम लोगोंकी जमीदारी थोड़े ही छीनेगा? यही कि थोड़ा उसके पैरपर नाक रगड़नी पड़ेगी। वह दूसरोंसे यह भी कहते थे, कि बोलसेविक तो तीन-चार महीनेमें खतम हो जायँगे, लेकिन इंग्लैंड और अमेरिकाके सामने हिटलर नहीं टिक सकेगा, हमें तबके लिए तैयार रहना चाहिए।

दुखराम—सूअर, गदहे।

भैया—और यह सब कुछ तब कह रहे थे, जब वह सोवियतकी भूमिमें थे, सोवियतका अन्न-पानी खा रहे थे और सोवियतने उन्हें हथियार दिया था। इतना ही नहीं जो किसी सिपाहीके बारेमें मालूम हो जाता कि इसका कुछ भी नेह सोवियतके साथ है, तो उसपर झूठा इलजाम लगाकर गोली मार देते थे।

जब हिटलरका जोर बढ़ चला, तो पोल जोंकोंके जरनैल पचास हजार पोल पलटनको लेकर रूस छोड़ ईरानमें चले आये; लेकिन कितने ही सिपाही और अफसर इन धोखेबाजोंके साथ नहीं हुए, वह वहीं रह गये और आज अपनी राजधानी वारसाको छुड़ानेके लिए लाल पलटनके साथ कंधेसे कंधा मिलाकर जर्मन गुंडोंसे लड़ रहे थे। पोल जोंकोंके पापोंको कहनेके लिए एक पोथा चाहिए। उन्होंने एक मरतबे हल्ला उठाया कि सोवियतने पोलैंडके कितने ही मजूर नेताओंको मार दिया और इस खबरको पहिले हिटलरी गुंडोंने रेडियो बाजापर कहा था। यह अति हो गई थी। सोवियतने इस धोखेबाज, नीच पोल सरकारसे अपना सारा सम्बन्ध तोड़ लिया। बिलायतकी जोंकें अब भी लन्दनमें बैठी पोल-सरकारकी पीठपर हैं, लेकिन अब जानती हैं कि भगोड़ी सरकारको फिर पोलैंडमें ले जाकर बैठाना उनके बसकी बात नहीं है। भगोड़ी सरकारके दोएक आदमी बातको समझने लगे और सोचा कि सोवियतसे कह-सुनकर कुछ समझौता किया जाय। नवाबजादोंने समझा कि स्तालिनने तो कह दिया है। कि हम ऐसी पोल-सरकारसे बात करनेके लिए तैयार नहीं जिसमें कि सोवियत-विरोधियोंकी भरमार है। जब भगोड़ी सरकारके महामंत्री मास्को बात करनेके लिए गये, तो नवाबोंके पेटमें चूहा कूदने लगा। उन्होंने रेडियो बाजा बजाके चुपकेसे वारसामें खबर दे दी कि लाल सेना वारसाके किनारेपर आ गई है, तुम लोग जर्मनोंको सहरसे मार भगाओ। उन्होंने सोचा था, कि लाल सेनाके बगलमें आ जानेसे जरमन कमजोर पड़ ही गये हैं, यदि हमारे हुकुमके मुताबिक वारसासे जरमनोंको भगा दिया गया, तो हम हल्ला करेंगे कि राजधानीको हमारे आदमियोंने दखल कर लिया है, उसमें लाल पलटनको बिल्कुल हाथ नहीं डालना चाहिए।

सोहनलाल—लेकिन भैया! ये पोल भगोड़े जमींदार कितने नीच हैं, खुद हिजड़े तो हई हैं, इनको यह ख्याल नहीं आया कि यह लाखों आदमीके मरने-जीनेका सवाल है। जब तक पूरी तैयारी न हो, तब तक वहाँके लोगोंको लड़नेके लिए कहना उन्हें आगमें झोंकना है।

दुखराम—नहीं भैने! जोंकोंसे कोई आसा मत रखो, करोड़ों आदमियों-

को मारकर ही तो वह जीती है।

भैया—हाँ, सोहन भाई! इन बेसरमोंको यह भी ख्याल नहीं आया, कि वहाँ लड़नेका हुकुम देनेसे पहिले लाल सेनाको खबर दे देते। लाल सेना ही क्यों? अमेरिका और इंग्लैंडके फौजी मुहकमोंसे भी उन्होंने नहीं पूछा। बेचारे लाखों आदमी मारे गये। लाल सेना वारसापर जोरसे हमला कर रही है, लेकिन जब तक वह वारसाके भीतर पहुँचेगी, तब तक न जाने कितने बहादुर मारे जा चुके होंगे। लेकिन इन बेसरम भगोड़ोंका यही आखिरी पाप है। पोलैंडके लोगोंने अपनी अलग सरकार बना ली है, सोवियत उसी सरकारको मानती है। लाखों पोल फौज लाल सेनासे मिलकर अपने देसको आजाद कर रही है। पोल लोगोंकी सरकार जरमनोंसे छुड़ाये इलाकेका राज-काज देख रही है। चर्चिलकी सरकार अब भी कह रही है, कि हम लन्दनमें बैठे नवाबोंकी सरकारको पोलैंडकी सरकार मानते हैं।

दुखराम—बेचारे तालुकदार-नवाब झंख रहे होंगे अपने महलोंके लिए, अपने जिमीदारीके गाँवों और पुराने ऐस-जैसके लिए। लेकिन बेटे अब फिर पोलैंड नहीं लौट पायेंगे।

भैया—तो पोलैंडमें भी देखा न? जोंक सरकारोंने आखिर तक अपना मनसूबा पूरा करनेकी कोसिस की, लेकिन उसकी कोई आसा नहीं। अब एक बार मैं और दुहरा दूँ, दुक्खू भाई, फ्रांसमें इनका मनसूबा टूटा, इटलीमें टूटा, यूगोस्लावियामें टूटा, पोलैंडमें टूटा। यूनानमें भी वहाँकी भगोड़ी जोंक सरकार-की यह पीठ ठोंक रही हैं। असली लड़नेवालोंको नहीं जमीदारों-नवाबोंके मुट्ठी भर आदमियोंको जर्मनोंसे लड़नेकी वाहवाही दे रही हैं। लेकिन वहाँ भी इनका मनसूबा बहुत कुछ ढीला हो गया है।

सोहनलाल—इस तरह तो भैया! जान पड़ता है कि इन देसोंमें जोंकोंके लिए कोई आसा नहीं है, लेकिन बुलगारिया, रूमानियाँ, हुँगरीके बारेमें तुम्हारी क्या राय है।

भैया—वह तीनों देस आज हिटलरके पैरोंके नीचे दबे हुये हैं और उनके जमीदार और पूँजीपति लोगोंपर जुलुम करनेमें जर्मन गुंडोंका साथ दे रहे थे।

जर्मन गुंडोंके साथ इन जोंकोंका भी भाग बँधा है। ये गुंडे भगे, कि वहाँ जोंकोंके लिए भी ठौर नहीं रह जायेगा।

सोहनलाल—लेकिन अँगरेज और अमेरिकन तो चाहेंगे न कि जमींदार और पूँजीपति वहाँ बने रहें ?

भैया—हाँ, पूरी तौरसे चाहेंगे। लेकिन जानते हो न बुलगारियामें ज्यादा-तर किसान बसते हैं। बुलगर और रूसी एक ही जातिके हैं, जिसके कारण वे सोवियतके लिए बहुत अभिमान और प्रेम रखते हैं। किसान अपने लाभका ख्याल करके भी सोवियतके ढंगको पसन्द करते, इसलिए वहाँ जोंकोंका खतम होना छोड़ और दूसरी बात नहीं हो सकती थी। वही हुआ, लाल सेना ने बुल्गारियामें पहुँचकर वहाँके कमेरोंको मुक्त किया। जोंकें भाग खड़ी हुई हैं। उनकी हिमायतके लिए कुछ अँगरेज अमेरिकन पहुँचे थे, जिन्हें बहुत नरमीसे सीमापार भेज दिया गया। रूमानिया एक छोटा-सा देस है। वहाँके किसान लड़ाईसे पहले भी सोवियतकी तरक्कीको बड़ी लालसासे देखते थे। अब रूमानियामेंसे भी हिटलरी गुंडे तथा उनके पिछू खतम हो चुके, वहाँ लाल सेना पहुँच गई। हिटलरके लोप होनेके साथ उसके इसारेपर नाचनेवाली रूमानियाकी जोंकोंके लिए क्या कोई आसा हो सकती थी ?

दुखराम—नहीं भैया ! लाल पलटनका नाम सुननेसे तो कितना उछाह होता है। जब रूमानियाके किसान लाल पलटनको देखे होंगे, तो समझे होंगे कि वह जरमन डकइत नहीं हैं, बल्कि अपने ही भाई जैसे हैं, भला अब कमेरोंको छोड़ कौन दूसरा वहाँ राज करता ?

भैया—हुंगरीमें पिछली लड़ाईके बाद कई महीने तक कमेरोंका राज रहा, फिर बाहरी जोंकोंने भीतरी जोंकोंको मदद दी और बहुत खराबीके बाद कमेरोंका राज खतम हो गया। हुंगरीकी राजधानी बुदापेस्तके पास लाल सेना पहुँच गई है। सोहन भाई ! तुम्हीं बताओ हुंगरीमें क्या बाहरी जोंकोंकी फिर दाल गलेगी ?

सोहनलाल—नहीं लेकिन......।

भैया—लेकिनको भी मैं समझता हूँ। मैं यह नहीं कहता कि इस लड़ाई-

के बाद सारा यूरप मरकस बाबकी सिच्छाको पूरा मान लेगा, और वहाँ सोवियत जैसा कमेरोंका राज कायम हो जायगा। लेकिन एक बात तो साफ़ मालूम होती है कि बड़ी-बड़ी पूँजीपति जोंकों और तालुकदारों-जमीदारोंके लिए जगह नहीं रह जायगी। रेल, बंक, खान, बड़े-बड़े कारखाने यह सब चीजें जोंकोंके हाथसे निकल जायँगी। हो सकता है कि कितनी ही जगह छोटी-छोटी खेती, छोटी-छोटी दूकानें लोग अलग-अलग अपनी रखें। यह भी हो सकता है कि बहुत जगहोंमें रूस हीका ढंग चले।

सोहनलाल—कौन-कौन देसोंमें भैया सोवियत जैसा राज कायम होगा?

भैया—मैं जोतिसी नहीं हूँ सोहन भाई! लेकिन मुझे जान पड़ता है कि पोलैंड, हुंगरी, रुमानिया, बुलगारिया और यूगोस्लावियामें लोग सोवियतकी तरहका राज कायम करेंगे। चेकोस्लावियाके नेता ज्यादा दूर तक देखने-वाले हैं। सोवियतके साथ उन्होंने हमेसा दोस्ती रखी। देसकी भलाईके लिए वह बहुत कुछ करेंगे और वहाँ भी मुझे सोवियत जैसा समाज ही आता दिखाई देता है। यूरपके बाकी देसोंमें चाहे मरकस बाबाकी पूरी सिच्छाके मुताबिक राज न कायम हो लेकिन जोंकोंके सभी बड़े-बड़े दाँत टूट जायँगे और सभी सोवियतको अपना सबसे बड़ा दोस्त मानेंगे।

सोहन—अच्छा यह तो यूरपकी बात हुई भैया। और मैं तो यह बात पक्की समझता हूँ, पिछली लड़ाईमें दुनियाके छठे हिस्सेसे जोंकोंका राज खतम हो गया और कमेरोंका राज कायम हो गया। इस लड़ाईमें उसमेंसे एक अंगुल भी नहीं निकलेगा यह बात तो निहचय है. लेकिन इसके साथ यह भी निहचय है कि दुनियाके कुछ और भागसे भी जोंकोंका राज जायेगा। मैं समझता हूँ इस लड़ाईमें एक-चौथाई धरतीपर कमेरोंका राज हो जायगा, बाकी तीन-चौथाई धरतीपर जो जोंकों हीका जोर रहा, तो एक और घमा-सान लड़ाई होगी। लेकिन उस लड़ाई और इस लड़ाईमें यह फरक रहेगा, कि हिटलरने जो भूल की वह फिर कोई नहीं दुहरायेगा। सोवियतके कमेरोंके राज और लाल पलटनके लिये बस यही आखिरी लड़ाई। यह तो हुआ लेकिन मैं कुछ हिन्दुस्तान और पूरबके देसोंके बारेमें सुनना चाहता हूँ।

भैया—सोहन भाई ! सवाल तो तुम्हारा ठीक है लेकिन यह एक रातकी बैठकीमें खतम होनेवाला नहीं। हिन्दुस्तान काहे गुलाम हुआ इसकी बात हम पहिले ही कह चुके हैं। फिर हिन्दुस्तानने कब-कब और कैसे-कैसे आजाद होना चाहा, यह भी बतलाना होगा। गाँधीजीने हमारे कामको कैसे आगे बढ़ाया इसे भी बताना होगा। फिर किस लड़ाईमें हमने क्या भूल-चूक की और हमारे दुसमनोंने कैसे फायदा उठाया इसके बारेमें भी कहना होगा। लेकिन मैं समझता हूँ आज बिलायती जोंकोंके मनसूबे और अपनी कमजोरियों के बारेमें कहूँ। बाकीको दूसरे दिन बतलाऊँगा।

दुखराम—हाँ भैया, अभी जोंकोंके मनसूबेकी बात चल रही है, इसीलिए उसीको लेते अपने देसके बारेमें कुछे कहें।

भैया—पहिले तो दुक्खू भाई ! यह बात गाँठि गठिया लेनी चाहिए, जोंकें दया-मयामें कभी नहीं पड़तीं। उनके लिए अपना स्वारथ सबसे बढ़कर है। बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानको स्वराज्य दे देंगी, यह अकलका अंधा ही विसवास कर सकता है। जोंकोंके धर्मसास्त्रमें 'द' अच्छर नहीं है। हमारे हिन्दुस्तानी भाई गुस्सा होकर बड़े जोसमें आकर अंगरेज जोंकोंके बचन तोड़नेकी बातोंको कहते हैं। लेकिन जोंकें जो वचन कहती हैं वह तोड़ने हीके लिए। गुलामोंको ढाँढ़स देनेके लिए वह लम्बी-लम्बी बातें जब-तब बोल जाती हैं। अगर गुलामोंको छन भरके लिए सन्तोस हो जाता है, तो अच्छी बात है, अगर वह पीछे निरास होते हैं, तो जोंकोंका इसमें कोई कसूर नहीं, जोंकोंके वचनपर विसवास करनेको उनको किसने कहा था ?

दुखराम—भैया, तुमने जोंकोंका स्वभाव जो रचके समझाया, उससे सब बात साफ हो गई।

भैया—जोंकोंसे यह भी आसा नहीं रखना कि उनका दिल पसीजेगा या बदलेगा। ख्याल रखना चाहिए कि उनके दिल हई नहीं है, जो दिल होता तो बुद्ध-ईसा जैसे कितने ही महात्मा हो चुके हैं, उन्होंने जोंकोंके बदलनेकी बहुत कोसिस की। लेकिन जोंकोंने हथियारके बलपर दुनियाको अपने हाथमें किया, उससे भी कोई जबर्दस्त हथियार जब हाथमें आएगा तभी उनकी

मुट्ठी खुलेगी।

सोहनलाल---बम-पिस्तौलको क्या समझते हैं मैया!

मैया---आपका मतलब है कि जोंकोंके दस-पाँच अफसरोंपर पिस्तौल या बम चला देनेसे जोंकें दब जायँगी? इसकी बिलकुल आसा मत रखिये। बड़ी जोंकें बहुत दूर बैठती हैं उनके पास तक न आपकी गोली जा सकती है न बम। और हिन्दुस्तानमें जो काले-गोरे नौकर उनके लिए काम करते हैं, वह पेटके लिए करते हैं। न काम करें तो भूखे मरना पड़े। उन्हें अच्छी तनखाह मिल रही है भूखसे निश्चिन्त हैं। जो इतने ही भर आदमी होते तो तुम कुछ को कम कर सकते थे, लेकिन सौकी नौकरियोंके लिए तो हजार उम्मेदवार हैं फिर जगह कहाँ खाली रह सकती है?

सोहनलाल---तो फिर जोंकोंके पास जो हथियार है उससे भी जबर्दस्त हथियार कौन-सा है?

मैया---यही लोग जो चूसे जा रहे हैं, मजूर-किसान और दूसरे पढ़े-लिखे लोग, जिनकी हालत मजूरोंसे बढ़कर है; लेकिन सबसे ज्यादा विसवास मजूरों और किसानोंपर ही किया जा सकता है।

सोहनलाल---मजूर किसान तो हमारी बात ही नहीं समझते।

मैया---आप समझते हैं कि उनमें समझनेकी तागत ही नहीं है। वह न समझेंगे, न सुनना ही चाहेंगे, जो आप लोग उन्हें निराकार भगवानके सामने हाथ जोड़नेके लिए कहेंगे।

सोहनलाल---हम तो निराकार भगवानके सामने हाथ जोड़नेको नहीं कहते। हम तो उनसे कहते हैं सुराजकी बात, देसको गुलामीसे छुड़ाने-की बात।

मैया---तो क्या वह सिर नहीं हिलाते? क्या वह हाँ नहीं करते?

सोहनलाल---सिर हिलाते हैं, हाँ करते हैं, लेकिन देह नहीं हिलाते, हाथ नहीं हिलाते।

मैया---दुक्खू भाई; अपनी अंगुल भर जमीनके लिए किसान जान नहीं दे देते हैं। भदयावाले कनैलाकी परती, बाँध या किसी जगह हाथ भर भी

दबाना चाहें तो सारा गाँव लाठी लेकर जायगा कि नहीं ?

दुखराम—हमने जान दी है भैया, और कई बार सारा गाँव लड़नेके लिए गया था।

भैया - देखा सोहन भाई, किसान जान देनेसे घबराते नहीं, मजूर भी जान देने से घबराते नहीं वह कायर नहीं हैं। बात यह है कि आप लोग भी सुराजको निराकार रूपमें उनके सामने रखते हैं। उनको यह दिखलाइये कि जीविका बिना जीव किसी कामका नहीं, और जीविकासे तुम कभी निचिन्त नहीं हो सकते, जब तक जोंकें हैं। लेकिन इतना कह देनेसे भी काम नहीं चलेगा, उन्हें आँखसे दिखाना होगा कि कैसे जीविकामें पग-पगपर ये जोंकोंकी सरकार बाधा देती है। फिर यह भी जबानी जमाखर्चसे न होगा। उनको दिखाना होगा—देखो यह इतनी बड़ी रासि तुम्हारे सामने है, लेकिन दस ही दिनमें यह लोप हो जायगी और तुम्हें भूखा मरना पड़ेगा। इस वास्ते किसानों को यह समझनेके लिये तैयार करना होगा, कि यह रासि हमारी है। फिर जमीदार-पटवारी और सारी दुनिया कहेगी कि खेत तो जमीदारका है इसलिए रासि तुम्हारी कैसे हुई। तो वह कहेगा कि खेत उसका है जो उसमें अपना खून-पसीना गिराता है। इसलिए हमारे खेतको अपना कह करके जो कोई दखल करने आएगा उसे दखल नहीं करने देंगे। लेकिन किसानोंको अकेले-अकेले ऐसा कहनेसे काम नहीं चलेगा।

दुखराम—अकेले-अकेले तो बहुत लोगोंने कहा भैया! और कुरकी-नीलामी सब होकर उजड़ गए।

भैया—इसीलिए एक आदमीके डट जानेसे कुछ नहीं होगा। हमें गाँव-गाँवके किसानोंको तैयार करना होगा। जब वह साथ जियेंगे, साथ मरेंगे तभी यह हो सकेगा।

सोहनलाल—"न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेंगी।" न गाँवका गाँव तैयार होगा न किसान लोग हिलें डुलेंगे।

भैया—तो तुम एक बूँदमें राधाको नचवाना चाहते हो, यह वृन्दावन-वाली राधा नहीं है। यह बहुत बड़ी राधा है इनका हाथ छः हजार मील तक

फैला हुआ है, इनके लिए नौ मन क्या अठारह मन तेल भी कम है। हमारे कुछ भाई समझते हैं, कौन किसानों-मजदूरोंको हाथ जोड़ता फिरे। सबसे अच्छा है यही कि दो-चार पिस्तौल जमा करो, पाँच-सात बम बनाओ और मार दो, दो-चार अफसरोंको। दुनिया बहादुर कहेगी, और क्या जाने कुछ बन भी जाय।

सोहनलाल—तो भैया, तुम्हारे पास कोई जल्दीकी दवाई नहीं है।

भैया—यही जल्दीकी दवाई है जिसे तुम नौ मन तेल कहते हो। किसान की औरतसे किसीने पूछा, मालिक कहाँ गए हैं, औरतने कहा कि हेंगा (सरावन, पटेला) हेंगाने गए हैं। कब तक आयेंगे, पूछनेपर औरतने कहा—धीरे-धीरे हेंगायेंगे तो दो घरीमें चले आयेंगे और जल्दी-जल्दी की तो छ घरीसे पहिले नहीं लौटेंगे। आदमी कोई सहरका था। उसे समझमें नहीं आया, वह औरतका मुँह देखने लगा। औरत समझ गई। उसने कहा—"बाबू! धीरे-धीरे हेंगायेंगे तो हेंगा और देहका बोझ धीरे-धीरे पड़ेगा और सब ढेले एकही हेंगाईमें फूट जायेंगे और जल्दी-जल्दी करनेपर एकाध ही ढेले फूटेंगे, फिर दोबार-तेबारा-चौबारा हेंगना पड़ेगा।"

दुखराम—भैया! बहुत ठीक कहा।

भैया—इतना ही नहीं सोहन भाई! जिस रास्तेकी तुम बात बतला रहे हो, उससे छ घन्टेमें भी लौटनेकी उम्मेद नहीं, क्योंकि तुम्हारी राधा बहुत होसियार है। जब तक दो ढेले तोड़ोगे तब तक चार नये फेंक देगी। रूसमें भी तीस-पैंतीस बरस तक बम-पिस्तौल चलाकर लोग काम बनाना चाहते थे, लेकिन कुछ नहीं हुआ, काम तब बना जब लेनिनने बम-पिस्तौलका रास्ता छोड़ा और किसानों-मजूरोंको तैयार किया।

सोहनलाल—तो किसान-मजूर हत्याका हथियार उठायेंगे या बेहत्याका?

भैया—किसान हत्या-बेहत्या नहीं जानते। वे न हत्यारे हैं कि जिसको नहीं तिसको मारते चलें, न वह बछिया हैं, कि जीभ निकाल लें। वह अपना काम करना चाहते हैं। जो दुसमन हत्या चाहता है तो वह हत्याके लिए तैयार हैं और जो दुसमन चुप रहता है, तो वह बेहत्याको तो पसन्द ही करते हैं। लेकिन

सोहन भाई ! अभी हत्या बेहत्याकी बात छोड़िये। यह देखिये कि कैसे कमेरोंकी देह हिलेगी कहीं किसानकी जमीनको जमीदार निकालना चाहता है तो गाँव भरके किसानोंका एका कायम कीजिये। पटवारी बदमासी करता हो, तो एका कीजिये। यह अनहोनी बात नहीं है। इसी हिन्दुस्तानमें मलबारमें मैंने ऐसे गाँव देखे हैं, आन्ध्रमें ऐसे गाँव देखे हैं, जहाँ जमींदार बछिया हो गए हैं, पटवारी सींग-पूछ नहीं हिलाते, किसी किसानपर फौजदारी मुकदमा चलाया नहीं जा सकता, क्योंकि कोई एक भी किसान खिलाफमें गवाही देने नहीं जायगा। पहले-पहल जब काम सुरू हुआ, जब किसान जमीदारके जुलुमके खिलाफ खड़े हो गये, तो एक बार जमीदारके गुंडे भी आये, दरोगा जीने भी जिसका नमक खाया उसका गुन गाया। कितने किसानों और उनके नेताओंपर मार भी पड़ी, जेहल भी जाना पड़ा, कहीं-कहीं एकाध मारे भी गये, लेकिन उससे किसानोंका एका और मजबूत हुआ। जो दो-चार पहिले डर और बहकावेमें आये थे, उनको भी सारे गाँवको एक मुँह चलते देख हिम्मत हुई। सारा गाँवका गाँव पक्का हो गया, न नौ मन तेल, न नौ बरसकी बात है। यह बातें तीन-चार बरसके भीतर हुई हैं।

सोहनलाल—लेकिन यह तो अपने ही देसके आदमियोंसे लड़ना है।

भैया—सुरू उन्होंने अपने ही यहाँके जोंकोंसे लड़कर किया, लेकिन जब उसमें पटवारी कूदने लगा, पुलिस कूदने लगी, सरकारी अफसर जोंकोंका पच्छ लेने लगे, तब उन्हें मालूम हुआ, कि यह तो सरकार भी जोंकों हीके लिए है। अब वह अच्छी तरह समझते हैं कि सुराज बिना हमारा निस्तार नहीं। पहिले बिदेसी जोंकोंको हटायें, तभी एकहरी लड़ाई होगी; नहीं तो दोहरे पाटके भीतर पीसेंगे।

दुखराम—सच ही भैया ! तुमने कहा कि निराकार सुराजको किसान नहीं समझते। अब यह रूप दिखा दिया न, कि जो अपनी जीविकाके लिए जमीदारसे लड़ेगा, वह भली-भाँति सीख जायगा, कि उसके कौन-कौन दोस्त हैं और कौन दुसमन।

भैया—इसी तरह सोहन भाई! मजूरकी जीविकाके लिये लड़िये। कोई उन पर जुलुम होता हो, तो उसके लिए उन्हें तैयार कीजिए। बम्बईके मजूर तैयार हैं, कलकत्ताके भी तैयार हैं, कानपुरमें भी तैयार हैं; लेकिन अभी भी बहुत-सी जगहें हैं जहाँ मजदूरोंको अपनी तागत नहीं मालूम है। उनपर जुलुम होता है। उनका एका बनना होगा। सहरोंमें मुनीम हैं, प्रेसके कम्पोजीटर हैं, होटलके नौकर हैं, रिक्सावाले हैं, मदरसेके बेचारे मुदर्रिस (गुरु जी) मुन्सी बिचारे सताये जाते हैं; लेकिन सबका एका लेच्चर देकर नहीं होगा, उनकी जो तकलीफें हैं, उन्हींके लिए एका होगा। फिर सरकार जरूर उसमें उनके खिलाफ होगी, तब वह पक्के सुराजी हो जायँगे। निराकारकी पूजा झूठ और धोखा है, इसलिए उसमें कमेरे नहीं फँसते। साकार सुराज रखिये उनके सामने, देखिये खून पसीना एक करनेके लिए तैयार होते हैं कि नहीं। लेकिन हम लोग कहाँसे कहाँ चले गये। हिन्दुस्तानके बारेमें जोंकोंके मनसूबे-की बात कर रहे थे न?

सन्तोखी—हाँ भैया, बिलायतकी जोंकें सुराज देनेके लिए हिन्दुस्तानपर राज नहीं कर रही हैं।

भैया—जोंकोंका मन तो ऐसा ही है, लेकिन जब चाँप (दबाव) पड़ता है और समझती हैं कि यह तो सोलहो आना हाथसे निकल जायगा; तब उनको याद आता है "अर्ध तजहिं बुध सर्वस जाये।" यूरपमें देखा न? एक-एक अंगुलके लिए जोंकें डँटी रहीं, लेकिन जब चाँप पड़ा, तो मुट्ठी खुल गई। चाँप दो तरहसे पड़ता है, एक भीतरसे और एक बाहरसे। तो, जब जरमनीकी लड़ाई गभीर हुई और काल सामने दिखलाई देने लगा, तो बीस सालसे गाली देनेवाले चर्चिलने स्तालिनको सलाम किया। जब सोवियत लड़ाईमें आ गई तो दुनियाके सारे लोगों—जोंक और कमेरा दोनों के सामने सिर्फ एक बात थी कि हिटलर और उसके गुन्डोंको खतम किया जाय। उसमें हत्या बेहत्याकी बात करके घूम-घुमौआ खेल खेलना नहीं चल सकता। हमारे नेताओंको सुरूसे ही दो टूक कहना चाहिए था, कि हम फँसिहा गुंडोंको एक छन भी जिन्दा नहीं देखना चाहते।

दुखराम—फँसिहा कौन है भैया !

भैया—जोंकोंका सबसे नीच औतार फसिहा हैं; जो कि फाँसी, हत्या, बिख हर तरहसे कमेरोंको मारकर दबा देना चाहते हैं, इसीलिए फसिहा कहते हैं। मुसोलिनी और हिटलर फसिहोंके अगुआ हैं। ज्यादा पढ़े-लिखे लोग तो फासिस्ट बोलते हैं, लेकिन हिन्दुवी बोलीमें फसिहा ही ठीक है।

दुखराम—हाँ, भैया ! हिटलरका जो गुन बतलाया, उससे फसिहा नाम ही ठीक बैठता है।

भैया—जब दुनिया भरके लोग फसिहा राछसोंको खतम कर देना चाहते हैं, तो तुम जो डेढ़ चावलकी खिचड़ी अलग पकाओगे, तो कहींके न रहोगे।

सोहनलाल—जवाहिरलालने तो साफ कहा, मौलाना आजादने भी फसिहोंके खिलाफ कहा।

भैया—सोहन भाई, सतनारायनकी कथा नहीं है, कि पंडितजी जो कुछ बोल रहे हैं उसे सब हाथ जोड़कर सुनेंगे। बिलायतकी जोंकोंके मुँहमें दो सौ सालसे खून लगा हुआ है। तुम चिल्ला-चिल्लाकर बोलो, तो ऐसे जोरसे बाजा बजाने लगेंगी, कि कोई सुनने ही न पाये। और जवाहिरलाल और आजाद एक बात बोले और गाँधीजी कह दें, कि दोनों हमारे लिए बराबर हैं, तो सब गुड़ गोबर हुआ न ? बिलायतकी जोंकें गाँधीजीकी बातको तोड़-मरोड़कर दुनिया भरमें फैला देंगी।

सोहनलाल—किरिपके आनेपर तो गाँधीजीने भी अपनी बात साफ कर दी थी और कांग्रेसको फसिहोंसे लड़नेके लिए अंगरेज सरकारसे मेल करनेकी बात कह दी थी, फिर भी तो कुछ नहीं हुआ ?

दुखराम—यह किरिप कौन रहा भैया ?

भैया—है तो सात पुस्तका जोंक, लेकिन लम्बी-लम्बी बातें करके मजूरोंका नेता बनना चाहता था। हिन्दुस्तान तो वह दूसरे कामके लिए आया था। उस समय वह चर्चिलके साथके चार-पाँच बड़े मन्त्रियोंमेंसे था, अब तो बेचारा छोटा मन्त्री बना दिया गया है। वर्मा, मलाया, सिंगापुरके ऊपर

जापानने दिसम्बर १६४२ में अचानक हमला बोल दिया। जोंकोंके पास लिफाफा (दिखावा) बहुत होता है। मैं बतला ही चुका हूँ, कि जोंकोंके जरनैल कितने निकम्मे होते हैं। सिंगापुरमें समुन्दरी किला बनानेके लिए करोड़ों रुपया खर्च किया गया, लेकिन आधासे बेसी जरूर चेम्बरलेनके भाई-बन्दोंके ठेकेमें उड़ गया। बिलायती जोंकें रबड़के बगीचोंको लेकर बैठी थीं, कोई खान लेकर बैठी थीं, किसीके जहाज और आफिस पिनाङ्ग और सिंगापुर में थे। न पलटनोंके हथियारका अच्छा इन्तजाम था, न जरनैलोंमें लड़ानेकी बुद्धि, हजार दो-दो हजार तनख्वाह पानेवाले साहेब अफसर पहले ही गोलेमें कान झाड़कर भाग खड़े हुए। अंगरेज बनियोंने सूमकी तरह आखिरी छन तक थैली नहीं छोड़नी चाही और पिनाङ्गमें खड़े कितने ही जहाज और अंगरेजी कम्पनियोंके आफिस सही सलामत ही जापानियोंके हाथमें चले गये। यूरपमें लड़ाई होनेसे यह भरोसा नहीं था, कि जापानको हरा दिया जायगा। लेकिन साथ ही यह भी कोई नहीं समझता था, कि अंगरेजी जोकोंने अपना पूर्वी सीमापर सिर्फ फूसकी टट्टियाँ खड़ी कर रखी हैं।

सन्तोखी—मालूम होता है, फूसकी टट्टी ही रही है भैया! वर्मासे भाग-कर आनेवाले लोग कहते थे, कि अँगरेज कलक्टर लोग तो जापानी पलटनका नाम सुनते ही जिला छोड़कर नौ-दो ग्यारह हो गए।

भैया—हाँ, डेढ़ सौ मीलपर जब जापानी पलटन थी. तो हंथावादी आदि पाँच-छ जिलोंके मोटी-मोटी तनख्वाह पानेवाले सभी साहबबहादुर लोप हो गये। अब आज दुक्खू भाई! रात बेसी हो गई है और किरिपके आने और कितनी ही बातें बतलानेका समय नहीं। अच्छा तो सलाम।

सलाम भैया!

अध्याय ६

जोंकें हिन्दुस्तानको नहीं छोड़ना चाहतीं

सन्तोखी—जो भैया! बिलायती जोंकोंको हिन्दुस्तान छोड़ना नहीं है, तो किरिपको भेजा क्यों?

मैया—मजबूरी थी, सिंगापुर, मलाया, वर्मामें जापानी आ गये, चटगाँवमें बम गिरने लगे और डर मालूम होने लगा, कि हिन्दुस्तान भी चला जायगा। विलायती जरनैलोंकी तो यह हालत थी, कि दो सबसे बड़े लड़ाईके जहाजोंको बिना एक भी जापानी चुहिया मारे समुन्दरमें डुबवा दिया। जापानियोंने एक ही झोंकमें हिन्दुस्तानसे आस्ट्रेलियाकी सरहद तक अपनेको पहुँचा दिया। इसी वजहसे उन्हें थोड़ा सुस्तानेकी जरूरत थी। दिसम्बरमें ही अमेरिकाके ऊपर भी धोखेसे जापान ने हमला कर दिया था। अपने जान तो उसने बड़ी होसियारी की थी और पर्ल बन्दरगाहके बहुतसे जंगी जहाजों, हवाई जहाजों और लड़ाईकी दूसरी चीजोंको बरबाद कर दिया; लेकिन उससे अमेरिकाके एक उँगली मुरक जानेसे ज्यादा कुछ नहीं हो सकता था और अब अमेरिका पूरी तौरसे लड़ाईमें आ गया।

सोहनलाल—अमेरिका और रूस जब साथमें हो गए, तो अँगरेजोंको जीतनेमें क्या सक रह गई, कि किरिपको भेजा?

मैया—चर्चिलकी नाकमें दम हो गया। सिंगापुर और वर्मामें बरसों लड़नेकी बात कर रहे थे, लेकिन वह कुछ हफ्तों हीमें चले गए। बिलायतके लोग घबराये। अमेरिकाने भी गलो दबाया, लड़ाई हँसीठट्ठा नहीं है। सभी सरबस लगाके लड़ रहे हैं। फिर हिन्दुस्तानमें इतने आदमी हैं, इतना लड़ाई-का सामान तैयार हो सकता है, उसको अपनी ओर नहीं करोगे, तो यह बुरी बात है। चीनने भी इसी बातको दुहराया, रूसने भी कहा। फ्रांसके खतम होते वक्त जो हालत इंग्लैंडकी हुई थी, वही हालत इस बखत थी। इसीलिए चर्चिलने क्रिपको भेजा, लेकिन मनसे नहीं।

दुखराम—मनमें धोखा रहा होगा!

मैया—मनमें तो वह हर बखत सोच रहा था, कि कैसे कोई गलती हिन्दुस्तानवाले करें, और हम निकल भागें। उसको तो विसवास था, कि अब इंग्लैण्डको हारनेका कोई डर नहीं, अब चीन, रूस, अमेरिका, इंग्लैण्ड एक ही नावपर हैं, जब सब डूबेंगे तभी न हम डूबेंगे? फिर काहे को पहिले हीसे हिन्दुस्तान जैसी सोनेकी चिड़िया अपने हाथसे खो दें। अमेरिकाकी

ओरसे जरनल जानसन हिन्दुस्तानसे समझौता कराने हीके लिए दिल्ली आया था।

दुखराम—तो समझौता क्यों नहीं हुआ भैया?

भैया हमारी बेवकूफी और बिलायती जोंकोंकी चालाकीके कारन।

दुखराम—बिलायती जोंकोंकी चालाकी तो मालूम है, लेकिन हमने बेवकूफी क्या की।

भैया हमारे नेताओंने हमेसा बैलगाड़ीसे रास्ता काटा, हवाई जहाज क्या रेलगाड़ीपर चढ़कर भी वह घबरा जाते हैं। हमेसा जब रेल निकल गई, तब यह अपनी गठरी-मुठरी ले स्टेसन पहुँचे। इनके दिमागमें तनिक ख्याल नहीं आया कि बिलायती जोंकें दिलसे जो नहीं चाहतीं, उसे भी करनेके लिए मजबूर हैं। और किसीके पुन्य-प्रतापसे नहीं, लड़ाई उसे करवा रही है। लड़ाई बड़ी कठोर चीज है। कितना संहार होता है, कितने बच्चे तड़फड़ाकर मरते हैं; सब कुछ है, लेकिन लड़ाई ऐसे भी मौके देती हैं, कि जिसमें हाथ-पैर बाँधकर पटक दिए कैदी भी अपना बन्धन छुड़ा सकते हैं।

सोहनलाल—हमारे नेता तो पहिले हीसे यह बात कहते थे।

भैया—उलटा समझते थे, उलटा कहते थे। आज जोंकोंके पास इतने जबर्जस्त हथियार हैं, कि उनके हाथके गुलाम सिरिफ अपने बलपर आजाद नहीं हो सकते। इसका मतलब यह नहीं, कि अपनेसे जोर नहीं लगाना चाहिए।

सोहनलाल—माने आठ आना अपने जोर लगाना चाहिए और आठ आना बाहरकी आसा लगानी चाहिए।

भैया—आठ आना नहीं, चौदह आना अपने जोर लगाना होगा और दो आनाके लिए भी बाहरकी आसा करना ठीक नहीं। किसीसे भी धरम और परोपकारकी आसा नहीं रखनी चाहिए। जो कोई हिलता-डोलता है, वह अपने कामसे। गंगा तुम्हारे नहानेके लिए बनारसमें नहीं बह रही है, पानीको नीचे गढ़ेमें पहुँचना है, गंगाके लिए समुन्दरमें जानेका यही सबसे आसान रास्ता है। गंगा जब अपना काम कर रही हो, तो उससे तुम भी अपना काम निकाल

सकते हो। नहाके मैल धोओ या डूबकर सरग जाओ, पाइप लगाकर बनारसमें घर-घर पानी पहुँचाओ या सहर भरका मैला उसीमें बहा दो; अमृत ऐसे सारे पानीको खारे पानीमें मिलने दो या अकिल हो तो बड़ी-बड़ी नहरें निकालकर ऊसर-बंजर धरतीमें सोना काटने लगो। दुनियाको अपने मतलबके लिये बहुत सा काम करना होता है, बस तिकाए (निशाना लगाये) रहो। तुम्हारा निसाना दौड़ रहा है, तुम ऐसा तीर लगाओ, कि वह उस जगहपर पहुँचे, जहाँसे निसानावाली चीज न आगे बढ़ गई हो और न पीछे रही हो।

दुखराम—तो भैया, चलते-चलते अब निसाना लगाना है, बड़े मुस्किल-का काम है।

भैया—इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, रूस सबको अपने-अपने लिए फिकर पड़ी थी, और सब फसिहोंको खतम करना चाहते थे। जो आदमी फसिहोंके खतम करनेके लिए उनसे भी ज्यादा उतावला हो, और मुँहजबानी नहीं कामसे; उसको सबका बल मिलता। गांधीजीने बेहत्यावाली बात उठाकर हमेसा बाहरवालोंको उलटा समझनेका मौका दिया। जर्मनी, जापान और इटलीके फसिहा बेहत्याका नाम भी नहीं जानते। गांधीजीने एक बार आकासबानी की, दुनियाको रास्ता बतलाया कि, जो हिटलर हत्या करके दुनियाको जीतना चाहता है, तो उससे लड़नेका सबसे अच्छा हथियार है बेहत्या।

दुखराम—माने आततायी खून टपकती नंगी तलवार लिए आवे, और हम अपने हाथका हथियार फेंककर उसके नीचे गरदन झुका दें। भैया! गाँधीजीने जोंक-पुरान पढ़ा है कि नहीं?

भैया—उनको भगती और भगवानके पुरानोंके पढ़नेसे छुट्टी मिले तब न जोंक-पुरान पढ़ें। वह तो जोंक किसीको मानते ही नहीं।

दुखराम—जब सभी भगवानके बनाये हुए हैं, तो काहे किसीको जोंक कहा जाय? जब भगवान ही सब कुछ करते-धरते हैं, तो हमको हाथ-पैर हिलानेसे क्या काम? जब भगवान हीने बिलायती जोंकोंको हमारी छातीपर कोदों दलनेके लिए ला बैठाया है, तो हमें फड़फड़ानेसे क्या काम!!

भैया—लेकिन दुनियाके लोग जानते हैं, कि तलवार पर गरदन रख देनेसे फासिहोंका दिल नहीं पसीज जायगा इसीलिए वह जानपर खेलकर लड़ रहे हैं। और गांधीजीके हाथसे छूटे इन सारे तीरोंको चर्चिल अमरीने अपने पास रख लिया, बीच-बीचमें दुनियाको दिखाते रहे, कि देखो यह तो हमें भी फासिहोंकी तलवारके नीचे गरदन रखनेको कहता है।

दुखराम—चर्चिल तो बिलायतके महामंत्री हैं न भैया! और यह अमरी कौन है?

भैया—"रामलखन दुनौ भैया" हैं; और चाहे समझ लो रावनका भाई कुंभकरन, चर्चिलसे एक अंगुल भी कम नहीं है। आठ पीढ़ीसे मुँहमें लगे खूनका ऐसा चसका पड़ा हुआ है, कि वह कभी सोच भी नहीं सकता, कि जो आज गुलाम है, वह कभी आजाद होगा। उसको जो यह बिसवास हो जाय, कि दो हजार बरस आगे चलकर हिन्दुस्तान हमारे हाथमें नहीं रहेगा, तो अफसोस-के मारे आज ही छाती फाड़कर मर जायेगा। वैसे तो दो-सौ सालसे बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं और एकसे एक चतुर सुजान हिन्दुस्तान-की नकेल पकड़नेवाले आये होंगे, लेकिन चर्चिल-अमरी जैसी जोड़ी कभी नहीं मिली होगी। अच्छा जोड़ीसे इस बखत काम नहीं, किरिपवाली बात देखनी है।

दुखराम—हाँ भैया! वही सुनाओ।

भैया—किरिपने आते ही पहिले तो ऐसी बात कही, कि हिन्दुस्तान बस लड़ाईमें पूरी तौरसे मदद करे और सोलहो आना राज हम हिन्दुस्तानियोंके हाथमें देनेके लिए तैयार हैं। दो-चार आदमियोंके सामने नहीं बल्कि रेडियो बाजामें बोल दिया, जिसमें कि इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, रूस सारी दुनिया जान लें, कि आज बिलाइतपर जोंकोंके सबसे निठुर सरदार चर्चिल-अमरीका राज नहीं है, बल्कि देवता राज कर रहे हैं। सारी दुनियाके लोग जो हिन्दुस्तानके साथ समझौता करानेके लिए सारी तागत लगाये हुए थे, किरिपके इस वचनसे ही वे लोग आधे ठंडे हो गये। फिर महीने भर बात चलती रही। कभी हरियावल दिखाई देती और कभी सूखा ऊसर। चर्चिल-अमरी पूरी कोसिस करते कि दुनिया समझे, हम बिल्कुल दूधके धुले हैं

और अगर काम बिगड़ेगा तो हिन्दुस्तानियोंकी वजहसे।

सोहनलाल—हाँ, यह बात तो ठीक कह रहे हो भैया!

भैया—हमारे नेता इन बिलायती जोंकोंके सामने पासंगभर भी अकल नहीं लगाना चाहते। वह सूखा चावल, दाल, तरकारी, लकड़ी बरतन लेकर पकाके खानेके लिए तैयार नहीं। वह कहते थे कि चावलका एक-एक कंकड़ चुनो, दालकी कराई निकालो, लकड़ीको धोओ; भात, दाल, तरकारी पकाओ, छौंक-बघार लगाओ, थालीमें परोसो; परोस करके कागजपर लिखो कि यह थाली हम आपको भेंट करते हैं, तब थालीमें हम हाथ डालेंगे।

दुखराम—यह तो मड़वेमें खिचड़ी खानेवाले दुल्हेको भी मात कर रहे थे?

भैया—लेकिन यहाँ समधी वैसा नहीं था। इन अकिलके पूरे लोगोंको यह ख्याल नहीं आया, कि हमें कैसे आदमियोंसे पाला पड़ा है। वह यह भी नहीं समझ सके, कि हमें कागज लिखकर चर्चिल-अमरी नहीं देंगे, जो वह लिखकर दें भी, तो उसका मोल कूड़ेके ढेरपर पड़े कागजसे ज्यादा नहीं है।

सन्तोखी—सचमुच भैया! वह दस्तावेज लिखवाना चाहते थे? दस्तावेज कोला-कोलीका लिखवाया जाता है, अँगरेजोंने हिन्दुस्तानपर राज करनेसे पहले हम लोगोंसे दस्तवेज नहीं लिखवाया था।

सोहनलाल—तो कांगरेसी नेताओंको क्या करना चाहिए था? जो कोई जूठा टुकड़ा चर्चिल-अमरी फेंक देते उसे उठाकर चाटने लगते क्या?

भैया—जोंकोंके यहाँ जूठा फेंका नहीं जाता है; उनके यहाँ सहरके पाखानेकी चरबी अलग करके करोड़ोंका साबुन बेंचा जाता है। वह इस बखत ऐसे पेंचमें पड़े थे, कि तुम्हें वही तलवार दे रहे थे, जिससे एक दिन उन्होंने हिन्दुस्तानको जीता था।

सोहनलाल—तलवार कहाँ दे रहे थे, वह तो बल्कि सर्त्त कर रहे थे, कि पलटन सारी हमारे हाथमें रहेगी।

भैया—और हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके हाथमें तलवार नहीं दी जायगी, वह जयकार बोलके जापानियोंको मार भगाएँगे। सोहन भाई! सोचो १८५७के

गदरके बाद किसी हिन्दुस्तानीको तोपखानामें भरती नहीं किया जाता था। अभी पिछड़ी लड़ाई तक हिन्दुस्तानी सूबेदार-मेजर तक ही बन सकते थे, कोई लेफटेन और कपतान भी नहीं बनाया जाता था। अब हिन्दुस्तानी हजारों अफ़सर हैं, तोप ही नहीं हवाई जहाज और टंक चलाते हैं। लड़ाईका महकमा छोड़कर बाकी सब महकमा हिन्दुस्तानियोंके हाथमें आ रहा था। जवाहिरके हाथमें सरकार होती। पलटन किसी अँगरेज जरनैलके हाथमें होती। लड़ाईमें पचीस लाख नहीं एक करोड़ हिन्दुस्तानी जवान जानेके लिए उतावले होते, सबके हाथमें हथियार देना पड़ता।

सोहनलाल—लेकिन भैया, यह सब तो मनका लड्डू है। चर्चिल-अमरी-के आदमीके हाथमें हिन्दुस्तानी पलटन होती, क्या वह कभी ऐसा होने देते?

भैया—रोकना उनके बसकी बात नहीं थी। फसिहोंको मार भगानेके लिए अमेरिका, रूस, चीन, और खुद इंगलैंडके लोग उतावले हैं। एक-एक करोड़ हिन्दुस्तानी लड़नेके लिए तैयार हों और चर्चिल-अमरी भाँजी मारें, तो कौन इसे बरदास करेगा? पहले अमेरिका ही कहता, कि तुम खाली अमेरिकन लोगोंको ही मरवाकर जीतना चाहते हो; आने दो हिन्दुस्तानियोंको लड़ाईमें, नहीं तो ठीक नहीं होगा। फिर क्या चर्चिल-अमरी ना करनेकी हिम्मत करते। यह तो सोहन भाई, तुम मानते हो न कि लड़ाईमें सिपाहियों-की बड़ी जरूरत है और जितना ही हिन्दुस्तानी सिपाही ज्यादा होते उतना ही अमेरिकन और अंगरेज सिपाहियोंको कम मरना पड़ता। अकेला हिन्दुस्तान ही जापानको खदेड़कर उसके घरमें घुसा देता।

सोहनलाल—लेकिन यह एक करोड़ हिन्दुस्तानी सिपाही भी तो अँगरेज जरनैलके हाथमें रहते?

भैया—जहाँ तक जापानी फसिहोंसे लड़नेकी बात थी, वहाँ तक वह अंगरेज-जरनैलके नीचे लड़ते और दिल खोलकर लड़ते। लेकिन यह एक करोड़की पलटन वह पुरानी हिन्दुस्तानी पलटन न होती, जो तनखाहके लिए लड़ रही थी। यह हिन्दुस्तानी नवजवान अफसर पुराने अफसर नहीं होते जो नौकरी ढूँढ़ते-ढूँढ़ते लाचार होकर पलटनमें गये थे। इसमें

हजारों ऐसे नौजवान जाते, जो देसको आजाद करनेके लिए तड़फड़ा रहे हैं। तुम जाते और तुम्हारे हजारों साथी जाते, जो पहलेके अफसरों और सिपाहियोंको भी समझाते, कि जापानी फसिहोंको खतम करो। जवाहिर जवानोंको पलटनमें जानेके लिए कहते, वह खुद वर्मा और इटलीके मोरचेपर जाकर अपने जवान सिपाहियोंको बढ़ावा देते। जवान समझते, कि ये हमारे महामंत्री, ये हमारे लड़ाईके मंत्री। क्या तुम विसवास करते हो कि तब भी हमारे ये करोड़ सिपाही अपनेको गुलाम सिपाही समझते?

सोहनलाल—लेकिन लड़ाईके बाद तो इन सिपाहियोंको बन्दूक छोड़कर घर जानेका हुकुम होता न?

भैया—कौन हुकुम देता? चर्चिल-अमरी, जिसमें कि वह फिर लाख-दो लाख गोरी पलटन रखके हिन्दुस्तानको पहिलेकी तरह गुलाम बनाते? यह नहीं हो सकता था। इसके लिए न हमारे जवान तैयार होते न जवाहिरकी सरकार। फिर बन्दूक, मसीनगन, टंक, तोप, हवाई जहाज, जंगी जहाज सबसे लैस एक करोड़ हिन्दुस्तानी पलटनके हथियारको छीननेके लिए चर्चिल-अमरी को उससे भी बेसी पलटन भेजनी पड़ती। क्या यह उनके बूतेकी बात थी?

दुखराम—न नौ मन तेल होता, न राधा नाचती।

भैया—जिस बखत दुक्खू भाई! दिल्लीमें किरिप कांग्रेसके नेताओंसे बात-चीत कर रहा था, और कांग्रेसके नेता फसिहोंके साथ लड़नेका पूरा मनसूबा दिखा रहे थे, उधर अमेरिकाका जान्सन भी हिन्दुस्तानियों, और अंगरेज जोंकोंके पिट्ठुओंपर भी दबाव डाल रहा था; उस समय चर्चिल-अमरीको रात भर नींद नहीं आती थी। बिलायती जोंकें पानीके बाहरकी मछलीकी तरह छटपटा रही थीं। वह रात-दिन भगवानसे मना रही थीं, कि हिन्दुस्तानियोंकी बुद्धिपर परदा पड़ जाता। उसी बखत उनके गोइन्दोंने दिल्लीसे खबर दी कि हिन्दुस्तानियोंके दिमागपर परदा पड़ रहा है। वह सूखा सीधा लेनेके लिए तैयार नहीं हैं, एक-एक चीज पकाकर, परोसकर और अपने हाथसे खिलाने-के लिए कह रहे हैं।

सोहनलाल यह बात भैया! ठीक नहीं कह रहे हो। कांगरेसके नेताओंने तो यह कहा कि और कुल महकमा मिल जाय, तो हम लड़ाईका महकमा अभी अँगरेजी जरनैलके हाथमें रखनेके लिए तैयार हैं। लेकिन हमारे काममें बड़ा लाट कोई बाधा न डालें।

भैया—इसीको कहते हैं हाथसे खिलाना। चर्चिल-अमरीने किरिपको भेजा और इतनी दूर तक दबे इसके लिए तुमने क्या कोई पहिलेसे दस्तावेज लिखवाया था। लड़ाई होने न उन्हें मजबूर किया? अगर तुम तन-मन-धनसे फसिहोंसे लड़नेके लिए तैयार थे, तो तुम्हारे काममें बड़े लाट क्या उनके बड़े अफसर भी बाधा नहीं डाल सकते थे। तुम चाहते कि हिन्दुस्तानी सिपाहीकी तनखाह तीस रुपया नहीं साठ रुपया होनी चाहिए। साठ होनेपर भी वह अँगरेज सिपाहीसे बहुत कम होती। फ्रांसने गोरे-काले सिपाहीकी तनखाह बराबर कर दी है, यह मालूम है न?

सोहनलाल—हाँ, मालूम है, लेकिन यहाँ अँगरेज जरनैल रोक देता।

भैया—सोहन भाई! मत बच्चोंकी तरह बात करो। हिन्दुस्तानीको तनखाह लेना है, हिन्दुस्तानी सरकार तनखाह बढ़ाना चाहती है, तनखाह बढ़ानेसे सिपाहियोंको पैसा ही ज्यादा नहीं मिलेगा, बल्कि उनकी हिम्मत भी बढ़ेगी। जरनैल कौन मुँहसे रोकता। क्या इससे अमेरिकावाले खुस होते! इंगलैंडके लोग खुस होते? क्या यह एक काम करके जरनैल सारी हिन्दुस्तानी पलटनको अपने खिलाफ न कर लेता? चर्चिल-अमरी छाती जरूर पीटते, लेकिन चुप रह जाते। सारी दुनिया उनका साथ नहीं देती। लड़ाईके बाद जब फासियों से लड़ना न रह जाता तो घर लौटे हिन्दुस्तानी सिपाही और अफसर जरनैलकी बात मानते कि जवाहिरकी? और दूसरी बात लो, जब जापान चटगाँवके पास आ गया था, तो जोंकोंके सिरताज लार्ड लिनलिथगोकी सरकारने हुकुम निकाला था, कि जापानी पड़ोसमें आ गये हैं, हमारे पास इतनी बन्दूकें तो नहीं हैं कि लोग जितना चाहें उतना दें; लेकिन गाँव पीछे दो-दो बन्दूक हम देंगे। लिनलिथगो जो यह कहता था, और यह सच है कि वह सिर्फ कहना भर था, जिससे अमेरिका और बिलायतवाले जानें, कि हिन्दुस्तानकी

गोरी सरकार जापानियोंसे लड़नेके लिए लोगोंको तैयार कर रही है। जवाहिरकी सरकार जो उसी बातको दोहराती, तो लिनलिथगो कैसे रोकता ? सात लाख गाँवोंमें चौदह लाख बन्दूकें ही नहीं आती, बल्कि वह यह भी हुकुम देती, कि लोहार मिस्तिरीसे लोग और भी जितनी बन्दूक बनवा सकें बनवाएँ। रेलकी सड़कवाला लोहा अच्छा फौलाद है। मुंगेर, ग्वालियर और हजारों जगहोंमें ऐसे लोहार मिस्तिरी हैं, जो बन्दूक बना सकते हैं, कारतूस तैयार कर सकते हैं।

दुखराम—तो भैया ! हथियार मिलनेका रास्ता ही बिलकुल मिल गया था।

भैया—लड़ाईके कारण लोग गाँवमें भूखे मर रहे थे, सहरोंमें हालत बुरी थी। जवाहिरकी सरकार कहती, कि लड़ाई जीतनेके लिए अनाज बेसी पैदा करना जरूरी है। इसलिए सिंचाईका पूरा इन्तजाम करो, नये बाँध-बँधवाओ, नये खांड कटवाओ, नई नहरें निकलवाओ, नये तालाब-कुएँ खुदवाओ। रेलके किनारे पड़ी सारी जमीनको आबाद करा दो। ऊसर परती सबमें अनाज उपजाओ। गाँवमें कोई आदमी बेकार नहीं रहना चाहिए। काम करनेके लिए हरेकको आठ-आठ आना मजूरी मिलनी चाहिए। कौन इस कामको रोकता है। करोड़ों बेकार बैठे आदमियोंको काम मिलता, कई करोड़ बीघा जमीन आबाद हो जाती, कई करोड़ मन अन्न बेसी पैदा होता। जवाहिरकी सरकारमें लाख-लाख रुपया घूस-रिसवतको ले करके करोड़पति अनाज चोरोंको आँख मूँदकर लूटनेका मौका न मिलता और न बंगालके साठ लाख आदमी मरते। नये कारखाने खोलना बिलायती जोंकें बिलकुल पसन्द नहीं करतीं। वह समझती हैं, कि पिछली लड़ाईके बखत जब बिलायतसे कपड़ा नहीं आ सकता था, तो हिन्दुस्तानमें कपड़ोंकी मिलोंके बढ़ानेका मौका दे दिया गया; जिसका फल यह हुआ कि आज हिन्दुस्तान-को बाहरसे कपड़े मँगानेकी जरूरत नहीं रह गई। वह नहीं चाहतीं कि हिन्दुस्तानमें कारखाने और बढ़ें और उनके बिलायती कारखाने बन्द हो जायँ।

सोहनलाल—आज भी तो बड़े लाटके मेम्बर तीन छोड़ सभी हिन्दुस्तानी हैं, फिर वह क्यों नहीं करवाते ?

भैया—वह पेट पालनेके लिए गये हैं जवाहिर पेट पालनेके लिए हिन्दुस्तानकी सरकार नहीं बनाते। वह कहते कि लड़ाईमें लारी और मोटरकी बहुत जरूरत है हिन्दुस्तानमें लोहा-कोयला है, मिसतिरी-इञ्जीनियर हैं, फिर सात समुन्दर पारसे हजारों जहाजोंको लगाकर लारी ढोकर लानेका काम नहीं है; हिन्दुस्तान हीमें मोटरका कारखाना खुलना चाहिए। बताओ इसको कौन रोकता है ?

सन्तोखी—कैसे रोकता भैया ! यह तो लड़ाईके कामको ही रोकना होता न ?

भैया लाखों आदमी मलेरियामें मर गये। कुनैन सोनेके भाव मिलती है, कैसे कोई खरीदे ? लड़ाईसे पहले गोरी जोंकोंके फायदेके लिए हिन्दुस्तान-की गोरी सरकारने हमारे देसमें कुनैनके बगीचोंको बढ़ाने नहीं दिया। अब भी तुम्हारे मरने-जीनेकी उनको परवाह नहीं है, चौथा बरस हुआ, लेकिन तब भी कुनैनका अकाल वैसा ही है। जो कुनैन मिलती भी है, वह भी दवाई बेचने-वाले घड़ियाल खा जाते हैं।

दुखराम—कुनैन तो भैया ! बड़ी कड़वी होती है, कैसे दवाई बेचनेवाले खा जाते हैं।

भैया—डिस्टिक बोर्डके अस्पतालमें नहीं देखा है दुक्खू भाई ! दवाई माँगने जाओ, तो डाक्टर कह देता है कि नहीं है और मुँह उदास करके लौटो तो कमपोटर या दूसरा आदमी आके कानमें कहता है—"डाक्टर साहबके पास तो दवा नहीं है, लेकिन दाम खरच करो तो हम तुम्हारे वास्ते मेहनत करें।" फिर एक रुपयाकी चीज तुम्हें पचास रुपयामें मिलती है।

दुखराम—आदमीका जीउ जाता है और यह सब लूट मचा रहे हैं।

भैया—इसी तरह सहरोंमें दवाईवाले दुकानदार हैं। बड़ी दूकान है, बड़ा लिफाफा है, चसमा लगाये बड़े साहब बैठे हैं। कुनैन माँगने जाओ, तो कहते हैं, कि अभी खतम हो गई, दो-चार दिन बाद आओ तो मिलेगी। बाहर आओ

तो वहाँ भी कोई आदमी कानमें कहेगा और एक रुपयाकी कुनैन पचास रुपया में दिलवायेगा। हाँ दरवाजेके रास्ते नहीं खिड़कीके रास्ते। थोड़ा ठहरके तमासा देखो, तो देखोगे कोई दारोगा साहब, डिप्टी साहब या इन्सपेक्टर साहब आये हैं। दुकानके काले साहबने खड़े होकर सलाम किया और कुरसी-पर बैठाया सिगरेट दिया। पूछा क्या सेवा करूँ? अफसरने कहा—यही आधी छटाक कुनैन चाहिए? तुरन्त आलमारीसे कुनैन निकल आई। और दूकानके मालिक कहेंगे—हजूर! आधी छटाँक कुनैन मत लें, क्या जाने फिर कब आये। एक छटाँक ले लीजिए, दामकी परवाह मत कीजिए। मुफ्त एक छटाँक कुनैन मिल गई। तुम उनसे जाओगे कहने कि हमें नहीं दिया तो कभी मानेंगे?

दुखराम—हाँ भैया! आजकल घूस-रिसवत क्या है, दिन-दहाड़े लूट मच रही है।

भैया—जवाहिरके उस बरहअनियाँ सरकारके सामने यह दिन-दहाड़े लूट नहीं चलती। दो-चारको लाख, हजारकी घूस दी जा सकती है, यहाँ तो हजारों मुँह भंडा फोड़नेके लिए तैयार होते। उस बखत न कुनैनका चोर-बजार लगता न अनाजका, न कपड़ेका।

सोहनलाल—यह तो बीती बात हो गई न भैया?

भैया—"बीती ताहि बिसारि दे, आगेकी सुधि लेय" ठीक है, लेकिन बीतीसे जो सिच्छा नहीं लेता, वह आगे भी धोखा खाता है। जब किरिपको इन्होंने दस्तावेज लिखनेके लिए कहा, तो चर्चिल-अमरीने कह दिया "जो ये हमपर विसवास नहीं करते तो हम कैसे इनपर विसवास करें? अभी थोड़े दिन पहले गांधीजीने हमें हिटलरके सामने तलवार डाल देनेकी बात कही थी; जो हम इनके हाथमें सब कुछ दे दें, और कल ये लड़ाईमें मदद देनेके लिए चुप्पी साध जायँ, तो यह अमेरिका, चीन रूस, इंग्लैंडकी सारी जनताका गला काटना होगा।" चर्चिल-अमेरिकाको डर है, अपने जोंक भाइयोंके गला कटनेका, लेकिन वह उसको साफ नहीं कहेंगे, वह सारी दुनियाकी जनताके गला कटनेकी बात करेंगे। कांगरेसी नेताओंने कहा था लेकिन अभी

फसिहोंसे लड़कर नहीं दिखलाया था। चर्चिल-अमरीने दुनियाकी नबज टोई, मालूम हुआ लोग ढीले हो गये हैं, दोनों ओरको कसूरवार मानने लगे। फिर क्या था, किरिप अँगूठा दिखलाकर चला गया।

दुखराम—बड़ा गुस्सा आता है भैया, जोंकें बड़ी चालबाज हैं।

भैया—गुस्सामें आकर खम्भा नोचनेसे काम नहीं चलेगा दुक्खू भाई! चालबाज न होतीं, तो आज चार हजार बरससे क्या दस हजार जोंकें कमेरोंको मुट्ठीमें पकड़े रहतीं? चालबाजीका जवाब गुस्सा नहीं है, उसका जवाब है उससे भी जबरजस्त चाल, लेकिन उसके लिए दिमागको ठंडा रखना पड़ेगा। क्रिप्स तो चला गया, बिलायती जोंकोंने खुसी मनाई। लेकिन जापान तो अब भी छाती पर बैठा था, हिटलरी गुंडे तो अब भी रूसमें आगे बढ़ रहे थे। अफरीकाकी ओरसे भी जर्मनीके हिन्दुस्तान आनेका खतरा हटा नहीं था। फिर अमेरिकाके लोगोंने, बिलायतके लोगोंने चर्चिल-अमरीका गला दबाना सुरू किया। उन्होंने सोचा कि लोग हमारी बातका बिसवास नहीं करते। कांगरेसवालोंने जो चिल्ला-चिल्लाके कहा है, कि हम फसिहोंको पीसनेके लिए तैयार हैं; यह बातें भरसक हमने तो बाहर नहीं जाने दीं, लेकिन अमरीकाकी लाखों फौज आई हैं, उनके अखबारवाले भी सहर-सहर घूम रहे हैं; बात तो बाहर चली ही जाती है। हिन्दुस्तानसे तार भेजना रोक देते हैं, तो वह हवाई जहाजसे उड़कर चीन चले जाते हैं। चीन जानेवाले हवाई जहाजोंमें बेसी अमरीकाके ही हैं। हम इनको रोकें कैसे? फिर उन्होंने खूब दिमाग लगाया। चर्चिल-अमरी-लिनलिथगो और सब जोंकोंके खुर्राट सरदारोंने सोचनेमें अपना सारा दिमाग खाली कर दिया।

दुखराम—डर जो होने लगा कि फिर किरिपसकी तरह किसीको भेजना न पड़े।

भैया—किसके दिमागमें बात आई यह तो नहीं कह सकते, लेकिन जब जुगती सुनाई गई तो चर्चिल-अमरी उछल पड़े। उन्होंने कहा—ठीक कहनेसे अब गला नहीं छूटेगा, अब करनीसे दिखलाना होगा, कि सचमुच कांगरेस-वाले हम लोगोंके नहीं बल्कि फसिहा जापानके दोस्त हैं।

दुखराम—क्या जुगत सोची भैया ?

भैया—कहनेमें बहुत मामूली है दुक्खू भाई ! उन्होंने सोचा कि हिन्दुस्तानके सभी बड़े-बड़े नेताओंको पकड़कर एक ही दिन जेलमें डाल दो। नेताओंके पकड़े जानेपर दुनियामें सभी जगह लोगोंको जोस आ जाता है, हिन्दुस्तानमें भी जोस आयेगा ६ अगस्त (१६४२ ई०) को बम्बईमें मीटिंग बैठी थी, उसमें और साफ-साफकर के कहा गया था, कि हम इंगलैंड, अमेरिका, चीन और रूसके साथ कन्धेसे कन्धा मिलाकर फसिहोंसे लड़ेंगे। हम तन-मन-धन सब इसके लिये नेवछावर करेंगे। बेहत्या नहीं, भयानकसे भयानक हत्या वाले हथियार लेकर हम रनमें जायँगे। सब बात साफ कर के आखिरमें दो अच्छर यह भी कहा, कि गाँधीजी बड़े लाटसे मिलकर समझौता करनेकी कोसिस करेंगे, नहीं तो सत्याग्रह करेंगे और कहेंगे "हिन्दुस्तानको छोड़ दो"। चर्चिल-अमरीने ऐसा अवसर देनेके लिए भगवानको धन्न कहा। ६ अगस्तको सारे हिन्दुस्तानके कांगरेसी नेताओंको पकड़कर जेलमें डाल दिया गया। तार और रेडियो बाजा खन-खनाने लगा कि कांगरेसी नेता जापानको बुलाना चाहते थे, हमने उनको पकड़कर जेलमें डाल दिया। उनके आदमी रेल-तार काट रहे हैं।

दुखराम—अफसोस !

भैया—जापानी खूब खुस हुए। लेकिन हमारे बाहरके मुलकोंके दोस्त बहुत निरास हो गये। महीनों तक उनको असली बातका पता न लगा।

सोहनलाल—नेताओंके जेलमें डाल देनेपर जो लोग चुप रह जाते, तो इससे दुनिया क्या समझ नहीं लेती, कि हिन्दुस्तानी मुरदा हैं ?

भैया—मुरदा समझते तो अच्छा था, लेकिन पागल समझना उससे बुरा है और विसवासघाती समझना तो और भी बुरा है। इंग्लैंड, अमरीका चीन, रूसकी जनता हमारे लिए जोर लगा रही थी, वह समझती थी कि हम भी उन्हींकी तरह फसिहोंके दुसमन हैं।

सोहनलाल—लेकिन सरकारने हम लोगोंपर जो जुलुम किया ?

भैया—जुलुम किया और सोहन भाई, ऐसा जुलुम किया है, जिसको देख-

कर खून खौल जाता है। बलियामें जो कुछ हुआ वह पंजाबकी ओडायर-साहीको भी मात करता है।

दुखराम—ओडायरसाही क्या है भैया !

भैया—पिछली लड़ाईके वक्त जब हिन्दुस्तानी लोगोंमें आजाद होनेका ख्याल बढ़ने लगा। पंजाबके लोग पलटनमें ज्यादा थे, उसी पंजाबमें जोस और ज्यादा बढ़ने लगा तो वहाँका लाट ओडायर सोचने लगा—जो यह जोस दबाया नहीं गया और लड़ाईसे लौटे सिपाही भी इसमें सामिल हो गये, तो फिर बिलायती जोंकोंके लिए खैरियत नहीं। उसने पलटन, पुलिस सबको खुली छूट दे दी, जलियाँवालाबाग (अमृतसर) के एक हातेके भीतर सभा हो रही थी। जरनैल डायरने मसीन लगवा दी और डेढ़ हजारसे ऊपर बच्चे, औरतों, मरदोंको भून डाला। इसके बाद तो पूछो मत, कितनी ही औरतोंका सिन्दूर मिट गया, कितनी ही औरतोंकी इज्जत लूटी गई। पुलिसने धन लूट-कर घर भर लिया। आदमीकी जानका मोल एक गोलीसे ज्यादा नहीं था धन उससे भी सस्ता था इज्जत और भी सस्ती थी।

दुखराम—बस करो भैया ! आदमीको जिउसे जियादा आजादीको प्यार करना चाहिए, कीड़ों-मकोड़ोंकी जिन्दगी धिक्कार है।

भैया—लेकिन ओडायरसाही और बलियाकी हैलटसाहीमें फरक है। ओडायरसाही लड़ाई खतम होनेके बाद हुई थी, इसलिए जालियाँवालाबाग और पंजाबके जुलुमकी खबरें दुनिया भरमें फैलीं। सब जगह थू थू होने लगी और बिलायती जोंकोंकी साख घटने लगी। वह डर गईं, उन्होंने फिर जालियाँ-वालाबागको दुहराया नहीं। लेकिन हैलट-साहीको लड़ाईके बीचमें खुले खेलनेका मौका मिला, और अच्छे बहानेके साथ। इससे अच्छा बहाना क्या होगा कि ये लोग रेल-तार काटकर जापानको बुला रहे थे। बलियामें जो जुलुम हुआ है, वह दुनिया छोड़ सारे हिन्दुस्तानमें भी पूरे तौरसे नहीं जाना गया। लेकिन वह जरूर किसी दिन जाना जायगा और पुलिस जो अपने भाइयोंके धन-इज्जतको लूटनेमें सबसे आगे रही, उसके एक-एक आदमीको लोग भूलेंगे नहीं।

सोहनलाल—अंगरेजोंसे लड़ाई करना क्या पागलपन है ?

भैया—यही तो वह समझ नहीं रहे थे, कि किससे लड़ रहे हैं। चर्चिल-अमरी जो चाहते थे, वही करना जो आजादीके लिए लड़ना है, तब तो हद हो गई।

दुखराम—भैया ! ठीक कहते हो।

भैया—तो यह मालूम हुआ न सोहन भाई ! जोंकोंके मनमें क्या है। जोंकें तीनों कालमें हिन्दुस्तानको आजाद नहीं होने देंगी। लेकिन तीनों काल क्या एक काल भी उनके हाथमें नहीं है। जो उनकी चाल और जालमें नहीं फँसेगा और अपनी ताकतको मजबूत करेगा, और दुनियामें क्या हो रहा है उसको आँख खोलकर देखता रहेगा, फिर इस सबके मुताबिक अपना दाव चलायेगा, वह जोंकोंको पछाड़कर छोड़ेगा।

सन्तोखी—जोंकोंकी चाल बड़ी गहरी होती है भैया, अब न मालूम हुआ कि कैसे वह लोगोंको पागल बना देती हैं और अपना काम सिद्ध करती है। तुमने भैया, यह भी ठीक कहा कि हम लोगोंको अपना दिमाग गरम नहीं होने देना चाहिए, खूब ठंडे दिलसे सोचना चाहिए।

भैया—खूब ठंडे दिलसे सोचना चाहिए, लेकिन हमला पूरी ताकतसे करना चाहिए, जरा भी हिचकिचाना नहीं चाहिए।

सोहनलाल—यह तो बीती बात है भैया, आगे हिन्दुस्तानको कोई उम्मेद है ?

भैया—नाउम्मेद वही होता है जो हाथपर हाथ रखकर मनकी खिचड़ी पकाता है। हम लोगोंको सुराजसे भी आगे जाना है। सुराजमें सुराज लेकर गोरी जोंकोंसे छीनकर काली जोंकोंके हाथमें अपना गला दे देनेसे काम नहीं चलेगा। इतनेसे यह दुनियाका नरक खतम नहीं होगा।

अध्याय १०

पूरबका युद्ध

सोहनलाल—भैया ! आपके ख्यालमें यह लड़ाई कब तक खतम होगी ।

सन्तोखी—हाँ भैया ! पाँच बरस हो गया लड़ाईको, अब बड़ी तकलीफ होती है, सब चीज महँगी हो गई है और दिनपर दिन महँगाई बढ़ती जा रही है । तुमने ही कहा कि बंगालमें साठ लाख आदमी मर गये, बिहारमें एक लाखसे ऊपर आदमी हैजा-मलेरियासे खतम हो गये । इधर भी हैजा बढ़ने लगा है ।

भैया—लड़ाई इन्हीं जोंकोंकी देन है, वे समझती हैं अपने आरामके लिए जो बीस बरसमें एक लड़ाई आवे और करोड़ों आदमी मर जायँ, तो कोई परवाह नहीं । आज दुनियासे जोंकें हट जायँ, तो लड़ाईका कोई काम न रह जाय । लेकिन सन्तोखी भाई, अब लड़ाई बहुत दिनों तक नहीं जायगी । हिटलर तो अब खतम होनेवाला ही है ।

सोहनलाल—चर्चिल और दूसरे लोग तो दो ही महीनेमें हिटलरके खतम होनेकी बात कहते हैं ।

भैया—कहते हैं लेकिन, वह काम नहीं करते, जिससे दो महीनेमें लड़ाई बन्द हो जाय । मैं जोतिसी नहीं हूँ, कि झूठी-सच्ची बातें बनाऊँ, लेकिन हिटलर जितना कमजोर हो गया है और जिस तरह उसके ऊपर मार पड़ रही है उससे मैं समझता हूँ, कि हिटलर इस जाड़ेसे बचकर आगे नहीं निकल सकता । चर्चिल और उसके जरनैलोंकी चलती तो दो-दो आदमी भेजते और जौ-जौ भर आगे बढ़ते । देखा न वे इटलीमें क्या कर रहे हैं । फ्रांसमें क्या किया । जो अमेरिकन पलटनने हिम्मत न दिखलाई होती, तो फ्रांसमें उन्होंने लुटिया ही डुबा दी थी ।

सोहनलाल—चर्चिल ऐसा क्यों सोचता है भैया ? हिटलर भी तो यही चाहता है ।

भैया—हिटलर दूसरे मतलबसे चाहता है। वह समझता है कि लड़ाई अगर दो-चार साल और ले जायं, तो हमारे दुसमन थक जायँगे फिर सुलह कुछ ऐसी होगी, जिसमें हमारी जान बच जायगी। चर्चिल सोचता है कि जो एक सालमें लाख आदमी मरेंगे, तो इंग्लैंडके लोग बीच-बीचमें भूलते जायँगे, लेकिन जो एक महीनेमें एक लाख आदमी मर गये, तो घर घरमें लोगोंको इसका बहुत ख्याल रहेगा और उनको मालूम होने लगेगा कि लड़ाईमें कितना बलिदान देना पड़ रहा है। उनके कानोंमें मरकस बाबाके चेले यह बात डाल ही रहे हैं, कि लड़ाईका कारन यही जोंकें हैं। पिछली लड़ाई इन्हीं जोंकोंके मारे हुई, फिर २१ बरस तक चेम्बरलेन, बाल्डविन और उनके भाईबन्द खूब सोना बटोर रहे थे, ठीका। बेइमानी सब कुछ करके चालिस-चालिस लाख तक मजूर बेकार भूखों मरते रहे। अब इस लड़ाईके बाद भी वह वैसा ही करना चाहेंगे, लेकिन एक-एक महीनेमें लाख-लाख हमारे भाई इसलिए नहीं मर रहे हैं, कि जोंकें फिर सोना बटोरें और मजूर फिर लंदनकी सड़कोंपर भूखों मरें। चर्चिल चाहता है, कि घाव छोटा-छोटा हो जल्दी जल्दी भरता जाय, लोग उसे भूलते जायँ। लेकिन सोहन भाई, अब १९१८ वाला इंगलैंड नहीं है।

दुखराम—क्या भैया, इंगलैंडमें भी लोग जोंकोंके विरोधी हैं।

भैया—मैंने बतलाया नहीं दुक्खू भाई, कि वहाँ छ सौ परिवार हैं, जिनके पास सबसे अधिक धन है। बल्कि पूरा हिसाब लगे तो वह इस तरहसे हैं। गिन्नी तो अब सपना है, लेकिन कागजी गिन्नी या पौण्ड १३ रुपयेका होता है। इंग्लैंड (१९४३)की सारी आमदनी ८ अरब १७ करोड़ २० लाख पौंड है, जिसमें २ अरब ६ करोड़ ६ लाख (७५.५ सैकड़ा) मजूरोंको मिलता है। जमीदार और पूँजीपति दो अरब ८१ करोड़ १० लाख पौंड (३४.४ सैकड़ा) लेते हैं। सरकारी नौकर १ अरब ३६ करोड़ ६० लाख (१६.८ सैकड़ा) चूसते हैं; पलटन आदिका खर्च १ अरब ८ करोड़ ६० लाख (१३.३ सैकड़ा)। सबसे बेसी संख्या है वहाँ मजूरोंकी और सबसे कम संख्या है जमीदारों और पूँजीपतियोंकी। लेकिन कितना फरक है दोनोंमें! इंग्लैंडके

१००मेंसे ६ आदमी ८० सैकड़ा सम्पत्तिके मालिक हैं और १००मेंसे ७७ लोगोंके पास सिर्फ ५ सैकड़ा धन है। बल्कि इस तरह समझो दुक्खू भाई! इंग्लैंडमें ४ करोड़से कुछ बेसी आदमी बसते हैं, जिसमें १ लाख आदमियों-के हाथ हीमें सारे इंग्लैंडके धनका चार पचैयाँ (४/५) है। ८ हजार धनी तो ऐसे हैं, जिनकी आमदनी १ सौ पौंड हफ्ता या ४ सौ रुपया रोजसे अधिक है। एक तरफ तो चार-चार सौ हजार-हजार रुपया उड़ानेवाले थोड़े लोग हैं और दूसरी ओर भूखों मरनेवाले।

दुखराम—सुनते हैं भैया, इंग्लैंडमें लड़का-लड़की सब जबर्दस्ती पढ़ाये जाते हैं कोई मूरख नहीं रहता, फिर वह इन जोंकोंका टाट क्यों नहीं उलट देते?

भैया—पढ़ना अच्छी चीज है दुक्खू भाई, पढ़नेसे आँख खुलती है, देसविदेस आगे-पीछेकी बात मालूम होती है। लेकिन दिमागमें जो बेसी गोबर हो, या आदमी पतित स्वार्थी हो, तो विद्या बेचारी कुछ नहीं कर सकती तिसपर वहाँ कमेरोंको धोखा देनेवाले बहुत हैं। अभी तक उनको ऐसे ही नेता मिलते रहे हैं, जो भीतरसे जोंकोंकी दलालीका काम करते थे। कमेरोंको उन्होंने खूब फोड़ कर रखा था, जिसमें वह कुछ देखने न पावें। उनकी आँखमें खूब धूल झोंकी जाती थी।

दुखराम—तो भैया, अब इन धोखेबाज नेताओंसे बचनेके लिए कोई काम हो रहा है?

भैया—एक लाख कमूनिस्त दिन-रात मजूरोंकी आँख खोलनेमें लगे हुए हैं। कमूनिस्तोंके अखबार (डेली-वर्कर)को रोज नब्बे हजार छापने हीका कागज मिलता है और पढ़नेवाले अभी ६ लाखसे ज्यादा हैं। कागज मिले, तो उसे रोज १५ लाख छपते देर न लगेगी। लेकिन जोंकोंकी ओरसे जो अखबार निकलते हैं, उनमें किसीको १५ लाख, किसीको १४ लाख, किसीको १० लाखका कागज मिलता है। जोंकोंने तो बहुत बरसों तक कमूनिस्तोंके अखबारका छापना ही बन्द कर दिया, लेकिन जब मजूरोंमें गुस्सा फैलने लगा तब छापनेका हुकुम दिया।

दुखराम—तो भैया बिलायतमें भी कमेरे हमारी तरह ही पीसे जाते हैं और जोंकोंको खतम करनेके लिए तैयार भी हो रहे हैं ?

भैया—बिलायत-बिलायत सुनते-सुनते हमारे यहाँ लोग समझने लगे हैं कि सब टोपी-टोपी एक हैं, लेकिन वहाँ भी दुक्खू भाई, दो जात हैं। मुठ्ठी भर जोंकोंकी जाति, जिनके पास सारा धन है, और करोड़ों-करोड़ मजदूर, जिन्हें रोज नून-तेल-लकड़ीकी फिकर पड़ी रहती है। बहुत दिनोंसे कमेरोंको वहाँ धोखा दिया जाता रहा। पिछली लड़ाईसे उनकी आँख थोड़ी-थोड़ी खुली, उन्होंने समझा जोंकोंकी चालको। इसीलिए दो बार उन्होंने मजूर नेताओंको बिलायतकी बड़ी पंचायत (पारलामेन्ट)में इतने ज्यादा मेम्बर चुनकर भेजे, कि उन्होंने मजूरोंकी सरकार बनाई। लेकिन इन मजूर नेताओंने बहुतसे तो जोंकोंके दलाल थे। मेकडानल जैसेका कुछका तो भंडाफोड़ भी हो गया। इन नकली नेताओंने मजूरोंको बहुत नुकसान पहुँचाया।

दुखराम—लेकिन भैया "एक बार हरावै (जहँडावै) तौ बावन वीर कहावै", धोखा बार बार नहीं दिया जा सकता।

भैया—सो तो ठीक है दुक्खू भाई, पहिले जोंकें मीठी मीठी बात करके धोखा देती रहीं। फिर लड़ाईके बाद जब मजूरोंकी आँख खुली, तो नकली नेता आ गये, जो कि थे जोंकों हीके दलाल। अबकी लड़ाईके बाद, यही समझो कि दूधका जला छाछको फूँक फूँकके पियेगा। आज बिलायतके वही मजूर हैं जो हिन्दुस्तानके बारेमें बराबर जोर लगा रहे हैं।

सोहनलाल—हमारे लिए तो जैसी ही बिलायती जोंकें वैसे ही बिलायती मजूर; मजूर सरकार भी तो दो बार बिलायतमें आई थी, उसने ही क्या किया ?

भैया—जो सोहन भाई, तुम यह समझते हो, कि कोई दूसरा आके स्वराज घोलकर घुटुककरके पिला देगा, तो यह लड़कपन है। मैंने कहा नहीं था, कि हमें अपने बल-बूतेपर भरोसा रखना चाहिए। और आपको यह भी मालूम है कि जिन मजूर नेताओंने अपनी सरकार बनाई थी, वे जोंकोंके दलाल थे। उन्होंने खुद अपने ही कमेरे भाइयोंके साथ बिस्वासघात किया।

सोहनलाल—तो अब भी आप कैसे कह सकते हैं, कि दूसरे विस्वासघाती

नेता नहीं पैदा होंगे ?

भैया—जो कमेरे गाफिल पड़े रहेंगे, तो बिलायतमें भी विस्वासघाती नेता पैदा होंगे और हिन्दुस्तानमें भी पैदा होंगे, इसको कोई रोक नहीं सकता। यह तो कमेरोंको परखना होगा। लेकिन यह तो तुम मानोगे कि बिलायतके कमेरे इनके बिस्वासघातको समझने लगे हैं। बिलायती बूढ़े मजूर नेताओंपर तो हमें बिलकुल विस्वास नहीं करना चाहिए। लेकिन बिलायती मजूरोंके साथ हम वैसा नहीं कर सकते। बिलायती मजूर जानते हैं, कि हिन्दुस्तानके कमेरे और बिलायतके कमेरे दोनोंको मिलकर जोंकों को उखाड़ फेंकना होगा। रूसमें भी काले और गोरे कमेरोंने ऐसा ही किया। बिलायती कमेरे जब हमारी ओर हाथ मिलानेके लिए अपना हाथ फैलाते हैं, तो परोपकारके लिए नहीं ऐसा नहीं करते, बल्कि वह समझते हैं, कि हमारा हित और स्वारथ इसीमें है। इसी तरह हिन्दुस्तानी कमेरोंको भी बिलायती कमेरोंसे हाथ मिलाना होगा। हाँ, मैं कह रहा था, कि चर्चिल क्यों दो सिपाही और एक अंगुलकी चालसे लड़ाई लड़ना चाहता है। लेकिन बेचारेकी बात चलती नहीं। ऐसी आँधीमें पड़ा है कि आगे नहीं बढ़ता तो पैर उखड़ जाते हैं और तोंदके बल गिर जाना पड़ता है। दो महीनेसे अंगरेजी पलटन फ्लोरेन्सके पास बैठी मत्था मार रही थी, और एक ही महीनेमें लाल पलटन पाँचसौ मील बढ़कर पोलैंडकी राजधानी वारसाके पास पहुँच गई। अब वह जर्मनीके भीतर लड़ रही है। लाल पलटन एक-एक दिनमें बीस-बीस मीलसे भी अधिक आगे बढ़ी है। हिटलरने जब धोखेसे सोवियतपर हमला किया था, तो उस वक्त भी वह कभी इतनी तेज चालसे आगे नहीं बढ़ा। चर्चिलके जरनैलोंके मनका होता, तो जैसे वह दो महीना तक समुन्दरसे १० मीलपर बैठे रहे, वैसे ही अब भी करते, लेकिन अमेरिकन भी, जान पड़ता है, लाल पलटनकी ही तरह हिटलरकी जिंदगी को बढ़ाना नहीं चाहते। अमेरिकनोंकी ही बहादुरी है जो, आज हिटलरी गुंडों को पेरिस छोड़नेके लिए मजबूर होना पड़ रहा है। अभी हालमें जो हिटलर के कई जरनैलोंने भगवानके भेजे अपने नेताको मार डालना चाहा, वह यही बतलाता है कि अब पलटनके बड़े-बड़े जरनैलोंको भी हिटलरकी हारका

निश्चय हो गया। हिटलरने पचीसों जरनैलोंको गोली मरवाया, लेकिन इससे क्या जरमन लोग समझ नहीं पायेंगे, कि उनके भागमें क्या बदा है?

दुखराम—तो भैया! जब जरनैलोंने ही मत्था पर हाथ रख दिया, तो दूसरोंका क्या भरोसा होगा।

भैया—उपरसे जरमनीका कौन सहर है जहाँ रूस, अमेरिका या इंग्लैडके हवाई जहाज न पहुँचते हो। फ्रांसमें पच्छिमसे भी हमला हो गया और जर्मनोंको भगाते भगाते पेरिस तक पहुँचा दिया गया। दक्खिनसे भी हमला हो गया, और जर्मनोंको पीछे हटना पड़ रहा है। इटलीमें उतनी तेजीसे तो नहीं, लेकिन वहाँ भी जर्मन पिट रहे हैं। यूगोस्लावियामें मारसल तीतो ही जर्मनोंके नाकमें दम किये थे। उधर लाल पलटन भी रूमानियाँ होते यूगोस्लावियामें मारसल तीतोंसे मिलने आ रही है। इसलिए यह तो साफ है, कि हिटलरका अन्त आ गया। सोहन भाई, हिटलरके अंतके बाद यूरपमें क्या होगा, जोंकों का राज होगा या जनताका। इसके बारेमें इस वक्त आप न पूँछे। मैं इसे कह चुका हूँ। किसी दिन जब हम दोनों ही रहेंगे तब बात कर लेंगे।

सोहनलाल—मैं तो भैया! समझ रहा हूँ, कि जोंकें चाहे कितना ही तिकड़म लगायें, लेकिन यूरपकी जनता वही करेगी, जो स्तालिन दादा सुझावेंगे। लेकिन हिटलरके खतम होने हीसे तो लड़ाई खतम नहीं हो जाती। अभी तो इधर पूरबमें जापान भी बैठा है।

भैया—ठीक है। जापानके बारेमें कुछ कहना एक तरहसे बहुत आसान है और दूसरी ओर बहुत मुस्किल भी है।

दुखराम—क्यों भैया! बहुत आसान भी है और बहुत मुस्किल भी है।

भैया—बहुत आसान इसलिए है दुक्खू भाई, कि हिटलरके हार जानेपर इंग्लैंड और अमेरिकाकी सारी फौज, सारे जंगी जहाज, सारे हवाई जहाज जापान हीपर टूट पड़ेंगे। जापानकी अब पहिले जैसी ताकत नहीं है, यह तो इसीसे मालूम हो गया, कि दिल्ली पहुँचनेके लिए उसने आसामपर बड़े जोर-सोरसे हमला किया था; लेकिन रेलके किनारे तक भी न पहुँच सका। जंगल-जंगलमें ही चार महीने बीत गये और अन्तमें पचासों हजार आदमियों-

को मरवा कैदी बनवा उलटे पाँव बर्मामें भाग जाना पड़ा। अब हिन्दुस्तानी, अंगरेजी और अमेरिकन फौजें बर्मामें घुस गई हैं। उधर चीनी और अमेरिकन फौजें मेतकिना और रेलके कितने ही इसटेसनोंको जापानसे छीन चुकी हैं, सैकड़ों टापू अमेरिकनोंने जापानियोंसे छीन लिए। और अब तो रोज ही जापानके अपने शहरोंपर अमेरिकन हवाई जहाजोंके बम गिर रहे हैं।

दुखराम—कलकत्तामें हमारे भाई बहिनोंको जापानी गुंडोंने बम गिराके मारा था, उसका खूब बदला लिया जा रहा है भैया?

भैया—खूब बदला लिया जा रहा है दुक्खू भाई! मैं तो समझता हूँ कि वहाँवाले बहुत पछताते होंगे। जापानके मकान अधिकतर लकड़ीके होते हैं। ईंट-चूना, मट्टी-सीमेन्टकी दीवारें वहाँ बहुत कम होती हैं।

दुखराम—तब तो भैया, महल्लेके-महल्ले होलीकी तरह धायँ-धायँ जलते होंगे?

भैया—हाँ, इसका बहुत अफसोस है, लेकिन इस सारे पापकी जिम्मेवारी जापानी जागीरदारों और पूँजीपतियोंके सिरपर है। पूँजीपतियोंको करोड़से संतोस नहीं हुआ वे अरबपती बनना चाहते थे। जापानी जागीरदार भी जरमनीकी तरह ही फौजोंके मालिक हैं, बड़े-बड़े अफसर जागीरदारोंके लड़के हैं। वह कहते हैं, बाकी सारी दुनिया तो आदमियोंसे पैदा हुई, लेकिन हम ही हैं जो सूरजदेवीसे पैदा हुए।

सन्तोखी—सूरज देवता कि सूरजदेवी?

भैया—हाँ, वह सूरजको सूरजदेवी ही कहते हैं और अपनेको बेबापसे पैदा हुआ मानते हैं। हिटलरने कहा था, कि भगवानने जर्मन जातिको दुनिया-पर राज करनेके लिए भेजा है, और जापानी फसिहा अपने को सूरजदेवीका पुत्र कहकर सारी दुनियाको गुलाम बनाना चाहते हैं। लेकिन हिटलरकी तरह उनका भी मनसूबा मनका मन हीमें रह गया।

दुखराम—मरकस बाबाकी सिच्छा वहाँ पहुँची कि नहीं भैया?

भैया—पहुँची है दुखराम भाई, लेकिन कमूनिस्तोंके खूनसे वहाँकी जोंकों-ने खूब अपना हाथ रँगा है। पिछली लड़ाईके बाद तो एक-एक बार छ-छ

सात-सात हजार तक मरकस बाबाके पन्थके माननेवाले जेलमें ठूसे गये थे। लेकिन वहाँ नफा तो बेसी जाता है पूँजीपतियोंके पेटमें, लेकिन जोर ज्यादा है तालुकदारों और उनके लड़कोंका; क्योंकि पलटनके वही मालिक हैं।

दुखराम—भैया, वहाँ बड़ी पंचायत है कि नहीं और मेम्बर वोटसे चुने जाते हैं या कैसे?

भैया—है नामकी बड़ी पंचायत और वोट भी लिया जाता है, लेकिन जापान बड़ा निलज्ज जोंक-देस है। सहरोंमें जैसे हमारे यहाँ गुन्डे रहते आये हैं न?

दुखराम—जोंक-गुन्डे भैया!

भैया—जोंक-गुन्डे नहीं भाई, लाठी-छुरा चलानेवाले गुंडे। वैसे गुन्डे जापानमें बहुत जबरजस्त होते हैं। एक गुंडेके पास तो कई हवाई जहाज थे।

सोहनलाल—अमेरिकामें भी सुनते हैं कि ऐसे गुंडे होते हैं?

भैया—हाँ, अमेरिकामें भी होते हैं। लेकिन जापानमें ऐसे गुंडोंकी जैसी इज्जत होती है वैसी वहाँ नहीं होती।

सोहनलाल—जापानमें राजाको, सुनते हैं, देवता मानते हैं।

भैया—कमेरोंकी आँखोंमें धूल झोंकनेके लिए जोंकें न जाने कितने नाटक करती हैं। किसानों-मजूरोंको तो यही कहकर बेवकूफ बनाया जाता है, कि सूरजदेवीका अपना खून तेन्नोके देहमें है।

दुखराम—तेन्नो क्या है भैया!

भैया—जापानके राजा या मिकादोको तेन्नो कहा जाता है। तेन्नोका जिधर महल है उधर पैर करके नहीं सोया जाता। जोंकोंका इसीमें फायदा है कि लोग उल्लू बनें और तेन्नोको दुनिया भरके ऊपर समझें। कहा जाता है कि ढाई हजार बरससे जापानमें एक ही राजवंश राज कर रहा है। किताबोंमें यही बात छपने पाती है; लेकिन यह बात झूठी है। तेन्नो जरूर बहुत जबर्जस्त धनी है। जापानका वह सबसे भारी जिमीदार है और कारखानोंमें भी उसका बहुत बड़ा हिस्सा है। आज कलके तेन्नोके दादा—मेइजी तेन्नो—के समय जब गोरोंने जापानियोंको ठोकरपर ठोकर लगाई, तो वहाँके नवाबोंको

होस आया कि जैसे गोरे बनियोंने एसियाके और मुलकोंको गुलाम बना लिया है, वैसे हमें भी बना लेंगे।

सन्तोखी—इस वास्ते वह सजग हो गये ?

भैया—हाँ, सजग हुए। गोरोंसे हथियार चलानेकी विद्दा पढ़ी। कारखाना चलानेकी विद्दा पढ़ी। जमीदारोंने लेकिन राज काजअपने हाथमें रखा। इतना जरूर किया कि जहाँ पहिले कई पीढ़ियोंसे तेन्नो लोग तोकूगावा तालुकदार वंस के कैदी थे, उन्हें औरतोंकी तरह परदेमें रहना पड़ता था; अब तोकूगावा सोंगुनके हाथमें तागत नहीं रही। पहिले जिमीदारोंके हाथ हीमें सब कुछ रहा; पीछे मितसूई, मितसीवीसी जैसे करोड़पति पूँजीपति आगे बढ़े, लेकिन् तालुकदारोंके ही हाथमें सेना होनेसे, उनका जोर घटा नहीं और मेजी तेन्नोका लड़का आजकलके तेन्नोका बाप तो पागल था।

दुखराम—पागल कैसा भैया ?

भैया पागल जैसे पागलखानेमें होते हैं।

दुखराम—पागलके लड़के तो पागल हुआ करते हैं।

भैया—जब माँ भी पागल हो तब, नहीं तो दो चार पीढ़ी पागलपन नहीं भी दिखाई दे सकता है।

सोहनलाल—जापानने पहिले-पहल रूस जैसी गोरी जातिको हराया था, इसके लिए सभी काले लोगोंको गरब हुआ था, कि कमसे कम एक काले (एसियाई) देसने तो गोरोंके गालपर चपत लगायी।

भैया—पहिली बात तो यह कि गोरोंमें भी दो जाति हैं, एक कमेरोंकी, दूसरी जोंकोंकी। जब बिलायती जोंकें पागल बनाकर हमसे अपने मतलबका काम करा सकती हैं, तो अपने यहाँके कमेरोंकी आँखमें धूल झोंके, इसमें सक ही क्या। इसलिए एकोरसे सारे गोरोंको दोसी नहीं बनाना चाहिए, पाप-जुलुम सब कुछ जोंकें करती हैं। रूसकी वही जोंकें थीं, जिन्होंने चीनको हड़पने-के लिए जब कदम आगे बढ़ाया, तो जापानकी जोंकोंसे उनकी मुठभेड़ हो गई। रूसमें वह जोंकें खतम हो गईं। जापानमें अब भी वही जोंकें राज कर रही हैं। काले लोगोंको गरब होना ही चाहिए। लेकिन चीनियोंको कमी

गरब नहीं हुआ।

सोहनलाल—पड़ोसी होनेसे चीनियोंने जापानियोंको नहीं समझ पाया ?

भैया—पड़ोसी होनेसे चीनियोंने ज्यादा समझ पाया, यह कहना चाहिए सोहन भाई! क्योंकि जापानियोंने पहिले चीनियोंपर ही हाथ साफ किया, चीन-की ही तुक्का-बोटी की। चीन ५० बरससे जापानियोंकी मार खा रहा है।

सोहनलाल—यह बात तुम्हारी ठीक है भैया! जापानसे काले लोग बहुत उम्मेद रखते थे, लेकिन स्वार्थी होनेमें वह गोरोंका भी कान काटने लगा। कोरियाके साथ भी उसने खूनकी होली खेली। चीनको भी बराबर टुकड़े-टुकड़े करके निगलता गया। लेकिन चीन, जहाँ चौआलीस करोड़ आदमी बसते हैं, उसमें भी कोई बात होगी, तभी तो छ करोड़की बस्तीवाले जापानी उसे नोच कर खा रहे हैं।

भैया—यह बात ठीक पूछी सोहन भाई! लोग जालिम-अत्याचारीको दोसी बनाते हैं और उसे गाली-सराप देते हैं। लेकिन यह बिलकुल बेकार बात है, क्योंकि एक ओर जालिमको कुछ लोग गाली देते हैं और दूसरी ओर कितने ही आदमी उन्हें बीर बनाते हैं। सबसे बेसी दोसी तो उसे कहना चाहिए, जिसकी कमजोरीके कारन जालिम ऐसा कर पाता है। हम अंगरेजोंको भला-बुरा कहते हैं, लेकिन अपनेको भला-बुरा नहीं कहते। हम चालीस करोड़ हैं, लेकिन चार करोड़ इंग्लैण्डकी मुट्ठी भर जोंकें हमारे ऊपर राज कर रही हैं। इसका कारन यही है कि हमारे यहाँकी जोंकें अपने कमेरोंके खून चूसनेमें इतने नीचे तक गिर गई थीं और आपसमें एक दूसरेकी इतनी दुसमन और अन्धी हो गई, कि वह समयपर न चेतीं। चीनकी भी जोंकें बड़ी नीच निकलीं। छोटी जोंकें बड़ी जोंकको देखना नहीं चाहतीं, क्योंकि उसके पेटके लिए ज्यादा खूनकी जरूरत है। लेकिन बड़ी जोंक जब हटती है, तो फिर छोटी जोंकें बड़ी बनना चाहती हैं। ३३ साल पहले (१६११) चीनियोंने अपने यहाँकी सबसे बड़ी जोंक राजाको गद्दीसे उतार दिया और पंचायती राज कायम किया। पंचायती राज कायम हो जानेपर जमीदारों और बनियोंने—चीनमें जमीदार और बनिया एक ही आदमी होते हैं—सारे चीनके कमेरोंको चूसनेके लिए

उन्हें दबा रखनेके लिए कोई कसर उठा नहीं रखी। जो किसी सूबेका लाट बनाया जाता, वह अपनेको वहाँका राजा समझता। घूस-रिसवतका बाजार गरम हो जाता। इसके लिए कमेरोंको लूटनेवाले अफसर सब जगह भर दिये जाते। एक-एक सूबेके लाट जहाँ इस तरह लोगोंको चूसते वहाँ दूसरी ओर वह एक-दूसरेसे बराबर लड़ा करते। पिछली लड़ाई जब हुई तो गोरी सरकारोंको फँसा देखकर जापानने चीनको निगल जाना चाहा। खैर, वह उतावला बन गया था और निगल नहीं सका। गोरी जोंकें भी चीनको नहीं निगल सकीं, क्योंकि आपसमें लड़ाई हो जानेका डर था।

सन्तोखी—तो चीनके सूबोंका हरेक लाट बादसाह बनना चाहता था?

भैया—हां, और पिछली लड़ाईके बाद जापान और पच्छिमी लुटेरोंने अपनी जीभ और फैलाई। उस वक्त सोवियत रूसकी मददसे चीनके बड़े नेता सुन-यत-सेनने इन लाटोंको खतम करनेका बीड़ा उठाया और वह बहुत कुछ इसे कर भी सके। सुन-यात सेनका साढ़ू चाङ्-कै-सक उसी वक्त आगे बढ़ा। सुनयात-सेन मर गये। चाङ्-कै-सक चीनके बनिया जमींदारके हाथमें बिक गया। सबसे भारी बनिया जिमीदार तो उसकी स्त्रीके भाई सुङ् हैं।

दुखराम—तब तो वहाँ भी भैया बनिया जोंकोंका ही जोर है?

भैय—चीनी बनियोंके पास जमींदारी भी है और वह किसानोंको इतना चूसते हैं कि बेचारोंके देहमें खून नहीं रह जाता और जहाँ कोई सूखा अकाल पड़ा तो हमारे ही देसकी तरह वहाँ भी लाखों किसान मर जाते हैं। और साथ ही इन जिमींदारोंने अपने रुपयोंसे बड़ी-बड़ी मिलें, कारखाने और बैंक भी खोले हैं। सुङ्के खानदानवाले चीनके सबसे बड़े करोड़पति हैं और चाङ्-कै-सक उनकी मुट्ठीमें।

दुखराम—बहनोई हैं, सालोंसे दान-दहेज तो मिलता ही होगा।

भैय—चीनके लोगोंको जब रूसी कमेरोंके राज्यकी बात मालूम हुई तो उन्हें भी ख्याल आया, कि चीनसे भी जोंकोंको बिदा करना चाहिए। चीनमें रंग-बिरंगी जोंकें थीं। गोरे भी थे, जापानी भी थे और स्वदेसी जोंकें भी थीं। इसलिए जोंकोंकी करतूत ज्यादा साफ दिखाई पड़ती थी। चीनमें भी मरकस

बाबाकी सिच्छा गई। हजारों नौजवान मर्द-मेहरारू, किसान-मजूर कमूनिस्त बने। उन्होंने लोगोंमें काम करना सुरू किया। सुन-यात-सेन उनके कामको पसंद करते रहे। लेकिन उनके मरते ही चाङ्-कै-सक नेता बन गया। पलटनका जरनैल था, इसलिए तलवार तो थी ही उसके पास। आजसे १७ बरस पहिले कान्तन सहरमें ४० हजार कमूनिस्तोंका कतल करके उसने अपना काम सुरू किया और उसके बाद १० साल तक लगातार उसका यही काम था। कमेरे जब सजग हो जाते हैं और अपनी लड़ाई लड़ते हैं, तो रकतबीजकी तरह, फिर उन्हें कोई खतम नहीं कर सकता। कमेरोंने किसानोंको समझाया। जिमीदारोंके जुलुमसे तबाह किसान उनकी बात समझने लगे।

दुखराम—क्यों नहीं समझेंगे भैया! मरकस बाबाने जो सिच्छा दी है वह हमारी ही भलाईके लिए है।

भैया—गाँवके गाँव, इलाकेके इलाके मरकस बाबाकी सिच्छा मानने लगे। चीनके बीचो-बीचमें कमूनिस्तोंने मजूरों-किसानोंकी सरकार कायम की, लाखसे ऊपर पलटन तैयार की।

दुखराम—हथियार कहाँसे मिला भैया!

भैया—पाँच तलवारोंने दो बन्दूकें दीं, दो बन्दूकोंने चार बन्दूकें, चारने दस, दसने चालीस, चालीसने दो सौ, दो सौसे हजार, इस तरह हजारों बन्दूकें, तोप, मसीनगन उनके पास चले आए।

दुखराम—छापेमारोंकी तरह किया होगा भैया?

भैया—कमूनिस्त कहते ही हैं, हमारे गोला-बारूदके कारखानेका इंतजाम चाङ्-कै-सक करता है, क्योंकि उसीके सिपाहियोंको मारकर हमें हथियार मिलता है। कितनी ही बार तो चाङ्-कै-सककी पलटन हथियार लिये-दिये कमूनिस्तोंके साथ मिल गई।

दुखराम—वह भी तो भैया, मजूरों-किसानोंके ही लड़के होंगे न?

भैया—गोरी जोंकें चीनमें भी बोलसेविकोंको फैलते देख और भी घबड़ाने लगीं—जो चौवालीस करोड़ चीनी भी बोलसेविक हो गये तो जोंकोंकी नैय्या डूबी समझो। उन्होंने भी चाङ्-कै-सककी मदद की। जापानने चीनसे

मंचूरिया छीन लिया और वह दबाता ही जाता। लेकिन चाङ्-कै-सक जापानको नहीं, कमूनिस्तोंको अपना दुसमन मानता था। भारी पलटन, तोप, हवाई जहाजके साथ कमूनिस्तोंपर उसने हमला किया। पाँच बार तक तो उसका मतलब पूरा नहीं हुआ, लेकिन छठीं बार वह बड़े भारी इंतजामसे चढ़ दौड़ा। जर्मन जरनैल उसको अकल बतलाते थे और अमेरिका-इंग्लैंड हवाई जहाज और तोप देते थे। सोवियत छोड़कर कोई चीनी कमूनिस्तोंका भलाई चाहनेवाला नहीं था। लेकिन, चीनी कमूनिस्त चीनके सरहदवाले सूबोंमें नहीं थे, वह बीचमें समुन्दरमें टापूकी तरह थे।

दुखराम—उनके चारों ओर चङ्-कै-सकका इलाका रहा होगा?

भैया—हाँ, जोंकोंका राज था। छठीं बार कृष्णने मथुरा छोड़ दी और छप्पन करोड़ यदुबंसियोंको साथ लेते हुए।

दुखराम—कमूनिस्त अपने सब आदमियोंके साथ अपनी पुरानी जगहको छोड़ गये, यही न भैया?

भैया—कमूनिस्त पारटीके सबसे बड़े नेता माउ-से-तुङ् और सेनापति चू-तेने एक लाख आदमियोंके साथ अपने पुराने इलाकेको छोड़ उत्तर-पच्छिमका रास्ता लिया। अब वह सोवियत रूसके पड़ोसी इलाकेकी ओर चले। रास्तेमें चाङ्-कै-सककी पलटन और हवाई जहाजोंका मुकाबिला करना पड़ता था। कैसे एक हजार कोस तक वह लड़ते-मरते बढ़ते गए वह बड़ी बहादुरीकी कथा है। लोगोंने हँस-हँसकर जान दी। अन्तमें चालीस हजार आदमी रह गये थे, जब कि माउ-से-तुङ् और चू-तेने नई भूमिपर अड्डा जमाया। चूते अपने एक जरनैलको कुछ हजार जवानोंके साथ, मरकर भी चाङ्-कै-सककी पलटनको रोकनेके लिए छोड़ आया था। कई सालों तक समझा जाता था, कि वह सब मर गये होंगे; लेकिन जापानी लड़ाईसे कुछ समय पहिले पता लगा, कि वह एक लाख सिपाहियोंकी एक नई पलटनके रूपमें अब भी जिन्दा हैं।

दुखराम—तो भैया, सचमुच ही कमूनिस्त रक्तबीज हैं, उनके खूनकी एक बूंद गिरनेसे दस कमूनिस्त पैदा होते हैं।

मैया—यह तागत उनमें कहाँसे आती है दुक्खू भाई ? यह तागत उन्हें मजूरों-किसानोंसे मिलती है। कमेरे अमर हैं, इसीलिए उनकी पलटन लाल सेना भी अमर है। एक सिपाही मरता है, तो किसानों-मजूरोंके नये दस लड़के उसकी जगह पर आ जाते हैं। और कमूनिस्तोंके छिपानेके लिए तो चीनके किसानोंका हरेक घर, हरेक कोठा, हरेक बखार तैयार था। नई जगह आकर भी माउ-से-तुङ्ने किसानों-मजूरोंको मरकस बाबाका मन्तर दिया। गाँव के गाँव जोंकोंसे खाली हो गये। किसानोंके देहमें खून लहराने लगा। फिर लाल पलटन मजबूत हुई। चाङ्-कै-सक जिस तरह जापानियोंके सामने घुटने टेक रहा था, उसके कारन उसके अपने पिट्ठू जरनैल भी नाराज थे, उन्होंने चाङ्-कै-सकको पकड़कर कैद कर लिया। कमूनिस्तोंने समझा बुझाकर चाङ्की जान बचाई। चाङ्ने परतिग्या की, कि मैं जापानी फसिहोंसे लड़ूंगा।

दुखराम—मैया जब कमूनिस्तोंने मथुरा छोड़ द्वारिकाका रास्ता लिया होगा तो चीनी जोंकें बहुत खुस हुई होंगी, समझती होंगी—अच्छा हुआ मैदान छोड़ गये।

मैया—लेकिन कमूनिस्त पहिलेसे भी ज्यादा मजबूत हैं। आज उनकी पाँच लाखकी जबर्जस्त पलटन है, उसके साथ साठ लाख छापामार फौज है, और दस करोड़ किसान-मजूर उनके बताये रास्तेपर चलते हैं।

दुखराम—तो चाङ्-कै-सक बहुत घबराता होगा मैया ?

मैया—जोंकोंका सरदार है, क्यों नहीं घबरायेगा ? अपनी पाँच लाख सधी हुई पलटनको कमूनिस्त इलाका घेरनेके लिए रख छोड़ा है। इसे अमेरिकावाले भी बुरा मान रहे हैं। अमेरिका-इंगलैंडसे जो हथियार चीनको दिया जाता है, उसमेंसे एक हथियारको भी चाङ्-कै-सक कमूनिस्तोंको नहीं देना चाहता।

दुखराम—जापानियोंके साथ लड़ते तो होंगे ज्यादा कमूनिस्त ही मैया ?

मैया—चीनमें जापानियोंकी जितनी पलटन है, उसमेंसे आधीके साथ कमूनिस्त ही लोहा ले रहे हैं। रूस जब लड़ाईमें नहीं आया था, तो वहाँसे भी कुछ हथियार मिल जाता था, लेकिन अब तो जापानी पलटनको मारकर

ही हथियार पाते हैं। और, जापानियोंने बहुत कृपा की है, इसके लिए चू-ते उन्हें धन्न-धन्न कहता है। जो चाङ्-कै-सक और उसके साथी जोंकोंने कम्-निस्तोंके साथ मिलकर जापानियोंका पूरा मुकाबिला किया होता, तो जापानी इतना दूर तक भीतर न घुस पाते। चाङ्-कैसे-सक दुबिधामें पड़ गया है—जो जापानसे मेल करता है, तो इंगलैंड-अमेरिका दुसमन बन जाते हैं और फिर तीतोकी तरह सिर्फ कम्निस्त ही जापानियोंके साथ लड़नेवाले रह जायँगे। तब चीनी लोग भी, जो जापानके साथ लड़ना चाहते हैं, कम्निस्तोंकी ओर हो जायेंगे, और इंगलैंड-अमेरिका भी जापानसे लड़नेके लिए सारी मदद उन्हीं-को देंगे। जापान बार-बार लोभ देता है कि बोलसेविकोंसे चीनको बचानेके लिए हमारे भाई बन जाओ। चाङ्-कै-सकका पुराना दोसत वाङ्-चिङ्-वेइ जापानके साथ पहले ही मिल चुका है। चङ्-कै-सककी दसा सांप छुछूंदरकी है। उसने तो शायद कम्निस्तोंपर चढ़ाई भी सुरू कर दी होती; लेकिन इंगलैंड-अमेरिकाके नाराज होनेसे डरता है और यह भी जानता है कि कम्-निस्त मिट्टीके पुतले नहीं हैं।

सोहनलाल—तो इसका अर्थ यह हुआ भैया, कि चीनकी भीतरी जो हालत है, उससे जापान हीको फायदा है।

भैया–फायदा जरूर है, लेकिन मैंने कहा न, कि हिटलरके खतम होते ही इंगलैंड-अमेरिकाकी सारी फौज जापानसे भिड़ जायेंगी, फिर जापान बहुत दिनों तक उनके सामने नहीं टिक सकता।

दुखराम—लेकिन भैया, आपने जापानके सवालको बहुत मुसकिल भी कहा था।

भैया—मुस्किल कहता हूँ। जहाँ तक तलवारका बल है, उससे तो जापान देर तक मुकाबिला नहीं कर सकता, लेकिन जापान उस वक्त राजनीतिका खेल खेल सकता है।

दुखराम—राजनीतिका क्या खेल खेलेगा भैया ?

भैया—जापानसे लड़ रहे हैं अमेरिका, इंगलैंड और चीन।

दुखराम सोवियत जापानसे नहीं लड़ रहा है भैया ?

भैया—बाहरसे नहीं लड़ रहा है, लेकिन जापान भी बोलसेविकोंका अपनेको सबसे बड़ा दुसमन मानता है और मुसोलिनी-हिटलरके फसिहा गुट्टका है।

दुखराम—तो अपनी गुट्टको बचानेके लिए उसने लाल फौजपर क्यों नहीं हमला कर दिया?

भैया— दो बार पन्द्रह-बीस-बीस हजार आदमियोंको मरवाकर उसने लाल-तलवार का मजा चख लिया। जापानके लकडीके सहर लाल हवाई जहाजोंके आधे घंटेके ही बमके रास्तेमें हैं। वह समझता है कि जो रूससे छेड़खानी सुरू की, तो जापान लङ्का बन जायेगा और जलकर खाक हो जायगा। मंचूरिया और कोरियामें जापान और सोवियतकी फौजें आमने-सामने खड़ी हैं, लेकिन बेचारा चुपचाप बैठा है।

दुखराम—तो भैया! चुपचाप बैठके जापानने बुद्धिमानी ही की है?

भैया—हाँ, जापानी फसिहा हिटलरके हारने पर दूसरी चाल चलेंगे। वह चीनसे कहेंगे, कि लो हम तुम्हारी अंगुल-अंगुल धरती छोड़ देते हैं और अपनी सारी फौज लौटा लेते हैं।

दुखराम—फिर चीन तो इसे पसन्द ही करेगा।

भैया—पसंद करनेका एक और भी कारन है, बिलायतकी जोंकोंने चीनके कई बन्दरगाहोंको अपने कबजेमें कर लिया था, हांगकांग इसी तरहका एक बड़ा बन्दर है। चर्चिल-अमरी इस लड़ाईके बाद भी हांग-कांगको अपने हाथमें रखना चाहते हैं। चीनी इसको बिलकुल नहीं पसन्द करते। फिर जापान कहेगा कि हम फिलिपाइन, बोर्नियो, जावा, सुमात्रा, सिङ्गापुर, मलाया, बर्मा सबको खाली कर देंगे, लेकिन इन देसोंके लोगोंको यह देस मिलने चाहिएँ।

सोहनलाल—लेकिन अमरीका, हालैंड और इंगलैंड क्या इस बातको मान लेंगे? और क्या जापान भी अपने जीते राजको इस तरह छोड़ देगा।

भैया—जापान ऐसा क्यों करेगा, इसीलिए कि उसका सरबस जा रहा है। जापानकी अपनी भूमिपर भी अँगरेज, अमेरिकन फौजें चली जायँगी; फिर वहाँकी जोंकों—जागीरदारों-पूँजीपतियों—का तो सरबनास हो जायगा।

जापानी जाति सारीकी सारी नहीं मर जायगी; यह बात पक्की है। इसीलिए जापानी जोंकें अपना घर भर बचा लेनेके लिए सब कुछ करनेके लिए तैयार होंगी। और दूसरे सवालका जवाब यह है—फिलिपाइनको अमेरिका खुद ही आजाद करना चाहता है। अमेरिकाके पास अपनी ही धरती बहुत है, वह दूसरेकी धरती नहीं लेना चाहता, इसके साथ ही अमेरिकाका एक बहुत बड़ा स्वारथ है, दुनिया भरमें उसका व्यौपार बढ़े और वह व्यौपारसे नफा कमाये।

सोहनलाल—अंगरेज भी तो वही चाहते हैं?

भैया—अंगरेज व्यापार ही नहीं चाहते बल्कि वह अपने गुलाम देसोंको भी हाथमें रखना चाहते हैं। वह समझते हैं कि जो देसोंको छोड़ दिया तो अमेरिका और दूसरे मुलुक भी अपना माल वहाँ बेचने लगेंगे, और मुकाबिले-में हम ठट नहीं सकेंगे।

सन्तोखी—क्यों नहीं ठट सकेंगे भैया?

भैया—अंगरेज पचीस-पचीस साल पहिलेकी मसीनोंको अपने कारखानों-में रखते हैं। मसीनोंमें हर साल नया-नया सुधार होता जाता है। जिस मसीनमें पहिले दस आदमी लगते थे, अब दो ही आदमीसे उसपर काम कर सकते हैं।

सन्तोखी—तो मजूरी कम देनी पड़ेगी, माल सस्तेमें बनेगा और नफा ज्यादा होगा।

भैया—यह सब तो होगा लेकिन लाखोंकी मसीनें जो कारखानेमें बैठाई गई हैं उन्हें भी उखाड़ फेंकना होगा। फिर लाख और खर्च करके नई मसीनें बैठानी पड़ेंगी। इसीलिये बिलायतके पूँजीपतियोंके कारखाने उतने नये नहीं होते। उनकी चीजें उतनी सस्ती तैयार नहीं होतीं। जो हिन्दुस्तान और दूसरे मुलकोंको बिलायती जोंकें छोड़ दें, तो लोग उनके महँगे मालको लेंगे या अमेरिकाके सस्ते मालको?

सन्तोखी—फिर तो अमेरिका भी नहीं चाहेगा कि अंगरेज दुनियाके चौथाई हिस्सेको गुलाम बनाकर रखें।

भैया—यह तो है। और जोंकोंके स्वारथका आपसमें बहुत भारी झगड़ा है। इससे यह भी मालूम हो गया न कि इंगलैंड, अमेरिका और चीन जापानसे लड़ रहे हैं, लेकिन उनमें तीनोंका तीन स्वारथ है। चीन अपनी सारी भूमिको आजाद कराना चाहता है और यह भी चाहता है कि जापानसे उसको डर न रह जाय। अमेरिका चाहता है, कि जापान इतना कमजोर हो जाय कि, फिर प्रसांत महासागरमें वह ऊधम न मचा सके; साथ ही यह भी चाहता है कि वह बेरोक-टोक दुनियामें अपना माल बेचे। जो जापानको खदेड़कर उसकी माँदमें घुसा दिया जाता है और पच्छिममें चीन, उत्तरमें सोवियत और पूरबमें अमरीकाकी मजबूत सेना तैयार रहती है, साथ ही जापानके तालुकदारों और पूँजीपतियोंकी कमर तोड़ दी जाती हैं; तो पचीसों बरसके लिए जापान खड़ा नहीं हो सकता। अंगरेज ही हैं जो चाहते हैं कि बेरोक-टोक रोजगार भी करें; हिन्दुस्तान, बर्मा, हांगकांगको गुलाम भी बनाकर रखें। अकेले अंगरेज जापानसे लड़कर पार नहीं पा सकते। अमरीका और चीन अंगरेजोंकी गुलामीको मजबूत करनेके लिए क्या तब भी अपने लाखों आदमियोंको मरवायेंगे, जब जापान बिना लड़े ही इन मुल्कोंको छोड़ देना चाहेगा? सिरिफ इस सूर पर कि सब मुल्क आजाद मान लिये जायँ और व्यापार करनेमें किसीको कोई बाधा न रहे।

सोहनलाल—अँगरेजी जोंकें बड़ी काइयाँ हैं भैया! वह जरूर दूसरोंको फँसा लेंगी।

भैया—काइयाँ हैं, लेकिन उसीको फँसा सकती हैं जिसका स्वारथ इनके स्वारथसे मेल खाता है और जापान अपनी इच्छाके लिये इतनी दूर जायगा जरूर लेकिन जो बात नहीं मानी, गई तो मरते दम तक लड़ेगा। जापानी जोंकोंके लिए अपने चालीस-पचास लाख लोगोंको मरवा देना कोई बात नहीं, यह अमेरिकन मन्त्री[१] भी जानते हैं।

---

१. Mr. James V. Forrestal, Secretary of the United States (Navy Today 22nd August. 1944) said, "we are apt to assume that the Japanese will crumble when the Germans are beaten

सोहनलाल—तो भैया जरूर मामला उतना आसान नहीं है ?

भैया—अमेरिका, इंग्लैंड और चीन के साथ अकेला लड़नेकी तागत जापानमें नहीं है। यह बात साफ है, लड़नेका मतलब दस बीस लाख आदमी अपने मरवाना और दस-बीस लाख दूसरेके। फिर तीनोंकी फौजें जो जापान-में पहुँच गई, तो सूर्यदेवीके बेटे हिरोहितों तेन्नोंका न कहीं पता लगेगा, न जमीदार जरनैल और उनकी जमीदारी बचेगी, न मोटी तोंदें जीने पायेंगी। दूसरे रास्तेमें सबसे ज्यादा इनकार अंगरेज करेंगे, और जापानी जोंकें यह भी विस्वास करेंगी कि सायद उनकी पोंछ बच जाय।

दुखराम—क्या सचमुच जोंकें बच जायेंगी भैया ?

भैया—जब बिल्ली कबूतरके पास पहुँच जाती है दुक्खू भाई ! तब वह आँख मूद लेता है, समझता है, 'मूदहुँ आख कतहुँ कोउ नाहीं"; लेकिन जिन जोंकोंने बीस बरससे न जाने कितने हजार जापानियोंको सड़ा-सड़ा कर मारा। कमूनिस्त और कमेरा राज चाहनेवाले कहकर हजारोंको गोलीसे मारा; उसके बाद पचासों हजार आदमियोंको लड़ाईपर ले जाकर मरवाया। उन्हें जापानी मजूर-किसान फिर अपना सिरताज बनायेंगे, इसमें बहुत सक है। अभी ही अपनी जोंकोंके पंजेसे भागकर आये सैकड़ों कमकर नेता और हजारों सैनिकचीनी कमूनिस्तोंके साथ मिलकर जापानमें क्या करना होगा, इसे पक्का कर रहे हैं।

सोहनलाल—अच्छा यह तो समझमें आया कि हिटलरके हारनेके बाद जापानकी हार निहचय है, लेकिन वह कैसे होगी इसके बारेमें अभी कोई बात पक्की तौरसे नहीं कही जा सकती।

भैया—लेकिन मुमकिन ज्यादा यही है, कि चर्चिलकी चौकड़ी भूल जाय और दुनियाका गुलाम रखनेके उसके जितने मनसूबे हैं, वह धूलमें मिल जायँ।

---

and say 'we have lost the war'. With the Japnese we are deal-with a religion and not with rational man. They will fight with greater savagery as we get closer in

Reuter London, August 22, 1944

सोहनलाल—अच्छा इस लड़ाईके बाद चीन और जापानमें जोंकोंकी क्या हालत होगी ? क्या वहाँ कमेरोंका राज कायम होगा ?

भैया—यह बात किसी झूठे जोतिसीसे पूछो, सोहन भाई ! मैं इतना ही कह सकता हूँ कि जापानमें बड़ी-बड़ी जोंकों, बड़े-बड़े जिमीदारोंका फिर दिन नहीं लौटेगा। चीनके कम्‌निस्त और ज्यादा मजबूत होंगे और हिटलरके हारते ही उन्हें सोवियतसे बहुत ज्यादा हथियार मिलेगा।

सोहनलाल—लेकिन सोवियत और जापानकी तो आपसमें कोई लड़ाई नहीं है।

भैया—दोनों एक दूसरेके ऊपर हथियार नहीं चला रहें हैं यह बात ठीक है। लेकिन, जापान बोलिसेविकोंके खिलाफ फसिहा-गुट्टमें उसी तरह मुस्तैदीसे काम करनेकी बात करता है। सोवियतने भी इसका अच्छा जवाब दिया। जब जरमनीसे उसकी लड़ाई नहीं थी, तो चीनको सबसे ज्यादा हथियार सोवियत सरकार ही देती थी।

सोहनलाल—तो मुझे मालूम होता है, सारे चीनपर भी एक दिन लाल झंडा ही फहरायेगा।

भैया—जिन दस करोड़ चीनियोंने कम्‌निस्तोंको अपना अगुआ बना लिया, वह तो लाल झँडेको छोड़नेवाले नहीं, बाकी चौंतीस करोड़में किसानों और मजूरोंकी नजर सदा उसी लाल झंडेकी ओर रहेगी। चाङ्-कै-सक उन दस करोड़ोंको कुचल डालनेकी अब कभी आसा नहीं रख सकता, और चीनकी सारो जोंकें मिलकर बहुत सालों तक उन चौंतीस करोड़ चीनियोंका खून नहीं चूस सकतीं।

सोहनलाल—और हिन्तुस्तानका क्या बनेगा भैया ! हिन्दुस्तानके बारेमें तो सोवियतवाले कुछ भी नहीं बोलते।

भैया—न बोलनेके वक्त सोवियतवाले नहीं बोला करते, लेकिन बोलनेके वक्त वह इतना जोरसे बोलने लगते हैं, कि कानका परदा फटने लगता है।

सोहनलाल—अब तो कुछ-कुछ मुँह खोलने लगे भैया ! सोवियतके अखबार अब हिन्दुस्तानके लोगोंकी आजादीकी माँगके बारेमें लिखने लगे हैं,

जोर भी देने लगे हैं।

भैया—और बिलायती जोंकें घबराने भी लगीं हैं सोहन भाई! चर्चिल हिटलरके बलको बढ़ते देखकर सोवियतपर फेंके थूकको चाटने नहीं तो रुमाल-से पोंछने जरूर लगा था। और अब तो वह साफ कहता है कि लाल फौज न होती तो इंग्लैंड न बचता। लेकिन बिलायतकी बड़ी-बड़ी जोंकोंमें चर्चिल की उतनी नहीं चलती, जितनी कि हेलीफेक्स, साइमन, होरकी चलती है। यही लोग थे, जिन्होंने हिटलरको आगे बढ़ाया, चेकोस्लावाकियाका हाथ-पैर बाँध कर उसे सौंप दिया। ये हमेसासे और आज भी सावियतके जबर्जस्त दुसमन रहे हैं। उनको कोई मौका मिलना चाहिये और सोवियतके खिलाफ जहर उगलनेके लिए तैयार। जब सोवियतको जर्मनीके हमलोंके मारे पीछे हटना पड़ रहा था, जब उसके ऊपर भारी संकट आया; उस बखत हिन्दुस्तानके बारेमें जो वह कुछ बोलते तो हेलीफॉक्स-होरकी बन आती। वह हल्ला करने लगते, कि देखो फिर बोलसेविकोंने हमारे राजको नुकसान पहुँचानेका काम सुरू किया! अब लाल सेना जर्मनीके भीतर लड़ रही है, हिटलरके पिट्ठू रूमानियासे भी फसिहा गुन्डोंको भगा रही है, यही कारन है जो अब सोवियतवाले हिन्दुस्तानके बारेमें कुछ बोलने लगे हैं, आगे वे और बोलेंगे।

सोहनलाल—लेकिन स्तालिनने तो चर्चिलसे बीस सालके लिए सुलहनामा कर लिया है कि वह अंगरेजी राजके भीतर कोई दखल नहीं देंगे!

भैया—बीस साल क्या स्तालिन तो सौ सालके लिए भी सुलहनामा कर सकते हैं, क्योंकि उनका यह विस्वास नहीं है कि कमूनिस्त पन्थको तलवारके बलसे किसी मुल्कपर लादा जा सकता है। यह लादनेकी चीज ही नहीं, इसे तो किसान-मजूर खुद समझकर अपने देसमें फैला सकते हैं, अपना राज कायम कर सकते हैं। लेकिन उस बीस सालके सुलहनामका खास मतलब क्या है? संसारमें सान्ति रहे फिर लड़ाई न होवे। और, बिलायती जोंकें जो संसारमें फिर लड़ाईका बीज बोने लगीं, तो आप जानते हैं, कि स्तालिनने अपने हाथ-पैरको बाँधकर उनके हाथमें दे नहीं दिया है।

सोहनलाल—यह तो बात कुछ-कुछ अब झलकने लगी है भैया ! अभी बाइस अगस्त (१६४४)को ही अमेरिका गये सोवियत राजदूतने दुनियाकी सान्ति सभामें बोलते हुए कहा—(दुनियाकी) आजादी और मुक्ति तभी हो सकती है, जब कि आगे संसारमें सान्ति कायम करनेवाली सभाके सभी मेम्बर (देस) अपनी सारी सक्ति इसके लिए लगा दें। इस सभाको आजादी चाहनेवाले सभी देसोंको बिलकुल स्वतन्त्र और बराबर मानके कायम करना होगा।

भैया—स्तालिनको बीस सालके सुलहनामेके तोड़नेकी जरूरत नहीं पड़ेगी, लेकिन क्या बिलायती जोंकें दुनियाकी सान्तिके लिए लिखे गये इस सुलहनामे-को माननेके लिए तैयार होंगी ? क्या वह हिन्दुस्तान ऐसे आजादी चाहनेवाले देसको बिलकुल आजाद माननेके लिए तैयार होंगी ?

सोहनलाल—वह कितनी तैयार हैं, यह तो चर्चिल-अमरीके कामसे ही पता चल जाता है। और जो कुछ कोर-कसर रही है बेवल साहबने गांधीजीके पत्रमें कर दिया है।

भैया - दुनियामें अगर फिर तीसरी लड़ाई होगी तो, उसकी सबसे ज्यादा जिम्मेवारी बिलायती जोंकोंके ऊपर होगी। जो बिलायती मजूरोंने अपन जोंकोंको नहीं उखाड़ फेंका, तो इसके लिए उन्हें बहुत पछताना पड़ेगा। आज तकके दो महाभारतोंकी तरह उस तीसरे महाभारतमें उन्हींके लड़के सबसे ज्यादा मरेंगे, ये अब वह भी समझने लगे हैं। और इस बातको बिलाइती जोंकें

---

१. "Addressing the delegates the world security conference at Dumburton Oaks M. Gromyko, the Soviet Ambassador in Washington said that freedom and indepndence could only be served, if thef uture international security organisation used all the resources of its members and primarily of the great powers. The organisation would be based on the sovereign equality of all freedom-loving nations.

—*Reutor Washington 22. August 1944.*

स्तालिनसे नहीं छिपा सकतीं ।

दुखराम—दाई से ढेढ़ (गर्भ) नहीं छिपता ।

भैया—और इसका पता लगते ही सोवियत-सरकार चौकन्नी हो जायगी। उसके चौकन्ने होनेका मतलब है कि यूरपके वे सारे ही देस चौकन्ने हो जायँगे, जो अभी-अभी खूनकी नदी तैरकर पार हुए हैं और जिन्होंने अपने यहाँकी बड़ी जोंकोंको निकाल फेंकनेका निश्चय किया है। सोवियत और बड़ी जोंकोंके बिना जो देस रहेंगे, वह एक राय हो जायँगे, और उनके देसमें तीसरे महाभारतकी छीट नहीं पड़ने पायेंगी, बाकी जोंकोंको ही आपसमें कटना-मरना होगा।

सोहनलाल यह तो हुआ भैया, कि पूरबमें भी, पच्छिममें भी सब जगह बड़ी उथल-पुथल होगी; लेकिन हिन्दुस्तानके बारेमें तो तुमने कहा ही नहीं ?

भैया—उसे कहेंगे कल ।

अध्याय ११

हिन्दुस्तानकी आजादी

सन्तोखी—सोहनलाल ! तुम्हारे आनेसे हम लोगोंका कुछ नुकसान भी हुआ कुछ फ़ायदा भी । नुकसान तो यह हुआ कि भैया जो कुछ कहते हैं, वह पहिलेकी तरह सोलहो आना मेरी समझमें नहीं आता । कौन कौनसे नाम; जिनके कहनेमें जीभ लुटपुटाती है, लेकिन कई बातें तुमने ऐसी खोदके कहवाई है कि हम उन्हें न सुन पाते ।

दुखराम—हाँ सन्तोखी भाई ! थोड़ासा नुकसान तो जरूर होता है ।

भैया—देसोंका नाम तो नकसा देखनेसे ही साफ-साफ समझमें आता है। हमारे लिए बनारस, प्रयाग बिल्कुल परगट है लेकिन फ्रांस-अमेरिकावालोंके लिए वह उसी तरहके बेकार नाम हैं, जैसे हमारे लिए उनके सहरोंके नाम । अच्छा अब चलो हिन्दुस्तानकी आजादीके बारेमें कुछ बात करें । रूस छोड़कर सारी दुनिया नरकमें है और हिन्दुस्तान सबसे बड़े नरकमें है क्योंकि इसके

ऊपर बिलायती जोंकोंकी भी गुलामी है और अपनी भी। लेकिन दुक्खू भाई प्याजका पहले ऊपरका छिलका निकाला जाता है या भीतरका ?

दुखराम – पहिले भैया ऊपरका छिलका छुड़ाया जाता है, तब नीचेका न छुड़ाया जायगा ?

भैया—लेकिन चाकू चलानेमें कुछ नीचेका भी छिलका कट जाता है, तो भी हमें पहिले ऊपरके ही छिलकेके हटानेमें सबसे ज्यादा जोर लगाना पड़ेगा। भीतरके छिलकोंपर भी चोट इसलिए लगानी पड़ती है, कि बिना जमीदारों और पूँजीपतियोंसे टक्कर लिए किसान-मजूर मजबूत भी नहीं होंगे, और न यही समझ पायेंगे कि हम नरकमें इन्हीं जोंकोंके कारन पड़े हैं। हिन्दुस्तान-वालोंने आजसे ८७ बरस पहिले अपने देसको आजाद करनेकी कोसिस की।

सन्तोखी—१८५७के गदरके बखतमें न भैया ?

भैया—और उसीके चार बरस पहिले मरकस बाबाने लिखा था, कि अंगरेज सार्जन, जिन हिन्दुस्तानी सिपाहियोंको अपने कामके लिए कबायद-परेड सिखा रहे हैं, वही सिपाही अपनी आजादीके भी सिपाही बन सकते हैं।

दुखराम—तो बाबाके कहनेके ४ ही साल बाद तो उन्होंने कोसिस की। लेकिन आजादी क्यों नहीं मिली भैया ?

भैया—सिपाहियोंको यह पूरी तौरसे ग्यान न था, कि वह क्या चाहते हैं।

सोहनलाल—पता क्यों नहीं था, वह जानते थे कि हिन्दुस्तानसे अंगरेजी राजको खतम करना है।

भैया—तुम्हारे पास एक पुराना घड़ा है, तुम उसको फोड़ रहे हो, तो क्या तुम्हारा यह जानना काफी है, कि "मैं घड़ेको फोड़ रहा हूँ" या यह भी जानना चाहिए कि इसे फोड़कर मैं किससे पानी पियूँगा।

दुखराम—हाँ भैया, सिर्फ घड़ा फोड़नेसे काम नहीं चलेगा, पानी पीने-का भी इन्तजाम होना चाहिए।

भैया—सिपाही घड़ा फोड़ना चाहते थे, नये घड़ेका उन्हें ख्याल भी नहीं था। उनके नेता थे सड़े-सड़े जमीदार, राजा और नवाब, जिनको लड़ाईकी विद्याका, उस समयके हथियारोंका ग्यान नहीं था। कम्पनीने किसीकी पेन्सन

जपत कर ली थी, किसीका राज छीन लिया था, कोई समझता था कि हम भी छोटे-बड़े राजा-नवाब हो जायेंगे। बस सब इकट्ठा हो गये थे। सिपाहियों-ने बहादुरी की, हिन्दू मुसलमान दोनों जी-जानसे लड़े, लेकिन उनके पास आँख नहीं थीं?

दुखराम—आँख नहीं थी? क्या वह सब अंधे थे?

भैया—पलटनकी आँखें अफसर होते हैं दुक्खू भाई! सौ-सौ पचास-पचास सिपाही अपने मनसे जिधरसे चाहें, लड़ने लगें, तो दुसमन उन्हें जल्दी तबाह कर देगा। पाँचों उगलियाँ बाहरकी ओर खुली हैं, लेकिन हथेलीसे जुड़ी हैं। इसी तरह अलग बिखरे हुए सिपाही तभी मजबूत होते हैं जब हजारों-लाखोंको एकसे एक नत्थी कर दिया जाता। अफसर यह काम करते हैं। दूसरा दोस यह था, कि जो राजा-नवाब उनके अगुआ बने थे, वह लड़ाईके अगुआ होने लायक नहीं थे। और सब सिर्फ अपना-अपना स्वारथ देखते थे। तीसरा दोस यह था कि आम जनता इन विदेसियोंसे लड़नेवाले अपने सिपा-हियोंको अपना नहीं समझती थी।

दुखराम—क्यों भैया, वह हमारे भाई-बंद तो थे ही?

भैया—भाई-बन्द कह देनेसे नहीं काम चलेगा दुक्खू भाई, जब वह गावों और सहरोंको लूटते चलते थे, लोग उनके आनेकी खबर सुनते ही घर-दुआर-की सुध छोड़ भाग निकलते थे, तो कैसे कह सकते हो कि वह भाई-बन्द था।

सोहनलाल—लेकिन लोगोंसे पैसा न लें तो उनका खर्च कैसे चले?

भैया—लेकिन वह डकैत तो नहीं थे, वह अंगरेजोंको इसलिए निकालना चाहते थे, कि लोग ज्यादा सुखी रहें। लोगोंको यह बात अच्छी तरहसे मालूम होती, तो लोग तन-मन-धनसे उनकी मदद करते। इस सबसे यही मालूम होता है कि जो लड़के जान देनेवाले थे, उनको मालूम नहीं था कि वे अंगरेजोंको निकालकर क्या करेंगे, इसीलिए वह जनताको भी नहीं समझा सकते थे—क्यों तुम्हें हमारी मदद करनी चाहिए। हो सकता है जो और कुछ दिन लड़नेका मौका मिला होता तो खुद गलती करके सीखते। लेकिन कुछ बागी राजाओं-नवाबोंको छोड़कर बाकी सारी जोंकें, राजा-महाराजा-नवाब अपने

भाइयोंके खिलाफ अंगरेजोंकी मदद कर रही हैं। बेचारोंको सीखनेका मौका नहीं मिला। कैसे खूनकी नदी बहाकर जुल्म करके उस लड़ाईको दबा दिया गया, यह कहनेकी जरूरत नहीं। और दबा भी बीस सालके लिए।

सन्तोखी—बीस सालके बाद फिर आजादीका ख्याल क्यों आने लगा ?

भैया—हिन्दू समझते थे कि समुन्दर पार जानेपर धरम चला जाता है और दूसरेके हाथका खाना खा लेनेसे आदमी किरिस्तान हो जाता है, इसीलिए हिन्दुस्तानी कुएँके मेंढक रहे। अब एक-एक करके कुछ लोग बिलायत जाने लगे, कितने ही लोग हिन्दुस्तान हीमें अंगरेजी पढ़कर किताबोंसे दुनियाके बारेमें जानने लगे। उन्होंने देखा कि आदमी भेड़ नहीं हैं, राजा भगवानकी ओरसे भेजा नहीं जाता है। बिलायतमें राजा हैं, लेकिन राजका काम देखती है पंचायत—पार्लामेंट। अमेरिकामें तो राजा भी नहीं है, वहाँ पंचायती राज है। अंगरेजोंको अपना राज चलानेके लिए सस्ते क्लर्कों और नौकरोंकी जरूरत है; इसलिए अंगरेजी पढ़ाना जरूरी था, अंगरेजीकी किताबोंके पढ़नेपर साहब बहादुर नंगे दिखाई देने लगते और दुनियाके और देसोंकी बातें पढ़कर उनके दिलमें भी आजादीका ख्याल आने लगता था। कुछ होसियार बिलायती युवकोंने सोचा कि कहीं यह हिन्दुस्तानी हाथसे बहार न हो जायँ। इसलिए उनकी मददसे कांगरेसकी अस्थापना की।

दुखराम—क्या भैया ! बिलायती जोंकोंने कांगरेसको अस्थापित किया ?

भैया—हाँ, गोरे साहबोंने काले साहबोंको बढ़ावा दिया। पचीस साल तक तो कांगरेसमें इन्हीं काले साहबोंका जोर रहा। इनका काम था, सालमें एक बार किसी बड़े सहरमें इकट्ठा होना और हाथ जोड़कर अंगरेजी सरकारसे प्रार्थना करना—"भगवान हमें यह नौकरी दो, हमें वह नौकरी दो।" सिच्छा और बढ़ने लगी। नौकरियाँ कम पड़ने लगीं। लोगोंकी तकलीफ बढ़ गई, धीरे-धीरे गोरे भगवानसे प्रार्थना करनेको बहुतसे लोग बेकार समझने लगे। उनमेंसे कुछ लोगोंने बम-पिस्तौलसे एकाध अंगरेजों या काले अफसरोंको मारा। कुछको फाँसी हुई लोगोंने उनको सहीद कहके सम्मान किया।

दुखराम—उससे कुछ फायदा हुआ कि नहीं भैया ?

भैया—सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि हिन्दुस्तानके नौजवान निरभय होने लगे। मौत उनके लिए घबराहट नहीं प्रेमकी चीज बन गई। बाकी तो मैं कही चुका हूँ कि एक्के-दुक्के अफसरोंके मारनेसे जगह खाली नहीं हो सकती। फिर पिछला (१९१४–१८) महाभारत आया लड़ाईने सारी बाकी दुनियामें उथल-पुथल मचाई। रूसमें कमेरोंका राज कायम हो गया, इसका भी असर पड़ा। दच्छिनी अफ्रीकामें गांधीजी गोरी सरकारसे लड़ चुके थे। लड़ाईके बीचमें वहाँ हिन्दुस्तानी आ गये।

सोहनलाल—गांधीजी जब हिन्दुस्तान आये तो देसकी आजादीके लिए यहाँ कौन-कौन लोग काम कर रहे थे?

भैया—तीन तरहके लोग थे एक तो पुराने ढर्रेके कांगरेसी नेता जिनका काम था सरकारसे प्रार्थना करना, भिच्छा माँगना। वह आजादीके लिए किसी तरहका जोखिम उठानेको तैयार नहीं थे। यह खूब अंगरेजी पढ़े-लिखे होते थे। इनमेंसे बहुत चमड़ेके रङ्गसे मजबूर थे, नहीं तो जहाँ तक बन पड़ता था साहब बहादुरका ठाट-बाट रखते थे। इनमेंसे ज्यादा चलते पुरजेके लोगोंको सरकार कोई नौकरी या पदवी देकर अपनी ओर खींच लेती थी। इनको अगरेजोंकी बातपर विसवास था, कि अंगरेजोंको न्यायसे बड़ा प्रेम है। उन्हें जोंकोंके स्वाभावका पता नहीं था, इसलिए समझते थे कि बिलायती जोंकें किसी दिन अवढरदानी संकरकी तरह हिन्दुस्तानीको निहाल कर देंगी। दूसरी ओर कुछ नौजवान थे, जो समझते थे कि बम-पिस्तौलसे दो-चार सरकारी नौकरोंको मार देनेसे बिलायती जोंकें हिन्दुस्तान छोड़कर चली जायेंगी। तीसरी तरहके लोग थे जो कभी-कभी गरम-गरम लेच्चर दे देते थे और अंगरेजोंको बुरा-भला कहकर कभी-कभी जेल चले जाया करते थे इन तीनों तरहके लोगोंमेंसे किसीको आम जनतासे कोई वास्ता नहीं था। वह समझते थे कि जनता न किसी राजनीतिको समझ सकती है, न निरभय होकर बलिदान कर सकती है, हम नेता ही हिन्दुस्तानका बेड़ा पार कर रहे हैं। गाँधीजी जनताकी ताकतको दक्खिनी अफरीकासी कुछ-कुछ समझने लगे थे। उन्होंने हिन्दुस्तानी कुलियोंको वहाँ देखा था कि वह कैसे लड़ाके हैं। पिछला युद्ध

खतम हो रहा था। युद्धके लिए तो सरकारने भारत-रच्छा कानून बना लिया था, लेकिन युद्धके बाद वह कानून नहीं चल सकता था और वह जानती थी कि लड़ाईके बाद दुनिया भरमें जबर्जस्त उथल-पुथल होगी। रूसमें उन्होंने देख ही लिया था, कि कैसे कमेरोंने जोंकोंको मसल डाला। इसलिए अंगरेजी सरकारने हिन्दुस्तानमें एक ऐसा कानून बनाया, जिससे उथल-पुथल मचानेवालोंको मनमानी सजा दी जाया। बोलक्कड़ लोगोंने इस कानूनका बहुत विरोध किया, लेकिन सरकार क्यों सुने? गांधीजीने इस बखत आगे कदम बढ़ाया और जनताकी तागतको इस काममें लगाया।

सोहनलाल—गांधीजीका यह बहुत बड़ा काम है न भैया?

भैया—बहुत बड़ा काम है। इतना बड़ा काम है, कि जिसके लिए हिन्दुस्तान उन्हें कभी नहीं भूलेगा। जनताकी तागतके सामने अंगरेजी सरकार घबराई! हजारों आदमियोंको जेलमें डाला। लोगोंके दिलसे जेलका डर बिलकुल जाता रहा। सरकारने जो कानून बनाया था, वह रद्दीकी टोकरीमें डाल दिया गया। अब चिन्ता जेल जानेवालोंको नहीं बल्कि चिन्ता थी सरकारको कि इतने लोगोंके रखनेके लिए जेल कहाँसे आयेंगे। गांधीजीने साल भरमें सुराज पानेकी बात कही, जोंकोंके दिलको बदल देनेकी बात कही। लेकिन कोई जादू मन्तर थोड़े ही है कि सालमें सुराज चला आवे।

दुखराम—और जोंकोंका दिल तब न बदले जबकि उनके पास दिल हो।

भैया—गाँधीजीकी लड़ाई बन्द हो गई, लेकिन पहिले हीसे कितने ही नौजवानोंने रूसके कमेरोंकी बात सुनी। मरकस बाबाकी सिच्छाको भी वह पढ़ने लगे। हिन्दुस्तानमें भी उस सिच्छाका बीज पड़ा। अंगरेजी सरकार घबराने लगी कि यह बोलसेविक हिंन्दुस्तानमें कैसे पहुँच गए? उन्होंने डाँगे और दूसरे कमूनिस्तोंपर १६२४में कानपुरमें मुकदमा चलाया और उन्हें चार चार सालकी सजा दी। कमूनिस्त मजूरोंमें काम कर रहे थे। अपने हकके लिए मजूर लड़ने लगे और मजूरी बढ़ाने या किसी मजूरके निकालने पर बड़ी-बड़ी हड़तालें होने लगी। १६२६में ४ लाख मजूरोंने कलकत्ताकी गलियोंमें घूमते हुए। बिलायतसे भेजे साइमन कमीसनका विरोध किया। साइमन्

कमीसन क्या है भैया !

भैया—बिलायती जोंकें बहुत चलाक हैं भाई। जब लोगोंमें ज्यादा असंतोस देखती हैं, तो पाँच-सात आदमियोंकी गुट्टको यह कहकर भेज देती हैं, कि यह लोग जाकर जाँच पड़ताल करेंगे, फिर हम तुम्हारे लिए जरूर कुछ करेंगे। इसीको कमीसन कहते हैं। उस वक्त जो कमीसन आया था, उसका मुखिया था साइमन-जोंकोंका एक छँटा सरदार। इसीलिए उस कमीसनको साइमन कमीसन कहा जाता है। कमूनिस्तोंकी इस तागतको देखकर सरकार और घबराई और देस भरके कोने-कोनेसे गिरफ्तार करके, जोसी अधिकारी, डांगे, आदि उनतिस कमूनिस्तोंपर मेरठमें मुकदमा चलाया।

दुखराम—तो भैया मरकस बाबाकी सिच्छा फैलनेसे बिलायती जोंकें बहुत घबराईं ?

भैया—उतनेसे भी संतोस नहीं हुआ दुक्खू भाई। १६३४में तो सरकारने कानून निकाल दिया कि कमूनिस्त पार्टीमें जो भी जायेगा, उसे जेलमें भेज दिया जायगा। लेकिन मरकस बाबाकी सिच्छा न फूल-सज्जापर सोनेवालोंके लिए और न गोबर-गनेसोंके लिए ही है। वह हवामें सिच्छा नहीं देती, नरक सरगका लोभ भी वहाँ नहीं। जो गरीब हैं, मजूर हैं, रोज तकलीफोंको भुगत रहे हैं, उनको यह सिच्छा बहुत जल्दी समझमें आने लगती है। जनताको इस तरह मैदानमें आते देखकर बिलायती जोंकोंके पेटमें पानी कैसे पचता ? गाँधीजीने कई और सत्याग्रह कराये, लेकिन अब वह पुराने गांधी नहीं थे।

दुखराम—पुराने गांधी और नये गांधी क्या हैं भैया ?

भैया—पुराने गांधीकी परछाईंसे भी जोंकें घबराती थीं, बिलायती ही नहीं हिन्दुस्तानी भी। इसलिए नहीं कि गांधीजी बोलसेविक थे और वह धनिकोंका धन छीनकर पंचायती बना देते। गांधीजीका साथ करनेका मतलब जेहलखाना-जुरमाना था, इसीलिए वह घबराती थीं। लेकिन गांधीजीके "बिलायती माल न छुओ" कहनेसे हिन्दुस्तानी मिलोंका माल खूब बिकने लगा। खूब नफा होने लगी, तो सेठ लोग भी गांधीजीकी आरती उतारने लगे, जमीदार भी दंडवत् करने लगे, और अब गांधीजीने भी बार-बार

कहना सुरू किया, मैं सेठों-जमींदारोंका धन छीनना नहीं चाहता, मैं तो इतना ही चाहता हूँ कि सेठ-जमीदार-किसान-मजूरोंके माँ-बाप बन जायँ।

दुखराम—इसीको कहते हैं भैया, "नँदिया (दूधके बरतन)की साखी बिलाई।"

भैया—यह तो सब कथा पुरानी हो गई दुक्खू भाई! बिलायती जोंकोंने देखा कि कमेरोंका राज रूसमें कमजोर होनेकी जगह और बढ़ता ही जा रही है, मरकस बाबाकी सिच्छा भी दुनियामें फैलती जा रही है, हिन्दुस्तानमें भी उसे दबाया नहीं जा सकता। उधर हिन्दुस्तानी भी सुराज-सुराज कह रहे हैं, अगर कुछ नहीं करेंगे, तो सब हमारे खिलाफ हो जायँगे।

सन्तोखी—बंधक (रेहन) से बूड़ा (बै) हो जायगा।

भैया—इसीलिए उन्होंने कांगरेसको हिन्दुस्तानके कितने ही सूबोंमें सरकार चलानेका काम सौंपा। लेकिन जब यह लड़ाई सुरू हुई और गोरी जोंकोंकी लड़ाईमें बिना पूछे ही हिन्दुस्तानको भी सामिल कर दिया गया, तो कांगरेस-वाले सरकार छोड़कर चले आये। तबसे हिन्दुस्तान चाहता है, कि वह भी अपने घरका मालिक बने। वह इस लड़ाईमें फसिहोंसे लड़नेके लिए पूरी तौरसे तैयार है, लेकिन चर्चिल-अमरीने क्या चाल चली, यह हम बतला आये हैं। हम यह भी कह आये हैं, कि दुनियामें जो कुछ होने जा रहा है, उसके बिधाता चर्चिल-अमरी नहीं हैं। दुनियाका नकसा ऐसे बदलनेवाला है, कि उससे हमारे देसको बहुत मदद मिलेगी। लेकिन मैंने बतलाया था, कि अपनी आजादीके लिए सोलह आनामें चौदह आना काम हमें खुद करना होगा।

सोहनलाल—और हिन्दू-सभावाले भी तो लड़ेंगे।

भैया—रहने दो हिन्दू सभाकी बात।

सोहनलाल सावरकर क्या लड़े नहीं, क्या उन्होंने अपनी जवानी अंगरेजोंके साथ लड़नेमें नहीं बिताई?

भैया—क्या वह अपने बुढ़ापेको अंगरेजोंके राजको मजबूत करनेके लिए नहीं बिता रहे हैं? भाई परमानंदको भी किसी वक्त फांसीकी सजा मिली थी, लेकिन उसका यह मतलब नहीं है, कि वह पुरानी आग बाद भी उनके भीतर

रही। सोहन भाई! अंडमनके काले पानीमें उनकी सारी आग ठंढी हो चुकी। बासी खानेवाला बहादुर नहीं होता। गांधीजी उपवासके कारण मरने जा रहे थे। बड़े लाटके कौंसिलके तीन मेम्बर इस्तीफा देकर चले आये। कानपुरके पूँजीपतियोंके सरदार सर जे० पी० श्रीवास्तव टससे मस नहीं होना चाहते थे। चारों ओरसे खूब झाड़ पड़ रही थी और वीर सावरकर सर जे० पी०से कह रहे थे, कि वहीं डटे रहो। और जिस हिन्दू-सभाके सावरकर नेता हैं, जानते हो उसमें कौन-कौन लोग हैं? अंगरेजोंके एक नम्बरके खुसामदी फलाने राजा फलाने महाराजा। दुक्खू तुम भी तो फलाने राजाको जानते हो, तुम्हारे समधीके गाँवके वही जमींदार हैं।

दुखराम वह भी हिन्दू-सभाका नेता है, जो गरीबोंका खून कच्चा पी जाता है। उसने तो सिपाही-सवार छाँट-छाँट कर गुंडे रखे हैं और एक की डेढ़ मालगुजारी दिये बिना पिंड नहीं छूटता। कभी मोटरका चंदा लगता है, तो कभी हाथी- का। ब्याह बरातके लिए हजारों रुपया वसूल करता है।

भैया—बस हिन्दू-सभामें या तो इसी तरहके गरीबोंके खूनको चूसकर मोटे हुए राजा-महाराजा जिमीदार हैं, या उनके टुकड़ेसे जीनेवाले; क्या जाने दो-चार पागल भी निकल आयें।

दुखराम—तो अब बुढ़ापेमें सावरकर जोकोंके सरदार बनकर अपनी वीरता दिखलाना चाहते हैं?

भैया देखो तो दुक्खू भाई! जोंकें अभी कितने कितने तरहके नाटक खेलती हैं। धरमके नामसे उन्होंने हजारों बरसोंसे पागल कर रखा है, अब "हिन्दू धर्म डूबा" कहकर वह गांधीजीको गाली देने चली हैं।

सोहनलाल—तो भैया! तुम चाहते हो कि हिन्दू अपना धर्म न बचावें?

भैया—जिनको गुलामीसे इतना प्रेम है, वह भारत माताकी कितनी इजत करते हैं, यह तुम खुद समझ सकते हो। भारत मातासे प्रेम हिन्दू ज्यादा करते हैं या मुसल्मान? इसके बारेमें एक बार एक देस भगत मुसल्मानने अच्छा कहा था।

दुखराम— क्या कहा था भैया रजबली?

भैया—कहा था कि हिन्दू तो एक बारके लिए भारत माताकी गोदमें आये हैं। मरनेके बाद कोई ठिकाना नहीं, कि वह फिर भारत भूमिमें आयें। लेकिन मुसल्मान तो यहीं भारत माताकी गोदमें पैदा होता है, मरकर यहीं गाड़ा जायगा और परलय तक भारत माताकी गोदको नहीं छोड़ेगा।

दुखराम—हाँ भैया ! साढ़े तीन हाथकी कबर तो इसी धरतीमें न बनेगी ? तो क्या मुसल्मान दूसरा जन्म नहीं मानते हैं ?

भैया—नहीं, वह एक जनमिया हैं दुक्खू भाई ! मरकर कबरमें पड़े रहेंगे। जब परलय होगी, तो भगवानके सामने जायेंगे। परलयमें तो धरती भी नहीं रह जाती।

दुखराम—तो भारत माता भी नहीं रह जायगी। जो बच्चा माँकी जिन्दगी भर साथ नहीं छोड़ना चाहता, वही माँसे ज्यादा प्रेम करता है भैया, जो अपनेको सरायका मुसाफिर समझता है, वह क्या प्यार करना जानेगा।

भैया—तो दुक्खू भाई, मुसल्मानोंकी भी बाप-दादोंकी कितनी ही पीढ़ी इसी धरतीमें गली है। जो हिन्दुओंके कासी-पराग यहाँ हैं तो मुसल्मानोंके भी अजमेर शरीफ और दूसरे हजारों तीरथ अस्थान हैं, जिनका वह उतना ही सम्मान करते हैं, मेला होता है तो हजारों-लाखों आदमी उर्स (परब) पर जाते हैं।

सोहनलाल—तो हिन्दू क्या बाधा डालते हैं ?

भैया—हिन्दुओंका बरताव। हिन्दुओंने दस करोड़ आदमियोंको चमार, मुसहर, डोम बनाकर उन्हें जानवरसे भी बदतर कर दिया है। कोई जब उनमेंसे मन्दिरमें जाता है, तो कह देते हैं कि पोथीमें इसके खिलाफ लिखा है। पोथियाँ किसने बनाईं ? उन्होंने, जो कहते हैं कि जोंकें भगवानकी ओरसे भेजी गई हैं, जमींदार और सेठ किसानों-मजूरोंको चूसते हैं, तो यह भी वह धरम करते हैं। पहिले जनमका पुन्न है, इसीलिए उनको धन मिला है। लेकिन दुक्खू भाई ! तुम्हें मालूम है न कि जोंकोंके घरमें भगवान सोनेकी बरसा नहीं करते, एक आदमीको धनी बननेके लिये ही निन्नानबे आदमियोंको भूखा मरना पड़ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! सब पोथी-पत्रा जोंकोके फायदेके लिए बना है ।

भैया—अभी १६ बरस पहिले (१६२५ ई०)तक नेपालके हिन्दू-राजमें आदमी खरीदे-बेचे जाते थे और पोथी-पत्रेवाले कहते फिरते थे, कि यह सब भगवानकी पोथीमें लिखा हुआ है ।

दुखराम—तो भैया ! नेपालमें आदमियोंका बेचना-खरीदना कैसे बन्द हुआ ?

भैया—दुनियामें थू-थू होने लगी, इसीलिये । और उसी नेपाल राजकी सावरकर और भाई परमानन्द तारीफ करते नहीं थकते । असल बात है कि जो हिन्दू-हिन्दूके नामपर चिल्लाते हैं, उनमें बहुत ज्यादा अँगरेजोंके खुसामदी हैं और "करन चहत निज प्रभु कर काजा" । रूसमें भी जब जोंकोंका राज था, तो इस तरहके लोग वहाँ भी बराबर झगड़े उठाया करते थे ।

दुखराम—रूसमें भी तो भैया १८२ जाति हैं । वहाँ कैसे रास्ता निकाला गया ?

भैया—वहाँ पहिले ही मान लिया गया, कि कोई जाति दूसरी जातिकी गुलाम नहीं है, जिस जातिकी जो भूमि है, उसका कर्त्ता-धर्ता वही है । इसीलिए एक-एक जातिका एक-एक पंचायती राज बनाया गया है, जहाँके राज-काजको उसी जातिके लोग चलाते हैं । अपनी भूमिमें अपने कर्त्ता-धर्ता होनेसे उनको डर नहीं है, कि दूसरी जाति दबायेगी । इसीलिए एक सौ बयासी जातियोंने मिलकर बीस करोड़ आदमियोंका एक बड़ा पंचायती राज बनाया है । यहाँ भी उसी बातको मान लो तो सारा झगड़ा मिट जाये ।

दुखराम—अखंड हिन्दुस्तान क्या है भैया !

भैया—यही कि हिन्दुस्तान एक है उसे खंड-खंड न करो, लेकिन खंड-खंड करनेका रास्ता तो वही पकड़ रहे हैं, जो मुसल्मानोंको गिनना ही नहीं चाहते । दो भाई हैं उनकी धरतीको किसी दुसमनने दखल कर लिया । किसी तरहसे छोटे भाईको सन्देह हो गया, कि बड़ा भाई समूची धरतीका मालिक अपने बनना चाहता है । बड़ा भाई छोटे भाईसे कहता है, कि चलो दुसमनसे लड़ें । छोटा भाई कहता है कि मैं लड़नेको तैयार हूँ लेकिन मुझे अपना

हिस्सा मिलना चाहिए। बड़ा भाई कहे कि नहीं यह तो सारी धरती अखंड रहेगी तो बोलो क्या हालत होगी ?

दुखराम --दोनों भाई कमजोर होंगे और दुसमन मजबूत होगा।

भैया—और जो बड़ा भाई कहे "तुम्हारा हिस्सा हर बखत हाजिर है, चलो बाप-दादाकी धरतीको दुसमनके हाथसे निकालें। जब बाँटनेका समय आये, उस वक्त बड़ा भाई कहे, कि इस धरतीमें तुम्हारा हिस्सा सदा बना हुआ है जब चाहो अलग कर लो; लेकिन हम दोनों इकट्ठा रहेंगे तो फिर किसी दुसमनके आनेका डर नहीं रहेगा, बहुत मजबूत रहेंगे, इसलिए तुम इसे सोचकर जैसा चाहो वैसा करो। इस धरतीमें जो पैदा होता है उसको भोगनेमें कोई बेईमानी न हो, इसकेलिए हमें पक्का इन्तजाम कर लेना चाहिए।" ऐसा कहनेपर हो सकता है कि छोटा भाई अलग होनेका हठ छोड़ दे।

दुखराम—यह ठीक है भैया ! यहाँके मुसल्मान पकिस्तान नहीं न जायेंगे ?

भैया --और यह भी सोचो सोहन भाई, १० करोड़ मुसल्मानोंमें ४ करोड़ हिन्दू इलाकेमें रहते हैं। बिहार, युक्त-प्रान्त, मध्य प्रान्त, मद्रास, बम्बई इन इलाकोंके मुसलमान अपना घर-बार, अपनी बोली-बानी छोड़कर पाकिस्तानमें नहीं जायेंगे। तुम्हें मालूम नहीं है कि पिछली लड़ाईके बाद खिलाफतका जोर हुआ था। कितनेही मौलवी लोगोंने खर्रा निकाल दिया था, कि अँगरेज जैसे काफिरोंके राजमें मुसल्मानोंका रहना अच्छा नहीं है। उन्हें हिन्दुस्तान छोड़-कर दूसरे मुसल्मानी देसोंमें चला जाना चाहिए। हजारों मुसल्मान घर द्वार बेच-बाँचकर काबुल और कहाँ-कहाँ चले गये और उनकी जो दुर्गति हुई इसके बारेमें कुछ न पूछो। काबुलवाले उन्हें देखकर कहते --'दालखोर हिन्दी ! दर-हिन्दोस्तान नान् न-दारी, गुसना ईंजा आमदी ?" (दाल-खोर हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तानमें रोटी नहीं मिलती, भूखा यहाँ आया है)। बिहारी और गुजराती गाँवके मोमिनों (जुलाहों) से इतनी बेवकूफीकी उम्मेद मत करो, कि वह घर-बार छोड़कर पंजाब या बंगालके पाकिस्तानमें भाग जायँगे।

सोहनलाल—तब तो रोज-रोजका झगड़ा बना ही रहा, पाकिस्तानको तो उन्होंने ले ही लिया और हिन्दुस्तानमें भी ४ करोड़ बैठे रहेंगे।

भैया—और पाकिस्तानमें भी तो हिन्दू जमे रहेंगे। उनको वहाँसे कौन निकालेगा। ४ करोड़ मुसल्मानका रहना रोज-रोजके झगड़ेके लिए नहीं बल्कि यही ४ करोड़ मुसल्मान बाकीको समझायेंगे।

सोहनलाल—लेकिन पाकिस्तान बन जाय और वहाँके मुसल्मान ईरान, तुर्की, अफगानिस्तानसे मेल करके हिन्दुस्तानपर हल्ला बोल दें तो फिर क्या होगा?

भैया—सोहन भाई! दुनियामें जितने मुसल्मान देस हैं, सब पाकिस्तानसे चौथाई ही तिहाई हैं। पंजाबकी ओरके पाकिस्तानके मुसल्मानोंकी आबादी ३ करोड़ होगी जब कि ईरानकी १ करोड़ ८० लाख है, अफगानिस्तान १ करोड़, तुर्कीकी १ करोड़ ७८ लाख, मिश्रकी १ करोड़ ६० लाख; बताओ दूसरे मुस्लिम देस पाकिस्तानकी पूँछ बन जायेंगे या पाकिस्तान दूसरे देसोंका? यह सब थोथी दलीलें हैं। तब तो पाकिस्तानी इलाकेमें मुसल्मान कमेरे, मुसल्मान मजूर, मुसल्मान जोंकोंसे सीधे लड़ेंगे, उसी तरह जैसे हिन्दू इलाकेमें हिन्दू। मरकस बाबाने तो ऐसा रास्ता बतलाया है, कि उसमें देस-जाति-धरमका अड़ंगा ही नहीं लग सकता। हम रोटी-कपड़ाके लिए लड़ते हैं, कोई धरम हमारे रास्तेमें बाधा न डाले, जो बाधा डालेगा उसे ही नुकसान उठाना पड़ेगा। हिन्दूके नामपर इस्लामके नामपर जोंकोंको छिपाया नहीं जा सकता।

दुखराम—भैया! बरसातके मेंढकोंकी तरहसे जान पड़ता है जोंकें न जाने कितने धरम निकालेंगी और कौन-कौन-सी खुराफत जोड़ेंगी। लेकिन मरकस बाबाने जो कसौटी दे दी है, उससे खरे-खोटेका पहचानना बहुत असान है। मैं देख चुका हूँ, कितने राजा-महाराजा लोग कौंसलमें वोटके लिए खड़े हुए थे और कितने पंडित और पुरोहित बड़ा-बड़ा टीका लगाकर लोगोंको समझाते फिरते थे, कि कांग्रेसवाले जो गये तो हिन्दू-धरम नहीं बचेगा, वह हिन्दू-मुसल्मान सबको एक करना चाहते हैं।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई, कांगरेसवालोंमें जो किसीने मुसल्मानके साथ खाया होगा, तो रोटी-दाल, लेकिन इन राजा-महाराजाओंकी लीला अपरम्पार है। यह साहब बहादुरके साथ बैठ न जाने क्या-क्या खाते हैं।

दुखराम—इसीको कहत हैं "छप्पन चूहा खाइके बिलारी भई भक्तिन"।

सोहनलाल—लेकिन भैया! सिरी निवास सासतरी, राजा नरेन्दरनाथ एन० एन० सरकार, मालवीजी जैसे बड़े-बड़े दिग्गज लोग भी हिन्दू धरम की बात करते हैं?

भैया कि अंगरेजोंकी गुलामीको मानना बहुत अच्छा होगा। तुम बूढ़े-बूढ़े नामोंको देकर डराना चाहते हो। मैंने कहा नहीं कि बूढ़ोंका दिमाग मरनेसे पहिले ही मुरदा हो जाता है। ऐसे बहुत कम बूढ़े देखनेमें आते हैं, जिनका दिमाग मरते दम तक गंगाकी धाराकी भाँति बहता रहे, नहीं तो बेसी साठिया जाते हैं। फिर तुम ऐसे नामोंको भी ले रहे हो, जिनके केस अंगरेजोंकी गुलामीमें पक गये हैं। जिन्होंने अपने पेटके लिए अंगरेजोंके हाथको मजबूत किया। पाँच रुपयेकी नौकरी करनेवाले सरकारी चपरासीसे आप कुछ आसा भी रख सकते हैं सोहन बाबू, क्योंकि उसको पाँच रुपयेकी नौकरी दूसरी जगह भी मिल सकती है, आधा पेटको तो आधा खाना कहीं न कहीं मिलता ही है। लेकिन जिसने दो हजार-पाँच हजारके लिए अंगरेजोंकी ताबेदारी कबूल की है, उसके भीतर उतनी हिम्मत कभी नहीं हो सकती। नौकरी छूट जानेपर कौन इतनी मोटी तनखाह देगा? फिर घरमें जो इतना बड़ा-बड़ा लिफाफा है वह कैसे रहेगा। कहाँ नवाबी ठाट और नवाबी मिजाज और कहाँ अब दर-दरके भिखारी! क्या तुम कभी ऐसे लोगोंसे उम्मेद रख सकते हो, कि वह सरकारके खिलाफ जायँगे?

दुखराम—पिनसिनिहाँ, भैया, और लीचड़ (डरपोक) होते हैं। पिन-सिनहाका क्या कबुरमें पैर लटकाये सभी बूढ़े लीचड़ होते हैं। जवानोंको तो जल्दबाज कह देते हैं, लेकिन जल्दबाज होनेपर भी जवान अपनी इज्जत बातपर जान दे देते हैं; लेकिन बूढ़ोंकी चले तो बेसरमीकी विद्या जवानोंको भी सिखा दें।

भैया और सोहन भाई ! तुम मालवीजीका नाम ले रहे हो। मालवीजी-ने एक बड़ा विस्सविद्दाले खोलवा दिया, हजारों विद्दारथी पढ़ते हैं, यह अच्छी बात की। लेकिन हिन्दू विस्सविद्दाला नालन्दा-विस्सविद्दालाकी बराबरी नहीं कर सकता। दुनिया बदली, उसीके मुताबिक नालन्दा विस्सविद्दाला भी बदला, इसलिए लोगोंको उसका नाम तक भूल गया। हिन्दू विस्सविद्दालाके जनमदाता पुराने हिन्दू धरमको अचल बनानेकी फिकिरमें रहते हैं। जब चमार, डोम इत्तादि जातियाँ अपने ऊपर हजारों बरससे होते आते जुलुमको बरदास करनेसे इनकार करने लगेंगी, तब भी मालवीजी, राममन्तर देकर उनका उद्धार करना चाहेंगे। राममन्तरसे उद्धार करनेका जमाना गया।

दुखराम—राममन्तर देनेसे उद्धार होता भैया ! तो गुरुबाबा गली-गली भीख माँगते नहीं फिरते।

भैया—और मालवीजीसे कब उमेद कर सकते हो सोहन भाई ! कि वह किसी बातको दो टूक कह सकते हैं, दो टूक कर सकते हैं; वह सदासे अंगरेजोंसे भिच्छा माँगके स्वराज पाने की उमेद रखते आये हैं। लेकिन गांधीजीके आँधीको जब देखा, तो समझ गये कि इसके खिलाफ जाना अच्छा नहीं। फिर कभी वह अंगरेज भगवानका मुँह देखते, कभी गाँधी भगवानका। उनका हिन्दू-धरम तो और भी छुआछूत और कूड़े-करकटसे भरा हुआ है। अपनी बिरादरीमें पहले आदमीने हिम्मत की, और उसने मालवी बाम्हनसे बाहर दूसरे बाम्हनके यहाँ ब्याह किया। बह्ममंडल डोल गया, मालवीजी-ने उसे जातिसे निकलवाया, तरह-तरहसे बेइज्जत करवाया। वह आदमी इतना भी नहीं देख सकता कि हिन्दुस्तानकी यह जात-पाँत, छुआछूत ज्यादा दिन तक नहीं चल सकती, नरकमें ही यह सब कुछ चल सकता है—मालवी-जीके सरगमें भी ऐसी जात-पाँत, छुआछूतका पता नहीं।

दुखराम—सरग तो हमें अब झूठा ही मालूम होता है भैया ! सरग बनेगा तो इसी धरती पर बनेगा; लेकिन जो यह सच है कि हिन्दुओंके सरगमें बाम्हन-चमार नहीं है, छुआछूत नहीं, तो इस दुनिया में क्यों यह सब जाल फैलाया।

सोहनलाल—लेकिन अब तो मैं जानता हूँ कि मालवीजीकी **पोतियोंका** ब्याह सरजूपारी, सारस्वत ओगैरह बाम्हनोंमें हुआ है।

भैया—पोते-पोतियोंकी करनेसे दादा-दादीको सुर्खरु नहीं बनना चाहिए। सोहन भाई ! दादा-दादी, बेटे-बहूका गला दबाने भरकी तागत रखते हैं, उसके बाद उनकी कोई भी नहीं चल सकती। बड़े-बड़े पंडित-पुजारियोंके पोतोंको देखा है, दादाके चौकामें लकड़ी धोके जाती थी, जाड़ा-पालामें भी नंगे बदन खाना खाते थे, दूसरेसे छू जाने पर नहाते थे, संसारकी जितनी बेवकूफी है सबको करते थे; लेकिन वह अपने बेटे तकको नहीं रोक सके। वह होटलमें अंडा खाता है, और सब जाति सब धरमवालोंके साथ।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दू विस्सविद्यालामें नई-नई विद्या सिखलाई जाती है, बिल्लायतमें जो विद्या पढ़ाई जाती है, वह सब यहाँ भी पढ़ाई जाती है।

भैया—अब यह सवाल किसी दूसरे दिन करना सोहन भाई ! आज तो मुझे इतना ही बतलाना था कि अंगरेजी जोंकें सारी तागत लगाके हिन्दुस्तान को गुलाम बनाये रखनेकी कोसिस करेंगी।

अध्याय १२

जमींदारी और रियासत

सोहनलाल—रजबली भैया ! मेरी बातोंका कुछ और न ख्याल कीजियेगा, जोंकोंके पुजारियों, दलालों और खैरखाहोंके जालमें मैं भी बहुत फँसा रहा हूँ। मरकस बाबाकी सिच्छा जब थोड़ी मिली, तो कुछ आँख खुलने लगी। मैंने जो कुछ सवाल तुमसे पूछा है, उनको इसी ख्यालसे पूछा है, कि हमारे और भाई जो गलत-गलत सोचते हैं, उनका साफ जवाब हो जाय।

भैया—नहीं सोहन भाई ! कोई बात नहीं, तुम जितने चाहो उतने सवाल करो। लेकिन यह ख्याल करके कि सन्तोखी भाई और दुक्खू भाई भी हमारे सुनवैया हैं।

सोहनलाल—अच्छा भैया, जमीदारोंके बारेमें तुम क्या सोचते हो ? अभी २० अगस्त (१६४४)को कलकत्तामें हिन्दुस्तानके बड़े-बड़े जिमीदारोंकी सभा हुई थी और हिन्दुस्तानके सबसे बड़े जिमीदार महाराज दरभंगा सभापति थे। उन्होंने कहा कि जमीदारी प्रथा हमारे देसके आत्मामें इतनी परवेस कर गई है, कि जो उसको खतम कर दिया गया; तो देसके ढाँचेका बखिया-बखिया उड़ जायगा और सारे देसमें परलै मच जायगी। उन्होंने परस्ताव पास किया, कि जमीदारोंके खिलाफ देसमें बहुत जोरसे परचार किया जा रहा है और उसमें बहुत झूठी-सच्ची बातें कही जाती हैं। सोवियत रूसके मरकस पन्थकी बातें कह-कहके आगमें घी डाला जा रहा है। जमीदार सरकारपर जोर देकर कहते हैं, कि सरकारको हमारी रच्छा करना चाहिए और एक नजरसे देखना चाहिए। उनको विस्वास है कि सरकार जमीदारी प्रथा जैसे लोकोपकारी परथाको कायम रखनेमें मदद करेगी। जो सरकार यह नहीं चाहती है तो उसे अपनी बातको खोलके कह देना चाहिए और फिर जमीदारोंको पूरा दाम देकर उनसे जमीदारी खरीद लेनी चाहिए।

दुखराम – भैया ! यह सुनके देहमें आग लग गई लेकिन, आँख भी खुल रही है, कि जमीदार न रहेंगे तो हिन्दुस्तानके ढाँचेका बखिया बखिया उड़ जायगा। हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया तो नहीं उड़ जायगा, लेकिन जो इन जोंकोंने हिन्दुस्तानको नरक बना दिया है, उनका बखिया जरूर उड़ने लगेगा।

सन्तोखी—"आप डूबा तो जग डूबा"वाला किस्सा नहीं सुना है दुक्खू भाई !

भैया—जमीदार तालुकदार दुनियाका क्या उपकार करते हैं ? क्या दूध देते हैं कि बुढ़ापेमें भी उनके लिए गऊसाला बनाई जाय। कोई ७० लाख किसानोंकी हड्डी पीसकर लेता है कोई ५० लाख, कोई २५ लाख, कोई लाख, हजार। यह रुपया जमीदारके घरमें भगवान नहीं बरसाते इसके लिए किसानोंको अपना और अपने बच्चोंका पेट काटकर अगहन और चैतमें ही अपना अनाज मिट्टीके मोल बेच देना पड़ता है। जाड़े भर भूखे तड़पते

बाल-बच्चे खलियानमें बड़ी रासिको देखकर बहुत खुस होते हैं कि अब पेट भर खानेको मिलेगा, लेकिन महीने बाद फिर उन्हें वही भूख सताने लगती है। जमीदारोंके पास जो करोड़ों रुपये किसानोंके घरोंसे सिमिट-सिमिट कर चले जाते हैं, वह न जाने पाये तो इन जोंकोंका सत्यानास जरूर हो जायेगा। कुछ जोंकोंके कम हो जानेसे हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया कैसे उड़ जायगा?

सोहनलाल—और भैया, इनके रहनेसे कितनी गन्दगी फैलती है!

भैया—यह तो सब जानते हैं कि राजा महाराज, नवाब बड़ा जमीदार जिस गाँवमें रहता है उस गाँवकी इज्जत नहीं बचने पाती। बेटी-बहुओंको वह पकड़ मँगवाते हैं।

दुखराम—कोई मुँह नहीं खोल सकता है भैया! मेरा छोटा भाई एक ऐसे ही गाँवमें ब्याहा है, जिसमें लाखोंकी तहसीलवाले एक जमीदार रहते हैं। एक दिन मेरी बहूकी बहिनपर जमींदारके लड़केकी नजर पड़ी। बेचारी सावनका झूला देखने गई थी। इन्होंने बड़े बड़े मन्दिर भी खड़े कर लिये हैं। मैं तो सोचता हूँ कि इन मन्दिरोंको धरमका अस्थान काहेको समझा जाता है? जहाँ गाँवकी बहू-बेटियोंकी इज्जत लूटनेका काम होता है उसे धरम-अस्थान नहीं कहना चाहिए। गाँवकी आधी औरतोंको जमीदार और उसके अमलोंने किसी न किसी समय बरबाद किया। बूढ़ी होनेपर वही कुटनीका काम करती हैं। उनको इनाम बखसीस मिलती है। नकटी दूसरोंको भी नकटी बनाना चाहती है। इस कुटनीने बहूकी बहिनको फसाँना चाहा। जमींदारके लड़केने लड़कीको देखकर कुटनीको भेजा था। लड़की बातमें नहीं आई। लेकिन जमींदारका लड़का कैसे चुप रहता? जब दूसरी तरहसे काम नहीं बना तो उसने १० लठधर गुंडे भेजे, और एक दिन वह लड़की को जबर्जस्ती उठा ले गये। घरवाले विरोध करने लगे, तो लाठीसे पीट दिया और लड़कीका एक भाई वहीं मर गया। खून हो गया। थानामें खबर गई। थानदारको चार-पाँच हजार मिल गये, फिर कौन पूछता है? न कहीं हाकिम न अदालत! लड़की अब भी जमींदारके लड़केके घरमें है। अभी

जवानी है इसलिए कुछ दिन और चल जायगा, नहीं तो रंडी या कुटनी बनना छोड़ उसके लिए कौन रास्ता है ?

भैया—हर जगह बड़े-बड़े जमींदारोंकी यही हालत है दुक्खू भाई ! लेकिन दूसरेकी इज्जत बिगाड़ते हैं तो इनकी भी इज्जतका कोई ठिकाना नहीं । इनकी औरतें अपनी आँखोंसे देखा करती हैं—किस तरह तालुकदार साहब रंडियोंपर पचास-पचास हजार खर्च करते हैं, ले आकर घरमें रखते हैं । दो-दो-चार-चार औरतोंसे ब्याह करने पर भी इनकी तिरसना नहीं जाती, जी तिरपित नहीं होता । खुद अपनी बीबियोंसे कुटनीका काम लेते हैं । बेचारी डरती हैं, कि जो वह काम नहीं किया, तो उनकी जिनगी नरक बन जायगी । बिहारमें लाखोंकी आमदनीवाले एक जमींदार हैं । बाप आधी उमर हीमें मर गए, माँ ऐसे घरमें बरहमचारिन कैसे रहती ? उसने अपने एक हट्टे-कट्टे नौकरको अपना खसम बना लिया । उसके साथ महलमें ही नहीं रहती थी बल्कि सामको बग्गीपर चढ़कर हवा खाने भी निकलती थीं । लड़के चाहते थे, कि कमसे कम बग्गीपर बाहर तो न निकला करे । सारा गाँव थू-थू करता है । माँ ने साफ कह दिया, कि तुम जैसे रह रहे हो वैसे रहो, जो मेरे काममें बाधा डालोगे, तो मैं इस आदमीको लेकर खुल्लम-खुल्ला बाहर चली जाऊँगी, फिर तुम्हारी नाक जो थोड़ी-बहुत बची है, वह भी कट जायगी ।

दुखराम—ऐसा होनेपर तो भैया तालुकदार उसको मरवाकर लासको भी लापता कर देते ।

भैया—लड़कोंमें इतनी हिम्मत नहीं थी दुक्खू भाई, यही कहो और एक दूसरे २५ लाखकी तहसीलवाले जमींदारके घरकी बात सुनो । पति जवानी हीमें मर गया ।

दुखराम—बेमेहनतके लाखों रुपया हाथमें आते हैं और यह लोग बेदरदीसे खरच करते हैं । दूधका दांत भी नहीं टूटने पाता कि रंडी और सराब दो ही चीज उनके सामने रहती हैं, तो फिर जवानीमें न मरें तो क्या हो ?

भैया—रानी साहब जवान थीं, राजा साहब पहिलेसे भी नपुंसक थे, रानी दीवानसे फँसी हुई थी। लेकिन जब राजाओंका एकसे काम नहीं चलता तो रानी क्यों एक आदमीपर सती होगी। महलमें जो भी हट्टा-कट्टा मरद आता, रानी उसपर जरूर दया दिखलाती। और उमर ढलनेके साथ तो बुढ़िया इतनी पागल हो गई, कि वह जवानों और औरतोंको अपने सामने बेभिचार कराती और आँखोंसे उसका आनन्द लेती। सारा गाँव और आस-पासके हजारों लोग इस बातको जानते थे। इस तरह की एक दो नहीं लाखों बातें मिलेंगी। गन्दगी फैलानेमें तो इन निठल्ली जोंकोंने हद कर दिया है।

दुखराम—और कलकत्तासे आकासबानी की जा रही है कि जो जमींदार न रहें तो हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया उड़ जाय?

भैया—लाखों रुपया तो मालगुजारी लेते ही हैं, तिसपर भी पचासों तरहकी नाजायज वसूली करते हैं। जहाँ यह अपने भी कुछ खेती करवाते हैं, वहाँ किसानोंको अपना हल-बैल ले जाकर बेगारमें खेत जोत देना पड़ता है। दूध, बकरा, तरकारी मुफत लेते हैं। नाराज हुए तो खेतसे बेदखल कर देते हैं। मालगुजारी देनेपर भी बहुतसे ऐसे जमींदार हैं कि रसीद नहीं देते। मोटर खरीदना होता है, तो किसानोंपर चन्दा बाँध देते है, हाथी-घोड़ा खरीदना होता है, तो हथियाना-घुड़हाना लगा देते हैं। एक जगहके जमींदारके लड़केको फोनोग्राफका बाजा खरीदना था, तो उसके लिए भी किसानोंपर कर लग गया। जमींदारके कारिन्दे कहते थे, रुपया-आठ आनेमें क्या होता है, दे दो नहीं तो जमींदार साहब बिगड़ जाएँगे।

दुखराम—और जमींदारके नौकर-चाकर करिन्दे कितना लूटते हैं भैया?

भैया—लूटेंगे क्यों नहीं दुक्खू भाई! आठ आनेमें आदमी एक साँझ खा भी नहीं सकता और इनके आठ आने महीनेपर नौकर रखे जाते हैं। क्या यह नहीं जानते और सरकार नहीं जानती, कि ये आठ आनेवाले नौकर परजाको लूटेंगे? २४) और ३०) सालपर बिहारके जमींदार पटवारी रखते हैं। वह पढ़े-लिखे होते हैं, उनको अपने लड़के बच्चोंको पढ़ाना होता है।

किसानोंसे अच्छा खाना-कपड़ाउन्हें चाहिए। बताओ पटवारी २४) या ३) सालमें कैसे अपना गुजारा कर सकता है?

दुखराम—भैया! इस सारी लूटको वह जानते हैं, लेकिन जागते हुए भी जो आँख मूँद लेगा, उसे कौन जगायेगा।

भैया—इन्हीं जमींदारोंके लड़के सरकारी अफसर हैं। कलक्टर, मजिस्टर, डिप्टी, मुंसिफ, सुपरिनटेनडेन्ट, इंसपेक्टर सभी तो जमींदारोंके बेटे हैं। मुट्ठी भर अंगरेजोंके बाद तो यही जमींदारके लड़के सारा काम करते हैं। परजाका खून चूसनेसे पेट नहीं भरता, तो यह सरकारी अफसर बन जाते हैं, और हमारी गाढ़ी कमाईका करोड़ों रुपया तनखाह और भत्तामें उड़ाते हैं। जमींदार और किसान, मजूर और कारखानेदारका यह झगड़ा होता है, और झगड़ा होता है जोंकोंके जुलुमको रोकनेके लिए तब, यही जमींदारोंके लड़के न्यायसिंहासनपर बैठेंगे। जिन्होंने बचपनसे कमेरोंपर जुलुम करके ही अपना पेट पाला, भला वह याय,करेंगे या न्यायका गला घोटेंगे? अपने जा कारिन्दों-को घूस-रिसवत लेनेपर नौकर रखते हैं, वह अदालतके मुहर्रिरोंको घूस-रिसवत-से रोकेंगे? यह सब धोखा है। भीतर झाँकते ही दुर्गन्धसे नाक फटने लगती है और तब भी कोई कहे कि जमींदारी हट जानेसे हिन्दुस्तानका बखिया-बखिया टूट जायगा, तब हम यही कहेंगे कि वह हिन्दुस्तानके नरककी बखियाको बनाये रखना चाहता है।

दुखराम—भैया, ऐसा बखिया उड़ जाय तब ही अच्छा है। और मुझे तो अब महाबीरजी और सैय्यद बाबापर बिसवास नहीं रह गया, नहीं तो जिस दिन यह बखिया टूटता उस दिन लड्डू और सिरनी बाँटता।

सन्तोखी—अरे मरदे, महाबीर बाबा और सैयद बाबा नहीं रहे, तो लड्डू, सिरनी किसीको कड़वी थोड़े ही लगेगी। मैं भी दो सेर दूँगा और गाँव भरके लड़कोंको बाँटना। जुम्मन दादाको दो लड्डू ज्यादा देना, वह बहुत पुराने कोढ़ोंके लिए झंखा करते हैं।

भैया—और सोहन भाई, जो जमींदार जोंकोंने कलकत्तामें जमा होकर सराप दिया है, कि रूसकी बात लेकर मरकस बाबाके चेले जमींदारोंके

खिलाफ बोलतें और झूठी-झूठी बातें फैलाते हैं, इस सरापसे कुछ होगा-ओगा नहीं ?

दुखराम—कुत्ते भूँकते रहते हैं हाथी चला जाता है भैया !

भैया -- जोंकोंका यही कोढ़ है जिसमेंसे कि दुर्गन्ध निकलता है। किसानों और मजदूरोंको झूठ बोलनेकी क्या जरूरत। जमींदारोंका अत्याचार क्या किसीसे छिपा है ? निठल्ले क्या भलाई करते हैं, जो उनका गीत गावें ! पुरोहितों, मौलवियों ने बहुत दिन गीत गाया, आँखमें बहुत धूल झोंकी, लेकिन अब वह बात नहीं होगी। कौन उपकारमें ६६ किसान एक जमींदारके लिए घिउ-मलीदा जुटाने, अपनी छातीपर कोदो दलनेके लिए उसे बैठाये रखेंगे ? बाकी रही सरकारसे न्याय करनेकी बात, सो हम जानते हैं, कई हजार बरससे सरकार क्या न्याय कर रही है; आज भी न्याय करनेके लिए बिलायतकी कुछ जोंकोंको छोड़कर बेसी जमींदारों हीके लड़के हैं। इन लोगोंके न्यायपर जमींदारोंके बिसवास न करनेका कोई कारन नहीं है। लेकिन हम उनसे न्यायकी उम्मेद नहीं रखते। हाँ, जमींदार-तालुकदार लोग सायद ख्याल करते होंगे, कि पन्द्रह पन्द्रह रुपल्ली वाले नौकर हो तो सभी जोंकोंके हाथ-पैर हैं, कहीं उनकी भी आँख न खुले और सारा गुड़-गोबर हो जाय। देखा न सोहन भाई, बिलायती जोंकें भी कह रही, हैं कि रूसकी ओर मत देखो, जमींदार-तालुकदार-राजा लोग भी कह रहे हैं, कि रूसकी तरफ मत देखो।

सोहनलाल—और कितने ही किसान-मजूरके नेता कहलानेवाले सोसलिस्ट भी कहते हैं कि रूसकी ओर मत देखो।

दुखराम—सोसलिस्ट क्या है भैया ?

भैया—सोसलिस्ट तो कहते हैं दुक्खू भाई ! जो जोंकोंका राज हटाकर मजूरोंका राज चाहते हैं। लेकिन यह हिन्दुस्तानमें कुछ सोसलिस्ट हैं, जो जापानको हिन्दुस्तानमें बुलाकर कमेरा-राज स्थापित करना चाहते हैं। कोई कोई कहते हैं, कि मरकसबाबाने गलत सलत बातें कही हैं, इसलिए उनकी सिच्छामें सुधार करना चाहिए।

दुखराम—मरकस बाबाकी सिच्छामें कौन सुधार करेगा वह मरकस बाबासे ज्यादा बुद्धिमान होगा। उनसे भी ज्यादा तपस्या करनेवाला होगा।

भैया—तपस्याकी बात छोड़ो दुक्खू भाई! हजार-पन्द्रह सौ रुपयापर जो फिसल जायगा वह तपस्या क्या करेगा! और बुद्धिमानीकी बात जो पूछते हो, तो काठका उल्लू चार अच्छर अंगरेजी पढ़कर बुद्धिमान नहीं हो जाता।

दुखराम—हाँ भैया! जिनको चलनेका भी सहूर नहीं वह गिटपिट-गिटपिट बोलकर समझते हैं कि हमारे ऐसा कोई नहीं। मैं तो सुनता हूँ तब मनमें आता है, कह दूँ—न तुम्हारे बाप बिलायती, न माँ बिलायती किस घुट्टीके साथ तुमने अंगरेजी सीखी, फिर बाबू! काहे नहीं अपनी बोली बोलते।

भैया—बोल देना चाहिए दुक्खू भाई! नाहीं तौ इनका दिमाग और बिगड़ा रहता है। और यह गिटपिट भी उनकी दुक्खू भाई और सन्तोखी भाईके सामने चलती है, किसी साहबके सामने बोलना हो, तो सिटपिटा जाएँगे।

दुखराम—डर जाते हैं क्या भैया!

भैया—डर नहीं जाते दुक्खू भाई! यह जो पन्द्रह-पन्द्रह बरस तक अंगरेजी पढ़ते हैं, उनमेंसे एकाधही कोई निकलेगा जो सुद्ध अंगरेजी लिख-बोल सकता है।

दुखराम—तो भैया! क्या यह पन्द्रह-पन्द्रह बरस घास छीलते हैं?

भैया—बोली जो माँके दूधके साथ सीखी जाती है, वही सुद्ध होती है। लेकिन छोड़ो वह बात अब तालुकदार-जमींदारकी बात खतम हो जाने दो। इनको डर काहेका। अंगरेजी जोंकोंका राज जब यहाँ कायम हुआ तो १५० बरस पहिले लार्ड कार्नवालिस हिन्दुस्तानमें बड़ा लाट बनकर आया, उस वक्त जमींनदारों-तालुकदारों का पता नहीं था। बादसाहके नीचे पिन्सिन पानेवालों नौकरोंके लिए कुछ गाँवोंकी जागीर जरूर थी। लेकिन वह सरकारकी माल-

गुजारी वसूल करनेके लिए ठेकेदारी नहीं थी। कार्नवालिसने अंगरेजोंके खैरख्वाहोंको ऐसे ही दस-पचास सौ गाँव लिखकर दे दिये, बस जमींदारी बन गई।

दुखराम—काहे जमींदार बनाये भैया!

भैया—कार्नवालिसने अपने मालिकोंको बिलायत लिख दिया था कि जो हमें हिन्दुस्तानमें राजकी जड़ मजबूत करनी है तो कुछ ऐसे लोगोंको तैयार करना पड़ेगा जिनकी जड़ अपनी जड़से बँधी हो। करोड़ों किसानोंका कोई ठिकाना नहीं कि किस बखत हमारे खिलाफ हो जायँ, लेकिन आज जिन लोगोंको हमने जमींदारीका पट्टा दिया है वह हमारे खिलाफ कभी न जायँगे। कौन कह सकता है कि कार्नवालिसकी बात झूठ हुई।

दुखराम—भैया ये जमींदारी बेचनेकी बात क्यों कर रहे हैं? क्या यह समझने लगे हैं कि जमींदारी नहीं रहेगी?

भैया—यह बात तो दुक्खू भाई दिन-दुपहरकी तरह साफ झलकती है। एक कथा सुनाता हूँ; रूस मुलुकमें कोई जिमीदार बाबू चार घोड़ोंकी बग्गी जोतकर जा रहे थे। जंगलमें भेड़ियोंने छेंका—देखा, अब तो मारे जाते हैं तब एक घोड़ा छोड़ दिया भेड़ियोंने खदेड़कर घोड़ोंको पछाड़ा, लेकिन एक घोड़ेके मांससे उनका पेट नहीं भरा, फिर बग्गीके पीछे दौड़े दूसरा घोड़ा छोड़ा गया। फिर दौड़े तीसरा छोड़ा गया। इसी तरह बिलायती जोंकें अब ऐसे संकटमें पड़ी हैं कि उनको बग्गीका एक घोड़ा छोड़ना ही पड़ेगा और यह घोड़ा कार्नवालिसका जोता जमींदार है। बिलायती जोंकें समझती हैं कि हिन्दुस्तानी सेठोंका घोड़ा हमें अच्छा मिल गया है, अब इस बूढ़े घोड़ेकी जरूरत नहीं। क्या जाने इस बूढ़े घोड़ेको पाकर कमेरे चुप हो जांय।

दुखराम—तो जमींदारीका दाम सरकारसे माँग रहे हैं। सरकारके बापके घरमें क्या सोनेका पेड़ है?

भैया—सरकारसे माँगनेका मतलब है कि इनको मालगुजारीका बीस-पचीस गुना दाम चुकानेके लिए हम लोग और पचीस साल तक पीसे जायँ और यह रुपया लेकर अपनी जिन्दगी भर ऐस-जैस कर सकते हैं न!

दुखराम—और उनके बेटे-पोते ?

मैया—लखनऊमें जाकर देखो, नवाबोंके पोते एक्के हाँक रहे हैं। जोंकोंको अपने ही देहका सबसे बेसी ख्याल होता है, जो वह अपनी सात पुहुतका ख्याल करतीं तो दुक्खू भाई! यह दुनिया इतनी नरक न बनती? हो सकता है कुछ जमींदार ऐसा भी सोचते हों कि रुपया इकट्ठा मिल जायेगा, तो हम भी चीनीके मिल, कपड़ेकी मिल, नहीं तो तेलहीके मिल खड़ी कर लेंगे। वह यह भी समझते हैं कि अभी किसान दबे-दबाये हैं, जो वह उठ खड़े हुए तो कुछ भी नहीं मिलेगा, और मिलेगा भी तो बहुत कम।

दुखराम—नहीं भैया! इनको एक पैसा भी नहीं देना चाहिए। कार्नवालिसने जब कागज लिखकर जमींदारका पट्टा दिया था, तो हमारे बाप-दादों-से पूछा था? दाम लेना है तो जायँ कार्नवालिसके पास। रुपया तो हमें माँगना चाहिए उनसे, क्योंकि डेढ़ सौ बरससे इन्होंने हमारी कमाई खाई। इसीको कहते हैं भैया "पैड़ा में हग्गै और गुरेरे"।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानमें ६ सौके करीब राजा नवाब लोगोंकी रियासत है।

दुखराम—यह भी जमींदार हैं क्या भैने ?

सोहनलाल—जमींदार नहीं दुक्खू मामा! इनकी अपनी पुलिस-कचहरी, जेहलखाना है।

दुखराम—हैदराबाद, जयपुर, जोधपुर, न भैने ?

सोहनलाल—सब हैदराबाद, जयपुर-जोधपुर नहीं है, सिमलामें तो एक-एक गाँवके राजा हैं।

दुखराम—और उनकी भी पुलिस कचहरी है ?

सोहनलाल—उनकी भी पुलिस-कचहरी है। छोटे-छोटे राजाओंको फाँसी देनेका अधिकार नहीं है। उन्हें भी सरकारी कागजमें हिज हाइनेस लिखा जाता है।

दुखराम—हिज हाइनेसका क्या मतलब है भैने ?

सोहनलाल—हिज हाइनेसका मतलब है "उनकी बड़ाई"। बिलायतके राजाके लड़कोंको हिज-हाइनेस कहा जाता था। वही पदवी इनको भी मिली है। यह राजा-नवाब लोग भी कह रहे हैं कि हमारे साथ भी डेढ़ सौ बरस पहिले लिखा-पढ़ी की गई है और अंगरेजोंने कबूल किया है कि हम तुम्हारी रच्छा करेंगे, इसलिए हिन्दुस्तानको कोई स्वराज देना हो तो उस सुलहनामेकी कोई सर्त तोड़नी नहीं चाहिए।

दुखराम—और अंगरेज क्या जवाब देते हैं भैया?

सोहनलाल—अंगरेज जवांब देते हैं कि हम सुलहनामाकी एक-एक बातको मानेंगे और ६०० मुकुटधारियोंको हिन्दुस्तानकी छातीपर परलय तक बैठाये रखेंगे।

सन्तोखी—युधिष्ठिरके खानदानका मुकुट न जाने कहाँ गया, विकरमाजीतके खानदानवाले न जाने कहाँ भीख माँग रहे हैं, अकबरके खानदानका कोई ठिकाना नहीं है। और यह चले हैं ६०० मुकुटधारियोंसे हिन्दुस्तानकी छातीपर कोदो दलाने।

भैया—बिलायतके जोंकोंको अपना तो ठिकाना ही नहीं है। इस लड़ाईके बाद जो बिलायतके कमेरोंको भूखे नहीं मरना है फिर तीसरे महाभारतमें नहीं पड़ना है तो बिलायती जोंकोंको खतम करना ही पड़ेगा। फिर यह बिलायती जोंकें चली हैं, हिन्दुस्तानी ६०० मुकुटधारियोंकी रच्छा करने। और यह ६०० मुकुटधारी कैसे हैं दुक्खू भाई, यह कैसे राज करते हैं, इनकी बात सुनोगे तो तुम्हारा खून खौलने लगेगा। तालुकदारों और जमीदारोंका जुलुम भी इनके सामने झूठा है, बिलायतके राजाको बँधी रकम पानेके लिए पार्लामेण्ट पंचायतके सामने हाथ पसारना पड़ता है, और इन राजा-नवाबोंको पूरी छूट है। परजाको पीसकर जितना रुपया खजानेमें आता है, उसे खरच करनेमें इनका कोई हाथ नहीं रोक सकता। एक-एक रातके सोनेके लिए बाईस-बाईस लाखका यह चेक काट सकते हैं।

दुखराम—नहीं समझा भैया! क्या कहा।

भैया—एक राजा फ्रांस गये थे। किसी सुन्दरी गोरीसे उनकी आँख लग

गई। गोरी तैयार नहीं होती थी। अन्तमें बाइस लाखपर सौदा पटा। राजाने अपने अंगरेज नौकरको बाइस लाख रुपया देनेके लिए बंकको चिट्ठी लिख दी। आजकल रुपया जहाँ जमा होता है उसीको बंक कहते हैं। पहिले लोग महाजनोंकी कोठीमें रुपया जमा करते थे। राजाके नौकरने सोचा कि बाइस लाख रुपया अपने पास रख लेना अच्छा है। राजा गोरीके साथ रात भर सोये। रुपया न मिलनेपर झगड़ा हुआ। मामला अदालतमें गया। राजाके अंगरेजी नौकरको धोखा देनेके कसूरमें साल-दो सालकी सजा हुई। नौकर बाइस लाखका धनी हो गया, राजा भी घाटेमें नहीं रहे, गोरीकी सेज मुफतमें लूटी।

दुखराम—और राजाको भैया! अंगरेजी सरकारने कुछ नहीं किया।

भैया—किया क्यों नहीं, अंगरेज सरकार इज्जत बढ़ाती है तो उसको दो-चार अच्छरकी पदवी दे देते हैं। राजा साहबको बड़ासे बड़ी पदवी मिली हुई है। और दूसरे राजाकी बात सुनो। लाख सुन्दरियोंके साथ सोनेकी साध अगर किसीकी बुती होगी तो इन्हीं राजा साहबकी। इनको मरे बहुत दिन नहीं हुआ। सरकारके यह बड़े खैरखाह थे और छः सौ राजाओंके तो मुकुट-मनि समझे जाते थे। अंगरेजी सरकारने इनको भी जितने बड़े-बड़े अच्छरों-की पदवी हो सकती है, सब दे डाली थी। करोड़ों रुपया परजाको भूखे मारकर वसूल किया जाता था तब भी इनका खरच नहीं चलता था। अपने किसी दरबारीकी सुन्दरी लड़की या औरतको इसने नहीं छोड़ा, एकाध आदमियोंने विरोध किया, तो उन्हें मौतके घाट उतार दिया गया। बिलायत-के जोंकों तक खबर गई लेकिन उन्होंने कानमें तेल डाल लिया। इस राजाके गोइन्दे रियासतके बाहर सहरों और पहाड़ोंमें सुन्दर लड़कियोंको ढूँढ़ते फिरते थे। कुल्लू और सिमलाके सीधे-सादे पहाड़ी लोगोंमें घबराहट हो जाती थी जब उन्हें मालूम हो जाता था कि फलाने राजाके सिकारी पहाड़में पहुँच गए हैं। परजाको तो मुँह खोलनेकी भी इजाजत नहीं थी। बुढ़ापे तक यह राजा अपने पापसे धरतीके भारको बढ़ाता रहा। बिलायती जोंकें ऐसे मुकुटधारियों-को हिन्दुस्तानी परजाके गलेमें परलय तक बाँधनेके लिए तैयार हैं, लेकिन

क्या परजा इसके लिए तैयार है।

दुखराम—नहीं भैया! यह तो रावन और कंससे भी बढ़ गया, मालूम होता है।

भैया—एक और राजाकी सुनो। बहुत बिसय करनेसे वह नपुंसक हो गये थे फिर उनकी ऐसी कुलत पड़ गई थी कि अपने पास जवानोंको रखते थे फिर भी ब्याह करते रहते थे।

सन्तोखी—कौन अपनी लड़कीको देता था दुक्खू भैया!

भैया—राजाके घरमें राजा ही की लड़की जाती है, कई ब्याह करनेपर भी उनके लड़का नहीं हुआ था। समझते थे कि गद्दी सूनी हो जायगी और दूसरे घरका लड़का लेना पड़ेगा।

दुखराम—हिजड़ेको लड़का कहाँसे होगा भैया!

भैया—रानियाँ तो हिजड़ी नहीं थीं। उसने महलमें बहुत-सी कोठरियाँ बनवाई थीं जिनमें रानियोंको रख देता था। रातके बखत अपने दरबारी जवानोंको एक-एक कोठरीमें जानेका हुकुम देता। अनजाने वह कोठरीमें चले जाते फिर बाहरसे बटन दबा देता और हर कोठरीमें बिजली जलने लगती फिर वह निलज्ज एक-एक कोठरीमें जाकर देखता। एक दिन बत्ती जली तो जवानने देखा कि वह अपनी ही बहिनके साथ लेटा है। बहिनने रनिवासके रंग-ढंगको देखकर सब कुछ मान लिया था लेकिन वह इतना दूर तक जानेके लिए तैयार न थी। दूसरे दिन उसने जहर खाके परान दे दिया।

दुखराम—एकदम जनावर है भैया!

भैया—और खून कितने किये, इसको तो पूछो ही नहीं उनके लिए सात क्या सात सौ खून माफ हैं।

सोहनलाल—लेकिन राजकी देख-भालके लिए अंगरेजोंका एक रेजीडेन्ट भी रहता है न भैया!

भैया—रेजीडेन्ट यह देखनेके लिए रहता है कि इनके राजमें लोग बन्दूक रखते हैं, छोटी-मोटी पलटन रहती है, अपनी पुलिस-कचहरी रहती है इस-लिए अंगरेजी राजके खिलाफ भीतर ही भीतर कोई बात तो नहीं हो रही है। वह

सिर्फ इतना ही देखता है कि विलायती जोंकोंको हिन्दुस्तानसे खून मिलनेमें कोई भाँजी तो नहीं मारता। किसका-किसका जुलुम गिनायें। छः सौ मुकुटधारी हैं जिनको परजाके धन, परान, इज्जत सबके साथ खेलवार करनेकी पूरी छुट्टी है। और फिर यह डेढ़-सौ बरससे अंगरेजोंके छतर छायामें अपनी कुचाल-दुराचारको कर रहे हैं। इतने दिनोंमें पाँच हजार मुकुटधारी हुए होंगे इनमें दस-बीस अच्छी चाल-चलनके मिलेंगे, बाकी तो रावन, कंस, वाजिद-अलीसाहके अवतार थे।

दुखराम—वाजिदअलीसाह कौन थे भैया!

भैया—लखनऊके नवाब। अजसे सौ बरस पहले अवधपुर राज करते थे। उन्होंने अपने महलको इन्दर-सभा बना दी थी। संगमरमर पत्थरकी सीढ़ियोंपर गोरियाँ नंगी खड़ी होती थीं और वह उनका अस्तन पकड़े सीढ़ीपर चढ़ते थे। पाखाना अतरसे धोया जाता था और क्या-क्या होता था उसको कहनेकी जरूरत नहीं।

दुखराम—और इस सारे ऐस-जैसका खरच परजा ही खून-पसीना एक करके चलाती होगी न?

भैया—और क्या, दूसरी कौन जगह थी जहाँसे पैसा आता। अंगरेजी इलाकेमें तो अखबारमें भी जुलुमके खिलाफ कुछ लिख सकते हैं, सभामें भी बोल सकते हैं। यहाँपर भी लाट बड़े लाटने नहीं पूरा जोर लगाया कि लोग ऐसा न लिखें-कहें, और इसके लिए पचासों बरस तक सरकार लोगोंको जेलमें डालती रही, बड़ा-बड़ा जुरमाना करती रही, अखबार-किताब जपत कर लेती थी, लेकिन जब लोगोंने नहीं माना और इस बातका हल्ला बिल्लाइत-उल्लाइतके लोगों तक पहुँचा तो थोड़ा लजाकर कुछ भयंकर अपना हाथ ढीला कर दिया। अब भी सच्ची बात लिखनेमें सरकारके कोपका डर रहता है लेकिन लिखनेवाले इसकी परवाह नहीं करते। जिसको दुनियाके नरकको ढहाना है वह जोखिमकी परवाह क्यों करेगा। लेकिन इन छः सौ मुकुटधारियोंके राजमें न तो कोई खुलकर अखबारमें लिख सकता है, न किताबमें छाप सकता है। भागी रंडीको पकड़ लानेके लिए जिनके गुन्डे बम्बई तक पहुँचकर खून करते

हैं, रियासतके भीतर रहनेपर अपनी बैरीकी क्या गति करेंगे इसे तुम खुद समझ सकते हो।

सोहनलाल—चर्चिल और उसके साथी दूसरी जोंकें गला फाड़-फाड़कर कह रही हैं कि यह बड़ी लड़ाई है, जनताकी भलाई, जनताके राजकी रच्छाके लिए हम लड़ रहे हैं।

भैया—जरमन और जापानी फसिहोंको मारकर खतम कर देना यह बात तो जरूर जनताकी भलाई और जनताके राजके लिए बहुत जरूरी है लेकिन बिलायती जोंकें जनताका राज चाहती हैं यह बिलकुल झूठी बात है।

दुखराम—जनतासे जोंकोंका क्या वास्ता भैया!

भैया—और देखते नहीं दुक्खू भाई! चर्चिल-अमरीको कहते सरम भी नहीं आती। एक ओर कहते हैं कि हम दुनियामें जनताके राजके लिए लड़ रहे हैं और दूसरी ओर कहते हैं कि हम हिन्दुस्तानके छवो सौ मुकुटधारियोंकी परलय तक रच्छा करेंगे। क्योंकि डेढ़ सौ बरस पहिले हमारे पुरखों और मुकुटधारियोंके पुरखोंने एक सुलहनामा लिखा था।

दुखराम—जोंकों और राजाओंके पुरखोंने भले ही सुलहनामा लिखा हो पर परजाके पुरखोंने भी कोई सुलहनामा लिखा था?

भैया—हिन्दुस्तानके दो पचैयाँ (२/८) हिस्सेमें दस करोड़के करीब आदमी बसते हैं, जिनके ऊपर यह छः सौ मुकुटधारी राज कर रहे हैं, चर्चिल-अमरी इन छः सौ मुकुटधारियोंके राजको अचल रखना चाहते हैं लेकिन दस करोड़ जनता कहाँ जायगी। काठ पत्थरके खिलौने हैं क्या? हम जानते हैं कि जोंकोंका धरम ही है झूठ बोलना। वह परजा-राज-परजा-राज इसलिए चिल्लाती हैं कि बिलायतकी परजाके बलपर फसिहोंको खतम करना है और कहाँके कमेरे हैं जो फसिहोंको फूटी आँखसे भी देखना चाहेंगे। चर्चिल-अमरी यह कहकर दुनियाकी आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं लेकिन दस करोड़ परजाके खिलाफ छः सौ मुकुटधारियोंका राज कहाँ तक जनताका राज कहा जा सकता है। लेकिन जोंकोंके सामने तर्क-बितर्क करनेसे कोई फायदा नहीं। न वह तर्कसे मानेंगे न हाथ पैर जोड़कर भिच्छा माँगनेसे

दया दिखायेंगे।

दुखराम—हाँ भैया, "जैसा देवता वैसा अच्छत"।

भैया— हम कब चर्चिल-अमरीसे उम्मेद करते हैं कि वह खानदानकी तोंद काटकर हमारा पेट भरेंगे। लेकिन एक बात साफ है, जैसे ५० बरससे लड़ते-झगड़ते हिन्दुस्तानके तीन-पचैयाँ (३/५) धरतीके ३० करोड़ आदमी, अब अपनेको आदमी समझने लगे हैं। वह खुलके सोचते हैं, खुलके बोलते हैं, खुलके लिखते हैं और खुलके कर भी रहे हैं, उसी तरह मुकुटधारियोंके पैर के नीचे पिसी जाती १० करोड़ जनता भी करेगी। अभी ही कितनी रियासतोंमें जनताने गोलियों और जेलोंकी परवाह नहीं की है और अपनी कितनी ही बातोंको माननेके लिए मुकुटधारियों और उनके मालिकोंको मजबूर किया। चर्चिल-अमरी मुकुटधारियोंके प्रेमके लिए डेढ़ सौ बरस पुराने रद्दीके सुलहनामेकी दुहाई नहीं दे रहें हैं। वह समझते हैं कि अंगरेजी हिन्दुस्तानमें जलियाँवाला बाग होता है तो उसके लिए हमारे ऊपर बोछार होने लगती है; रियासतोंमें कोई लाख औरतोंकी इज्जत बरबाद करता रहे, सात सौ खून करता रहे, परजापर जुलुम करता है, लेकिन उसके लिए सवाल करनेपर, हम कह सकते हैं कि ६०० मुकुटधारियोंके राजके भीतर हम कोई दखल नहीं दे सकते। सब जानते हैं कि अपने मतलबके लिए खूब दखल दिया जाता है। पिनिसिनिहा बूढ़े अंगरेजोंको रियासतोंका वजीर बनाया जाता है, बड़े-बड़े अफसर बनाया जाता है। राजा साहबने कुछ भी उनके मनका छोड़ अपने मनका काम करना चाहा कि कान पकड़कर उनकी रियासतसे बाहर निकाल दिया जायगा।

सोहनलाल—पहिले तो रियासतोंके वजीर अंगरेज नहीं होते थे लेकिन अब तो दर्जनों अंगरेज रियासती वजीर है, फिर यह कहना क्या झूठा नहीं है कि हम रियासतके भीतर दखल नहीं देते!

भैया—वह कह देंगे कि उन्हें तो राजा साहबने अपने मनसे वजीर रखा। और यह अंगरेज वजीर काहे रखे जाने लागे हैं? इसीलिए कि अब परजा सो नहीं गई है, वह जागने लगी है। बिलायतकी परजाने तीन पाँच करनेपर

राजा चार्लसकी गरदन उतार ली थी, हिन्दुस्तानकी परजा भी राजाओंको मन-मानी नहीं करने देगी।

सोहनलाल –जैसे भैया जमींदार अपनी जमींदारीका दाम लेकर बेच देना चाहते हैं उसी तरह ये राजा लोग भी क्यों नहीं कुछ पेन्सन लेकर कासी-वास करते ?

भैया—अभी ये ६०० मुकुट बिलायती जोंकोंके बलपर कूद रहे हैं, समझ रहे हैं कि अंगरेजी हिन्दुस्तान तो सुराज ले ही लेगा क्योंकि बिलायती जोंकों में भी हिम्मत नहीं है कि साफ इन्कार कर दें। लेकिन वह दो-पचैयाँ हिस्सेको सुराजियोंके हाथमें नहीं जाने देंगी इसमें उनका भी स्वारथ है।

दुखराम—क्या स्वारथ है भैया !

भैया—६०० मुकुटोंके रच्छा करनेका भार हमने अपने ऊपर ले लिया है इसलिए यहाँ हम अपनी पलटन रखेंगे और इन मुकुटोंको मजबूत करेंगे। इसी बलपर ये ६०० बछिया कूद रही हैं। इन्हें यह नहीं मालूम है कि जो रूसमें कमेरा राज होनेसे हिन्दुस्तानके कमेरोंका मन बढ़ा और उनकी मदद-से कांगरेस और लीगने अंगरेजी जोंकोंको इस हालतमें पहुँचा दिया कि वह तीन-पचैयाँ हिन्दुस्तानकी बहुत उम्मेद नहीं रखते; तो पास-परोसके ३० करोड़ हिन्दुस्तानियोंको आजाद देखकर १० करोड़ हिन्दुस्तानी ६०० गुड़ियोंके सामने मत्था टेकते रहेंगे ?

सोहनलाल –तो भैया रियासतोंका क्या होगा ?

भैया—जो भाखा जिस रियासतमें बोली जाती है उस भाखाके बोलने-वाली पड़ोसी जातिमें वह मिल जायगी। ग्वालियरमें बुन्देलखण्डी और मालवी दो बोली बोली जाती है। बुन्देलखण्डीवाला भाग बुन्देलखण्ड प्रजा-तंत्रमें चला जायगा और मालवीयवाला भाग मालव प्रजा-तंत्रमें हैदराबादमें मरहठी, करनाटकी, तेलगू, तीन भाखाओंवाले इलाके हैं। तेलगूवाला इलाका आन्ध्र सूबासे मिलकर आन्ध्र प्रजा-तंत्र बन जायगा। करनाटकी भाखावाला इलाका बम्बई और मदरास सूबोंमें बँटे करनाटक प्रान्तसे मिलकर एक करनाटक पजा-तंत्र बन जायगा। मराठीवाली इलाका बम्बई और मध्य प्रान्तमें बँटे

मरहठी इलाकोंसे मिलकर एक मरहठा प्रजा-तंत्र बन जायगा।

सोहनलाल—तब तो भैया! हिन्दुस्तानके सूबे भी नये बन जायँगे।

भैया—सूबों और भाखाके बारेमें फिर कभी कहूँगा। आज इतना ही कह देना चाहता हूँ कि ये सूबे जोंकोंकी बन्दर-बाँट हैं, ये जोंकोंके फायदेके ख्यालसे बने हैं, आगे हमारे सूबे प्रजाके ख्यालसे बनेंगे, और जहाँ जो भाखा चलती हो उसी भाखाके मुताबिक वह परजा अपना पंचायती (प्रजा-तंत्र) राज बनायेगी।

सोहनलाल—और भैया ६०० मुकुटधारियों और उनके बीसियों हजार रानियों, राजकुमारों, राजकुमारियोंका क्या होगा?

भैया—होनहारके सामने खुसीसे सिर झुकायेंगे, तो वह भी आदमीकी तरह रहेंगे, जैसे और लोग खायें-पहिनेंगे उसी तरह उनको भी खाना-कपड़ा मिलेगा। जैसे और लोग अपने लायक काम करेंगे वैसे ही उन्हें भी मिलेगा। लेकिन जो सिरपर काल मँड़रायेगा, तो जैसा एक समय फ्रांसमें हुआ, जैसे रूसमें हुआ, वही गति इनकी भी होगी।

अध्याय १३

दरबारी, पुरोहित और सेठ

सन्तोखी—राजा और रियासतकी कोई जरूरत नहीं, यह तो समझ लिया भैया! यह खाली जोंक हैं, इनसे दुनियाका कोई उपकार नहीं, किसी बखत राजा लड़ते रहे हों, देसके दुसमनोंका मुकाबिला करते रहे हों, लेकिन अब तो उनका काम बिदेसी बनियोंके सामने घुटना टेकना रह गया लेकिन राज-दरबारके साथ जो दरबारियोंकी भारी पलटन होती है उनके बारेमें तुम्हारी क्या राय है।

भैया—उन दरबारियोंमें कितने ही ऐसे हैं कि जो जनताके लाभका कोई न काम कर सकते हैं, लेकिन उसको जुहार करनेमें ही अपनी सारी जिन्दगी बिता देनी पड़ती है। रेल-हवाईजहाजकी बिद्या जिसे साइन्स कहते हैं, उसका

एक गजबका बिदवान है, जो हमारे लिए और अच्छे इंजन तैयार कर सकता है, हवाई जहाज बना सकता है और उसको काम मिला है राजा साहबके मेहमानोंकी खातिरदारी करना। इसी तरहसे और दूसरे बिदवान जो हमारे बड़े-बड़े काम कर सकते थे उनको दरबारी बनकर निकम्मी जिन्दगी बितानी पड़ती है। राजा सराब पीता है, और अपने सारे दरबारियोंको पीनेको कहता है, कोई टीकाधारी पंडित, कोई दाढ़ीवाला मौलवी 'ना' नहीं कर सकता, सबको सराब पीना होगा। फिर राजा साहबका हुकुम हो रहा है और पियो और मुसाहिब धरती छूकर हाथसे सलाम करते हुए प्यालेपर प्याले उड़ेल रहे हैं। फिर गन्दे-गन्दे मजाक सुरू होते हैं तो बूढ़ेसे जवान तकको चाहे किसी धरमके माननेवाले हों सबको अन्नदाताके सामने आदमीसे जानवर बन जाना पड़ता है। मैंने कहा था कि रियासतमें तो सहर और गाँवकी औरतोंकी इज्जत भी बचनी मुसकिल है। महाराज या नवाब साहबकी जिस अभागिनीके ऊपर नजर पड़ी वह अपनेको बचा नहीं सकती।

दुखराम—इसीलिए तो भैया! औरतोंका मुँह ढाँककर रखनेका रिवाज नहीं हुआ?

भैया—हाँ, यही कारन है दुक्खू भाई! मुँह ढाँके रहनेसे रास्ते चलते तो राजा साहब नहीं देख सकेंगे। लेकिन जो दरबारी हैं उनके लिए तो परदा भी कोई चीज नहीं है। जो किसी दरबारीके घरकी सुन्दरी राजासे बच निकली तो इसको भाग समझो। दरबारियोंका हमेसासे यही पेसा रहा है कि राजा दिनको रात कहे तो उसमें तारे उगा दे। भाटोंकी भटैती सुनो तो दुक्खू भाई! तुम्हें अचरज होगा कि इतना झूठ वह क्यों बोलते हैं। जो खुद जानता है कि मुझमें तलवार क्या एक छुरी उठानेकी भी ताकत नहीं है उसको जो कोई भांट या कवि, भीम या अरजुन बनाता है, तो उसे गुस्सा क्यों नहीं आता?

दुखराम—तारीफ करता है तो गुस्सा क्यों आयेगा भैया!

भैया—लुन्जको पहलवान कहने लगे तो वह तारीफ समझेगा या दिल्लगी और अगर तारीफ समझने लगा तब उसे क्या कहोगे दुक्खू भाई!

दुखराम—काठका उल्लू, गोबरगनेस, पक्का बेकूफ कहेंगे भैया !

भैया—और इन छः सौ मुकुटधारियोंमें ऐसे काठके उल्लू बहुत हैं, और कुछ तो अकल रखते काठके उल्लू हैं।

दुखराम—अकल रखते कैसे काठके उल्लू हैं भैया ?

भैया—दरबारका ऐसा ही कायदा है, हमेसासे वैसा ही होता आया है। तो दुक्खू भाई दरबारी लोग जोंकोंके न रहनेपर क्या बनेंगे, इसके बारेमें हमें ज्यादा सोचनेकी जरूरत नहीं है। लेकिन कमेरोंके वह उतने ही दुसमन हैं, जितने कि खुद बड़ी-बड़ी जोंकें।

सोहनलाल—पुरोहितों और मौलवियोंको किसमें समझें भैया ?

भैया—वे खुद जोंक हैं और जोंकोंके दलाल भी। देखते नहीं जब कोई राजा कौन्सिलके लिए खड़े होते हैं तो पुरोहित लोग चारों ओर चक्कर काटने लगते हैं, भगवान और धरमकी दुहाई देते-देते कान बहरा कर देते हैं। पुरोहितों और मौलवियोंने कभी गरीबोंका पच्छ नहीं लिया।

सोहनलाल—भैया तुम भी कबीर साहबकी तरह मौलवियों और पंडितोंके पीछे पड़ गये।

भैया—पंडित सरगका एक रस्ता बताते थे, मोलवी दूसरा रस्ता, मोलवीके मतसे गायका मांस खाकर सरग जाता है, पंडितके मतसे गायका गोबर खाकर पंडित सिरपर चुटिया बाँधकर सरग पहुँचाता है, मोलवी दाढ़ीमें चुटिया बाँधनेको कहता है। फिर यह भी नहीं कि कह दें कि "मारग सोइ जाकहँ जो भावा," वह एक-दूसरेका सिर भी फोड़नेको तैयार थे। कबीर साहबको यह बुरा लगता था, वह इस खून-खराबीको पसन्द नहीं करते थे, चाहते थे हिन्दू-मुसल्मान एक होकर रहें। इसलिये उन्होंने कहा "सोई राम सोई रहीम" बेचारे समझते थे कि है कोई अलख निरंजन इस दुनियाकी सुध लेनेवाला, इसलिए नहीं चाहते थे कि दुनियाकी सुध लेनेवाले (राम-रहीम) पर विसवास करनेवाले एक-दूसरेका गला काटें। उन्होंने सोचा था कि राम-रहीमको एक मान लेनेसे काम बन जायगा लेकिन झगड़ेका दोसी राम-रहीम नहीं था।

दुखराम—राम-रहीम दोसी नहीं था तो कौन दोसी था भैया !

भैया—जो राम-रहीम होता और उसमें उतनी तागत होती जितनी पंडितोंकी पोथियों और मुल्लोंकी किताबमें लिखी हुई है तो हजारों बरसोंसे अपने नामपर करोड़ों आदमियोंको कटते-मरते देखकर वह चुपचाप बैठा न रहता। असलमें मजहबके पैदा करनेवाले भी जोकें हैं। भगवानको भी पैदा करनेवाली जोंकें हैं। मैंने पहले कहा था न कि एक निठल्ले आदमीको कोई क्यों अपना सरबस देकर भूखे मरनेके लिए तैयार होता ? इसीलिए उन्होंने राम रहीमको पैदा किया, जिसने उन्हें राजा बनाया। राम-रहीम हैं, कबीर साहब यह विसवास रखते थे, फिर पंडित-मुल्लाके झगड़ेको मिटाना चाहते थे। उनको पता ही नहीं था कि जब तक दुनियाको नरक बनानेवाली जोंकें हैं तब तक राम-रहीम एक कह देनेसे झगड़ा नहीं मिटेगा।

दुखराम—मैं भी एक बात कहूँ भैया !

भैया—कहो दुक्खू भाई।

दुखराम—तुमने भैया जो उस दिन कहा था न कि मजहब और भगवानको गाली देनेमें हम लोगोंको अपनी तागत नहीं लगानी चाहिए, हमें देखना है कि कैसे कमेरोंको रोटी-कपड़ा मिलेगा ? मैंने अपने मुँहमें जाबा लगा लिया लेकिन जानते हो न भैया, मरकस बाबाकी बातने दिलमें ऐसी आग लगा दी है कि जोंकोंके जाल-फरेबको कहना ही पड़ता है। उसमें जब कोई भाई बीचमें भगवानकी बात कहता है तो नाहीं कहना ही पड़ता है। नाहीं कहना खराब तो नहीं है भैया !

भैया—नहीं दुक्खू भाई, साँच कहना खराब नहीं है। मैंने इतना ही कहा था कि रोटी-कपड़ेकी बात छोड़कर जो तुम देवी-देवता और ओझा-सोखाके खिलाफ़ कहनेमें अपनी सारी ताकत लगा दोगे, तो असली काम पड़ा रह जायगा।

दुखराम—मैं इसे अच्छी तरह समझ गया हूँ भैया ! एक दिन मैं बलींद-पुरमें था। रमजान भइयवा मेरा यार है। रमजान, मैं औ सोवरन राउत तीनों बगीचामें बैठकर बात कर रहे थे उसी वक्त हरखू पंडित उधरसे जा रहे

थे। सोवरनने बाबा पालागी किया, हरखू पंडित पासमें आकर मेरे बारेमें पूछा तो सोवरनने कह दिया कि दुखराम राउत हैं। हरखू पंडितका मुँह उतर गया और आँख बड़ी बड़ीकर मेरी ओर देखने लगे मैंने भी पालागी कहकर उनको बैठने के लिए कहा। उन्होंने कड़ककर कहा—"जा तेरी पैलगी नहीं लेंगे। भगवान को नहीं मानता, देवी-देवताको गाली देता है।" मैंने बहुत नरमीसे कहा—"देवता! दुरबासा रिखी! गरीबपर काहे नराज होते हैं, मैं किसी देवी-देवताको गाली नहीं देता।" हरखू पंडितने कहा—"तो तुम भगवानको मानते हो?" मैंने कहा—"मैं तो बाबा! भगवानको नहीं मानता लेकिन भगवानके पूजनेवालोंसे मेरा बहुत प्रेम है। इसीलिए भगवानको मैं गाली नहीं देता।" हरखू पंडितने मुँह फाड़कर कहा—"जो तू खुद नहीं मानता, तो जरूर गाली देता होगा!" मैंने कहा—"बाबा! हमारा बच्चा है, वह हाथी-घोड़ा लेकर खेलता है, हम सयाने जानते है कि वह असली हाथी-घोड़ा नहीं हैं, लकड़ी-मट्टीका है लड़केको जो यही बात हम कहने लगें तो लड़का रोने लगेगा। बच्चेसे हमको प्रेम है और बच्चेको काठ-मट्टीके घोड़ेसे, इसीलिए बच्चेके प्रेमका ख्याल करके हम उस खिलौनेको भी भला-बुरा नहीं कहते।" मैंने ठीक कहा न भैया!

भैया—हाँ, ठीक कहा दुक्खू भाई!

दुखराम—हरखू पंडितने कहा,—तू भगवानको नहीं मानता, तो तेरी गति नहीं होगी, लेकिन तू भगवानको गाली नहीं देता तो यह अच्छा है। हरखू पंडितकी टेढ़ी भौहें कुछ सीधी हुईं, लेकिन जब वह चलने लगे, तो उनका मुँह उसी तरह उतरा हुआ था। दूसरे दिनकी बात है मैं और रमजान खटियापर बैठे थे, उनके यहाँ गाँवके जुलाहोंको नमाज पढ़ानेके लिए एक मोलवी आते हैं। रमजानने किसी दिन कह दिया था। मोलवीको देखकर हम दोनों खड़े हो गये और उन्हें चारपाईपर बैठाया। मोलवीको किसीने कह दिया था कि दुखराम रमजानके दरवाजेपर बैठा हुआ है, वह राम-रहीमको नहीं मानता। मोलवी साहबने कहा—"सुना है दुखराम राउत तुम करतारको नहीं मानते। हिन्दू मुसल्मान बहुत-सी बातें अलग-अलग मानते हैं। लेकिन दुनियाके

बनानेवालेको सभी मानते हैं, तुम क्यों नहीं मानते ? मैंने कहा– दुनिया बड़ी खराब बनी है मोलवी साहब, हजारों आदमी जी लड़ाकर काम करते, उनका पेट नहीं भरता और एक आदमी निठल्ला बैठा रहता है, वह ऐस-जैस करता है, जिस करतारने ऐसी नरक दुनिया बनाई है उसे मानने से क्या फायदा ?" मोलवीने कहा–"करतारसे दुआ माँगोगे, उसके सामने गिड़गिड़ाओगे तो वह तुम्हारी बिगड़ी बना देगा।" मैंने कहा–मैंने कसूर किया था कि हमें बिगाड़ा, और जो बिना कसूर ही इतना बिगाड़ सकता है उससे मैं किसी चीजकी उम्मेद नहीं करता।" मोलवीने कहा–"तो तुम करतार, सरग-दोजख कुछ नहीं मानते।" मैंने कहा—"मैं नहीं मानता मोलवी साहब, लेकिन आप या दूसरा जो कोई करतारको मानता है, उसको मैं बुरा नहीं कहता। मैं इतना ही चाहता हूँ कि रोटी-कपड़ेकी दुनियामें किसीको चिन्ता नहीं रहे, बस इस काममें हम लोग सब एक रहें, क्योंकि भूख सबको एक तरह सताती है, जाड़ा-गरमी एक तरह लगती है।" मोलवी हरखू पंडितके इतना उजड्ड नहीं थे। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—"तो रोटी-कपड़ेके लिए काम करनेको कौन रोकता है ?" मैंने कहा—"न रोके तो इससे मुझे बड़ी खुसी होगी मोलवी साहब, फिर तो मैं कहूँगा कि रोटी-कपड़ेका काम लोगोंको सौंप दें जो कि जोंकोंका राज हटा हम कमेरोंका राज कायम करना चाहते हैं।"—मोलवीने कहा—"और हम क्या करें।" मैंने कहा—"आपको बहुत बड़ा काम है, जिनगी तो चार दिनकी है न, सरगमें आदमी बे अन्त समय तक रहता है, बस सरगका काम आप सँभालो।" मोलवीने कहा—"जो हम खाली सरग हीकी बात करें, तो हमें कौन पूछेगा। हमें गंडा देना पड़ता है, तबीज देनी पड़ती हैं।" मैंने कहा—"गंडा भी आप दीजिये, तबीज भी आप दीजिये, लेकिन सरग जानेके लिए।" मोलवी ने कहा—"और जो किसीको लड़का-लड़की चाहिये तो।" मैंने कहा—"गंडा-तबीजको मैं नहीं पसन्द करता लेकिन मैं जानता हूँ कि जब तक यह नरककी दुनिया रहेगी तब तक गंडा-तबीजवाले देने-लेनेवालोंको कोई नहीं रोक सकता।" क्यों भैया मैंने ठीक कहा न ?

भैया—ठीक कहा तुमने दुक्खू भाई ! बेठीक होनेका तुम्हें कैसे सक हुआ।

दुखराम—सक इसीलिए हुआ भैया! कि इसके बारेमें बात नहीं की थी। खाली मरकस बाबाने जो आँख खोल दी है, उसीके बलपर मैं बोल गया।

भैया—और तुम्हारा बोलना ठीक रहा दुक्खू भाई!

दुखराम—और जोतिसके बारेमें तुम्हारी क्या राय है?

भैया—जोतिस दो तरहका है दुक्खू भाई, एक तो वह जोतिस है जो गिनती करके बतला देता है, कि सुरुज-गरहन कब होगा चंदर-गरहन कब होगा। अकासमें मंगल, बुध आदि-आदि गरह और हमारी धरती भी सुरुजके किनारे घूमती है। जितने अकासमें तारे छिटके देखते हो, उनमें आँखसे दिखाई देनेवाले पाँच ही छ तारे हैं जो सुरुजके किनारे घूमते हैं, नहीं तो बाकी सभी तारे सुरुज हैं।

दुखराम—तो सब तारे सुरुज हैं भैया! फिर वह इतने छोटे क्यों मालूम होते हैं?

भैया—हमसे बहुत दूर हैं, दो आदमी बराबर-बराबरके हों, एक हमसे पाँच हाथपर खड़ा हो और दूसरा पांच सौ हाथपर, तो पाँच सौ हाथवाला छोटा मालूम होगा कि नहीं?

दुखराम—हाँ, छोटा मालूम होगा भैया!

भैया—यह तारे क्या चीज हैं, यह हमसे कितनी दूर हैं, वगैरह बातें पचास पचहत्तर सालसे ही हमें मालूम हुई हैं।

दुखराम—सुरुज-गरहन, चंदर-गरहनकी बात लोग बहुत पहलेसे जानते थे तो तारोंके बारेमें क्यों नहीं जान सके?

भैया—दूरकी चीज देखनेके लिए आँखको मदद करनेवाली दूरबीन उस वक्त नहीं थी, और बहुत दूर रहनेवाली चीजोंको आँख देख नहीं सकती। अँधेरेमें रोशनी होनेसे कुछ तारे जरूर दिखाई पड़ते थे, लेकिन वह भी बहुत कम दिखाई पड़ते थे। लेकिन मामूली दूरबीन लगाकर देखनेसे भी पचास हजार तारे दिखाई पड़ने लगते हैं। अढाई इञ्ची दूरबीनसे तीन लाख तारे दिखाई पड़ते हैं। आजकल सबसे बड़ी दूरबीन (सौ इञ्ची) बिल्सनगिरि

अमेरिकामें है, उससे डेढ़ अरब तारे देखे जाते हैं !

दुखराम—तो दूरबीनसे आँखकी तागत बहुत बढ़ जाती है ?

भैया—हाँ, उसी तरह जैसे रेडियो बाजासे कानकी तागत बढ़ जाती है। तीन सौ बत्तीस बरस (१६१२ ई०)से पहिले दुनियामें कोई दूरबीन नहीं जानता था। अकबरके मरनेके सात बरस बाद गलेलियोंने पहिली दूरबीन बनाई।

दुखराम—तो जो यह जोतिसी सबका आगा-पीछा बतला देते हैं, किसीको क्या होनेवाला है, सब कह देते हैं; ऐसी बातें तो वह न जाने कै हजार बरससे जान गये थे, लेकिन मामूली दूरबीन भी तीन सौ बरससे पहले नहीं बना सके ! मुझे तो भैया ! यह भाग बतलानेवाला जोतिस भी जोंकों हीका फरेब मालूम होता है। पचास बरस बाद मुझे क्या होनेवाला है, यह पहले हीसे पक्की हो गई, तभी तो जोतिसी मेख-बिरिख कहके बता देता है। फिर जब एक-एक दिन क्या बीतनेवाला है, सभीको पहलेसे ही लिख दिया गया है, तो हाथ-पैर हिलाना बेकार है।

भैया— तुम्हारी जिन्दगी भरकी बात पहलेसे नहीं लिख दी गई, तुम्हारा लड़का कब किस नच्छत्तरमें पैदा होगा, यह भी जोतिसमें लिख दिया है। और जब नच्छत्तर मालूम हो गई तो उसकी भी कुंडली जोतिसी तैयार कर देगा और उसे एक-एक दिन क्या बीतेगा, यह भी जोतिसी बतला देगा।

दुखराम—माने हमारी कुंडली तो बनी है। लड़केकी कुंडली भी बापकी कुंडलीसे तैयार हो सकती है, क्योंकि पुत्र जनम जोतिससे मालूम ही हो जायगा, फिर तो पोते-पर-पोते और साठ पीढ़ी आगे तककी कुंडली और एक-एक दिन क्या बीतेगा, सब बतलाया जा सकता है, जोतिसमें सब लिखा ही हुआ है। यह तो भारी चाल है भैया ! जोंकोंकी। बारह सौ बरस आगे तककी जब सब बातें पहलेसे ही पक्की हैं, तो आदमी हाथ-पैर हिलावे या न हिलावे, बात होकर रहे होगी। तब तो आदमी अपने भाग्यका बनानेवाला नहीं रहा। नहीं, नहीं भैया ! यह हम कमेरोंके हाथ पाँवको बाँधकर जोंकोंके सामने पटक देनेका जाल-फरेब है, जोतिस और कुछ नहीं।

भैया—लेकिन जोंकोंने कैसा ढंग निकाला दुक्खू भाई! तुमको भी पछाड़ दिया, अपना काम भी बनाया और जोतिसीकी भी पाँचों घीमें है।

दुखराम—मुझे तो भैया! आदमीकी बुद्धिपर अफसोस होता है। अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे लोग भी जो कुंडली और हाथ दिखानेके लिए दौड़ पड़ते हैं, जान पड़ता है, काबुलमें भी गधे होते हैं।

भैया—यह कहनेसे कोई फायदा नहीं दुक्खू भाई! जब तक आदमीकी जिन्दगी निश्चिन्त नहीं है, आज भी उसको खाने-कपड़ेकी चिन्ता है, लड़के-लड़की के ब्याहकी भी चिन्ता है, कल उससे भी अधिक चिन्ता है; तब तक आदमीको जोतिसियोंके पास जानेसे कोई नहीं रोक सकता। इसलिए भाग बतानेवाले जोतिसीके पीछे लाठी लेकर पड़नेकी जरूरत नहीं। सबकी जड़ जोंकें हैं, उनको काट दो बस सारा काम हो जायगा।

सन्तोखी—भैया! महातिमा लोग भी तिरकालकी बात बताते हैं और उनके जालमें भी लोग फँस जाते हैं।

भैया—एक जाल नहीं, यहाँ पग-पगपर जाल है दुक्खू भाई! एक भाई ने मुझे चिट्ठी लिखी है—इधर कुछ दिनोंसे मुझे यहाँ एक प्रधान मत "जैन श्वेताम्बर तेरा पंथी" के आचार्यका सत्संग होनेके पश्चात्...आधुनिक समयमें जब कि मनुष्यने सुखकी प्राप्ति भौतिक साधनों-द्वारा सम्भव मान ली है, जब कि विलासिता और ऐश्वर्यका बोल-बाला है, जब कि सभ्यताके नामपर हमने मनुष्यत्वको, देवत्वको तिलांजलि दे दी है; इन साधुओंकी तत्परता, इनका त्याग, इनका वैराग्य, इनका संयम इत्यादि देखकर मनुष्योंको चकित रह जाना पड़ता है। मैं दावेके साथ कह सकता हूँ, जितनी सच्चाई और दृढ़ताके साथ इनका पालन ये करते हैं, वह अद्वितीय हैं; संसारमें रहते हुए जो विरक्ति ये लोग सांसारिकोंसे रखते हैं, वह अभिनन्दनीय है। श्री भूलाभाई देसाई और हिन्दू-महासभाके सहायक-मन्त्री चकित रह गये। उन्होंने यहाँ तक कहा कि इनकी अहिंसाके सामने तो गीताकी अहिंसा भी फीकी पड़ जाती है।...हिन्दू-महासभाके सहायक, मन्त्री तो यहाँ तक मुग्ध हो गये, कि उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें कह दिया, कि अगर मैंने कभी धर्म ग्रहण किया तो इसको

छोड़कर दूसरा कदापि न करूँगा। इनका त्याग इतना जबर्दस्त है कि गृहस्थ लोगोंके साथ सम्पर्क तो दूर इनको अगर यह पता चल जाय, कि कोई वस्तु हमारे लिये खरीदी या तैयार की गई है, तो भिक्षामें भी उसे कदापि ग्रहण न करेंगे। संयम इतना कि साध्वियाँ पुरुषमात्र और साधू स्त्रीमात्रके स्पर्शको पाप मानते हैं। पचासों आजन्म ब्रह्मचारी आपको मिलेंगे। जिन-जिन लोगोंने इनकी जाँच की है, उनकी एक मतसे यही राय रही है, कि यह पूर्वकी एक आदर्श संस्था है। मेरा भी झुकाव इस तरफ होनेके बावजूद मैं इसको उस वक्त तक नहीं मानना चाहता, जब तक आप इसकी जाँच न कर लें।" (२६ जुलाई १९४४ ई०)।

दुखराम—भैया संसकिरतमें किसीने लिखा है क्या, मुझे तो कुछ समझमें नहीं आया ?

भैया—नहीं आया वही अच्छा है दुक्खू भाई, समझमें आया होता तो न जाने क्या कह डालते।

दुखराम—आप कहेंगे तो मैं जीभको बाँधकर रखूँगा भैया ! लेकिन सुनायें तो क्या बात है।

भैया—एक बात यह है कि खाते-पीते आदमी हैं, उनके पास पक्का मकान है, नौकर-चाकर हैं, देखा तो नहीं सायद उनकी बीबी भी हों, बच्चे भी हों, उनके बदनपर सोनेका गहना और रेशमी नहीं तो अच्छी बारीक सूत की साड़ी रहती हो, खानेके लिए दूध-घी और फल-मेवा भी मिल जाता हो। कलकी चिन्ता उनको उतनी ही है, जितनी किसी करोड़पति सेठको, दूसरे दिन दिवालिया हो जानेकी।

दुखराम—भैया ! जोंकें कलकी परवाह नहीं करतीं, वह नगद धरम मानती हैं "आज नगद कल उधार"।

भैया—तो भी दुक्खू भाई, जिसने यह खत लिखा है, वह चाहे जोंकोंका ही अंडा-बच्चा हो, लेकिन उसका दिल उतना कठोर नहीं है। बेचारा बड़ी कोसिस करता रहा है, कि जोंकोंके जालसे निकलें, लेकिन जोंकोंका जाल कहाँ-कहाँ फैला है, इसको जानना बहुत मुस्किल है। चिड़िया हवामें उड़ना चाहती

थी, उसने समझा कि निरमल अकासमें कोई डर नहीं, लेकिन बहेलियाने वहाँ भी जाल टाँग रखा है। और उसी जालमें पड़कर फड़फड़ा रही है। बेचारा भाई एक साधूको देखता है, जो दुनियाके लोगोंसे बिलकुल बैराग रखते हैं जिनके बैरागको देखकर हिन्दुस्तानके आरामसे जिन्दगी काटनेवाले कुछ बड़े-बड़े लोग।...

दुखराम—बड़ी-बड़ी जोंकें।

भैया—बड़े-बड़े लोग अचरज करते हैं और एक बड़े आदमी तो ऐसे हैं कि हिन्दू धरमका बेड़ा-पार करते हैं, लेकिन अभी तक वह कोई धरम नहीं मानते, इन महातिमाको देखकर उन्हें भी धरम माननेकी साध लगी।

दुखराम—वही सावरकरवाली हिन्दू-सभा न भैया, जो बड़ी-बड़ी जोंकोंकी मुट्ठीमें है।

भैया—अच्छा, ये महातिमा इतने त्यागी हैं कि जो इनके लिए कोई चींज खरीदकर भी दे तो वह भिच्छामें नहीं लेते।

दुखराम—तब तो वह महातिमा खाली हवा पीते होंगे। क्योंकि दुनियामें जोंकोंकी कोई ऐसी चीज ही नहीं है, जिसे खरीदा-बेंचा न जाय।

भैया—और मैं यह भी समझता हूँ दुक्खू भाई! कि यह महातिमा ऐसे गरीबोंके घरोंमें नहीं रहते होंगे, जो खून-पसीना एक करके धरतीसे अनाज पैदा करते हैं, कपास पैदाकर अपने हाथसे कपड़ा बनाते हैं; क्योंकि महातिमा-के पचासों चेलों और चेलियोंको बैठे-बैठे खाना-कपड़ा देना गरीबके बसकी बात नहीं है।

दुखराम—पचासों चेले-चेलियाँ! और वह करते क्या हैं भैया?

भैया—वह तमाम जिनगी भर बरमचारी रहते हैं, न औरत-मर्दको छूती है, न मर्द औरतको छूता है।

दुखराम—हिंजड़ा-हिंजड़ी होंगे भैया! इसमें कौन बात है।

भैया—हिंजड़ी-हिंजड़ी न भी हों तो भी दुक्खू भाई! मैं साधू-साधुनियों-की लीला जानता हूँ। बरमचारी तो क्या होंगे, लोगोंकी आँखमें धूल झोंकते हैं। बस यही ध्यान रखते हैं, कि बात खुलने न पाये। एक-दो आदमीकी बात

कहते, तो मैं समझता कि पागल होंगे या जैसा तुम कह रहे हो उसी तरहके हिंजड़े होंगे; लेकिन जब पचास-पचास चेले-चेलियोंके तमाम जिनगी बरहमचारी रहनेकी बात कहते हैं, तो मुझे इसमें जरा भी सक नहीं, कि यह खूब जबर्जस्त ढोंग है। ऐसे बरहमचारी-बरहमचारिनियाँ रिखीकेसमें हजारों हैं, उत्तर-कासीमें भी है। कितने तो गंगोत्तरीके हाड़ चीरनेवाले जाड़ेमें बिल्कुल नंगे दिगम्बर रहते हैं। उनमें एक है महातिमा किसन आसरम। आज बीसों बरससे वह हिमालयमें नंगे रहते हैं, उनकी तपस्याके बारेमें क्या पूछते हो, हिन्दूधरमके सबसे बड़े नेता मालवीजीको अपने बीस लाखवाले मन्दिरके नीव रखनेके लिए हिन्दुस्तान भरके बड़े-बड़े महात्माओंकी खोज होने लगी। उस वक्त मालवीजी को महात्मा किसन आसरम ही ऐसे दिखाई पड़े, जो कासीमें आकर दूसरे विस्व नाथ बाबाके नेंव डालने लायक हैं। उन्होंने ही विस्वनाथ की नींव डाली। और महात्मा किस आसरम बड़े बरहमचारी हैं, उन्होंने सिरिफ राजाराम बरहमचारी के गूंगे लड़केकी बहू भानदेको गीता पढ़ाया और बेचारे पहाड़ी गीत गाते फिरते हैं—

"चवन्नीको पेरा, तैं क्या बुरा मानो राजरामको डेरा।
झाका बुनी खाट रे। तैं भलो सीक्यो गीताको पाठ रे।
चीणे तू बँगला भान दे! चीणे तू बँगला तैंने कानों छोडो हरसिलको जँगला। गूँगानीको गोली, तैं ना भालो भान दे! अबोलाके बोली।"

दुखराम—किसन आसरम और भानदे न जाने कितने पड़े हुए हैं भैया।

भैया—एक आदमी और एक औरत साथमें रहें, यह कोई बुरा नहीं है, लेकिन यह बरहमचारी-बरहमचारोंका ढिंढोरा क्या पीटा जाता है। मान लो दुक्खू भाई कोई मरद रहते भी हिंजड़ा बन जाता है, तो दुनियाको इससे क्या फायदा?

दुखराम—दुनियाको न फायदा हो, जोंकोंको तो फायदा है, वह कहती फिरेंगी कि छोड़ो दुनियाके सुख-दुखको, इसी तरह तुम भी महात्मा बन जाओ।

भैया—दुनियामें हजारों बरसोंसे ऐसे बरहमचारी होते आये हैं, इनसे

भी बढ़कर त्यागी हुये हैं, लेकिन उससे दुनियाका नरक जौ भर भी कम नहीं हुआ।

दुखराम—और इन हजार बरसोंमें जबसे कि जोंकोंका राज कायम हुआ, लोग बराबर इस तरहके जालमें फँसते रहे?

भैया—मैं तो समझता हूँ दुक्खू भाई! ऐसे साधुओंमें कुछ ईमानदार भी रहे होंगे, वह दिलसे धनियोंको पसन्द नहीं करते थे; हाँ, बेसी धोखेबाज और पागल ही रहे हैं लेकिन ईमनदारोंकी ईमानदारी और सचाई किस कामकी जो कि गरीबोंके गलेके फन्देको और मजबूत करती हैं? जो इन महात्माओंमें ईमानदारी है, और इनमें सोचने-समझनेकी तागत है, तो क्यों नहीं समझ लेते कि जो हजारों बरससे नरककी जिन्दगी बिताते हैं, उन ६६ सैकड़ा लोगोंके दुख को दूर करना है। वह ब्रह्मचर्य किस कामका, जो आदमीको खुदगरजी सिखाये वह दुनियाको चूल्हे-भाड़में पड़ने दे और अपने निरवानके पीछे दौड़ता फिरे। मैं तो महात्मा उसे कहूँगा, जो प्रतिज्ञा कर ले, कि जब तक करोड़ों आदमी पीढ़ीके बाद पीढ़ी नरककी जिनगी बिता रहे हैं, तब तक मेरे लिये निरबान नहीं चाहिए, मुकती नहीं चाहिए, सरग नहीं चाहिये। वैसे तो कितने ही घोड़े-घोड़ियाँ थानपर बँधे जिनगी भर बरह्मचारी रह जाती हैं। लेकिन जिस दिन वह महात्मा यह बात तय कर लेंगे, उस दिन उन्हें आँटे-चावलका भाव मालूम हो जायगा, फिर सेठ-सेठानियाँ उनकी आरती नहीं उतारेंगी, फिर राजा-नवाब उनका चरना-मिर्त नहीं लेंगे।

सोहनलाल—तो भैया तुमने क्या जवाब दिया चिट्ठीका, क्या महात्माका दरसन करने जाओगे?

भैया—मैंने अपने एक दोससे कहा कि आप चलें तो मैं भी चलूँ। उन्होंने जवाब दिया—"मैं ३५ साल तक जंगल-जंगलकी धूल फाँकता फिरा, न जाने कितने महात्माओंको देखा है और उनमें दो ही तरहके आदमी मिले हैं या तो छटे बदमास जादूगर, या पागल। मैं अब जिन्दगीका एक दिन भी ऐसी दौड़-धूपमें नहीं लगाना चाहता।

सोहनलाल—लेकिन भैया, तुम्हें जो उन्होंने महात्माकी जाँचके लिए

बुलाया है, जो जाँचकरके बतला नहीं दोगे, तो वह महात्माके चेले बन जायेंगे ?

भैया—सोहन भाई, मनमें बुरा मत मानना। मैं जोंकों और जोंकोंके लड़कोंपर तनिक भी विसवास नहीं करता और यह भी बतला दूँ, कि पढ़े लिखे बाबुओंपर भी मेरा विसवास नहीं है।

सोहनलाल—तो पढ़ना-लिखना बुरा है भैया ?

भैया—जो मैं पढ़ने-लिखनेको बुरा मानता, तो कहता कि मोटर-हवाई जहाजको छोड़कर पत्थरके हथियारोंके युगमें चले चलो। मैं चाहता हूँ इससे भी अच्छी हवाई जहाज बने, इससे भी बढ़िया रेडियो-बाजा और रेडियो-दरपन निकले। लेकिन जानते हो न आज हवाई जहाज जोंकें दुनियाको गुलाम बनानेके लिए रखती हैं। रेडियो बाजाके बलसे बिना आदमीका हवाई जहाज चलाकर हिटलर बिलायतके सहरों और गाँवोंको मार रहा है। अंगरेज जिन जवानोंको अपना कलक्टर और डिप्टी बनाते हैं, वह बहुत पढ़े लिखे हैं गजबकी जेहनवाले हैं। हजार-हजार पढ़ाकू जवानोंमेंसे छाँट-छाँटकर २५को लेते हैं और जानते हो न, वह क्या करते हैं ? इसीलिए मेरा इनपर विसवास नहीं है। विसवास ही नहीं कभी-कभी तो मैं इनके आचरनको देखकर जल-भुन जाता हूँ। मुझे वह आदमी भी नहीं मालूम होते।

सोहनलाल—और जो वह भाई कुछ-कुछ रास्ता देखने लगा था, वह फिर भूल जायेगा ?

भैया—ऐसे एक नहीं हजारो भूलते-भटकते रहें, मुझे उनकी कोई परवाह नहीं। यह लूले-लंगड़े, अपाहिज लोग क्या काम कर सकते हैं, जिनको अपनी मुक्ति, अपना भवन और अपना पेट सबसे पहिले सामने आता है।

दुखराम—जोंकोंके लड़कोंमें कोई अच्छा भी निकल सकता है भैया, लेकिन लाख करोड़में बिरला ही कोई लाल निकलेगा "जाके पैर न फटी बेवाई; सोका जानै पीर पराई।"

भैया—जोंकोंके खानदानने, दुक्खू भाई, हमेशा धोखा दिया। रूसमें

हजारों जोंकोंके लड़के थे, जो पहिले बहुत मजूरों किसानोंके राजकी बात करते थे, लेकिन जब मजूरों-किसानोंका राज कायम हो गया, तो वह दुसमनोंसे मिल गये। जो वह दुसमनोंसे न मिले होते, तो पाँच बरस तक लेनिन महात्मा और उनके साथियोंको लड़ना न पड़ता और न लाखों युद्ध और करोड़ों भूख-अकालकी भेंट चढ़ते।

सोहनलाल—तो क्या हिन्दुस्तानमें हमें जोंकोंके लड़कोंको पासमें भी नहीं आने देना चाहिये?

भैया - बापके कसूरके लिये बेटेको सजा जोंक ही दे सकती हैं। हिटलरने किसी सहरमें अपने एक आदमीके मारे जानेपर सौ-सौ आदमियोंको पकड़कर जहाँ-तहाँ फाँसीपर लटका दिया, यह उन्हींका न्याय है। हम मरकस बाबाके चेले, जोंकों और फसिहोंके आदमी नहीं हैं, इसीलिए जोंकोंके कसूरके लिए उनके बेटे-पोतोंको सजा नहीं देते या कहेंगे कि तुम हमारे पास, न आओ। लेकिन उनसे यह जरूर कहेंगे कि बाबू! तुम हैजा-पिलेगवाले गाँवसे आ रहे हो, अभी बीमारी नहीं दिखाई पड़ती, लेकिन मालूम नहीं किस अँतरा-कोठरीमें बीमारीका कीड़ा चला आया, इसलिये हमको भी इसका ख्याल करना पड़ेगा और तुमको भी करना पड़ेगा।

दुखराम—भैया! यह बात भी मरकस बाबाने बतलाई है क्या?

भैया—हाँ, मरकस बाबाने बतलाई है, लेनिन महात्माने बतलाई है, स्तालिन वीरने बार-बार सजग कराया।

सोहनलाल—जोंकोंके लड़कोंके लिए तो भैया! तुमने साफ बतला दिया, लेकिन हिन्दुस्तानके बहुतसे सेठ लोग हैं, जो गांधीजीका बचन मानते हैं, लाखोंका दान देते हैं और मौका पड़नेपर जेहल जानेसे भी नहीं हिचकिचाते, उनके साथ कैसे बरताव करना चाहिये।

भैया—सोहन भाई! मैंने कहा था, कि पहले पियाजके बाहरका छिलका तोड़ना है, तब भीतरका। सबसे पहले हमें बिलायती जोंकोंसे लोहा लेना है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं, कि हम देसी जोंकोंके जुलुमको आँख मूँद-कर सहते जायँ।

सोहनलाल—लेकिन भैया, जो देसी जोंकोंसे भी लड़ते रहेंगे, तो वह बिलायती जोंकोंसे लड़नेमें हमारा साथ क्यों देंगी ?

भैया—अपने स्वार्थके लिये मदद देंगी दुक्खू भाई, बिना हमारी मदद के वह बिलायती जोंकोंको पछाड़ नहीं सकतीं और बिना बिलायती जोंकोंके पछाड़े उनका रोजगार नहीं बढ़ता। बिड़ला, डालमिया, सिंहानियाँ, ताताके पास आज करोड़ों रुपया पड़ा हुआ है, जिससे वह मोटरका कारखाना खोलना चाहते हैं, हवाई जहाज और जहाज बनाना चाहते हैं, नये-नये कागज, मसीन वगैरहकी मिलें खोलना चाहते हैं। वह अमेरिकासे इसके लिये कल-पुर्जा मंगाना चाहते हैं, लेकिन बिलायती जोंकोंने हुकुम दे दिया है, कि तुम लड़ाई भर कोई ऐसा काम नहीं कर सकते। बिलायतने हिन्दुस्तानका अन्न, कपड़ा, जूट, चाय इतना खरीदा है, कि दस खरबसे ऊपर रुपया हमारा उनके ऊपर चढ़ गया है, लेकिन वह सोच रहे हैं कि कैसे इस रुपयेको पूरा नहीं तो आधा-तीहा हड़प कर लिया जाय। कभी सोचते हैं कि रुपये के भावको डेढ़ सिलिंगसे एक सिलिंग कर दिया और तिहाई-पावना (करज) हवा हो जाय। जानते हो न, इससे हिन्दुस्तानकी जोंकोंको कितना नुकसान उठाना होगा ? हिन्दुस्तानी जोंकें भली भाँति जानत हैं, कि जब तक बिलायती जोंकोंके हाथमें हमारी चुटिया है, तब तक हमें फूलने-फलनेका मौका नहीं मिलेगा।

सोहनलाल – क्या बिलायती जोंकें नहीं जानतीं, कि जो हिन्दुस्तानी जोंकोंको ज्यादा दबाया जायगा, तो वह हिन्दुस्तानी किसान-मजूरोंके साथ मिलकर सामना करेंगी।

भैया—जानती हैं, लेकिन तुम भी जानते हो न कि जोंकें एक बार अपनी तोंदको खाली नहीं कर देंगी, जोंकें जौ जौ कटकर मुआ करती । उनके दिमागमें यह बात है, कि किसी तरह हिन्दुस्तानी जोंकोंको फँसाया जाय। वह जादू पढ़ पढ़कर अच्छत फैंक रही हैं। हिन्दुस्तानकी जोंकोंके बड़े बड़े नेता अबकी (१९४४) जाड़ोंमें बिलायत जा रहे हैं। बिलायती जोंकें अभीसे उनकी खातिर-बातके लिए तैयारी कर रही हैं। कुछ दे-दिवाके वह उनसे

सुलह करना चाहेंगी, जिसमें कि लड़ाईके बाद इंग्लैंड और हिन्दुस्तानके कमेरे जोंकोंको खाने दौड़ें, तो दोनों देसोंकी जोंकें एक होकर लड़ें।

सोहनलाल लेकिन भैया! जो बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानी जोंकोंसे समझौता करना चाहतीं, तो पंन्द्रह बरसमें हिन्दुस्तानके धन-धान्यको दुगुना बनानेके खरेंको ताकमें न रख देतीं। इस खरेंको ताता-बिड़ला वगैरह हीने न बनाया है।

भैया--बहुतसे लोग समझते हैं, कि बिलायती दूकानोंमें चीजोंका एक मोला बोला जाता है, लेकिन बिलायती जोंकें हर जगह इस बातको नहीं मानती। बड़ी-बातोंके लिए उनके यहाँ भी मोल-भाव होता है। बिलायती जोंकें कहेंगी, तुम भी कुछ नीचे उतरो और हम भी कुछ आगे बढ़ें; फिर हमारा समझौता हो। बिलायती जोंकोंकी नेत नहीं है कि हिन्दुस्तानी जोंकें बेरोक-टोक कारखाने खोलती जायँ; क्योंकि लड़ाईके वक्त जो कारखाने खुल गये, तो बाजारमें कोई दूसरा मुकाबिला करनेवाला ही नहीं करेगा, इसलिए उनकी जड़ जम जायगी। और एक बार जड़ जम जानेपर फिर उखाड़ना मुसकिल होगा।

सोहनलाल—इसीलिये तो नहीं भैया! ताता-बिड़लाके १५ बरसवाले खर्रामें हिन्दुस्तानकी गोरी सरकारने खेतीके कारबारको बढ़ानेके लिये अपना दस-अरब का खर्रा तैयार किया है। सरकार अब किसानोंकी सुधि लेनेवाली है क्या?

दुखराम—गाढ पड़ेपर गधेको भी दादा कहा जाता है भैया, कोई ऐसी ही बात तो नहीं है?

भैया—अंगरेजी सरकार चाहती है, कि सुराजकी बातको कोई और बात करके भुलवा दें। वह समझती है कि हिन्दुस्तानमें किसान बहुत रहते हैं, अब थोड़ा उनकी ओर ध्यान दें और उनके पेटमें दो रोटी बेसी जाय, तो क्या जाने हमारी जयजयकार मनाने लगें। और फिर साहब लोग जिस गाँवमें जायँ लोग चरन पखारनेके लिए थालीमें पानी लेकर दौड़ें।

दुखराम—तो क्या भैया! सचमुच किसानोंको दो रोटी बेसी मिलेगी!

भैया—छ रोटीकी भूखमें दो रोटी।

दुखराम—लेकिन वह तो तावापर 'छन्न' होगा और लौर (ज्वाला) बढ़ेगी।

भैया और वह यह भी समझती हैं, कि हिन्दुस्तानी किसानोंके पास जो चार पैसा बेसी होगा, तो वह बेसी चीजें खरीदेंगे और हमारा माल बिकेगा।

दुखराम—बनियेका दाँव, बिलाईको चारों ओर छीछड़ा ही दिखाई देता है। लेकिन भैया! हमारे पास चार पैसा बेसी कहाँसे आयेगा?

भैया—खेतीको अच्छी तरहसे करोगे तो चार पैसा बेसी आयेगा, लेकिन तुम अच्छी तरह खेती तब तक नहीं कर सकते, जब तक खाद और पानीका अच्छा इन्तजाम नहीं हो।

दुखराम—तो क्या वह खाद और पानीका अच्छा इन्तजाम करना चाहते हैं?

भैया—बिलायतकी एक बहुत बड़ी कम्पनी है जिसका मालिक है मकगावन। उसकी आमदनी रोजकी दो हजार रुपयासे बेसी है, यह लड़ाईके वक्तकी आमदनी है।

सन्तोखी—लड़ाई न होती तो कितनी आमदनी होती भैया?

भैया—तो बीस हजार रोज होती।

दुखराम—यह मजूरोंका खून चूस-चूसकर ही न भैया?

भैया—हाँ, उसकी एक कम्पनीका नाम है 'इसी' जिसके पास दो अरब रुपयेकी पूँजी है।

दुखराम—दो अरब तो बहुत धन होगा भैया!

भैया—बहुत धन होता है दुक्खू भाई! कोई बड़ा इमलीका पेड़ होता है उसमें एक लाख पत्ती होती है। वैसे-वैसे दस हजार इमलीके पेड़ हों, उनकी जितनी पत्ती होगी, उतना रुपया इस कम्पनीके पास है! उसके कारखाने इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और और हिन्दुस्तान तक ही नहीं फैले हुए, बल्कि जर्मनी, जापान, इटली तक फैले रहे हैं। आजकल इस कम्पनीके बड़े-बड़े आदमी हिन्दुस्तानमें चक्कर

काट रहे हैं। यह कम्पनी माटी और पानीसे सैकड़ों तरहका सोडा, तेजाब, सोरा, और दूसरी चीजें बनाती है। चर्चिलका दोस्त मकगावन सोच रहा है कि हिन्दुस्तानमें अपनी कम्पनीका जाल फैला दें और करोड़ों मन खाद हर साल किसानोंको दें।

सन्तोखी—करोड़ों मन खाद बेंचनेका मतलब है करोड़ों रुपया कमाना।

भैया—और क्या मकगावन हिन्दुस्तानमें पुन्न कमाने आयेगा? फिर बिलायतमें पाइप, इंजन और बिजली पैदा करनेवाले करोड़पतियोंकी कम्पनियाँ हैं, वह गाँव-गाँवमें बड़े-बड़े पाइप लगायेंगी और बिजलीके जोरसे पानी खींच-कर किसानोंको रुपया-आठ आना बीघेपर सींचनेके लिए पानी देंगी। जहाँ नदीसे नहर निकलने लायक रहेगी, वहाँ नहर निकालेंगी, जहाँ बाँधकी जरूरत होगी वहाँ बाँध बाँधेंगी।

दुखराम—और हम लोगोंका जो दो-दो बिस्वा (कट्ठा)का कोला कोई एक जगह नहीं है?

भैया—सरकार सब कोलोंको इकट्ठा कर देगी। किसान अच्छे कोलेके बदले कमजोर खेत नहीं लेना चाहेंगे, लेकिन खाद डालनेसे ऊसर भी उपजाऊ हो जाता है भाई! वह समझा देंगे कि खेत इकट्ठा करने हीमें फायदा है। फिर एक काम और करेंगे, बिलायती कम्पनियाँ किसानोंको किरायेपर मोटरका हल देंगी।

सोहनलाल—सब इन्तजाम बिलायती कम्पनियाँ अपने हाथमें लेंगी?

भैया—मोटर-लारी बिलायती कम्पनियाँ ही न बनाती हैं सोहन भाई, लेकिन हर जिलेमें जो सड़क सड़कपर लारियाँ दौड़ रही हैं उनके चलानेवाले बहुतसे हिन्दुस्तानी हैं। वह कम्पनीसे लारी खरीदते हैं। कम्पनी पहिले ही अपना नफा खींच लेती है। उसी तरह मोटर-हल वह उन लोगोंको भी दे देगी जो अपनी तरफसे चलाना चाहेंगे। बिलायती जोंकें समझ रही हैं, कि इस तरह जो खेत दो मन गेहूँ पैदा करता है, वह सोलह मन पैदा करेगा। किसानोंके पास बेसी अनाज पैदा होगा, बेसी सरसों, रेंड़ी होंगी, तो वह ज्यादा

हमारा माल खरीदेंगे।

दुखराम—तो वह हम लोगोंको साझेकी खेती भी करने देंगे भैया ?

भैया—जोंकें ऐसा खतरा नहीं होने देंगी। जो साझेकी खेती होने लगी तो गाँव भरके किसानोंका मरना-जीना एक हो जायगा। एक हो जानेपर वह बहुत मजबूत बन जायेंगे।

दुखराम—तो जमींदारों-तालुकदारोंकी जान तो नहीं बचने पायेगी ?

भैया—जमींदारों-तालुकदारोंकी परवाह करे साहबोंकी बलाय। जब तक उनके रखनेसे काम बनेगा रक्खेंगे जब भूखे भेड़ियोंको एक घोड़ेकी बलि दिये बिना जिउ (जी) नहीं बचेगा, तो वह भी करेंगे। जमींदार-तालुकदार जो कुछ घबरा रहे हैं, उसका कारन यही है।

सोहनलाल—तब तो भैया ! गाँवोंका रङ्ग-रूप बिल्कुल बदल जायगा !

भैया—चीनीकी मिलें तो बहुत थोड़ी-सी खुली हैं, लेकिन देख रहे हो न उन्होंने खेतीको कितना बदल दिया। लोग बिलायती ऊख ज्यादा बोना चाहते हैं। किसानोंको हजारों बरस पहले जा मालूम था, उसी ढंगसे वह अब भी खेती करते आये हैं। गोबरको खेतमें डालनेसे अनाज ज्यादा पैदा होता है, फिर रोटी कैसे पकायें, इसलिए किसान गोबरका गोंयठा पाथ डाला करते हैं। पत्थरका कोयला सस्ता गाँव-गाँवमें पहुँच जाय और लोगोंकी जेबमें पैसा भी हो तो, लोग पत्थरका कोयला भी जलाने लगेंगे।

दुखराम—"लेकिन पत्थरके कोयलेकी रोटी उतनी मीठी नहीं होती भैया !

भैया—रोटी मीठी नहीं होती तो यह भी बिलायती जोंकोंके फायदेकी बात है। तुम अपना गोबर जितना खेतमें डालते, उतनी ही बिलायती खाद कम न खरीदते ? अब वह तुम्हारे सारे खेतोंके लिए खाद देंगी।

दुखराम—लेकिन भैया, वह तो सब चीजका पैसा माँगेंगी न ?

भैया—पैसाकी परवाह मत करो दुक्खू भाई ! मकगावनका दलाल कहेगा—'आओ दुखराम राउत, लो पहले एक सिगरेट तो पियो। पैसेकी परवाह मत करो, हमारा साहब बड़ा दयालु है। वह कहता है किसानोंको जो जरूरत हो वह सब चीजें दो। पानी लो, खाद लो, मोटरका हल लो,

बढ़िया-बढ़िया बीज लो, जब तुम्हारे खेतमें पचीसकी जगह दो सौका अन्न उपजे, तो पचास रुपया हमारे साहबको दे देना, तुम्हें भी पचीसकी जगह डेढ़ सौ मिलेगा।

दुखराम—है तो भैया! बड़ी फँसान फसानेकी बात। क्या सचमुच ऐसा होगा?

भैया—इसमें कोई जादू-मन्तरकी बात देखी तुमने? मिलिटरी लोरी गाँव-गाँवमें चक्कर काट रही है, जो कारखाने मिलिटरी लोरियाँ तैयार कर रहे हैं, वही अब मोटर-हल तैयार करेंगे, उसी तरह दूसरे कारखाने भी तुम्हारे काम-की चीजें बनाएँगे। तुम्हारे पास पैसा नहीं है, इसलिए चीज नहीं खरीद सकते। वह तुम्हें पैसा पैदा करनेका ढंग दिखायेंगे।

सोहनलाल—तब किसानोंके देहपर खून भी चढ़ेगा, कपड़ा-लत्ता भी होगा, उनके बच्चे अच्छर भी पढ़ेंगे, और आजकल जो लोग इसकूलोंसे पढ़कर निकलते हैं, गली-गली धूल फाँकते हैं, उनके लिए भी काम मिलेगा।

भैया—और उनके लिए भी काम मिलेगा, जो लड़ाईके बाद पलटनोंके टूट जानेसे अपने अपने घरोंमें लौटेंगे।

सन्तोखी—तो अंगरेज पलटनके सिपाहियोंका भी ख्याल कर रहे हैं?

भैया—ख्याल नहीं करेंगे। २५-२५ लाख जवानोंको सब तरहका हथियार चलाना सिखाया। पचीसों लाख हिन्दुस्तानियोंको हर तरहका हथियार बनाना सिखाया

दुखराम—तो अपने लिये बहुत बुरा किया है भैया?

भैया—जापान खा जानेवाला था, जर्मनी निगल जानेवाला था, क्या करते? सत्तर बरस तक तो हिन्दुस्तानियोंको खाली बन्दूक भाँजना सिखाया था। लेकिन आजकलकी लड़ाईमें बन्दूक बन गई है लाठी। अब जरूरत है टामीगनकी, मसीनगनकी, टंककी। सब सिखलाना पड़ा। और सिखाया इतना है कि एक अँगरेज अफसर बोल रहा था—खबरदार, इन सिपाहियोंको गाँवमें भूखे मरनेके लिए मत भेजना; नहीं तो जबर्जस्त डाकू बनेंगे। ऐसे डाकू, जिनसे उस वक्तकी सरकारी पलटन भी पनाह माँगेगी।

दुखराम—क्या ऐसी बात है ?

भैया—बन्दरको देखा है न दुक्खू भाई, एक पेड़से दूसरे पेड़प' कूदते ! आजकलके सिपाहियोंको सिखलाया गया है, कि कैसे कमरसे एक रस्सेको बाँधकर पेंग मारते, एक पेड़से दूसरे पेड़पर कूदते आगे बढ़ा जा सकता है। कैसे नदीपर एक रस्सा तानकर हाथ-पैरसे लटकते इस पारसे उस पार पहुँचा जा सकता है। कैसे बाँसके टुकड़ोंको बाँधके उसपर बरसाती बाँधकर नाव बनाई जा सकती है। कैसे जंगलमें घास-पत्ती खोंसकर ऐसे छिपा जा सकता है, कि कोई पता भी न लगा सके, कैसे सूखी धरतीमें वैसा कपड़ा पहना जाय, कि लेटनेपर किसीको पता न चले। कैसे छापा मारके बन्दूक और मसीनगन छीनी जा सकती है और बिना हथियारके ही एक छोटेसे झटकेसे बिना हथियार होके आदमीको पलक मारते-मारते मार दिया जा सकता है।

दुखराम—यह सब बातें सिपाहियोंने सीखी है भैया ! तब तो सचमुच सिपाहियोंको गाँवमें भूखे मरने देना बुरा होगा ?

भैया—जाबिर दुसमन था, सिखाते नहीं तो क्या करते ? सरकार समझती है, कि जो किसानोंके इन लड़कोंको भूखे मरनेके लिए गाँवोंमें भेज दिया गया, तो खैरियत नहीं। जो हिन्दुस्तानियोंमेंसे ही किसीको लूटते-पाटते, तो साहब बहादुर चसमा लगाकर इजलासपर फैसला सुनाते। लेकिन दुक्खू भाई ! हर वक्त भस्मासुरके भूतनाथपर चढ़ दौड़नेका डर है। सिपाही सीखी विद्याको पलटन हीके साथ छोड़ नहीं आयेंगे। देसमें किसानों-मजूरोंके राजकी बात करनेवाले आदमी भी अब बहुत हैं। सिपाहियोंने रूसके बहादुर सिपाहियोंकी बहुत सी बातें सुनी हैं, वह सिनेमामें लाल-पलटनकी लड़ाई भी देख चुके हैं। और कोई-कोई लाल पलटनके सिपाहीसे हाथ भी मिला चुके हैं। इतना तो हर सिपाही जानता है, कि लाल पलटनके सिपाही सब किसानों-कजूरोंके लड़के हैं। कितनोंने अभी सुन लिया होगा, और कितने आगे सुन लेंगे, कि रूसमें जोंकोंको बिदा कर किसानों-मजूरोंने अपना राज कायम किया है। फिर बेकार भूखे मरते सिपाही चोरी डकैती नहीं करेंगे, क्या वह जोंकोंको मार भगानेके लिए तैयार हो जायँगे ?

सन्तोखी—तो भैया ! जोंकोंने अपने लिए बड़ा जोखिम पैदा कर लिया !

भैया—इसीलिए सन्तोखी भाई, किसानोंकी ओर सरकारकी नजर घूमी है। बिलायती जोंकोंको घाटा नहीं है बल्कि दुगुना-चौगुना नफा होगा। हिन्दुस्तानी जोंकोंको बिलायतमें बुलाके वह अपना धरम भाई बनाना चाहती हैं। अगर हमारे सेठ लोग साहब बहादुर होते तो साहब बहादुर सेठकी सेठानी के साथ नाचते और सेठ जी साहब बहादुरकी बीबीके साथ नाचते। खूब टुन-टुन करते सराबके प्याले चलते।

सोहनलाल—तो भैया ! तुम समझ रहे हो कि बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानी सेठोंसे मेल करना चाहती है ?

जरूर सोहन भाई ! वह उनसे कहेंगी, कि लोहा, फौलाद, मोटर जहाज, हवाई जहाजके बड़े-बड़े कारखानोंको जो सब अपना ही कर लेना चाहोगे तो हमारा-तुम्हारा झगड़ा होगा। हमारे पीछे भी बिलायती मजूर पड़े हैं और तुम्हारे पीछे भी हिन्दुस्तानी मजूर। जो बिलायतमें मजूरोंका राज कायम हो गया तो बाबू ! तुम्हें भी कोई नहीं बचा सकेगा। कलकत्ता, बम्बई, कानपुर, दिल्ली त्रिचनापल्ली सब जगहके मजूरोंको कमूनिस्तोंने अपने हाथमें ले लिया। किसान भी सबसे ज्यादा उन्हींकी बात मानते हैं। कांगरेस नेता जमींदारोंका पच्छ करना चाहते हैं, इसीलिए जहाँ-जहाँ किसानों-जमींदारोंका झगड़ा हुआ वहाँ कमूनिस्त लाल झंडा गाड़ देंगे। सोच लो हम दोनोंकी भलाई किसमें है।

सोहनलाल—सेठोंको तो सोचना भी मुस्किल हो जायगा ! एक ओर देखेंगे कि बिलायती सेठ उनके साथ ऐस-जैस कर रहे हैं, दूसरी ओर देखेंगे कि जो खतरा उनको बतलाया जा रहा है, वह झूठा नहीं है। लाल पलटन की जीतसे मजूरोंका और मन बढ़ गया है। रूमानियाने उस दिन लाल पलटनके सामने हथियार रख दिया तो करोड़पति सेठ सर पकौड़ीमलको मालूम हुआ कि उनका बेटा मर गया।

सोहनलाल—सामको उनके कारखानोंके मजूरोंने लाल झंडा लिए जब लाल पलटन जिन्दाबाद बोले होंगे, तब सर पकौड़ीमलकी क्या गति हुई होगी भैया !

मैया—गत पूछते हो ? गति पूछकर क्या करोगे सोहन भाई ! छः महीने पहिलेसे बिलायती सेठ जो अपने धरम-भाई हिन्दुस्तानी सेठोंकी खातिर अगुवानीकी तैयारी कर चुके हैं तो उसका भारी मतलब है। वह उनके साथ गठबंधन करना चाहते हैं, लेकिन हिन्दुस्तानको अपने हाथसे बाहर नहीं जाने देना चाहते।

सोहनलाल—तो गांधी महात्माके चेले हमारे सेठ लोग कैसे उनसे मेल करेंगे ?

मैया—सुराजका दो-एक आना भी न दें यह बात नहीं है सोहन भाई ! वह साझेका व्यौपार खोलना चाहते हैं और हमारे सेठोंसे कहेंगे कि लो, बारह आना पत्ती हमारी रही और चार तुम्हारी। जो सर पकौड़ीमल कुछ नाहीं-नूँहीं करेंगे, तो उनसे कहेंगे—"सर पकौड़ीमल ! चार आना कम नहीं होता, इतना ही मिलनेपर आप सब अरबपती हो जायेंगे।" मकगावन बोलेगा—"सर पकौड़ी हमारा दो सौ बरसोंका कल-कारखानेका तजुरबा है, हम दोनों एक साथ मिलकर 'इसी'के बीस कारखाने खोलेंगे। सर पकौड़ी ! तुम रहोगे उसके बड़े डाइरेक्टर। मैं सत्तर बरसका बूढ़ा हिन्दुस्तानमें लू खाने नहीं आऊँगा। इतने रुपये आयेंगे कि धरनेकी जगह नहीं रहेगी।"

सन्तोखी—औ जो महात्माजीकी उस ओर कभी-कभी ध्यान जाय तो ?

मैया—ध्यान जायगा तो गो-सेवा मंडलके लिए एक करोड़ चंदा दे देंगे, एक करोड़ खादी फंडमें भी दे देंगे; महात्माजी इससे बेसी सेठोंसे क्या उम्मेद रख सकते ! सेठ भली भाँति जानते हैं कि महात्माजी उन्हें लाल झंडेवाले मजूरोंसे नहीं बचा सकते। उधर बिलायती सेठ कहेंगे, "देखो जो बहुत तीन-पाँच करोगे तो कलमभर चलानेकी देर है, पाकिस्तान अभी अलग हो जायगा, उसी तरह जैसे वर्माको हमने अलग कर दिया। फिर यह पाकिस्तान ऐसा-वैसा नहीं होगा। चाहें तो पठानोंसे मिलकर वह फिर दिल्लीमें अपनी राजधानी बना लेंगे, और निखट्टू डरपोक हिन्दू धरती छू-छूकर सलाम करते फिरेंगे। जो इस बातको अनहोनी समझो, तो जानते हो न, मुसल्मानोंमें गरीबी बेसी है, छूत-छातका झगड़ा भी नहीं है। पिछले बारह सौ सालोंमें

मुसल्मान अमीरोंने गरीब मुसल्मानोंको कभी अपना भाई नहीं समझा लेकिन कानमें सुनते आये हैं कि सभी मुसल्मान बराबर हैं। पाकिस्तानी मुसल्मानों को बोलसेविक बनते देर नहीं लगेगी। रूसके तीन करोड़ मुसल्मान पहिले हीसे बोलसेविक बने हुए हैं। और देख नहीं रहे हो मुसल्मान लड़के-लड़कियाँ कमूनिस्त बन रही हैं। बस यही समझो कि दोनों पाकिस्तानोंमें जहीर, डाक्टर अशरफ, डाक्टर अहमद, बस ऐसे ही दिखलाई पड़ेंगे।"

दुखराम—क्यों भैया! यह कहना झूठ ही है न!

भैया—जोंकोंका काम जहाँ झूठसे चलता है वहाँ झूठ कहती हैं, जहाँ साँचसे चलता है वहाँ साँच, लेकिन भरसक पैसा-दो पैसा भर साँच भी रखती हैं, खाली उपरसे कागज साटने भरके लिए। और सुनो, बिलायती सेठ हमारे सेठोंको कैसे धमकायेंगे-पुचकारेंगे। हमारे सेठ कहेंगे—"नहीं साहेब! जिन्ना कभी मुसल्मानोंको बोलसेविक नहीं बनने देगा।" मकगावन या उसका भाई कहेगा—"अभी इस बातमें तुम नाबालिग हो सर पकौड़ी! जिन्नाकी नेतागिरी बनी रहे, वह फिर कोई परवाह नहीं करेगा। तुम जानते ही हो कि बोलसेविक बड़े चालाक हैं। फोड़ने-फाँसनेमें हमारी आँखमें धूल झोंकनेके लिए रूमानियाँ हो चाहे बलगेरिया, यूगोस्लाविया हो चाहे पोलैंड, वह सब तरहके लोगोंको वजीरोंकी जमातमें मिलाते हैं, लेकिन हमें मालूम है कि सभी वजीर उन्हींके हाथकी कठपुतली हैं। बोलसेविकोंके हाथमें दुनियाको न जानेसे बचानेका भार हमारे ऊपर है। बिलायती भाई बोझ उठानेके लिए तैयार हैं, लेकिन हिन्दुस्तानी भाइयोंको भी मदद करनी चाहिए जो दोनों पाकिस्तानोंमें बोलसेविकोंने लाल झंडा गाड़ दिया—और सर पकौड़ी! मैं तो तुमारी सौगंध खाता हूँ, कि पाकिस्तानके अलग होते ही वह बोलसेविकिस्तान हो जायगा—तो फिर चार करोड़ मुसल्मान तुम्हारे गाँव-गाँव सहर-सहरमें फैले हुए हैं, कौन फिर हिन्दुस्तानको बोलसेविक होनेसे रोकेगा। गांधी बूढ़ा है उसको लोग बहका देते हैं। लेकिन पाकिस्तान बनने देना, न बनने देना हमारे हाथमें है। हम अपने हितके लिए, तुम्हारे हितके लिए, गीता और बाइबिल भाईके लिये किसन और ईसामसीह भगवानके लिये यह जरूरी

समझते हैं, कि भारत माताके देहके तीन टुकड़े काटकर अलग न किये जायँ। आओ हम दोनों हाथ मिलायें और मिलकर हिन्दुस्तानमें राज करें। अभी दस बरस तक बोलसेविकोंका बड़ा जोर रहेगा, क्योंकि तुम जानते ही हो, चाहे हम कितना ही छिपाना चाहते रहे पर दुनियावाले जानते हैं कि, रूसकी तलवारने ही हिटलरको मारा। दस बरस बाद बोलसेविकोंका खतरा कम हो जायगा, इस बीचमें हम हिन्दुस्तान और बिलायत दोनोंके कमेरोंका मिलके मुकाबिला करेंगे और अपने हिन्दुस्तानी सेठ भाइयोंको दिखला देंगे कि अब हमारा दिल बदल गया, हम दोनों धरम-भाई हैं।

दुखराम—भैया जोकोंकी माया अपरम्पार है। उनके तरकसमें कितने तीर हैं, गिनती ही नहीं मालूम होती?

भैया—लेकिन मरकस बाबाने सारे तीर गिन लिये दुक्खू भाई! जोंकोंका जमाना खतम हो रहा है। आजके चर्चिल अमरी और कलके उनके दोस्त-ताता-बिड़ला चाहे सर पटकके रह जायँ लेकिन अब दुनियाके कमेरे फिर सो नहीं सकते। तुमने ठीक कहा कि ये सब कुछ हिन्दुस्तानी कमेरोंके लिये तावापर छून जैसा होगा।

सोहनलाल—मुझे कम बिसवास है भैया कि बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानी सेठोंकी भूखको पूरा कर सकेंगी, उनके डरको दूर कर सकेंगी?

भैया—हाँ, जोंकें कभी-कभी पागल भी हो जाती हैं, और अपने तुरन्तके स्वारथके सामने आगेका ख्याल नहीं करतीं। हिटलरको पाल पोसके बड़ा करके उन्होंने ऐसा ही किया। हो सकता है इस बखत भी वह पागल हो जायँ लेकिन दुसमन पागल हो जायगा, इस आसरापर बैठा रहे, वह आदमी बेकूफ ही कहा जायगा।

सोहनलाल—पागल होगी, इसका मुझे भी बिसवास नहीं है भैया, देखा नहीं, हिन्दुस्तानी सेठोंका एक आदमी सर० जे० पी० श्रीवास्तव तो पहिले हीसे सरकारका मेम्बर था और जैसे ही ताता-बिड़ला खर्रा लिखके तैयार हुआ, तैसे ही ताताके आदमी सर अरदसीर दलालको भी बड़े लाटने सरकारका मेम्बर बना दिया। जान पड़ता है बिलायती सेठोंको पूरा

बिसवास है कि अपने महुवर बाजासे हिन्दुस्तानी सेठोंकी सारी फुफुकारको बन्द कर देंगे।

दुखराम—तो सभी मौज करना चाहते हैं हम कमेरोंके ही मत्थे न?

भैया—और कौन है दुनियामें धन कमानेवाला, लेकिन १२) रोज मजूरी पानेपर भी बिलायती मजूर अपने यहाँकी जोंकोंको कुचल देना चाहते हैं तो रुपया रोजकी मजूरीपर हिन्दुस्तान कमेरे कैसे चुप लगा जायँगे।

अध्याय १४

औरतें

दुखराम—"सन्तोखी भाई! रजबली भइयवा हम लोगोंकी आँख खोल रहा है, आँख। मैं तो मुँह बन्द करके भी रखना चाहता हूँ तो पेट फूलने लगता है। जहाँ भी कोई भाई मिल जाता है, तो जोंकोंका जंजाल उनके सामने कहने लगता हूँ। किसी जाति, किसी धरमका कमेरा हो, बात सुनकर सबका मन हरा हो जाता है। बंधू चमार पूछता था भैया दुक्खू! हम लोगोंकी झोपड़ी सूअरकी खोभारसे भी खराब है। कब हम लोगोंका दिन लौटेगा? अबदुल मेहतर कहने लगा—हमने समझा था कि हिन्दूसे मुसल्मान हो जानेपर कुछ आदमी बन जायेंगे, लेकिन यहाँ भी वही बात! सबसे गंदा काम करते हैं, और जूठी रोटी भी भैया! महमदाबादमें कोई देनेके लिए तैयार नहीं?"

सन्तोखी—तुमने क्या कहा दुक्खू भाई!

दुखराम—मुझे जो समझमें आया वह उनसे कहा। लेकिन मैं एक दिन रजबली [illegible] उनके यहाँ ले जाऊँगा, तभी ठीकसे समझाते बनेगा।

सन्तोखी—आज कौन बात सुनना चाहिए दुक्खू भाई!

दुखराम—सबके कहने लायक बात तो अब कुछ-कुछ मालूम हो गई है सन्तोखी भाई! लेकिन औरतोंको कैसे समझाया जाय, यही बात समझमें नहीं आती।

सन्तोखी—तो आज रजबली भैयासे यह पूछा जाय कि मरकस बाबाने औरतोंके लिये क्या रास्ता बताया और यह देखो सोहनलालके साथ रजबली भैया आ गये।

भैया—क्या बात हो रही है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—आज भैया यही बतलाओ कि औरतोंके उद्धारके लिये मरकस बाबाने क्या कहा।

भैया—औरतोंका उद्धार बहुत जरूरी है, काहेसे कि आधी तो वही हैं। और उनको सबसे बेसी तकलीफ है।

दुखराम—जोंकोंकी औरतोंको खाने-पीनेकी क्या तकलीफ है भैया ?

भैया—खाना-कपड़ा जब नहीं मिलता, तब आदमीको भूख-जाड़ा तकलीफ देती है। खाना-कपड़ा तो मिलता है, लेकिन दूसरा आदमी हाथ उठाकर देता है तब आदमी समझता है कि हमें दूसरेके सामने हाथ पसारना पड़ता है। और औरतको जिन्दगी भर हाथ पसारना पड़ता है।

सोहनलाल—मेहरी तो घरकी रानी होती है भैया !

भैया—रानीके साथ महिला कहो सोहन भाई ! महिला सबदसे ही (महिली, महिरी) मेहरी सबद भी बना है, लेकिन देखते हैं न किसी सहरकी पढ़ी-लिखी औरतको मेहरी कह दिया जाय तो जल-भुन जायँगी, और महिला कह दिया जाय, तो फूलके कुप्पा हो जायँगी। लेकिन औरत आज दुनियामें हाथकी खरीदी दासी-लौंड़ी हैं। मरद जब तक राजी है, तब तक तो दासी भी जो चाहे कर सकती है लेकिन जैसे ही मरदकी तेउरी बदली, वैसे ही रानी सिंहासनसे धूलमें पटक दी जाती है। देखा न, सीताके साथ रामने क्या किया, मनमें आया, घरसे निकालकर बाघके मुँहमें ढकेल दिया। सीता कभी रामके लिए वैसा कर सकती थी ? या रामकी इच्छा बिना सीता उनके पाखानेमें भी एक रात बिता सकती थी ? साहेब लोगोंको साथ-साथ मेम घुमाते देखकर दुक्खू भाई ! तुम समझते होगे कि साहेबकी मेमको बहुत अक्तियार है।

दुखराम—भैया ! पहिले सच ही मैं ऐसा समझता था, लेकिन एक दिन

देखा हमारे चटकलका इंजीनियर कोड़ा लेकर अपनी मेमको पीट रहा था, बेचारी चिल्लाती थी, लेकिन पास-पड़ोसमें कोई साहेब रहता तब न जाता ? हम लोग कुली-मजूर थे, सोचा छुड़ाने जायँगे तो हम भी चार बेंत खायँगे।

भैया—औरत किसी समय परिवार भरकी मुखिया थी, महामाया थी, उस वक्त कोई उसे कोड़े मार सकता था ?

दुखराम—नहीं भैया ! वह तो जब मरद पसु पालने लगा, खेती करने लगा और कमाऊ बनकर धन जमा करने लगा, तब मेहरीका मान हेठा हो गया; आदमियोंमें धनी-गरीब होने लगे, जोंकें पैदा हो गईं।

भैया—जितना ही जोंकोंका जोर बढ़ता गया दुक्खू भाई ! उतना ही मेहरियोंका गला फँसता गया। बेचारियोंको देह बेंचके खानेके सिवा कोई अवलम्ब है ?

सन्तोखी—देह बेंचना ! क्या कहा भैया ?

भैया—सन्तोखी भाई ! तुम समझते हो कि देह बेंचना बेस्याका काम है। इसलिए मैंने कैसे इस बातको मुँहसे निकाला। मेरी बात कुछ कड़वी लगी होगी, और मेहरिया सुने तो और बुरा मानेगी, लेकिन बताओ बेस्या किसे कहते हैं ?

सन्तोखी—जिसकी देह उस आदमीके लिए है जो पैसा दे।

भैया—रोज-रोज पैसा दे या एक दो बार।

सन्तोखी—कितने लोग भैया पैसा देके एक-दो बार वेस्याके देहके मालिक बनते हैं और हमारे राजाने तो बसंतियाको अपने घर हीमें बैठा लिया था।

भैया—वेस्या पैसा काहेको लेती है सन्तोखी भाई ?

सन्तोखी—न ले तो खायेगी क्या, पहिनेगी क्या।

भैया—और वह कुछ बेसी पैसा लेती है सन्तोखी भाई ! काहेसे चालीस-ब्यालीस बरसमें उसकी दूकान उठ जाती है।

सन्तोखी— उसका भी कुछ ठिकाना नहीं है भैया ! दुकान है, किसी

गाहकको नकार तो सकती नहीं बीमार हो जाती है, गरमी-सुजाक बढ़ गई, तो नाक कटकर गिरने लगती है, हाथ-पैरकी अँगुलिनाँ झड़ जाती हैं।

भैया—जो अंगुलियाँ नहीं झड़ी, नाक नहीं कटी, तो भी तो आधी जिनगी रहते ही वह रोजगारसे बेरोजगार हो जाती है। जो उसने पहिलेसे कुछ पैसा नहीं बचाया तो बाकी आधी जिनगीमें क्या खायेगी, क्या पहनेगी?

दुखराम—ठीक कहा भैया, जोंकें न पैदा हुई होतीं तो औरतको क्यों देह बेंचना पड़ता?

भैया—दुक्खू भाई! वेस्या कैसे बनती हैं इसके लिए मैं थोड़े ही दिनकी बीती एक बात सुनाता हूँ। यह खिस्सा नहीं है, सच्ची-सच्ची बात है। एक बड़ी जातिके आदमी थे, हिन्दू थे और बाम्हन छत्रीके बीचकी जाति। उनके घरमें पूरा धन था, जमींदारी थी, खेत थे और दस-बीस हजारका सूद-बेवहार भी करते थे। गाँवमें भी अच्छा घर था और सहरमें एक पक्का घर था। कुछ किताब पढ़ी, कुछ लेच्चर सुना, अरिया समाजकी बात उन्हें अच्छी मालूम हुई। उनके एक लड़की हुई, पहिली स्त्री मर गई, दूसरा ब्याह किया, उससे लड़का पैदा हुआ। भाई-बहनोंमें बचपन हीसे बहुत प्रेम था, वह जानते ही नहीं थे कि उनकी माँ एक नहीं है। बापने अरिया समाजके लेच्चरमें लड़कियोंके पढ़ानेकी बात सुनी थी, उन्होंने भी अपनी लड़कीको सहरकी कन्या पाठशालामें पढ़ने बैठा दिया। अब वह ज्यादा सहरमें ही रहते थे, पीछे लड़का भी इसकूल जाने लगा। लड़की पढ़नेमें बड़ी तेज थी, अपने दरजेमें हमेसा अव्वल आया करती थी। बाप भी लड़कीकी पढ़ाईसे बहुत खुस था। मैभा (सौतेली) माँ भी अच्छी औरत थी, लड़कीका सुभाव भी मीठा था। लड़की अब अंगरेजी पढ़ रही थी। उसकी उमर बारह-तेरहकी हो गई थी। मैभा माँ ब्याह करनेके लिए रोज कहती, लेकिन बहुत गरीब घरकी तो लड़की थी नहीं कि बेंच-बाँच देते। अपनी बराबरी या बड़े घरमें लड़का ढूँढ़ना था, और सो भी अपनी जाति-बिरादरीके भीतर। कहीं लड़का उमरमें छोटा मिलता, कहीं बूढ़ा, कहीं अपढ़ मिलता, कहीं गरीब। बाप कभी कभी इधर-

उधर नजर दौड़ा लेते थे, जब ठीक जगह नजर न पड़ती, तो घबरानेकी जगह सोचने लगते कि चलो लड़की अभी पढ़ रही है बहुत सयानी नहीं है फिर बर ढूँढ़ लेंगे।

सन्तोखी—ऐसा ही होता है भैया! लड़कीवाले ही बर ढुँढ़ाईका दुख जानते हैं!

भैया—लड़कीके दरजेकी और लड़कियोंमें एकसे उसका बहुत प्रेम था। उसके घरवाले भी आर्य-समाजी थे। लड़की कभी कभी अपनी बनिया सहेली-के साथ उसके घर जाया करती थी। लड़की सोलह सालकी हो रही थी, इन्ट्रेन्समें पढ़ रही थी। तेज लड़की देखकर इस्कूलकी अध्यापिका बहुत मानती थी। बापको भी अपनी बेटीपर बहुत गर्व था। सहेलीका भाई तभीसे लड़कीको जानता था; जब वह आठ-नौ बरस की थी और वह खुद तेरह-चौदहका। अब वह डाक्टरी पढ़ रहा था और डाक्टर बनकर निकलनेमें दो ही एक साल रह गये थे। बचपनमें जो अबोध बालक-बालिकाका प्रेम था, अब वह जवानीका प्रेम बन चुका था। लड़की सहेलीके घर जाती और जब सहेलीका भाई भी घर आया रहता, तो वह अबेर तक वहीं रह जाती। कभी-कभी वह एक-दूसरेको चिट्ठी भी लिखते। मैभा माँको कुछ सक होने लगा, उसने पतिपर दबाव डालना सुरू किया। एकाध बार मैभा माँने लड़कीको मार-पीट-के घरमें भी बन्द कर दिया। इस्कूल जाना छूट गया, लेकिन बापका दिल बहुत नरम था। होनहार लड़की है फिर इस्कूल भेज देते। इसी बीचमें ढूँढ़-ढाँढ़कर उन्होंने एक बर ढूँढ़ा, वह गाँवके रहनेवाले जमींदारका घर था। लड़केकी बुद्धि मन्द थी, इसलिए बी० ए०में जाकर पढ़ाई छोड़ बैठा। लेकिन था वह गँवारका गँवार।

दुखराम—पढ़े-लिखे भी गदहे देखे जाते हैं भैया!

भैया—लड़कीके मनमें क्या है, इसे कौन पूछता है! लड़की चाहती थी, उसी डाक्टर जवानसे ब्याह करना, लड़का भी उसपर जान देता था। दोनों घर अरिया समाजी थे, स्वामी दयानन्दके चेले।

सोहनलाल—स्वामी दयानन्द तो जात-पाँत नहीं मानते थे भैया?

भैया—नहीं मानते थे, जात-पाँत हटाना चाहते थे, लेकिन उनको मालूम नहीं था, कि जातकी जड़ कहाँ तक भीतर घुसी हुई है, वह समझते थे कि दो-चार लेक्चर दे देनेसे सास्त्र-वेदके दो-चार बचनोंके गलत-सही अर्थ कर देनेसे काम बन जायेगा। आर्य-समाजी मूर्त्ति-पूजाके बारेमें दो-चार जली-कटी सुनाके अब चुप थे। लड़कीके बापके मनमें यह ख्याल भी न आया होगा कि डाक्टरके साथ ही ब्याह कर दें जो उनको यह मालूम होता कि आज जो वह करने जा रहे वह, बंसको डुबा देगा, तो कभी ऐसा न करते। लड़कीका ब्याह हो गया। वह अपने पतिके घर गई। पढ़ी-लिखी सुन्दर होसियार मेहरी पाकर पतिको बहुत खुसी हुई। लड़की अपने पुराने प्रेमको भूल गई और अपने पतिको देवता मानने लगी। कुछ महीनों बाद डाक्टर जवानको ब्याहका पता लगा, उसके दिलको बहुत धक्का लगा, उसने लड़कीके नाम एक चिट्ठी लिखी—तुम्हारा ब्याह हो गया, तुम्हारे लिए मैं दिलसे चाहता हूँ कि तुम दोनों खुस रहो। लेकिन मैंने तुमसे प्रेम किया था, और वह प्रेम मेरे दिलसे कह रहा है कि अब यहाँ किसी दूसरेके लिए जगह नहीं है, जिनगी भर कुँआरा रहूँगा।

दुखराम—बड़ी कड़ी परतिग्या ली भैया! क्या उसने उसे निबाहा?

भैया—सो नहीं कह सकता दुक्खू भाई! लड़कीने सोचा मेरा पति मुझपर अटूट प्रेम रखता है, वह मेरी ईमानदारीपर पूरा विसवास रखता है। क्यों न यह चिट्ठी उसे भी दिखा दूँ। लड़कीने तो चिट्ठी इसलिए दिखलाई कि पतिका विसवास और बढ़ेगा लेकिन उलटा असर पड़ा—उसका मन बिगड़ गया। पहिले रुखाईसे बात करने लगा और एकाध महीने बाद हाथ छोड़ने लगा। लड़कीने बापको चिट्ठी लिखी। बाप आकर लिवा गया। मैभा माँ ताना देने लगी। कुछ दिनों बाद लड़कीने फिर पति हीके पास जानेके लिए कहा। वह पतिके यहाँ गई। पाँच-दस दिन बाद फिर वही बात हुई, बल्कि मारपीट और ज्यादा बढ़ी। लड़कीको अब जीनेकी साध नहीं रह गई। उसने हाथ जोड़के कहा—मैं अब पिताके घर नहीं जाऊँगी, हम दोनोंका बच्चोंका-सा प्रेम था, ऐसे प्रेमसे कोई लड़का-लड़की बाकी नहीं है लेकिन

जो आप छमा नहीं कर सकते, तो एक बात कीजिये कि मेरा गला दबाके या तलवारसे काटकर मुझे मार दीजिये, लेकिन ऐसा करनेसे आप भी फसेंगे। आप मुझे कोई जहर ला दीजिये, मैं चुपकेसे पी लूँगी और मर जाऊँगी। यह भी न हो सके तो कहीं ले जाकर मुझे छोड़ दें, मैं न फिर आपके गाँवका मुँह देखूँगी, न पिता हीके घर जाऊँगी।

दुखराम—ऐसी बातपर तो भैया पत्थरका दिल भी पसीज जाता?

भैया—पतिका दिल पत्थरका था और कहीं-कहीं कुछ नरम भी था। उसको हजारों बरससे सिखाया-सुनाया गया था, कि मरद-बच्चा कुछ भी करे, उसके लिए सात खून माफ है, लेकिन मेहरीको झाँकनेके लिए भी फाँसीकी सजा। आखिर उसने छोड़ आनेका निश्चय किया। मैं सहरका नाम नहीं ले रहा हूँ क्योंकि लड़कीका भाई अभी जिन्दा है, क्या जाने उसको दुख हो, पुरानी घाव फिर हरियाने लगे। लड़कीको सहरमें छोड़ते वक्त उसने एक भलमनसाहत की, लड़कीके देहपर जो दो-तीन हजारका गहना था, उसे छीना नहीं। लड़की एक कोनेमें दो दिन तक भूखी प्यासी पड़ी रही, फिर बगलके एक दुकानवाले जवानको पता लगा, वह उसे खाना पहुँचाने लगा फिर उसकी सुन्दरता, उसकी जवानी और उसकी बेबसी देखकर जवानने हाथ बढ़ाया, लड़कीके लिए कहाँ दूसरी सरण थी, वह दुनियाके सामने अपनी इज्जत खो चुकी थी। उसने सोचा आखिर बँवर (लता) को एक पेड़का आसरा चाहिए, चलो यही आसरा रहे। एकाध महीने रहनेके बाद उसने जवानसे कहा कि मेरे पास दो-तीन हजारके गहने हैं, यहाँ रहनेपर क्या जाने किसीको पता लग जाये, चलो हम बनारस चले चलें। दोनों बनारस चले आये। वहाँ एक छोटी-सी कोयलेकी दूकान खोली। लड़कीकी सारी उमंगें धूलमें मिल चुकी थी, अब वह रोटी बनाती, चौका-बरतन करती, जवानकी खरीदी दासीकी तरह सेवा करती। तीन हजारके जेवर उसीके थे, लेकिन उनका मालिक मरद था। बाप अब मर गया था।

दुखराम—उसे कुछ मालूम हुआ था कि नहीं भैया?

भैया—सो नहीं जानता दुक्खू भाई! लेकिन छोटा भाई अब सयाना

हो गया था, कालिजमें पढ़ता था, वह छुट्टियोंमें बराबर इधर-उधर जाकर ढूँढ़ा करता किसी तरह उसे बनारसका पता लगा। वह उस कोयलेकी दूकान तक पहुँचा। और बिना कोई संकोच किये बहिनके चरनोंको छुआ। उसकी आँखोंसे आँसूकी धारा बह रही थी। बहनने अपनेको बहुत रोका तो भी दो-चार आँसू गिरे बिना नहीं रहे। भाईने कहा—"बहिन! चलो", "कहाँ चलूँ भैया? किस घरमें मुझे ठाँव मिलेगा?"

भाई—"तू मेरी बहन है, हम दोनों साथ रहेंगे।"

बहिन—"माँको कैसे रोकोगे, वह कभी ताना दे बैठेगी?"

भाई—"माँसे कह दूँगा कि मुझे भी हाथसे खोना चाहती हो, तो बहनको कुछ कहना।'

बहिन—"लेकिन गाँववालोंको कौन रोकेगा? हमारे पिताका बंस निरबंस हो जायेगा, कोई न तुम्हारा पानी पियेगा, न ब्याह करेगा।'

भाई—"हम दोनों सहरवाले घरमें रहेंगे, मुझे न अपने ब्याहकी परवाह है न किसीके पानी पीनेकी, लेकिन तुम चलो।"

दुखराम—भाई क्या हीरा था भैया?

भैया—इसमें कोई सक नहीं भाईको उसके आगेकी तपस्याको सुनकर तुम और पहचान सकोगे। बहनने समझा-बुझाके उसे फिर आनेके लिए कहकर लौटा दिया। दूसरे साल जब भाई बनारस पहुँचा, तो वह कोयलेकी दूकान नहीं थी, आस-पासके पूछनेपर मालूम हुआ कि बनिया उसे बहुत पीटा करता था, एक दिन जो कुछ गहना बचा था, उसे लेकर चलता बना। फिर ढूँढ़नेपर वह मिली और मालूम हुआ कि लड़कीको गरभ था। सिगरा-के ईसाई मिसनमें उसे बच्चा पैदा हुआ। बच्चेको ईसाइयोंको देकर वह किसी धनी घरकी लड़कीको पढ़ा रही है। भाई फिर चलनेके लिए कहने लगा। बहिनने बहुत मना किया कि यहाँसे जल्दी चले जाओ, नहीं तो घरवालोंक पता लगा तो यह अवलंब भी चला जायगा लेकिन भाई छोड़नेके लिए तैयार नहीं था। वह घर चलनेके लिए जोर दे रहा था। सहरमें रहेंगे। दुनियाकी कोई परवाह नहीं करेंगे। बहिनने कहा—मैं पिताके बंसको निरबंस करना

नहीं चाहती। तुम्हारा ब्याह हो जाय तो मुझे ले चलना, मैं तुम्हें बचन देती हूँ।" भाई फिर लौट आया। उसने कालेजकी पढ़ाई खतम की। दूसरे साल जब बनारस गया तो लड़कीका कोई पता नहीं चला।

दुखराम—लड़कीका क्या हुआ भैया?

भैया—घरवालोंको जब मालूम हुआ, कि मास्टरनीके यहाँ कोई जवान आकर दो एक दिन रहा है, तो उन्होंने समझा कि ऐसी औरतसे लड़कीको पढ़वाना अच्छा नहीं। बेचारीकी नौकरी छूट गई। इधर-उधर कोई अवलम्ब ढूढ़ने लगी, मगर कोई नहीं मिला। औरतके कामका कोई मोल नहीं। मोल है सिर्फ उसकी देहका जो अभी बुढ़ापा न आया हो, जो उसमें कुछ रूप हो। अभागी लड़की देह बेंचनेके लिए मजबूर हुई। उसकी सारी पढ़ी पढ़ाई विद्या बेकार थी। कई बरसों बाद उसके भाईको बहिनकी एक चिट्ठी मिली। भाई अब हाकिम, डिप्टी कलक्टर, डिप्टी मजिस्टर था। उसने ब्याह नहीं किया था। बहिनने बापके वंसको निरबंस करना नहीं चाहा था, लेकिन भाई-ने उसका निश्चय कर लिया था। चिट्ठी पाते ही भाईने छुट्टी ली। और वह एक सहरकी छोटी छोटी खपरैलोंवाले घरोंके महल्लेमें गया। गलीकी मोरीमें मक्खियाँ भिनभिनाती थीं। यह ऐसी गली थी कि जिसमें उसकी बहिनकी तरह और भी कितनी स्त्रियाँ देह बेंचकर खाती थीं। बहिन चारपाईपर पड़ी हुई थी। कभी-कभी पास-पड़ोसकी अभागिने उसे पानी दे जाया करती थीं। अब उसके पास कोई गाहक नहीं आता था, और न वह इस दिनके लिए कुछ पैसा ही जमा कर पाई थी। बहनको देखकर भाईका कलेजा फटने लगा। उसने कहा—मैंने तुम्हारे लिए सब कुछ खतम कर दिया। बापके वंसकी तुम-को परवाह थी, वह मेरे बाद नहीं चलेगा। लेकिन तुमने ऐसा क्यों किया। अगर मुझे पहिले खबर दी होती तो यहाँ तक नौबत न आती।" बहनने कहा—"भाई! मैं तुम्हें पहचान न सकी, लेकिन मरनेसे पहले देख लेना चाहती थी, अब वह साध बुत गई।"

दुखरामने आखोंमें आँसू भर कहा—भैया! किसको इसके लिए दोस दें?

भैया—दोस देनेकी बात पीछे कहता हूँ दुक्खू भाई ! भाईने बहिनकी दवाईके लिए डाक्टर रखे जितनी सेवा हो सकी, की, लेकिन वह तपेदिकके मुँहमें पूरी तौरसे पहुँच गई थी, वह मर गई। भाईने अपने हाथसे उस देहको जलाया, इसके बाद अपनी नौकरीसे इस्तीफा दे दिया। आज भी वह आदमी जिन्दा है और उमर भी बहुत ढल चुकी है। वह क्यों जीता है, इसका उसे पता नहीं। क्या जाने अपने हाथसे अपना प्रान लेना उसे पसंद नहीं है। उसके दिलमें अपनी बहिनकी प्यारी-प्यारी याद अब भी वैसी ही है। उसके बाद उसके दिलमें सबसे ज्यादा घृणाकी आग जल रही है, उन आदमियोंके लिए, जिनके कारन ऐसा हुआ।

दुखराम—याने अभागिनका बाप और पति, सचमुच ही उन्होंने बहुत बुरा किया।

भैया—वह दोनों भी अभागे थे सुक्खू भाई ! उनको दोसी ठहराकर हम असली दोसीको छोड़ देंगे। बापको यह जरूर पता था कि जात-पात बुरी चीज है। उसने इसके खिलाफ आर्य समाजमें लेक्चर सुना होगा। ऐसे भी किस्से सुने होंगे जिससे मालूम हुआ होगा कि टूटे ...मका फल बुरा होता है। फिर क्यों उसने डाक्टरसे नहीं ब्याह करवाया ? ब्याह करते ही उसको अपनी जातिमें कोई जगह नहीं रह जाती। कोई उसके साथ हुक्का-पानी नहीं करता, मरनेपर कोई कन्धा देने नहीं आता। लड़केका ब्याह नहीं होता, लोग जिनगी भर सुनाते रहते कि इसने अपनी लड़की छोटी जातके यहाँ ब्याह दी। पढ़े भी थूकते, अपढ़ भी थूकते। मरद भी निन्दते, मेहरिया भी निन्दती। और दो-चार नहीं, सारे जिले और बाहर भी बदनामी होती। इसकी जगह जो उसे दो साल जेहलखानेकी सजा हो जाती, तो उसे वह बरदास कर लेता।

सन्तोखी—दो नहीं दस साल भी भैया बरदास हो जाता।

भैया—इसीलिए बेचारा डर गया। क्या करे आदमीका बच्चा है, जमातसे अलग कैसे रहेगा। सरकारी कानूनसे आदमी किसी तरह बच भी जाय, लेकिन बिरादरीके कानूनसे कौन बच सकता है। हाँ बच भी जाता है जो

लोगोंसे पकड़ाई न दे। कितने ही टीका धारी हैं, जो छिपकर सराब पीते हैं, कितने ही लोग जानते भी हैं, लेकिन उनके पास पैसा है। न उनका हुक्का पानी बन्द होता है न ब्याह-सादी। विधवा-ब्याह बाम्हन, छत्री, बनियाँ कायथमें बर्जित है। जब साठ बरस बूढ़ेसे हम उमेद नहीं कर सकते, तो बारह बरसकी विधवासे कैसे आसा करेंगे कि वह जिनगी भर बरमचारिन रहेगी। जानते हो न, दुक्खू भाई क्या-क्या होता है?

दुखराम—गुपुत सम्बन्ध हुए बिना नहीं रहेगा भैया! जो गर्भ नहीं हुआ तो मामला ऐसे ही चलता रहता है। गरभ हुआ तो गिराकर हांडीमें कसकर फेंक दिया जाता है और जो बस नहीं चला, तो ले जाकर बनारसमें छोड़ आते हैं। कहीं कहीं खून भी कर डालते हैं लेकिन यह बहुत कम होता है। जातिवाले बस इतना ही चाहते हैं कि जरा-सा हलका-सा परदा रखो, सब बात नंगी न हो जाय।

भैया—इसीलिए दुक्खू भाई, हम उस अभागिनके बापको ही सारा दोस नहीं दे सकते। वह हिम्मत करता, उसको तकलीफ होती लेकिन वह दूसरोंको रास्ता दिखाता। अब जात-पात ज्यादा दिन तक नहीं रह सकती दुक्खू भाई! भात और पानी अपनी जातमें होना चाहिए, यहि जातिका कानून है न, लेकिन आज देख रहे हो न कि भात-रोटीको कोई नहीं मानता। सहरोंमें होटल खुले हुए हैं। जाकर लोग खा लेते हैं। जातिमें जो धनी हैं, सरकारी दरजा पा गये हैं, तो उनकी तो कुछ पूछो ही नहीं; वह हिन्दूके होटलमें खा सकते हैं, मुसलमानके भी होटलमें खा सकते हैं। बिलायत जा सकते हैं। राजपूतोंके सिरताज जो राजा लोग हैं, उनको अंगरेजोंके साथ खानेमें कोई रोक-टोक नहीं है, न इसके लिए वह जातिसे निकाले जाते हैं, न उनकी ब्याह-सादी रुकती है, जातिका बड़ा आदमी खानेकी छुआछूत छोड़ दे तो कोई नहीं पूछता, हाँ गरीबको सब लोग दबाते हैं, लेकिन आजके समाजमें बड़े आदमी रास्ता निकालते हैं। होटल पिछली लड़ाईसे पहिले कहीं था? आटा-चावल बेंचनेवाले दूकानदारोंकी ही उस वक्त बहुत चलती थी। यह बीस बरसके भीतर ही भीतरकी बात है जो सब जगह होटल ही

होटल दिखाई पड़ते हैं।

सन्तोखी—खानेकी छुआछूतको तो भैया आदमियोंने उठा दिया, बिरादरीने कान-पूँछ नहीं हिलाया। और दूसरे भी अब वही बात करने लगे हैं।

भैया—बाँधमें सूई भर जानेका छेद होना चाहिए, फिर तो पानी अपने ही रास्ता निकाल लेता है।

दुखराम—सूई जाने भरको नहीं, अब तो कोल्हू जाने भरके एक नहीं हजारों छेद हो गये हैं। खानेकी छुआछूतका तो अब सवाल ही नहीं है।

भैया—ब्याहके बारेमें अभी कड़ाई है दुक्खू भाई! लेकिन रोटीकी छुआछूतकी तरह यह भी टिक न सकेगी। देसके सिरताज लोगोंने रास्ता सुरू किया है। बाम्हन राजगोपालाचारीकी बेटी गाँधी बनियेकी लड़कीसे ब्याही गई। जवाहरलाल नेहरूकी बड़ी बहनका ब्याह दूसरी जातिवाले पंडितके साथ हुआ। छोटी बहिनने तो बाम्हन नहीं, बनियेके लड़केसे सादी की, और जवाहरलालकी एकलौती बेटी इन्दिराने हिन्दू नहीं, पारसी लड़केसे सादी की। मुन्सी ईश्वरसरन कायस्थोंकी नाक हैं, यू० पी० बिहार दोनोंमें। वह उनके चौधरी माने जाते हैं, उन्हींके छोटे लड़के सेखरने मुसल्मान लड़कीसे सादी की।

सन्तोखी—हिन्दू बनाके किया होगा न भैया? जैसे आर्य-समाजी करते हैं?

भैया—हिन्दू बनाके नहीं किया है, सन्तोखी भाई! हिन्दू लड़कीको मुसल्मान बनाके तो ब्याह बहुत समयसे होता चला आया है, लेकिन ऐसे ब्याहसे हिन्दू-मुसल्मान एक सम्बन्धमें नहीं आये बल्कि और बिरोध बढ़ा। मुसल्मानोंकी देखा-देखी मुसल्मान लड़कीको सुद्ध करके आरियोंने ब्याह करना सुरू किया, इससे भी झगड़ा ही बढ़ा। ब्याह सम्बन्धसे पीढ़ियोंके झगड़े मिटाये जाते हैं, लेकिन यहाँ पीढ़ियोंके लिए झगड़े उठाये गये।

दुखराम—तो भैया! जिसको हिन्दू-मुसल्मानमें ब्याह करना हो, उसे नाम या धरम नहीं बदलना चाहिए यही न?

भैया—नाम-धरम बदलनेसे फिर वह सम्बन्ध नहीं हुआ, वह तो अँगुली-

को सड़ी समझकर काट देना हुआ। अब देसमें पचीसों मुसल्मान लड़कियोंने हिन्दूके साथ और हिन्दू लड़कियोंने मुसल्मानके साथ ब्याह किया। मैं उन्हें जानता हूँ। आगा पीछा करनेवाले नक्कू होते हैं, लेकिन वही रास्ता दिखलाते हैं। पचास बरस बीतते-बीतते देखोगे कि ब्याहके मामलेको न जात-बिरादरी रोक सकेगी, न धरम। यहाँ कहनेका मौका नहीं है, मैंने सुना है कि हिन्दुओंकी पोथियोंमें जाति-धरम तोड़के हुए ब्याहोंकी बहुत-सी बातें लिखी हैं।

सन्तोखी—मलाहिनकी लड़कीके गरभसे ब्यास पैदा हुए, वेस्याके गरभसे वसिष्ठ ऋषि पैदा हुए, चंडाल कन्यासे परासर पैदा हुए, यह असलोक तो मैं भी जानता हूँ[1] भैया!

भैया—यह सब बन्धन टूटेगा सन्तोखी भाई! दादा-दादीके सामने होटलका भात खानेपर भी वह कूँआ-तालाब देखने लगते, लेकिन यह काम नाती-पोताके जमानेमें सुरू हुआ जब कि दादा-दादी आँख मूँद चुके। हर पीढ़ी एक-एक कदम आगे बढ़ रही है कौन रास्तेको रोक सकता है। लेकिन देखा न, वह लड़की जो दरअसल जैसी बातकी पक्की थी, वैसी ही आचरनकी भी पक्की होती, लेकिन उसे बिरादरीने कहाँसे कहाँ तक पहुँचाया, उसे वेस्या बनाके छोड़ा। उसका पति उतना बुरा नहीं था, नहीं तो हजारों का गहना न छोड़ता। भाईके लिए तो तुम्हीं सोचो, क्या कहोगे?

सन्तोखी—वह देवता है भैया देवता। यह तो आप कह रहे हैं कि वह अभी जिन्दा है, तभी विस्वास होता है, नहीं तो मालूम होता था, कि कोई कथा-पुरानकी बात है।

भैया—देवता है, ठीक! बहिन जिन्दा रही तब उसने हिम्मत भी की थी, बिरादरीकी परवाह न करके साथ रखनेकी। बहिनने बात मान ली होती, तो वह वैसा ही करता भी। उसके बादकी उसकी जिन्दगी, तपस्या, गजबकी है।

[1] जातो व्यासस्तु कैवर्त्यां, श्वपाक्यां तु पराशरः।
वेश्याया गर्भ संभूतो, वशिष्ठस्तु महामुनिः॥

लेकिन उसके दिलमें जो आग जल रही थी, उसको जात-पातके सत्यानासमें लगाना चाहिए था। उसने अपनी अभागिन बहिनका बदला नहीं लिया, इसीलिए मैं समझता हूँ कि उसने भाईके धरमका पूरी तरह पालन नहीं किया। और लड़कीके बारेमें क्या कहते हो दुक्खू भाई ?

दुखराम—औरतोंका तो मैं हाथ-पैर इतना बँधा देखता हूँ कि उनके बारेमें कुछ कहते ही नहीं बनता।

मैया—ठीक कहा दुक्खू भाई ! औरतोंको सबसे ज्यादा पीसा गया है। पन्द्रह सौ बरसों तक उन्हें आगमें जलाया जाता रहा और एक-दो नहीं, सालमें दस-दस, पन्द्रह पन्द्रह लाख।

दुखराम—सचमुच भैया ! औरतें होलीकी तरह जलाई जाती थीं।

मैया—हाँ, दुक्खू भाई ! इसीको कहते थे सती होना, पति मर जाता, तो बिधवाको भी उसकी लासके साथ फूँक दिया जाता था।

सन्तोखी—लेकिन भैया ! लोग तो कहते हैं कि सती अपने मनसे होती हैं।

मैया—झूठ बोलते हैं सन्तोखी भाई ! कोई एकाध पागलपन भले ही करे लेकिन पन्द्रह सौ बरसके भीतर जो डेढ़ अरब औरतें फूँकी गई हैं; वह सब अपने मनसे जलने गई थीं यह कहना झूठा है। आदमीको अपने परानसे बहुत प्रेम होता है। जो मरनेके लिए तैयार भी हुई होंगी, वह सोकके पागलपनसे ही ! जवान औरतके लिए रँड़ापा एक-दो दिनका सोक नहीं है, उसके लिए दुनियामें सभी जगह काँटे ही काँटे बिछ जाते हैं। उसकी जिन्दगी-को और भी भारी नरक बना दिया जाता है, उसका मुँह देखनेमें असगुन होता है, ब्याह-सादी या मंगल काममें कोई उसको देखना नहीं चाहता। सब उसपर सक करते रहते हैं हिन्दू, हवा, पानी, पत्ता, खाकर रहनेवाले बिसवामित्र, पारासर ऋषिसे जिस बातकी आसा नहीं कर सकते उसकी आसा वह जवान विधवासे करते हैं, तो सचमुच ही वह पानीमें बिन्हाचलको तैराना चाहते हैं।

दुखराम—सो कैसे हो सकता है भैया ?

भैया - यह सब बातें विधवा समझती हैं, इसलिए जिन्दगी भर जलते रहनेकी जगह कोई उसी वक्त मर जाना चाहती हो, तो अचरज नहीं। लेकिन डेढ़ अरबमें ऐसी कितनी रही होंगी। और जानते हो दुक्खू भाई, राजपूतोंमें छः-सात सौ बरससे लड़कियाँ जनमते ही मार डाली जाती थीं।

दुखराम—हमारे सामने ही भैया, बेलहामें लड़कीके पैदा होते ही उसके नाक-मुँहपर नाला रख दिया जाता, और कुछ छन हीमें बेचारी मर जाती थी।

भैया—अभी ऐसी जगहें हैं जहाँ लड़कियोंको मार दिया जाता है। जो माँ-बाप अपने हाथसे अपनी बच्चीको मारते हैं, उनका दिल कैसा होगा?

दुखराम—पत्थर और लोहेसे भी कड़ा भैया! यह तो अपने ही बच्चेको चबा जाना है।

भैया—काहे ऐसा होता है? औरतका दुनियामें कितना मोल है। लड़की पैदा होते ही घर भरपर सोक छा जाता है, जान पड़ता है घरका कोई मर गया।

दुखराम—और भैया लड़का होनेपर सोहर गाया जाता है, खुसी और उछाह मनाया जाता है; लेकिन लड़की होनेपर सोहरका भला कोई नाम ले सकता है। लेकिन एक बात देखकर मुझे हैरानी होती है भैया!

भैया—कौन बात है दुक्खू भाई?

दुखराम—सोहर तो औरत ही गाती हैं, तो औरत जातिके पैदा होनेपर उनका मुँह क्यों बन्द हो जाता है और मरद जातिके पैदा होनेपर बहुत खुस हो जाती हैं

भैया—औरतका मोल मरदने लगाया है, औरत मरदके हाथकी कठपुतली है। हजारों बरससे औरत मरदकी गुलाम है। मालिक जो सिखाता है, गुलाम उसीको अच्छा मानता है। मरद ठीकसे बोलना नहीं जानता, तभीसे उसके मनमें ठोंक-ठोंककर बैठाया जाता है कि वह मरद बच्चा है। उसी वक्तसे वह अपने बहिनोंपर रोब जमाने लगता है, औरतको जिनगी भर गुलाम

रखनेकी सिच्छा यहींसे दी जाती है। पाँच बरसके लड़केको गुड़िया खेलनेको दो तो वह क्या लेगा दुक्खू भाई?

दुखराम—नहीं भैया! वह उसे फेक देगा, कहेगा कि क्या मैं लड़की हूँ।

भैया—लड़केको हाथी-घोड़ा खेलनेको मिलता है, वह गुल्ली-डंडा खेलता है, पेड़पर चढ़ता है, तैरता है, कंधेपर लाठी लेकर चलता है, तीर-धनुही चलाता है। लेकिन लड़कीको वही गुड़िया, वही चूल्हा-चक्की।

दुखराम—याने बचपन हीसे लड़कीको बतला दिया जाता है कि तुम्हारी जगह कहाँ है।

भैया—मरद अकेला-दुकेला जाता हो, तो क्या कोई छेड़नेकी हिम्मत कर सकता है? लेकिन जवान औरत चले तो किसी सड़कपर, देखो फिर सभी घूर-घूरकर ताकने लगते हैं। इतना ही होता, तब भी खैरियत थी, लेकिन वह तो मजाक करने लगते हैं और गन्दे-गन्दे। औरतको सिर्फ सिर नवाकर चले जानेके सिवा दूसरा कोई उपाय नहीं है। अकेले-दुकेले मिले तो जबरदस्ती करनेसे भी बाज नहीं आते। औरतकी देहमें मरदके इतना बल नहीं होता, लेकिन जो कोई बलवान भी औरत हो, तो अपनी इज्जत बचानेके लिए बदमाससे लड़नेकी जगह भागना ही अच्छा समझेगी। औरत कायर होती है, यह बात नहीं है। बदमाससे लड़कर जीतनेपर भी वह बदनाम तो हो ही जायगी, उसके मुखपर कालिख पुत ही जायगी। औरत अपनी रच्छाके लिए खुलकर जोर नहीं लगा सकती। चुप रहनेके कारन उसे अपनेको बचाना मुस्किल होता है। औरतकी यह अवस्था किसने की?

दुखराम—मरदने भैया!

भैया—मरदने ही, लेकिन मरदोंमें भी जोंकें हैं मूलकारन, काहेसे कि उन्हों हीने धनपर मरदका हक कायम किया है। औरतको पतिकी जायदादमें सिर्फ रोटी-कपड़ा पाने भरका अधिकार है। एक ही पेटसे भाई-बहिन दोनों पैदा होते हैं, लड़का चाहे कितना ही नालायक हो उसको जायदाद मिलती है, और लड़कीको पतिके घरमें दासी बनकर रहनेके लिए भेज दिया जाता है। औरतको आज निरवलम्ब बना दिया गया है। वह अपने पैरपर खड़ी

नहीं हो सकती। हजारों बरससे वह यह जुलुम सहती आई हैं। लेकिन यह जुलुम तभीसे सुरू हुआ जबसे जोंकें पैदा हुईं। जोंकोंकी औरतें और भी बेबस हैं। यह इसीलिए कि वह अपने हाथसे कुछ कमाती नहीं।

दुखराम—उनके मरद भी तो जोंक ही हैं, वह भी नहीं कुछ कमाते?

भैया—वह दूसरोंको लूटते हैं दूसरोंका खून चूसते हैं, उसीको वह कमाना कहते हैं। कोई बाबू दफ्तर में जाकर ६ घण्टे काम करता है, महीनेमें ४०) ले आता है इसे कमाई करना कहेंगे। उसकी औरत दो घड़ी रात रहे उठेगी, चक्की पीसेगी, चावल कूटेगी, चौका-बासन करेगी, खाना पकाके परोस देगी फिर बैठकर पंखा करेगी। बाबू दफ्तर चले जाएँगे। औरत बचा-खुचा जूठ खायेगी। फिर चौका बासन करेगी, फिर चक्की-ओखल पकड़ेगी। लड़कोंको खिलाना, पोसना-पालना सब औरतके ऊपर है, मरद-के ऊपर इसका कोई भार नहीं है। सामको खुद जलपान बनायेगी, फिर रसोई पकायेगी, फिर बेनिया डोलायेगी। मरदको दफ्तरसे लौटकर फिर कोई काम नहीं। औरत ६ घरी रात तक बराबर खटती रहेगी। फिर उसे पतिका पैर दबाना पड़ेगा। दो घड़ी रातसे आधी रात तक औरत खटती रहती है, लेकिन उसके कामकी कोई गिनती नहीं और मरद ६ घण्टे काम कर लेता है, तो समझता है कि वही कमाकर घर भरको खिला रहा है। देखो दोनोंमें कितना फरक है क्या इसको न्याव कहेंगे।

दुखराम—है तो भैया यह पूरा अन्याय।

भैया—मरद औरतको गुलाम बनाके अपने घरमें लाता है और इसको कहते हैं, ब्याह। बाप लड़कीके लिए बर ढूँढ़ता है किस लिए? इसीलिए कि लड़कीको रोटी-कपड़ेका कोई अवलम्ब मिलना चाहिए। मरदको अवलम्ब-की जरूरत नहीं, क्योंकि बापकी सब जायदाद उसको मिलती है, वह दूकान खोल सकता है, दफ्तरमें काम कर सकता है, उसके कमानेके सारे रास्ते खुले हुए हैं, लेकिन औरतके लिए सारे रास्ते बन्द हैं, इसलिए उसे खाना-कपड़ा देनेवाला कोई चाहिये। खाना-कपड़ा हीको पैसा कहते हैं न दुक्खू भाई!

दुखराम—हाँ भैया! पैसे बिना न खाना-कपड़ा मिलता है?

भैया—तो इसका मतलब हुआ ब्याह भी पैसेके लिए औरतका देह बेंचना है। दूसरे देह बेंचनेमें और इसमें यही अन्तर हुआ न कि यह बेच-खरीद जिन्दगी भरके लिए है। इसे प्रेमका सौदा नहीं कह सकते दुक्खू भाई! यह साफ पैसेका सौदा है।

दुखराम—तो क्या भैया! ब्याह करना ही बुरा है?

भैया—मैं ब्याह करनेको नहीं बुरा कहता दुक्खू भाई! लेकिन ब्याहके नामपर पैसेका सौदा होना औरतकी बेइज्जती समझता हूँ। ब्याहकी नींव प्रेमपर होनी चाहिए, और प्रेम दो बराबर आदमियोंमें होता है। खरीदी दासी और मालिकमें प्रेम नहीं होता। औरत तब तक बराबर नहीं हो सकती जब तककी कमानेमें माँ बापकी जायदादमें उसका बराबरका हक नहीं होता।

सन्तोखी—सुनते हैं भैया! बड़े लाटके यहाँ कानून बननेवाला है जिसमें कि औरतको जायदादमें हक मिले।

दुखराम—तुमने कहाँ सुना सन्तोखी भाई!

सन्तोखी—परसों हाटमें सभाकी नोटिस बँट रही थी।

दुखराम—नोटिसमें क्या लिखा था संतोखी भाई?

सन्तोखी—लिखा क्या था, लो न नोटिस देख लो—

हिन्दू अप्रदत्त उत्तराधिकार बिल विरोध सभा

धार्मिक हिन्दू जनताकी ता०...........१६४४ वार...........को स्थान........में हिन्दू समाज नाशक उत्तराधिकार बिल एवं विवाह विषयक बिलके विरोधमें सभा होगी, जिसमें बाहरके आये हुए विद्वानों एवं स्थानिक सज्जनोंके भाषण होंगे। उक्त बिलोंसे हिन्दू समाजपर कितनी बड़ी कठिनाई तथा समाजिक दुर्व्यवस्था होनेवाली है, इसका पूर्णपरिचय देंगे। अतः धार्मिक सज्जनोंसे निवेदन है कि सभामें अपने इष्ट-मित्रोंके साथ अवश्य पधारें।

निवेदक—"

प्रबोध प्रेस, बनारस

दुखराम—यह तो भैया ! संसकिरतमें कुछ लिखा हुआ है कुछ समझमें नहीं आता ।

भैया—यही लिखा है कि सरकार औरतको जायदातमें हक देनेका कानून पास कर रही है, इसके खिलाफ सभी हिन्दुओंको विरोध करना चाहिए, नहीं तो हिन्दू धरम रसातलको चला जायगा ।

दुखराम—देहमें आग लग गई भैया, यह हिन्दू धरम है कि निसाचर धरम है, जो अपने माँ-बहिनको हक देनेमें धरमके रसातल जानेकी बात करता है । सन्तोखी भाई ! चाहे तुम नराज हो जाओ, मैं तो कहूँगा कि ऐसा हिन्दू धरम चार दिनके बाद नहीं इसी छन रसातलमें चला जाय तो मुझे बड़ी खुसी होगी ।

भैया—हिन्दुस्तानमें ३० करोड़ हिन्दू हैं, उसमें आधी १५ करोड़ औरतें हैं, कभी उन औरतोंसे भी इन धरमवालोंने पूछा, कि तुम्हें जायदात मिलनी चाहिए कि नहीं ।

दुखराम—उन बेचारियोंको तो मालूम भी नहीं है, यह पीठमें छुरी भोंकना है । जो वह समझ पायें, तो मरदकी सब जायदात और कमाई ताक-पर रखी रह जायगी एक ही दिन १५ करोड़ने चूल्हा जलाना छोड़ दिया, तो सभा करनेवालोंको आटा-चावलका भाव मालूम हो जायेगा ।

भैया—लेकिन दुक्खू भाई ! औरतें हमेसा भेड़-बकरी नहीं बनी रहेंगी। पढ़ी-लिखी औरतें जगह-जगह सभा कर रही हैं और कह रही हैं कि लड़के आदमीके पेटसे निकलते हैं और लड़की क्या इमलीके खोढ़रसे निकलती हैं ।

सन्तोखी—जहाँ-तहाँ भैया ! कसाई सब औरतोंसे अँगूठेका निसान लगवा रहे हैं ।

भैया काहे वास्ते सन्तोखी भाई !

सन्तोखी—समझो रहे हैं कि जो कानून पास हो गया तो सब जायदाद लड़कियाँ ले जायेंगी और लड़के भीख माँगते फिरेंगे ।

भैया—सब जायदात तो देनेकी बात नहीं सन्तोखी भाई ! हजारों बरसों-से हिन्द मरदोंने जो उनका हक छीन लिया है, बस उतने हीके देनेकी बात

है। मुसलमानोंके यहाँ लड़कीके लिए हक मिलता है, ईसाईके यहाँ भी लड़कीको हक मिलता है, उनका धरम तो रसातल नहीं गया तो हिन्दू मरद इतना क्यों छटपटा रहे हैं।

दुखराम—यह हिन्दू धरम क्या है भैया ! यह तो जान पड़ता है कि आदमीके देहका कोढ़ है। लेकिन यह कितने दिनों तक रोकेंगे ?

भैया—तो मालूम हुआ न, औरतोंपर कितना जुलुम हो रहा है। मरकस बाबाकी शिक्षा है कि मरद और औरत गाड़ीके दो पहिये हैं, जब तक दोनों बराबर नहीं होंगे तब तक गाड़ी चल नहीं सकती। दुक्खू भाई ! हम जोंकोंको खतम करनेके लिए तैयार हैं, इसलिए न कि आदमी आदमी बराबर हों। आदमी-आदमीके बराबर होनेपर औरतोंको गुलाम नहीं रखा जा सकता। औरतको आगमें जलाना भी हिन्दू धरम कहलाता था। औरतकी देहको रोटी-कपड़ेके लिए बेंचना भी हिन्दू धरम कहला रहा है। बराबरका हक होगा, तब औरतको देह बेंचना नहीं होगा, तभी दुनियाका नरक मिटेगा।

अध्याय १५

"हरिजन" या सबसे अधिक सताये आदमी

दुखराम—भैया तुमने उस दिन जो औरतोंकी गुलामीके बारेमें कहा था, उसपर मैं बहुत सोचता रहा, लेकिन उसी तरहकी और कुछ बातोंमें उनसे भी सताई जमात है उन लोगोंकी जिनको बड़ी जाति अछोप, अछूत, कहते हैं।

भैया—और उन्हींको गांधीजीने नया नाम दिया—"हरिजन।"

दुखराम—मैंने सोचा अबदुल और सुखारीको साथ लेकर बात करो तो और अच्छा होगा। मैं उनसे मरकस बाबाकी बातें करता रहा हूँ, और अभी तो वह दुनिया कहाँ है, इसका कहीं पता नहीं है, तो भी बात सुनके ही दोनों तुमसे भेंट करनेके लिए आना चाहते थे। मैंने उनसे कहा कि रजबली

भैयाको मैं तुम्हारे ही घरपर लाता हूँ, वही सामने है अब्दुल भाईकी झोंपड़ी, देखते हैं न, क्या यह आदमीका घर है ? हिन्दू भंगी होता, तो बगलमें एक सुअरकी खोभार भी होती और दोनोंमें कोई फरक नहीं दिखाई पड़ता। अच्छा अब हम आ गये, अब्दुल भाईने आमके नीचे पुआल बिछा दिया। सलाम अब्दुल भाई !

अब्दुल—सलाम दुक्खू भाई ! और यह रजबली भैया तो नहीं हैं ?

दुखराम—हाँ, यही हमारे रजबली भैया हैं। सलाम सुखारी भाई !

सुखारी—सलाम दुक्खू भैया, सलाम रजबली भैया ! आओ इसी पुआल-पर बैठें।

अब्दुल—हाँ, भैया ! बैठो। जोंकोंने हमें और किस कामके लायक छोड़ा है। यह तो थोड़ा-सा कोदोका पुआल कहींसे माँग-जाँचकर ले आये हैं। जाड़ेमें लड़के-बाले इसीमें घुसकर दिन काटेंगे।

सुखारी—पुआल भी मिल जाय भैया ! तो जनुक हम लोगोंको साल-दुसाला मिल गया।

दुखराम—हमारे ही हाथ साल-दुसाला बनाते हैं लेकिन भकुवा बनाकर दूसरे उसे पहिनते हैं। हमने अपने रूपको नहीं पहचाना सुक्खू भाई ! कोई बाघका बच्चा था। बचपन हीमें किसी गड़रिये ने पकड़ लिया और भेड़-बकरी-का दूध पिलाकर पोसा। जब वह बढ़कर पूरा बाघ हो गया, तब भी कोई उसका कान पकड़ता, कोई मारता, जैसे अब भी कुत्ते हीका पिल्ला है। फिर किसी दूसरे बाघने देखा उसको बड़ा अचरज हुआ और अफसोस भी हुआ। जब वह समझानेके लिए उसके पास गया तो सब भेड़ बकरियाँ भाग गईं, और उन्हींके साथ वह बाघका बच्चा भी भाग निकला। कई दिनके बाद बाघने जवान बाघको पकड़ पाया। बाघ समझाने लगा कि तुम भी हमारी तरह बाघके बच्चे हो, काहे मार खाते हो, काहे बेइज्जत होते हो ! बाघ बच्चेने कहा—कि नहीं हमको छोड़ दो नहीं तो गड़रिया मार-मारकर बेदम कर देगा। बाघ उसे पानीके पास ले गया, परछाईं दिखाके कहा कि देखो तुम्हारा भी रूप मेरे ही ऐसा है। बाघ बच्चेने देखा तो बात उसे सच्ची

मालूम हुई लेकिन तब भी उसका डर नहीं जा रहा था। बाघने कहा कि गड़रियेके सामने मेरी तरह जरा गुर्राना और जब गड़रिया जान लेके भाग जाय तब तो मेरी बात मानोगे न ? बाघ बच्चेने वैसे ही किया, गड़रिया भाग गया। बाघ बच्चा जंगलका राजा बन गया। वही बात तो है सुक्खू भाई ! हम लोगोंकी। हजार आदमी मर-मरकर कमाते हैं और पाँच जोंकें सब खा जाती हैं, कमानेवालोंको उन्होंने छत्तीस खोममें बाँट दिया है उसपरसे हम लोगोंको भेड़ बना दिया। लेकिन जिस दिन हम लोग अपना रूप पहचान लेंगे, उसी दिन जोंकोंका अन्त समझो।

सुखारी—दुक्खू भाई, जो तुम कहते हो, वह सब हमारे घटके भीतर उतर जाती है। छोटा भइयवा सुआरथ काल्ही तो यहाँसे गया है। पलटनमें सिपाही है भैया ! वहाँ अच्छा-अच्छा पहनना मिलता है दुक्खू भाई ! तुमने जो दो अच्छर बताया है उसे सुआरथसे भी कहा। उसने कहा कि रूसके पलटन इतनी बीर दुनियामें कहीं नहीं है लेकिन उसको यह नहीं मालूम था कि रूसमें जोंकें नहीं हैं, वहाँ कमेरोंका राज है।

दुखराम—तो तुमने कुछ बताया कि नहीं सुक्खू भाई ?

सुखारी—जो कुछ समझमें आता है, वह बतलाया दुक्खू भाई ! कह रहा था कि मैं पलटनमें जाकर और पता लगाऊँगा। अच्छा यह बात तो हुई अब रजबली भैया कुछ बतावें ?

भैया—दुनिया भरमें सुक्खू भाई जोंकोंका राज है, जोंकें कारखाना खोलती हैं, सौदा बेंचती हैं, जिसमें कोई गड़बड़ न करें इसलिए राज भी अपने हाथमें रखा है। गरीब सब जातिमें हैं सुक्खू भाई ! बाँभनमें भी गरीब हैं, रजपूतमें भी गरीब हैं, भुँइहारमें भी गरीब हैं, जो गरीब हैं, उसकी जिन्दगी नरक है, धरती पर हमारा देस सबसे बड़ा नरक है काहेसे कि इतनी गरीबी चारों खूंटमें कहीं भी नहीं है। और बड़ी जातियोंमें तो दो-चार खुसहाल भी होते हैं, लेकिन अछूत जातिमें तो एक ओरसे सभी गरीब ही गरीब हैं। मदरसामें पढ़ने जायँ तो सबकी तिउरी चढ़ जाती मेहतरका लड़का हमारे लड़केके साथ बैठा करे। चमारका लड़का लड़के हमारे के साथ पढ़े।

रोजगारसे लोग पैसा पैदा करते हैं, लेकिन अब्दुल भाई! तुम मिठाईकी दूकान खोलो तो कोई आयेगा।

अब्दुल—देह तो छुआते ही नहीं हैं भैया! हमारे हाथकी मिठाई कौन खायेगा? कपड़ाकी दूकान खोलो तो वही बात। नौकरीमें तो और मुस्किल। सब बड़ी-बड़ी जातियोंके हाथमें है।

भैया—जोंकोंने वैसे तो सारी दुनियामें सब कुछ अपने हाथमें रखा लेकिन हिन्दुस्तानमें तो उन्होंने और गजब ढाया है। तीस करोड़ हिन्दुओंको ही ले लो। दस करोड़ अछूत हैं, बड़ी जातिवाले जो उन्हें आदमी कहते तो जनुक बड़ी दया करते हैं बाकी बीस करोड़में दस करोड़ औरतें हैं जिनको कहनेके लिए तो अरधांगिनि नाम दिया जाता है लेकिन कहावत है—"बहुरियाका बहुत मान लेकिन हाड़ी-बरतन छूने न पाये।" दुक्खू भाई! उस दिन बात हो रही थी न जायदातमें औरतोंका भी हक होना चाहिए?

दुखराम—हाँ भैया! सन्तोखी भाईने जो सभाकी नोटिस दिखाई थी।

सुखारी—किस बातकी नोटिस थी भैया?

भैया—आजकल बड़े लाटके यहाँ एक कानून बनानेकी बात हो रही है। औरतोंको न बापकी जायदादमें हक मिलता है न पतिकी। इसीलिए कानून बना देना चाहते हैं कि औरतोंको भी हक मिले लेकिन हिन्दू कहते हैं कि औरतोंको हक मिलनेसे हिन्दू धरम खतम हो जायगा। हिन्दू धरम बढ़ेगा कैसे? दस करोड़ आदमियोंको अछूत रखो उनको न साथमें पढ़ने दो न उन्हें कुयेंकी जगतपर चढ़ने दो, न मन्दिरके भीतर घुसने दो, एक है यह रास्ता। दस करोड़ औरतोंको कोई हक मत दो जिससे वह मरदोंकी दासी बनी रहें हिन्दू धरमकी बढ़ोतरीका यह दूसरा रास्ता है; बीस करोड़को तो इस तरह जानवर बना फिर दस करोड़ हिन्दू आदमी रह जाते हैं। लेकिन उस दस करोड़में कितने सौ बाम्हन हैं, जिनका दिमाग आसमानपर रहता है वह अपने को बर्म्हाका बेटा कहते हैं, कुछ है राजपूत, फिर हैं खत्री, अगरवाल, बरनवाल, रस्तोगी, कायथ और भी पचासों जातियाँ हैं, सबकी अलग-अलग

दुनिया है, मरना-जीना, सादी-ब्याह सबका अपनी-अपनी जातिमें। हिन्दू सिरिफ एक नाम है, नहीं तो यह सैकड़ों जातियोंका अपना अलग संसार। तो देख रहे हो न सुक्खू भाई २० करोड़ औरत और अछूत कहकर जानवर बना दिया। फिर १० करोड़को सैकड़ों जातियोंमें तोड़फोड़कर बिल्कुल कमजोर कर दिया। इससे फायदा किसको हुआ? बाहरवालोंको। घर फूटै गँवार लुटै, आज बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानपर राज कर रही हैं क्यों? इसीलिये कि हिन्दुस्तान फूटके कारन दुरबल है और दुरबलकी मेहरी गाँव भरकी भौजाई है। और दूसरा नफा उठानेवाला है हमारे देसके निकम्मे लोग, जोंकें जो हाथ-पैर हिलाना नहीं जानतीं, जो दूसरोंका खून चूसती हैं, किसान उनके लिये अनाज पैदा करता है, मजूर उनके लिए कपड़ा बुनता है।

दुखराम—इन्हीं जोंकोंने क्या भैया जात-पात बनाई है क्या?

भैया—एक कहावत है दुक्खू भाई—जब गंगा हहाके समुन्दरके पास पहुँची तो समुन्दरको बड़ा डर लगा उसने सोचा जो गंगा इतने जोरसे चलेगी तो मुझे भी लाँघ जायेगी। उसने हाथ जोड़के कहा—"गंगा महारानी एक बातका बरदान माँगता हूँ एक धारासे आनेपर मुझे बहुत तकलीफ होगी आप हजार धारा बनकर आयें तो मुझपर बड़ी दया होगी। गंगा हजार धारा बन गई, उसका जोर हजार टुकड़ोंमें बँट गया और कहते हैं इसीलिये समुन्दर गंगाको खा गया। हमारा देस भी वैसे ही है। हजारों जातियोंमें बँटा है इसीलिये हमारे यहाँकी जोंकें हजारों बरससे हमें खा रही हैं, हमारे लिए ये जोंकें मजबूत हैं लेकिन यह भी हजारों टुकड़ोंमें बँटी हैं, इसलिये बिलायती जोंकें हिन्दुस्तानमें पहुँच गईं। तुमसे सुक्खू भाई पूछा जाय कि तुम तो इतना काम करते हो। बड़े भोरे ही हल नाधते हो बरसा हो या जाड़ा हो या गरमी हो कुछ नहीं गिनते। अढ़ाई पहर तक खेतमें हर जोतते हो, जमीन खोदते हो, खेत काटते हो, और मिलता तुम्हें क्या है?

सुखारी—चार पैसा, और पाव भर पन पियाव, न कुल। चार पैसाके साँवामें भी आज-कल पेट नहीं भरता, क्या अपने खायँ और क्या बाल-बच्चेको खिलायें, सबकी हड्डी-हड्डी निकली हुई है। परसाल १२ बरसका

लड़का भुक (मर) गया।

भैया—१२ बरसका लड़का मरनेके लिये नहीं पैदा हुआ था सुक्खू भाई! जिसको आध पेट भी भोजन नहीं मिलेगा, उसको तो बीमारी ढूँढ़ती ही रहती है। खानेका ठिकाना नहीं है तो दवाई कहाँसे लाके पिलाओगे?

भैया—आज-कल भी भैया आठ सालका गदेला (लड़का) महीना भरसे जड़ैयामें पड़ा है। बस भगवानपर छोड़ दिया और क्या करें। पहिले चार पैसेकी कुनैनकी पुड़िया मिलती थी तो कहींसे माँग-जाँचकर खरीद लाते थे। लेकिन अब तो उसका कहीं पता ही नहीं है।

भैया—यह आदमीकी जिन्दगी नहीं है सुक्खू भाई, दो सौ पीढ़ीसे तो भगवानपर छोड़ा, लेकिन भगवानने आज तक तुम्हारी ओर झाँका भी नहीं।

सुखारी—सो तो जानता हूँ भैया! लेकिन जब आदमीका कुछ भी नहीं चलता तो क्या करे? सुनते हैं गाँधी महातमा हम लोगकी सुध ले रहे हैं।

भैया—अपनी सुध न लोगे सुक्खू भाई तो कोई तुम्हारी सुध न लेगा। हिन्दू और गांधीजी भी जो हरिजन-हरिजन कहने लगे तो इसमें भी दूसरा ही मतलब है।

दुखराम—दूसरा मतलब क्या है भैया और हरिजन क्या?

भैया—हरि भगवानको कहते हैं और जनका माने है आदमी, भगवान का आदमी, नाम तो अच्छा है, लेकिन नामसे कुछ नहीं होता।

दुखराम—एक खिस्सा सुना दें किसी लड़केका नाम ठठपाल था, अच्छा नाम रखनेसे जम उठा ले जाता था इसलिये मतारीने खराब नाँव रख दिया। लड़का पढ़के हुसियार हुआ। दूसरे लड़के ठठपाल कहके मजाक करते। उसने अपने गुरुसे कहा कि मेरा नाम बदल दें। गुरुने कहा—'नाममें कुछ नहीं है' ठठपालने फिर-फिर जोर देकर कहा तो गुरुने कहा जाओ तुम्हीं कोई अच्छा-सा नाम ढूँढ़ लाओ। ठठपाल नाम ढूँढ़ने चला। किसी खेतमें फटे चीथड़े लपेटे कोई औरत पिछुआ (छूटा दाना) बीन रही थी, ठठपालके पूछनेपर उसने अपना नाम लछमिनिया बताया। ठठपाल सोचने लगा कि लछमिनिया ऐसा अच्छा नाम है, लेकिन इससे उसे क्या नफा है? ठठपाल

और आगे बढ़ा, चैत-बैसाखकी दुपहरियामें कोई आदमी नंगे बदन हल जोत रहा था पूछनेपर नाम बताया धनपाल। ठठपाल फिर सोचने लगा। लेकिन, फिर आगे बढ़ा। कुछ आदमी कन्धेपर मुर्दा उठाये "राम नाम सत्त है" कहते गाँवसे बाहर निकल रहे थे। ठठपालने नाम पूछा तो मालूम हुआ अमर! ठठपाल वहींसे गुरुजीके पास लौट आया। गुरुने पूछा—कोई नाम ढूँढ़ लाये? ठठपालने कहा—"बिनिया करत लछमिनिया देखा, हल जोतत धनपाल। खटिया चढ़े हम अम्मर देखा, सबसे भला ठठपाल।"

दुखराम—हाँ नाम बदलनेसे क्या होता है भैया?

भैया—और नाम भी कैसा बदला है हरिजन, भगवानका आदमी। भगवानने अछूतोंकी ओर फूटी आँख भी कभी देखी? जोंकें अपने सारे चूसनेको भगवान हीकी कृपा बतलाती हैं। सुखारी क्यों भूखे मरते हैं? भगवानकी कृपा, सुखारीका १२ सालका लड़का पथ और दवाईके बिना क्यों मर गया? भगवानकी मर्जी। सालमें १० महीना सुखारीको क्यों भूखा और आधा पेट रहना पड़ता है?—भगवानकी इच्छा। इनके दो करोड़ चमार भाई काहे नंगे-भूखे मरनेके लिए पैदा हुये हैं? भगवानकी खुसी! राजा सुरेमनपुर काहे २० लाख रुपया हर साल आतिसबाजी, रंडी और मोटरपर फूकते?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमल मोटाईके मारे चारपाई परसे उठ भी नहीं सकते। उन्होंने चोर बाजारमें अनाज बेंचकर एक करोड़ रुपया काहे मार लिया?—भगवानकी दया। सेठ तिनकौड़ीमलके भाई बन्दोंने अनाज छिपाके उसे महँगाकर बंगालमें २० लाख आदमियोंको भूखा क्यों मार डाला? भगवानकी दया। कोई काम करते-करते मर जाता, लेकिन उसे एक साँझ भी पेट भर अन्न न मिलता, यह भी भगवानकी दया। किसीके कुत्ते हलुवा-मलीदा खाते हैं और कोई भूखके मारे कुत्तोंका जूठ छीनके खाता है यह भी भगवानकी दया।

दुखराम—जिनके कुत्ते हलुवा-मलीदा खायँ वह भले ही भगवानकी दयाकी तारीफ करते फिरें, लेकिन जिनके ऊपर भगवानके नामने हमेसा ही वज्र गिराया है, वह काहेको भगवानके आदमी बनने जायँ?

भैया—गांधीजीने अछूतोंको हरिजन—भगवानका आदमी बनाया और एक काम और किया।

सुखारी—सो क्या है भैया ?

भैया—हरिजनोंके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देना चाहिए। जब हरिजन हैं तो इनको हरिका दरसन जरूर मिलना चाहिए। लेकिन बाभन पोथी खोल-खोलके दिखाते फिरते हैं कि चमारके मन्दिरके भीतर जानेसे मन्दिर असुद्ध हो जाता है, भगवान असुद्ध हो जाते हैं मैं तो उनसे कहता हूँ दुक्खू भाई कि क्या हिन्दुस्तानमें गायका गोबर और मूत नहीं है, क्यों नहीं खिला-पिलाके भगवानको सुद्ध कर लेते।

दुखराम—चमारके लिए मन्दिरका दरवाजा खोल देनेसे उसका पेट भर जायगा ?

भैया—डाक्टर अम्बेडकर भी यही कहते हैं दुक्खू भाई !

दुखराम—डाक्टर अम्बेडकर कौन हैं भैया ?

भैया—बम्बईकी ओरके चमार। पढ़नेमें बहुत तेज थे, किसी तरहसे तकलीफ सह-सहके दो अच्छर पढ़ा फिर किसीने रुपयेकी थोड़ी मदद की बिलायत गये बलिस्टर हुए, डाक्टर बने—दवाईवाले डाक्टर नहीं, विद्दावाले डाक्टर। हिन्दुस्तान आये। वकालत करने जायँ तो धन तो है बड़ी जातिवालोंके पास और चमारको कौन बलिस्टर रखेगा। कचेहरीके हाकिम बने, तो सब बड़ी जातिवाले सरकारका सिर खाने लगे कि हम चमारके इजलास में नहीं जायेंगे। अम्बेडकरके भाई-बन्दोंको हजारों बरससे जानवरकी तरह रखा गया, वे बड़ी जातिवालोंके सामने न छाता लगाके निकल सकते हैं, न जूता पहिन करके। लेकिन उनको कभी भी इसका दिलमें ख्याल नहीं आया, वह समझते हैं भगवानने हमें इसीलिए पैदा किया है। लेकिन अम्बेडकरने विद्दा पढ़ी थी, दुनियाके देस देखे थे, वह ऐसे अपमानको चुपचाप बरदास नहीं कर सकते थे। उन्होंने अपने चमार भाइयोंको समझाया और सभी अछूतोंको समझाया कि हम आदमी हैं कुत्ता-बिल्ली नहीं हैं जो हिन्दुओंके धरममें हमें कुत्ता-बिल्ली बनाके रखनेकी बात लिखी है तो हम

ऐसा धरम नहीं चाहते। भगवानको हमने देख लिया जो वह २०० पीढ़ीसे हमारे नहीं हुए तो अब वह कभी हमारे नहीं होंगे।

सुखारी—तो भैया! अम्बेडकर हमारी ही जातिके आदमी हैं, वह भी इस दिहातमें चले आवें, तो भितौराके राजा साहब जूता-छाता पहनकर नहीं न चलने देंगे?

भैया—अम्बेडकर, बड़े लाटके मन्त्री हैं। झूठी खबर भी उड़ जाय कि अम्बेडकरकी मोटर भिटौरासे होकर जायगी, तो यहाँ सड़कके किनारे फाटक बनेंगे और लाल-पीली झंडियों, असोकके पल्लवोंसे सजाया जायगा, राजा साहब हाथ जोड़कर अगवानी करेंगे और चाय-पानी कर लेनेपर अपना धन्निभाग समझेंगे।

सुखारी—तो भैया! अम्वेडकर बड़े लाटके मंत्री हो गये, तो उनकी जाति ढँक गई न?

भैया—जोंकोंका कायदा है सुक्खू भाई कि जब किसीको बड़ा देखते हैं तो अपनी ओर खींचना चाहते हैं जिसमें कि वह आदमी भी जोंकोंका पच्छ करे नहीं तो खून चूसनेमें मुसकिल होगी न?

सुखारी—क्या अम्वेडकर हम गरीबोंको भूल जायेंगे?

भैया—भूले तो नहीं हैं सुक्खू भाई, वह तो दसो करोड़ अछूत भाइयोंको जानवरसे आदमी बनाना चाहते हैं। लेकिन दसो करोड़ आदमी अपने मनसे जानवर नहीं बने, जोंकोंने उन्हें जानवर बनाया।

सुखारी—किस तरह हम लोगोंको आदमी बनाना चाहते हैं भैया?

भैया—कहते हैं हिन्दुओंमें एक तिहाई अछूत हैं, उनको भी बड़ी-बड़ी नौकरी मिलनी चाहिए। काहे जज, कलट्टर, मजिट्टर सब बड़ी-बड़ी जातिके ही लोग बने हैं। हम एक-तिहाई हैं इसलिए नौकरीमें एक-तिहाई हमारा हिस्सा होता है।

सुखारी—तो भैया, क्या हमारी जातिमें भी अब कलट्टर-मजिट्टर बन रहे हैं?

भैया—हाँ, दस-बीस काहे नहीं बने हैं। लेकिन सुक्खू भाई जो तिहाई

नौकरी मिल जाय तो यह भी ऊँटके मुँहमें जीरा होगा। दस करोड़में एक हजार नौकरी मिल जानेसे दसो करोड़की भूख भाग जायगी ?

सुखारी—कहाँ भागेगी भैया ! रजपूत-बाभनमें हजारो नोकरिहा हैं लेकिन हर गाँवमें तो पेटमें पत्थर बाँधके ढेला पीटनेवाले भरे पड़े हैं।

भैया—मैं यह नहीं कहता, अछूतोंको नौकरी नहीं लेना चाहिए लेकिन ओसके चाटनेसे प्यास नहीं बुझेगी सुखारी भाई !

सुखारी—और भी कोई रास्ता बतलाते हैं भैया ?

भैया—राज-काज चलानेके लिए जो छोटे लाट बड़े लाटकी पंचायत (एसेम्बली, कौंसिल) है, उसमें भी एक-तिहाई हमारे भाइयोंको जाना चाहिए।

सुखारी—तो इससे भैया हम लोगोंको रोटी-कपड़ा मिलने लगेगा ?

भैया—बड़ी जातिके लोग तो पंचायतमें गये हैं। देख रहे हो न उनकी जातिके ढेला फोड़नेवालोंको कितना खाना-कपड़ा मवस्सर हो रहा है।

सुखारी—तो यह भी बेकार ही हुआ न भैया ?

भैया—बेकार नहीं है सुक्खू भाई, अछूतोंको उस पंचायतमें जाना चाहिए, तभी न बड़े लोगोंको मुँहतोड़ जवाब मिलेगा और फिर छाता-जूता उतरवानेका नाम नहीं लेंगे। लेकिन सीक बोरके पानी देनेसे कंठ नहीं भीगेगा सुक्खू भाई !

सुखारी—तो भैया, कौन उपाय है, जिससे हम लोगोंका दुख-दलिद्दर जाय ?

भैया—बस रोगोंकी एक ही दवा है सुक्खू भाई और वह दवा मरकस बाबा बतला गये हैं।

सुखारी—मरकस बाबाकी बात दुक्खू भाईने बतलाई है।

भैया—ताल-तलैया, डबरा-गड्ढा, चाहे गड़हा-गड़ही, चाहे गाय-भैंसके खुरका दाग; एक-एक चीजको लोटाके पानीसे भरनेमें जिनगी बीत जायगी लेकिन वह नहीं भरेंगे और एक बेर बाढ़ आ जाय, तो सब भर जायँगे। मरकस बाबा कहते हैं कि खून चूसनेवाली सभी जोंकोंको निकाल बाहर करो

और खेती-बारी, बाग-बगैचा, खान-कारखाना सब साझेमें कर लो, बस सबका दुख-दलिद्दर दूर हो जायगा।

सुखारी - अम्बेडकर यह नहीं मानते भैया!

भैया अम्बेडकरको बाढ़के आनेपर विस्वास नहीं।

सुखारी—बाढ़के आनेपर विस्वास नहीं है तो क्या लोटा-लोटा पानीसे भर देनेका विस्वास है, यह तो और अनहोनी बात है।

भैया—वह सोचते हैं, कि अबकी साल सौ नौकरी मिलेगी अगले साल दो सौ आदमी हाकिम हो जायेंगे। इसी तरह कुछ दिनमें हमारी जातिके दस-बीस हजार आदमीको नौकरी मिल जायगी। कोई दो हजार महीना पायेगा, कोई हजार, कोई पाँच सौ, कोई सौ।

सुखारी—दो हजार या सौ महीना लेके अपने ही अंडे-बच्चेको पालेगा न भैया! बहुत हुआ तो दो लाख आदमियोंका इससे काम चल जायगा, लेकिन दस करोड़में दो लाख क्या है?

भैया—बड़ी जातिवालोंके पास तो भैया जमीन-जमींदारी भी है, कल-कारखाना भी है, हमारे पास तो मँड़ई डालनेकी भी जमीन नहीं, तो दस-पन्द्रह हजार नौकरियोंके मिल जानेसे हमारा क्या बनेगा?

भैया—नौकरीवाले जिमींदारी खरीदेंगे, कारखानोंमें भी हिस्सेदार बनेंगे, हो सकता है, पचास बरसमें अछूतोंमें भी कुछ हजार जमींदार और कारखाने-दार बन जायँ।

दुखराम—लेकिन इससे तो भैया! जोंक ही बढ़ेगी न? जोंकोंके बढ़ाने-से हमारा दुख जायगा या खतम करनेसे?

भैया—यही तो अम्बेडकर नहीं समझते। उन्होंने खुद सब तकलीफ और अपमान भोगा है। उनके दिलमें अपने भाइयोंके लिए बड़ा दर्द है। वह अछूतोंको उठाकर खड़ा कर रहे हैं, यह सब अच्छा है। वह गांधीजीके हरिजन-उद्धार या अछूत-उद्धारको बेकार समझते हैं, यह भी ठीक है। और गांधीजी जो मन्दिरमें अछूतोंको भेजना चाहते हैं तो यह मायाजाल है। मन्दिर और भगवान सब धोखेकी टट्टी है। चारा देकर बहेलिया मारता है।

अछूतोंको भगवानको दूर हीसे सलाम करना चाहिए और कह देना चाहिए बाबा ! जाओ, बहुत दिनों छातीपर मूँग दला ।

सुखारी—मरकस बाबाके रस्तासे चलनेसे हम लोगोंका कैसे उद्धार होगा भैया ?

भैया—सुक्खू भाई ! यही अपना दाउदपुर गाँवकी बात ले लो । बाभन-चमार सब मिलाकर १०० घर हैं । तुम्हारे यहाँ ५०० सौ बीघा खेत है और सब रब्बीका । अभी तो १०० घरमें २० घर चमारोंके पास कुल मिलाकर ३, ४ बीघासे ज्यादा जमीन नहीं, और उसके लिए भी मालिककी गाली-मार सहनी पड़ती है, और भी कितने ही बाभनों, अहीरों, और दूसरी जातिके घर हैं, जिनमें किसी-किसीके पास थोड़ी-सी, नामके लिए जमीन है । ८, ६ घर हैं, जिनके पास जमीन भी बेसी है और मुँहमें गाली भी । मरकस बाबाके रस्तेका मतलब है कि पाँचौ सौ बीघा इकट्ठा कर दिया जाय, कोले-कोलियों-की मेड़ें तोड़ दी जायँ, और पाँचौ सौ बिगहाकी खेती सबों घरकी साझी हो । जितने देहसे काम करने लायक आदमी मर्द-औरत हैं सब काम करें ।

सुखारी लेकिन भैया, सुखलाल तेवारीके घरकी बुढ़िया भी चौखटसे बाहर नहीं निकलती, उनके घरकी औरतें कैसे निकाई-रोपाई करने आयेंगी ?

भैया—सात परदेके भीतर रहना, चौखट नहीं लाँघना, हाथमें मेहदी लगाके बैठना, यह सब जोंकोंका धरम है भाई, कमेरोंका धरम है, काम करना । सुखलाल तेवारी और उनके घरकी औरतोंको दोमेंसे एक बात चुननी पड़ेगी जो वह जोंक धरम पालन करना चाहते हैं, तो "काम नहीं तो रोटी नहीं" वाली बात होगी, और एक हफ्तामें सब पटपटाके दाउदपुरको छोड़ जायँगी । जोंकोंके मरनेसे धरतीका भार उतरता है सुक्खू भाई ? और जो कमेरा-धरमपर चलना चाहेंगे तो सबके भाई हैं, सबके साथ मिलके काम करें । खूब धन पैदा करें, और सबों घर बाँट-चोटकर खायें-पियें ।

सुखारी—तो मरकस बाबाके रस्तामें भैया काम पियारा होता है, चाम नहीं, यही न भैया !

भैया—जो दाउदपुरमें सबों घर चाउसे पियार करने लगे तो धरती माता

एकहू अच्छुत अनाज देंगी ?

सुखराम—धरती माताका दिल तब तक नहीं पसीजता भैया, जब तक चोटीका पसीना एड़ी नहीं पहुँचता।

भैया—दाउदपुरमें सबों घर काम करेगा। खेतोंमें मोटरका हल चलेगा, सिंचाईके लिए पाइप और बिजली लगेगी। खेत-खेतमें बिलायती खाद पड़ेगी। २०० बीघा गेहूँ बोनेमें लोगोंका साल भरका खाना हो जायगा। ३०० बीघा जो सिगरेटवाला तमाकू बो दो तो खाली तमाकू बेंच देनेसे सालमें ३ लाख रुपया आ जाय। लेकिन तमाकू काहेको बेचोगे सुक्खू भाई! दाउदपुरमें सिगरेटका कारखाना खुल जायगा। खेतीका समय छोड़कर मरद-औरत अपने कारखानामें रोज ६ घंटा काम करेंगे और बीस लाखका सिगरेट सालमें बिक जायगा और गाँववाले जितना सिगरेट पियेंगे उतना मुफुत रहेगा।

सुखारी—तो भैया इसी दाउदपुरकी मिट्टीसे २० लाख २५ लाख सालाना निकलेगा न ?

भैया—और यह २०, २५ लाख सुक्खू भाई सबों घरका धन होगा। फिर दाउदपुरमें कोई सुअरकी खोभार नहीं दिखाई पड़ेगी, कोई छान और खपड़ैल भी नहीं बच रहेगा उसकी जगह दाउदपुरमें होगी—एक चौड़ी सड़क जिसके दोनों ओर ईंट, सीमन्ट और लोहेसे बने पक्के मकान होंगे। हर मकानमें नलसे पानी जायगा और बिजली दीया बारेगी। हर घरके पीछे पक्का पाखाना होगा, लेकिन अबदुल भाईको उठाना नहीं पड़ेगा; नलसे पानी छोड़ा जायगा और वह धरतीके भीतर ही भीतर वहाँ ले जायगा। फिर आजके नंगे-भूखे आदमी दाउदपुरमें नहीं दिखाई पड़ेंगे। सब साफ कपड़ा पहिनेंगे। लड़के-लड़की सब पढ़ेंगे। सुखलाल तेवारीके पोते और सुखारी चमारके पोते एक-दूसरेको भाई समझेंगे और एक परिवारके बेकति (आदमी)।

अबदुल—लेकिन भैया, यह सपना जैसी बात मालूम होती है।

भैया—सपना वह होता है अबदुल भाई, जिसे धरतीपर कहीं न देखा जाय, लेकिन जो बात धरतीके किसी कोनेमें देखी जाय, उसे भी क्या सपना

कहेंगे !

अबदुल—धरतीपर ऐसी बात कहीं हुई है भैया !

भैया—हाँ अबदुल भाई ! और बहुत दूर नहीं। दो दिन रेल और ३ दिन मोटर से चलनेपर तुम उस देसमें पहुँच जाओगे जहाँ सब कारबार साझेके परिवारका है, जहाँ कोई अछूत और बड़ी जातिका नहीं है, जहाँ कोई जोंक नहीं है, उस देसका नाम है सोवियत देस, किसानों-मजूरोंका पंचायती राज, और उसीको पहले रूस भी कहा करते थे।

अबदुल—तब भैया ! सपनाकी बात नहीं, लेकिन अपनी जिनगी में हम सब यह देख लेंगे !

भैया—तमासा देखना चाहोगे तो कभी नहीं, लेकिन वैसा बनानेमें लग जाओगे, और खूब जिउजानसे लग जाओगे तो जरूर देख लोगे। सत्ताईस बरस पहिले रूसको भी जोंकोंने नरक बनाके रखा था लेकिन किसान-मजूर भिड़ गए और अब उन्हें मरके सरगमें जानेकी जरूरत नहीं, अब सरग उनके घरपर उतर आया।

सुखारी—लेकिन भैया अम्बेडकर इतना पढ़-गुनकर काहे मरकस बाबाके रस्तेको नहीं मानते ! जो वह भी दस-बीस लाखके जोंक बनाना चाहते हैं तो हम लोगोंका क्या उपकार करेंगे !

भैया—समझका फेर है सुक्खू भाई ! अम्बेडकर मरद बच्चा है, ईमान-दारीमें १०० में १ है, और मैं समझता हूँ कि वह जोंक नहीं बनना चाहता।

सुखारी—तब तो भैया ! अंबेडकरसे भेंट हो, तो मैं उनके गोड़पर पड़कर कहूँ—दादा ! तुम भी मरकस ही बाबाका रस्ता पकड़ो, इसी रस्तेसे हम लोगोंकी २०० पीढ़ीकी गुलामी दूर होगी।

भैया—गोड़ पढ़नेसे तो काम नहीं चलेगा सुक्खू भाई ! लेकिन हिन्दुस्तान भरके कमेरे जब जोंकोंको उखाड़ फेंकनेके लिए उठ खड़े होंगे तब उनके मनमें भी आसा बँधेगी अभी तो वह इसे अनहोनी बात समझते हैं इसीलिए जड़में पानी न देकर पत्तोंको सींचते हैं।

दुखराम—लेकिन सुनते हैं भैया ! गांधीजी भी अछूतोंके उद्धारके लिए

लाखों रुपया जमा कर चुके हैं। और उन्होंने जगह-जगह हरिजन आसरम खोला है, वह क्या करना चाहते हैं?

भैया—करना तो चाहते हैं हरिजनोंका उद्धार, लेकिन हो रहा है कंडे-से आँख पोंछना। बस इतना ही हो रहा है कि कुछ सौ हरिजन लड़कोंको चरखा कातना सिखाया जाता है जिससे बहुत मेहनत करनेपर भी आदमी दो आना रोजसे बेसी नहीं कमा सकता, जिससे एक आदमीका भी पेट नहीं भर सकता, दूसरी बात यह हो रही है कि बड़ी जातिके सौ-दो सौ आदमियोंको नौकरी मिल जाती है।

सुखारी—तो भैया इससे तो हमारी जातिका उतना भी उपकार नहीं हो सकता, जितना अंबेडकरके रस्तेसे।

भैया—हाँ ठीक कह रहे हो सुक्खू भाई और अंबेडकरका रस्ता धोखेका नहीं है, इतना ही है कि उनके रस्तेसे चलनेपर दो-चार पीढ़ीमें दसो कराड़ अछूतोंका दुख-दलिद्दर दूर होना मुसकिल है।

अध्याय १६

मरकसका रस्ता बिदेसी है?

सोहनलाल—लोग कहते हैं भैया कि मरकस बाबाने जो कुछ कहा है वह ठीक हो सकता है; लेकिन एक देसके लिए जो बात ठीक है वही दूसरी जगहके लिए बेठीक भी हो सकती है।

दुखराम—"ठाँव-गुने काजर, ठाँव-गुने कारिख," वही चीज आँखमें लगकर काजर बन जाती है, और सोभा देती है। वही चीज गालमें लग कालिख कही जाती है और लोगोंको धोना-पोछना पड़ता है। यही बात है सोहन भैने!

सोहनलाल—हाँ दुक्खू मामा! रूसमें जो बात ठीक उतरी, वही बात हिन्दुस्तानमें भी ठीक उतरेगी, इसपर कैसे विस्वास किया जाय भैया!

भैया—"ठाँव गुने काजर, ठाँव गुने कारिख" को मैं मानता हूँ, सोहन

भाई ! रूसमें इतनी सरदी पड़ती है कि नदी नाले सब जम जाते हैं वहाँ जाड़ेके मौसिममें हर घरको गरम पानीके मोटे नलोंसे गरम किया जाता है। हिन्दुस्तानमें भी मरकस बाबाका कोई चेला मकान गरम करनेके लिए गरम पानीका नल लगवाने लगे तो उसे मैं पागल कहूँगा, उसकी जगह यहाँपर गर्मियोंके दिनों बिजलीके पंखेकी जरूरत पड़ेगी। मासको और लेनिनग्रादमें रूसी भाखा बोली जाती है, जो हिन्दुस्तानके ४० करोड़ आदमियोंको भी अपनी भाखा छुड़वाकर रूसी भाखा सिखलानेकी कोसिस करे तो उसे भी मैं पागल कहूँगा। रूसके कवि बोल्गा माई और दोन बाबा (नदियों)के गीत गाते, हिन्दुस्तानमें जो कोई कवि गंगा माई सिन्ध और कावेरी माताओं-को छोड़कर बोल्गा माई और दोन बाबाका गीत गाये तो उसे भी मैं पागल कहूँगा, और मरकस बाबा भी उसे अपना चेला नहीं मानेंगे। ऐसी सैकड़ों चीजें हैं, जो रूसकी अपनी और हिन्दुस्तानमें नहीं हैं। जो कोई आदमी अंधाधुंध नकल करना चाहेगा, तो उसे मैं बेकूफ कहूँगा। लेकिन मरकस बाबाने जो बातें जोंकोंके हटानेके लिए बताईं, कमेरोंके राज कायम करनेके लिए बताईं, सबको एक परिवारका भाई बननेके लिए कहा है उसमें तो कोई ऐसी बात नहीं दिखाई देती है।

सोहनलाल—सबसे बड़ी बात यही है कि वह विदेसी चीज है।

भैया—तो हिन्दुस्तानमें कोई विदेसी चीज नहीं चलनी चाहिए यह कौन कहता है ?

सोहनलाल—गांधीजी कहते हैं, गांधीजीके चेले लोग कहते हैं।

भैया—गांधीजी नहीं कह सकते सोहन भाई ! गांधीजी रूसके तालस्ताय-को अपना गुरू मानते हैं, बिलायतके रस्किनका अपनेको रिनिया मानते हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा कि छापाखाना बिलायतसे आया है, इसलिए उसमें छपी गीताको नहीं पढ़ना चाहिए। घड़ी भी बिलायतसे आई है, और गांधीजी उसको बाँधे-बाँधे फिरते हैं, चसमा बिलायतसे आया है लेकिन उसे लगाते हैं। ईसामसीका धरम विदेससे आया है, लेकिन गांधीजी उसका बहुत आदर करते हैं। हिन्दुस्तानके चार आदमीमें एक आदमी जिस मुसल्मान धरमको

मानता है और वह भी दूसरे देससे आया, लेकिन उन्होंने कभी नहीं कहाकि अरबके पैगम्बरको हिन्दुस्तानसे निकाल बाहर करना चाहिए।

सोहनलाल—लेकिन वह कहते हैं कि मरकस बाबाके रस्तेमें हत्याकी बात आती है और हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रस्ता बताते हैं।

भैया—यह दोनों बात गलत है। मरकस बाबा हत्याका रस्ता नहीं बताते, वह ऐसा रस्ता बताते हैं कि दुनियामें फिर आदमीको आदमीकी हत्या करनेकी कभी जरूरत ही न पड़े। अकाल, महामारीमें करोड़ों आदमी मर जाते हैं वह चाहते हैं दुनियामें अकाल-महामारीका नाम ही न रहे। जोंकें अपने स्वारथके लिए बराबर लड़ाई करवाती हैं। हमारे सामने ही दो बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ हुईं, जिनमें करोड़ों आदमीकी हत्या हुई, जोंक गुन्डोंने लाखों बेकसूर बच्चों और औरतोंको तड़पा-तड़पाकर मार डाला। मरकस बाबाने ऐसा रस्ता बतलाया है कि जोंक ही न रह जायँ और दुनिया भरके सारे आदमियोंका एक परिवार बन जाय। गांधीजी जोंकोंको भी रखना चाहते हैं और यही जोंकें हत्याकी जड़ हैं। दुक्खू भाई, बताओ कौन हत्याका रस्ता बताता है, कौन बेहत्याका?

दुखराम—इससे तो मरकस बाबाका ही रस्ता बेहत्या (अहिंसा)का हुआ और गांधीजीका रस्ता दुनियासे कभी हत्याको नहीं हटा सकेगा।

सोहनलाल—लेकिन यह तो तब होगा न जब सारी दुनिया मरकस बाबाके रस्ते पर चलने लगेगी। लेकिन यह तो अनहोनी बात मालूम होती है।

भैया—जो दुनियामें जोंकें रह जायगीं तो हत्या भी रह जायगी, सोहन भाई! लेकिन इसका दोस तो जोंकोंको रहेगा, मरकस बाबाके रस्तेको नहीं। फिर सोहन भाई आप मरकस बाबाके रस्तेके ऊपर सारी दुनिया आ जायगी इसे तो अनहोनी समझते हैं, और तब जब कि अपने सामने देख रहे हैं कि २७ बरस पहले दुनियाका छठवाँ हिस्सा मरकस बाबाके रस्तेको अपना चुका। आज जो लड़ाई हो रही है और उसके कारण जो उथल-पुथल हो रही है, उसके देखनेसे आप अन्दाज लगा सकते हैं कि जल्दी ही एक-

चौथाई दुनिया अपनायेगी। इसको तो तुम अनहोनी कहते हो। और जोंकें बनी रहेंगी, जिनका जीना ही दूसरेके खूनपर होता है, लेकिन वे भगत बन जायँगी और सेर-बकरी एक जगह पानी पियेंगे। है यह होनेवाली बात !

सोहनलाल—जोंकोंके हटानेकी बात तो गांधीजी भी कहते हैं, लेकिन हत्याके रस्तेसे नहीं, बेहत्याके रस्तेसे।

भैया—बुद्ध गांधीसे बहुत बड़े आदमी थे। उन्होंने भी बेहत्याके रस्ते जोंकोंको भगत बनाना चाहा, लेकिन नहीं हो सका। ईसामसीने भी बेहत्याके रस्तेसे सबको ले जाना चाहा, लेकिन देख रहे हो न, उनके चेले क्या कर रहे हैं ? गांधीजीके चेलों हीकी ओर नहीं देखते ? मिलवाले सेठ क्या कर रहे हैं ? उनके चेलोंने बम्बईमें मजदूरोंपर गोलियाँ चलवाई। उनके चेलोंने किसानोंपर घोड़े दौड़वाये। बेहत्याकी बात तो उसी दिन खतम हो गई जिस दिन गांधीजीने कह दिया कि कांगरेस सरकारमें जायेगी तो पलटन, गोला-बारूद सभी तरहसे फसिहोंका संहार करेगी। जरमन-जापान फसिहोंके सामने निहत्था बन बेहत्याके रस्ते काम नहीं चलेगा इसीलिए कहा न गांधीजीने भी हथियारके साथ फसिहोंका मुकाबिला करनेके लिए कहा। मरकस बाबा भी हथियार लेकर जोंकोंका मुकाबला करनेके लिए कहते हैं। बताओ दुक्खू भाई ! है दोनोंमें कोई फरक ?

दुखराम—कोई फरक नहीं मालूम होता भैया ?

भैया—और मरकस बाबा हथियार लेके मुकाबिला करनेके लिए क्यों कहते, इसीलिए कि जोंकें सिरसे पैर तक हथियारसे लैस हैं, तुम्हें निहत्था देखकर वह भून देंगी। उनमें दया-मया है, इसे वही विस्वास कर सकता है जिसको जोंकोंकी करनी मालूम नहीं, उनका स्वभाव नहीं मालूम। फिर हिन्दुस्तानके रिसि-मुनि बेहत्याका रस्ता बताते हैं यह बिलकुल गलत है। अठारहवाँ अध्याय गीता हत्या करनेके लिए कही गई। अर्जुन बेचारा तो तीर-धनुस छोड़कर बैठ गया था, उसने लड़ाई करनेसे इनकार कर दिया था लेकिन किरसनने उसे तरह-तरहसे समझाया और लड़नेको तैयार

किया। वह लड़ाई भी गरीबों-कमेरोंकी भलाईके लिए नहीं हुई थी, कुरुच्छेत्रमें दोनों ओर जोकें ही आमने-सामने खड़ी थीं। जिरजोधन (दुरजोधन) राजमें हिस्सा नहीं देता था, इसीलिए पांडव लड़ रहे थे। जिरजोधन सारे राजके किसानों, कारीगरों, मजूरोंकी कमाईको छीनके ऐस-जैस करना चाहता था। पांडवोंने उसी ऐस-जैसके लिए कौरवोंको मारा, लाखोंका संहार किया। गीताको गांधीजी बहुत मानते हैं। गीताको जो कहे कि वह बेहत्या (अहिंसा)का रस्ता बताती है इसके लिए हम यही कहेंगे कि वह दिन दोपहरका अंधा है। और दूसरे कौन रिसि-मुनि हैं जो बेहत्याका रस्ता बतलाते हों ?

सोहनलाल—बुद्ध और महाबीर।

भैया—बुद्धको तो हिन्दुस्तानने निकाल बाहर किया, इसलिए उनकी सिच्छाको स्वदेसी कौन मुँह लेकर कहेंगे। रहा महाबीर, लेकिन उन्होंने किसी राजाको युद्धमें हथियार डाल देनेके लिए कहा, इसका तो हमें कोई पता नहीं। हाँ, आदमी अपना मुकती और निरवान चाहे तो उसे सब जीव-जन्त-पर दया करनी चाहिये। वहाँ एक देसको दूसरे देसकी गुलामीसे छूटने या एक जमातका दूसरी जमातके खूनी हाथोंसे बचनेके लिए, हथियार रखकर बेहत्या मान लेनेकी बात तो कहीं देखनेमें नहीं आती।

सन्तोखी—पोथी-पतरा बहुत है भैया ! क्या जाने कहीं रिसि-मुनिके मुँहसे ऐसी बात निकली हो।

भैया—बुद्ध और महाबीरसे पहिले किसी रिसि-मुनिने बेहत्याकी बात कही हो, इसपर मुझे बिलकुल बिस्वास नहीं, उस समयके रिसियों-मुनियोंका रसोईखाना पूजा-घर नहीं; कसाई-घर होता था; बीचमें बछिया या बकरेको रिसि-मुनि अपने हाथसे मारते थे।

दुखराम—क्या कहा भैया ! रिसि-मुनि बछिया मारते थे, राम राम। ऐसी बात कभी हो सकती है ? हिन्दू गौ माताके इतने भगत हैं तो उनके रिसि-मुनि भला कैसे गाय मार सकते हैं ?

भैया—बुद्धसे पहिले कुछ सौ बरस पीछे तक हिन्दू रिसि और सभी

लोग गायका मांस खाते थे, उससे उनको कोई परहेज नहीं था। हिन्दुओंकी एक दो नहीं, पचासों पोथियोंमें लिखा है, रन्तिदेव राजाकी कथा महाभारत[1] में आती है। उनके घरमें रोज दो-दो हजार गायें मेहमानों, मुसाफिरोंके खानेके लिए मारी जाती थी।

दुखराम—लेकिन भैया जो हिन्दुओंकी पोथीमें गाय मारनेकी बात लिखी है, और पहिलेके मामूली नहीं,—रिसी मुनी तक गाय खाते थे तो आज गोकसीके लिए काहे हिन्दू लोग मुसलमानोंका सिर फोड़ते फिरते हैं ?

भैया—हिन्दुओंसे पोथीकी बात छिपा दी गई, इसीलिए नहीं तो क्या ६० पीढ़ी पहलेके उनके अपने गो-भच्छक पुरखा मिल जायँ, तो क्या यह उनका सिर फोड़ते फिरेंगे ? मैं यह नहीं कहता दुक्खू भाई कि पहिलेके पुरखा गाय खाते थे तो आज भी खायँ। इसकी कोई जरूरत नहीं। लेकिन लाठी लेकर दूसरोंको मारने दौड़ना यह तो जबजस्ती है न ?

दुखराम—जबर्जस्ती ही नहीं भैया यह तो भारी झगड़ेकी जड़ है।

सोहनलाल—लेकिन भैया ! हम लोगोंकी सारी खेती बारी दूध-घी गाय हीसे मिलता है, इसलिए गायकी रच्छा करनेका बुरा कैसे कहा जाय।

भैया—गायकी रच्छा करना अच्छा है सोहन भाई ! हम लोगोंको अच्छी-अच्छी नसलके बैल-गाय पैदा करना चाहिए, उनको बढ़ाना चाहिए। ० करोड़ आदमीमेंसे बहुत थोड़े हीको पीनेको दूध मिलता है। जब दूध-घी खानेको मिलता था, तो आदमी खूब तगड़े होते थे। दूध-घीकी इफरात हो इसके लिए जरूर हमें कोसिस करनी चाहिए। यह हमारे फायदेकी बात है और मुसलमानोंके भी। मुसलमान भाइयोंको समझाइये—हमारे भी पुरखा

---

[1] "राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विज।
अहन्य हनि वध्येते द्वे सहस्रे गवां तथा।"
"समांसं ददतो ह्यन्नं रन्तिदेवस्य नित्यशः।
अतुला कीर्त्ति रभवन्नृपस्य द्विज सत्तम !"—वनपर्व २०८। ८-१०

गायका बलिदान करते थे, गायका मांस खाते थे, लेकिन पीछे समझा कि गायकी रच्छासे हमारा ज्यादा फायदा है, इसीलिए उन्होंने गायका मांस त्याग दिया। देस भरके लोगोंको खूब घी-दूध खानेको मिला हल गाड़ीके लिए अच्छे-अच्छे बैल मिले, इसीलिए हमें गायोंकी रच्छा करनी चाहिए।

सोहनलाल—गांधीजीकी अहिंसा और दूसरी बातोंके बारेमें तो आपने बतलाया, तो भी बहुत लोग कहते हैं कि रूस और हिन्दुस्तानमें इतना फरक है। वहाँकी बात यहाँ चलाना उलटी गंगा बहाना है। वह यहाँ चलेगी नहीं, नाहक झगड़ा-झंझट बढ़ेगा।

भैया—नहीं चलेगी, तो अपने ही बेकार हो जायगी, उसके लिए चिन्ता करनेकी जरूरत क्या? और झगड़ा-झंझटकी बात जो कहते हो, वह तो जोंकें करती हैं। गांधीजी सेठों और जमींदारोंको समझा दें, कि वह हथियार रख दें और १० बरस किसानों-मजूरोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें। जो साझेकी खेती, मोटरके हल, पानीकी पाइप और बिलायती खाद-से हरा-भरा खेत ऊसर बन जाने लगे, तो किसानोंको भूखे मरना पड़ेगा। फिर तुरन्त ही जमींदार आकर काम सँभाल लें।

दुखराम—बस यही भैया गांधीजी जमीदारोंसे मनवा दें, तो हम महात्माजीको सबसे बड़ा अवतार मान लेंगे।

भैया—सेठ लोगोंको भी गांधीजी मना लें कि बेसी नहीं पाँच बरसके

"महानदी चर्मराशेरुत्क्लेदात् संसृजे यतः।
ततश्चर्मण्वतीत्येवं विख्यातो सामहानदी।"—शान्ति पर्व २९-२३।
सांकृतिं रन्तिदेवं च मृतं संजय! शुश्रुम।
आसन् द्विशत साहस्रा तस्य सूदां महात्मनः।
गृहानभ्यागतान विप्रान् अतिथीन् परिवेषकाः।—द्रोण पर्व ६७। १-२।
"तत्रस्य सूदाः क्रोशन्ति सुमृष्ट मणि कुंडलाः।
सूपं भूयिष्ठमश्नीध्वं नाद्यमासं यथापुरा।"—द्रोण पर्व ६७। १७-१८।
—शांति पर्व २७-२८।

लिए अपने द्वारपर लिखे "लाभ-सुभ"को मिटा दें।

दुखराम—"लाभ-सुभ क्या है भैया ?

भैया—बनिया लोगोंकी गद्दीके ऊपर दीवारमें "लाभ-सुभ" सिन्दूरसे लिखा देखा है कि नहीं। सेठ लोगोंकी जिनगीका सबसे बड़ा मन्तर यही लाभ-सुभ है मजूर १०)की चीज रोज पैदा करें, उन्हें ।।) देकर टरका दें, और साढ़े तीन रुपया हुआ लाभ-सुभ, और रखें उसे गोलकमें। सेठ लोग ४)में ।।) ही नहीं, कुल रुपया मजूरोंके हाथमें दे दें और कह दें कि देखो तुम लोग बड़े जोखिममें हाथ डाल रहे हो अब हम चीनीकी मिल, कपड़ेकी मिल, जूटकी मिल, लोहेका कारखाना किसीका इन्तजाम नहीं करेंगे, हम "लाभ-सुभ" भी छोड़ते हैं और इन्तजाम भी। जो मजूर कारखानेको ठीकसे नहीं चला सके, तो उनको ही भूखा मरना पड़ेगा। फिर सेठजी आकर कारखानेको सँभाल लेंगे, झगड़ा-झंझट मिटानेका यह रस्ता है।

दुखराम—हाँ भैया ! बेसी नहीं पाँच ही बरसके लिए जमींदार और कारखानेवाले सेठ राम नामा ओढ़कर माला फेरें, और हम लोगोंको मरकस बाबाके रस्तेपर चलने दें, इससे तो बिना झगड़ा-झंझटके फैसला हो जायगा। जब हम देखेंगे कि मरकस बाबाका रस्ता हिन्दुस्तानमें, नहीं चल सकता, तो क्या पागल हुए हैं कि देसभरका संहार करेंगे।

सोहनलाल—लेकिन ज़मीदार और सेठ गांधीजीकी बात मानेंगे थोड़े ही !

भैया—चार हजार बरससे जोंकोंने अपना रस्ता चलाया और उसके कारण पंचानबे सैकड़ा कमेरोंके लिए नंगे-भूखे मरनेके सिवा कोई चारा नहीं। हम तो सिरिफ पाँच बरस ही चाहते हैं। जो जोंकें उतना भी देनेके लिए तैयार नहीं हैं, उनके गुन्डे लाठी-छूरा लेकर घूमते-फिरते रहेंगे पुलिस-पलटनको उन्होंने अलग तैयार कर रखा है; अदालत-कचहरी सब उनके हाथमें है, इतना होनेपर भी जो महात्माजी कहते हैं कि किसानो-मजूरो ! तुम हमारा रस्ता ले लो फुफुकार भी मत छोड़ो; तो इसकेलिए हम

लोग तैयार नहीं हैं। यह तो सोलहों आना जोंकोंकी मदद करना है।

सोहनलाल—क्या समझते हो भैया ! गांधीजी जोंकोंकी मदद करना चाहते हैं ?

भैया—इस बातको गांधीजीसे पूछो। मैं समझता हूँ, वह इन्कार न करेंगे, हाँ, उसके साथ यह भी कहेंगे कि मैं सबकी भलाई चाहता हूँ। कोई चाहता है, इसे वही जान सकता है, दूसरा आदमी दिलकी बातको क्या जाने ? लेकिन गांधीजी जो करते हैं, उससे सबसे ज्यादा नफा सेठोंको हुआ है। दूसरे नम्बरपर जिमींदारोंको, और तुरन्त नफा तो उतना नहीं, हाँ आगेके लिए किसान-मजूरोंको बहुत मदद मिली है। तुम समझते होगे सोहन भाई, कि मैं गांधीजीके कामको बहुत बुरा समझता हूँ, और मानता हूँ कि उन्होंने हिन्दुस्तानके लिए कुछ नहीं किया। गांधीजीके उपकारको बहुत मानता हूँ। उन्होंने ही चम्पारनके निलहे साहबोंके मदको चूर किया और सैकड़ों बरसोंसे भेड़ बने सिकारोंको सेर बनाया। उन्हीं हीने हिन्दुस्तानकी भुक्खड़ जनताको अपने पैरपर खड़ा होनेमें सबसे अधिक मदद की। जनताने अपने बलको समझा और अब वह सो नहीं सकती, जब तक कि वह अपने सतानेवालोंको हमेसाके लिए खतम नहीं कर देगी। आज भी उनकी उतनी जरूरत है, क्योंकि बिलायती जोंकोंके निकालनेमें वही हमारे सबसे बड़े नेता हो सकते हैं।

दुखराम—तो गांधीजीकी कौन बात है जो हिन्दुस्तानके कमेरोंको नुकसान पहुँचानेवाली है ?

भैया—सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह जमींदारों कारखानेदारोंको कायम रखना चाहते हैं। बस उनसे इतना ही चाहते हैं कि वह किसानों और मजूरोंका अपनेको माँ-बाप समझें। सवाल यह है कि माँ-बाप महलोंमें रहेंगे या झोपड़ीमें, बीस लाखकी कारमें चलेंगे या पैदल। लड़के लड़कियोंके ब्याहमें दस-बीस लाख खर्च करेंगे या धरम-विवाह करेंगे। सिमला, नैनीताल, दार्जिलिंग, उटकमंड, बंबई, कलकत्ता, दिल्ली, बनारसमें बिड़ला हाउस बनाकर रहेंगे कि १०) भाड़ेकी कोठरीमें रहेंगे।

दुखराम—मुटिया धोती पहिरने और जौकी रूखी रोटी खानेके लिए यह जोंकें कभी नहीं तैयार होंगी।

भैया—मैं भी समझता हूँ इसके लिए कोई तैयार न होगा। क्या जाने ख्याल हो कि किसान-मजूर माँ-बाप बनानेकी आसरापर हाथपर हाथ धरकर बैठे रहें। लेकिन यह भी नहीं हो सकता, क्योंकि वह अपने पेटकी भूखको कैसे भुला सकते हैं। दूसरी बात गांधीजी कहते हैं कि कल-कारखाना नहीं, हमें चरखा चाहिए लेकिन यह भी होनेवाला नहीं। लोहेके जमानेसे आदमी लौटकर पत्थरके जमानेमें नहीं जा सकता। खद्दरसे जो मिलोंके बन्द हो जानेका डर होता, तो बिड़ला बजाज साराभाई जैसे करोड़पति कपड़े मिलवाले लाखों रुपया खद्दर फण्डमें दान न देते। गांधीजी गुड़ खानेके लिए कहते हैं, लेकिन उनके चेला, बिड़ला और साराभाईकी चीनीकी मिलोंने चीनीको इतना सस्ता कर दिया है, कि कोई गुड़ खाना चाहेगा नहीं. किसान ऊख बेचकर जितना पैसा कमा लेते हैं, उसकी जगह वह गुड़ बनाने नहीं जायँगे। बिड़लाने लाखों रुपया लगाकर हिन्द साइकिलका कारखाना खोला। वह पाँच लाख नफेमेंसे पाँच हजार गांधीजीको दान दे सकता है, लेकिन कारखाना नहीं बन्द करता। बिड़लाने करोड़ों रुपये लगा-कर मोटर-कारखाना खोलनेका निहचय किया है, उसी नफेमेंसे धरमसाला बनवा सकता है, मालवीजीके विस्व विद्दालयको दान दे सकता है लेकिन कारखाना छोड़कर वह सतजुगकी ओर नहीं लौटेगा। चर्खेकी बात करना पत्थरके हथियारोंकी ओर आदमीको ले जानेकी कोसिस करना है।

दुखराम—वह तो नहीं हो सकता भैया! और लोहा बिना चरखेका तकुवा कहाँसे आएगा।

भैया—गुड़, हाथके कूटे चावल और चरखेको अपनानेकी बात कुछ कह-कर छुट्टी नहीं मिल सकती। जो पीछे लौटना है तो सभी बातोंको साफ-साफ कहो, चरखेका तकुवा लोहेका रखोगे या लकड़ीका। चरखेको लोहेके वसूलेसे बनाओगे या और किसीसे। जो लोहा रखना ही पड़ेगा तो ताताके बिजली और पत्थरके कोयलेसे बने लोहेको लोगे या लोगोंको कहोगे कि बबूलका

कोयला तैयार करो और पत्थरको गलाकर लोहा निकालो। लेकिन बबूलके कोयलेवाले लोहेको कौन खरीदेगा जब कि उससे भी बढ़िया फौलाद उससे भी सस्ते दामोंमें मिल रहा है। पत्थरका कोयला भी चाहिए, बिजली भी चाहिए, लोहा भी चाहिए; तब तो रेल भी रखनी होगी, क्योंकि उसके बिना कोयला-लोहा और बड़ी-बड़ी मसीनें एक जगहसे दूसरी जगह भेजी नहीं जा सकती। और विद्याके लिए क्या कहेंगे गांधीजी? छापाखानाके कारण आज किताब बहुत छपती हैं, बहुत सस्ती बिकती हैं। लेकिन उसको छुड़ाकर क्या हमें फिर ताड़के पत्तेपर हाथसे लिख-लिखकर किताबें पढ़नी चाहिए।

दुखराम—यह तो भैया जुम्मन दादा-सी बात है, जिसे हम लोग हँसीमें उड़ा देते हैं।

भैया–हँसीमें उड़ानेकी बात है नहीं दुक्खू भाई! आजकल लड़ाईका जमाना है, कपड़ा कम मिल रहा और बहुत मँहगा भी, ऐसे समयमें जो हम चरखेसे कपड़ा तैयार करें तो यह अच्छी बात है। रेलकी लाइन उखड़ जाय, पिटरौल बिना मोटर-लारी बन्द हो जाय, तो इक्का-बैलगाड़ी या पैदल चलनेको कौन नहीं कहेगा। लेकिन करोड़पति कारखानेवाले जो चरखामें भगती दिखाते हैं, उसके भीतर दूसरी ही बात है। वह समझते हैं कि किसान चरखा उठायेंगे तो गांधीजीके रस्तेको भी अपनायेंगे और हमको माई-बाप समझेंगे फिर मरकस बाबाका नाम नहीं लेंगे, रूसकी बात नहीं सुनेंगे। लाल झंडा लेकर "किसान-मजूर राज कायम हो" चिल्लाते नहीं फिरेंगे। "रघुपति राघव राजाराम"का कीर्त्तन करेंगे और इस दुनियासे बेसी परलोकका आसरा करेंगे।

दुखराम—तो चरखावाली बातके भीतर भी भैया बहुत धोखा चल रहा है।

भैया—गांधीजी क्या जाने धोखा देना न चाहते हों; लेकिन सेठ लोग तो जरूर आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं। जो उनका चरखेपर विस्वास है, तो कपड़ेके कारखानोंको क्यों नहीं तोड़ देते? जो उनका गुड़पर विस्वास है तो अपनी चीनीकी मिलोंमें आग क्यों नहीं लगा देते जो उनको सेवागाँवकी

बैलगाड़ीपर विस्वास है, तो क्यों मोटरका कारखाना खोल रहे हैं। जो उनको तालके पत्तेकी पोथीपर विस्वास है, तो बिड़ला औ डालमियाने क्यों कागजकी बड़ी-बड़ी कम्पनियाँ खोलीं ?

दुखराम —ढोलके भीतर सारा पोल ही पोल मालूम होता है भैया !

भैया—सेठ लोग और कूद कूदकर कह रहे हैं कि मरकसका रस्ता बिदेसी है, हिन्दुस्तान धर्मात्मा देस है, वह यहाँ नहीं चलनेका, इसको कहते हैं कि आँखकी लाज जो छोड़ दो मुँहमें जो आये कहते फिरो। पंचरुखीकी चीनी मिल उसकी मसीनें और कारीगरी सब अहमदाबादकी बनी हैं और वहींके दिमागसे निकली है न, जब पंचरुखी मिलके लिये मसीनें मँगाने लगे तो उस वक्त ख्याल किया था कि यह स्वदेसी है या विदेसी ? हिन्दुस्तानमें सतजुगसे क्या अखबार निकलते आये थे जो बिड़ला लाखों रुपया लगाकर "हिन्दुस्तान-टाइमस्य" (दिल्ली), "सर्च लाइट", (पटना), "लीडर" (इलाहाबाद), "हिन्दुस्तान" (दिल्ली), जैसे रोजाना अखबारोंको चला रहे हैं।

दुखराम—यह अखबार क्यों चलाते हैं भैया !

भैया—सेठोंके दरवाजेपर दो ही सबद लिखे रहते हैं दुक्खू भाई "लाभ-सुभ" लाखों रुपया लगाते और लाखों रुपया पैदा करते हैं। यह बात तो हुई है, लेकिन एक इससे भी बड़ा नफा है।

दुखराम—इससे बड़ा नफा क्या है भैया ?

भैया—अखबार, तोप, टंक और हवाई जहाजसे भी बढ़कर खतरनाक हथियार है। बिड़लाके अखबार तो अभी तीस-तीस चालिस-चालिस हजार तक छपते हैं, लेकिन बिलायती करोड़पतियोंके अखबार पन्द्रह पन्द्रह सोलह-सोलह लाख रोजाना छपते हैं। उसमें जो कुछ लिखा जाता है, वह अपने मतलबका ख्याल करके। किसानोंके ऊपर जमींदार जुलुम कर रहा है, उनकी जमीन छीन लेना चाहता है। किसान जीविका छोड़ते नहीं हैं, जमींदार उन्हें गुंडोंसे पिटवाता है। किसानोंकी ओरसे इसकी खबर अखबारमें भेजी जाती है, जोंकोंका अखबार उसे क्यों छापने लगे ? वह छापेगा जिमींदारोंकी ओरसे

भेजी गई खबरको जिसमें किसानोंको गुंडा-बदमास कहा गया है। किसान पिटे हैं, घायल हो गये हैं, कोई मर भी गया है, अभी थानेमें खबर भी नहीं पहुँचने पाई कि राजधानीमें जोंकोंके अखबारने जमींदारोंकी बात छाप दी। सूबाके पुलिसके बड़े अफसरने उसे पढ़ लिया। कलट्टर-मजिट्टरने उसे पढ़ लिया। एक तो वह स्वयं जोंकोंकी जातिके हैं, दूसरे उन्हें खबर भी एक ओरकी मिल गई है। अब वह मनमें बैठा लेंगे कि किसान जरूर बदमास हैं। इसी तरह कोई कारखानेवाला जुलुम कर रहा है, मजूर अपनी तकलीफ लिखकर भेजते हैं तो जोंकोंका अखबार उन्हें छापता नहीं। कारखानेवाला लारी दाबाकर कितनोंको घायल और एक मजूरको मार भी डालता है, लेकिन वह मजूरोंके खिलाफ जो कुछ लिखके भेजता है वह सब जोंकवाले अखबारमें छपता जाता है, हाकिम और दूसरे भोले-भाले पढ़नेवाले एक ही ओरकी बात सुन पाते हैं और उसे ही सच्ची मान लेते हैं।

दुखराम—तब तो भैया यह अखबार नहीं, हम लोगोंके गलेकी फाँसी है।

भैया—और जोंकोंके अखबार स्वदेसी धरमका खूब प्रचार करते हैं। किसी सेठने निहायी (अहरन)की चोरी की है, और सुईका दान दिया है। बस सुईके दानको सेठकी तसवीर देकर बड़े बड़े अच्छरोंमें छापा जायगा, भोली-भाली जनता समझेगी कि सेठ बड़ा धरमात्मा, बड़ा दानी है, हे भगवान तुम इसकी रच्छा करो। जब लाखों आदमी अन्न बिना मर रहे हैं उस वक्त कोई पागल या मक्कार सैकड़ों मन अनाज और पचासों मन घी आगमें फूँक देता है, उसकी भी खबर खूब गोल-मटोल अच्छरोंमें छापी जाती है, भोली भाली जनता समझती है कि अब भी बड़े-बड़े धरमात्मा दुनियामें हैं। अब भी जग्गका अलोप नहीं हुआ है।

दुखराम—कितना बड़ा फरेब।

भैया— किसीने झूठी-सच्ची खबर उड़ा दी कि दिल्लीमें ऐसी लड़की पैदा हुई है, जो अपने पहिले जनमकी बात बतलाती है। फिर महीनों तक जोंकोंके अखबार उसके बारेमें लिखते रहेंगे। कितने ही लोग कसम खाकर

गवाही देंगे वह भी छपेगी। किसीने उसके खिलाफ लिखा तो नहीं छापा जायगा। जोंकोंको तो यह मनवाना है कि आदमी मरकर फिर दुनियामें जनम लेता है, और जैसा करम वैसा फल। सेठ लोगोंने पहिले जनममें अच्छा करम किया था, इसीलिये वह आज करोड़पती अरबपती बने हैं। जोंकोंके अखबारोंमें जोतिसकी बातें भी छपती हैं, जोतिसी लोग बालकी खाल निकलते दुनियाका आगम (भविष्य) बतलाते हैं। उनके पत्रेमें जोंकोंके मारनेवाले गरह कभी नहीं मिलेंगे। जोंकें उसे इसीलिये छापती हैं कि भोली-भाली जनता समझे कि हमारे आगमका बनना-बिगड़ना अपने हाथमें नहीं गरहोंके हाथमें है; इसलिये जोंकोंके साथ लड़ने-झगड़नेसे कुछ नहीं मिलेगा। जोंकोंके अखबारमें तसबीरके साथ किसी एक नंबरके बदमास, लम्पट, ठगका जीवनचरित्र छपेगा और उसमें उसे बड़ा सिद्ध महात्मा बतलाया जायगा। भोली-भाली जनता उसे पढ़कर समझेगी, कि अब भी भगवानके दरसन करनेवाले महात्मा दुनियामें मौजूद हैं। अब भी भगवान हैं। और वह दुनियाकी खोज खबर लेते हैं, इसलिये छोड़ो दुनियाका झंझट और भगवानकी ओर लौ लगाओ।

दुखराम—दिलमें तो आग ही लग जाती है लेकिन तुम कहते हो दिमाग ठंडा रखना चाहिये, इसलिये मनको समझाता हूँ। इससे तो मालूम होता है कि सचमुच ही अखबार बड़ा जबर्जस्त हथियार है।

भैया—और दुक्खू भाई! बिलायती जोंकें जो किसानोंके घरोंमें दस पैसा रखाने और बीस पैसा खानेका इंतजाम सोच रही हैं, तो फिर गाँव-गाँवमें नहीं, घर-घरमें अखबार आने लगेंगे। फिर जोंकोंके अखबार हजारों नहीं लाखों रोज छपेंगे। अभीसे बिड़ला मनसूबा बाँध रहा है कि सारे हिन्दुस्तानमें जगह-जगहसे हिन्दी, अंगरेजी और दूसरी भाखाओंमें अपना अखबार निकालें। सिंहानियाँ, डालमियाँ, और दूसरे करोड़पति भी अब अखबारोंकी ताकतको समझने लगे हैं लेकिन दुक्खू भाई देखा न? अखबार विदेसी चीज है, लेकिन उससे पूँजीपतियोंको नफा है, उससे उनकी तागत बढ़ती है, इसलिये अब वह स्वदेसी हो गया। अमेरिका और बिलायतके दिमागसे वहाँ के कारखानेमें बनी छापेकी मसीन भी स्वदेसी हो गई।

विलायतके लोगोंने भाप और बिजलीवाले कारखानेको दिमागसे निकाला और उन्हें कायम करके हजारों मजूरोंका खून चूसना शुरू किया। वह लखपतीसे करोड़पती और करोड़पतीसे अरबपती हो गये। हिन्दुस्तानी सेठ जब उन्हीं कारखानोंको हिन्दुस्तानमें खोलकर करोड़पती बन गये तब उनको स्वदेसी-विदेसीका कुछ ख्याल नहीं आया। लेकिन जब बिलायती मजूरोंने अपने मालिकोंके खिलाफ मरकस बाबाके जिस सिच्छाका सहारा लिया, उसीको जब हिन्दुस्तानके मजूर अपनाने लगे तो वह विदेसी बन गयी।

सोहनलाल—हिन्दुस्तानी जोंके यह भी कहती हैं कि हिन्दुस्तान धरमात्माओंका देस है यहाँ मरकसकी सिच्छा नहीं चलेगी।

भैया—यह धर्मात्माओंका देस है इसमें क्या सक है। यहाँ १६०० बरस तक डेढ़ अरब औरतें सती के नामपर आग में जलाई जाती रहीं। यहाँ सरग जानेके लिये लोग हिमालयमें गलते और अछयवटके बरगदसे त्रिबेनी में कूदकर धरम कमाते थे। यहाँ १० करोड़ आदमियों को अछूत और जानवर बनाना, धरमका सबूत है। यहाँ गायका पेसाब-पाखाना खाना धरम है! यहाँ औरतोंको कोई अधिकार न देना जरूरी समझते हैं, पत्थर, बन्दर, सूअर, कुत्ता, गदहा, उल्लू सबके लिये यहाँ आदमीका सिर झुकनेके लिये तैयार है। यहाँ एक ओर बरह्मचारीपनका ढोंग है, दूसरी ओर अप्सराओं के साथ क्रीड़ा करनेमें भी पुन्य माना जाता है! यहाँ एक ओर सराबको हराम कहकरके भगवतीका जूठ मिलने-पर पवित्तर समझा जाता है। यहाँ गाड़ीके गाड़ी पोथे पढ़के भी आदमी गदहा बनता है, भूगोल पढ़के भी हिमालयके पास सरग ढूँढ़ता है। सायंस पढ़के भी राहुके कारण चंदर गरहन, सूरज गरहन मानता है, और गंगामें नहाकर उद्धार करता है, मुँहसे "एको ब्रह्म द्वितीयोनास्ती" बोलते हैं, आदमीसे छू जानेसे, या छुआ रोटी-पानी खा लेनेसे पतित हो जाना मानते हैं। सोहन भाई यह देस जरूर धरमात्माओंका है लेकिन १० करोड़ अछूतों को धरमात्मा मानते हैं कि नहीं।

दुखराम—मानते तो उन्हें भी न धरम करनेके लिये मंदिरमें जाने देते?

भैया—१० करोड़ औरतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं?

दुखराम—मानते तो उन्हें भी जनेव देते न ?

भैया—कायथोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—उन्हें सराबी, कबाबी, सुद्दर कहकर हटा देते हैं !

भैया—राजपूतोंको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मानते तो "रजपुत भगत न मूसल धनुही" कहके उन्हें भगत बनने के अजोग न कहते ?

भैया—बंगाली बरहमनोंको धरमात्मा मानते हैं या नहीं ?

दुखराम कंठी पहिनकर जो मछली-मांस खाय वह क्या धरमात्मा होगा भैया !

भैया—पंजाबी बरहमनको धरमात्मा मानते हैं कि नहीं ?

दुखराम—मैं नहीं कह सकता भैया !

भैया—मैं कहता हूँ दुक्खू भाई, वह भी धरमात्मा नहीं, क्योंकि वह चौका-चूल्हा नहीं मानते और कहार के हाथकी रोटी-दाल खाते हैं। गौड़, कनौजिया, युझौतिया, सनाढ्य बरहमन भी धरमात्मा नहीं है क्योंकि वह हल चलाते हैं। दक्खिनवाले बरँहमन भी धरमात्मा नहीं हैं, काहेसे कि वे मामा, बुआ, बहिन तककी लड़की से ब्याह करते हैं।

दुखराम—तो भैया, हिन्दुस्तान में धरमात्मा है कौन ? यह तो प्याज के छिलके की तरह सब अधरमी ही बन जाते हैं।

भैया—अच्छा जो मोट-मोटी धरमात्मा मान लो तो मानना पड़ेगा कि यहाँके, हिंन्दुस्तान के हिन्दू भी धरमात्मा हैं, मुसल्मान भी धरमात्मा हैं, ईसाई भी धरमात्मा हैं, बौद्ध भी धरमात्मा हैं। फिर तो रूसमें भी ईसाई धरमात्मा हैं, मुसल्मान धरमात्मा हैं, यहूदी धरमात्मा हैं। वहाँ भी उनके बड़े-बड़े मन्दिर, मठ, गिरजा और मसजिद बनी है। वहाँ मुसलमानों के तो बल्कि कई बड़े-बड़े पीर समरकन्द-बुखारामें पैदा हुए।

दुखराम—तब उनका यह कहना निलजताई ही है न कि मरकस बाबा की सिच्छा रूस में इसलिये चली कि वहाँके लोग धरमात्मा नहीं थे।

———

अध्याय १७

ग्यान और भाखा

सोहनलाल— दुक्खू मामा ! अभी तक हमने भैया से बहुत सँभल-सँभलके सवाल पूछा है, अब एकाध अपने मनका भी सवाल पूछ लेने दो।

दुखराम—पूछो भैने ! हम भी सुनेंगे, लेकिन दो-चार आना हम भी समझें, ऐसा पूछना।

सोहनलाल—नहीं समझ पाओगे दुक्खू मामा ! तो दो ही चार आना भर, नहीं तो सभी समझोगे। अच्छा तो भैया ! जोंकें जो कहती हैं, कि जितना ग्यान-विग्यान दुनियामें है, वह सब हमने ही पैदा किया है, हम न रहेंगे तो दिया बुझ जायगा।

भैया—हम कब कहते हैं कि जोंकोंने कभी अच्छा काम किया ही नहीं। लेकिन जो दिया बुझ जानेकी बात कहते हैं, वह गलत है। हम दिया बुझने नहीं देंगे। हमारे कमेरोंके राजमें ग्यान-विग्यान बहुत चमकेगा। वहाँ ग्यानके बिना कुछ हो भी नहीं सकता। जोंकोंके राजमें आज अपढ़-अबूझ हलवाहेसे भी काम चल सकता है, लेकिन हमारे लिए तो मोटर-हल चलानेवाले हलवाहे चाहिए। राज सँभालते ही पहला काम हमें यह करना पड़ेगा कि देस भरमें कोई बेपढ़ नहीं रहे।

दुखराम—लेकिन भैया ! कितने लोगोंमें तो जेहन ही नहीं होती, वह कैसे पढ़ेंगे ?

भैया—जोंकोंकी जैसी पढ़ाई होगी, तब तो सबको पढ़ नहीं बना सकते। जोंकें बिद्या पढ़ानेके लिए भाखा पढ़ाती हैं, अपनी भाखा पढ़ावें तो कोई उतनी मेहनत नहीं लेकिन वह पढ़ाती हैं अंगरेजी, फारसी, अरबी, संसकीरत। जो हम देस भरको अंगरेजी पढ़ा देनेकी परतिग्या करेंगे, तो वह सात जनमका काम है दुक्खू भाई ! हम तो बल्कि भाखा पढ़ायेंगे ही नहीं। क्या कोई आदमी गूँगा है, कि भाखा पढ़ायें। लोग कथा-कहानी कहते हैं, हँसी-मजाक करते हैं, देस-बिदेसकी बात बतलाते हैं, सब अपनी ही भाखामें कहते हैं

न ? बस हम पहले तो यही कहेंगे कि दो-तीन दिनमें अच्छर सिखला देंगे। अड़तालिस अच्छर तो कुल हुई हैं। दो-तीन नहीं तो पाँच-छः दिन लग जायेंगे, फिर आदमी जो भाखा बोलता है, उसीमें छपी किताब हाथमें थमा देंगे।

दुखराम—ऐसा हो भैया ! तब पढ़ना काहेका मुस्किल हो।

भैया—ढोला-मारु, सारंगा-सदाब्रिच्छ, लोरिकी, सोरठी, नैका, कुँअरि विजयमल, बेहुलाके कितने सुन्दर-सुन्दर खिस्से और गाने हैं। इन्हींको छापके दे दिया जाय, तब कहो दुक्खू भाई !

दुखराम—तो बूढ़े सुग्गे भी राम-राम करने लगेंगे क्या किसीको पढ़नेमें परिस्रम मालूम होगा।

भैया—बिद्दा अलग चीज है दुक्खू भाई ! भाखा अलग चीज है। लेकिन जोंकें हमको सिखलाती हैं कि भाखा पढ़ लेना ही ग्यान है। यह ठीक है कि ग्यान सिखाते बखत उसे किसी भाखामें बोला जाता है। लेकिन अँगरेजीमें काहे बोला जाय, अरबी-संसकीरतमें काहे बोला जाय, उसे अपनी बोलीमें काहे न बोला जाय।

सोहनलाल—लेकिन बोली तो पाँच कोसपर बदल जाती है, ऐसा करनेसे तो हजारों भाखा बन जायेगी, और कौन-कौनमें किताब छापते फिरेंगे ?

भैया—पाँच कोस नहीं जो ५ अंगुलपर ही भाखा बदल जाय, तो भी हमको उसीमें किताब छापनी पड़ेगी। तभी हम दस बरिसके भीतर अपने यहाँ किसीको बेपढ़ नहीं रहने देंगे।

सोहनलाल—लेकिन हिन्दी भी तो अपनी भाखा है।

भैया—जिसकी अपनी भाखा हो, उसे हिन्दी हीमें पढ़ाना चाहिए, तुम्हारे बनारसमें सब लोग घरमें हिन्दी ही बोलते हैं ?

सोहनलाल—किताबवाली भाखा तो नहीं बोलते भैया ! बोलते तो हैं वही बोली जो बनारस जिलाके गाँवमें बोली जाती है।

भैया—जो क ख अच्छी तरह सिखा दिया जाय तो अपनी बोलीमें आदमी कितने दिनोंमें सुद्ध-सुद्ध लिखने लगेगा ?

सोहनलाल—अपनी बोलीको तो भैया ! असुद्ध कोई बोल ही नहीं सकता। अच्छरमें चाहे भले ही एकाध गलती हो जाय, लेकिन व्याकरनकी गलती कभी नहीं होगी।

भैया—और हिन्दी कितना दिन पढ़नेपर व्याकरनकी गलती नहीं करेगा।

सोहनलाल—कोई-कोई आदमी तो भैया जिन्दगी भर पढ़नेपर भी न सुद्ध बोल सकते हैं न लिख सकते हैं।

भैया - लेकिन अपनी बोलीको तो आदमी चाहे भी तो असुद्ध नहीं बोल सकता, यह तो मानते ही हो। अच्छा जिनगी भर हिन्दी न बोलनेवालोंकी बात छोड़ो। मामूली तौरसे सुद्ध हिन्दी लिखने-बोलनेमें कितना समय लगेगा। हमारे गाँवके एक लड़केको ले लो, जिसकी भाखा हिन्दी नहीं बल्कि भोजपुरी या बनारसी है।

सन्तोखी—मैं कहूँ भैया ! हमारे यहाँ लड़के आठ बरस पढ़के हिन्दी मिडिल पास करते हैं, लेकिन तो भी न सुद्ध हिन्दी बोल सकते हैं, न लिख सकते हैं।

भैया—सोहन भाई ! तुम इन्ट्रेन्स पासवालोंकी बात कहो।

सोहनलाल—जब पूछते ही हो, तो मैं बतलाता हूँ कि कितने तो बी० ए० पासकरके भी सुद्ध हिन्दी लिख-बोल नहीं सकते।

भैया—न मैं आठ साल पढ़े मिडिलवालेको लेता हूँ न बी० ए०की चौदह सालकी पढ़ाई। मैं इतना समझता हूँ कि आदमीकी जेहन बहुत खराब न हो और भाखा ही भाखा पढ़ता रहे तो पाँच बरस तो जरूर ही लगेंगे। लेकिन हिसाब और दूसरी चीज साथ ही साथ पढ़नी हो, तब काम नहीं बनेगा। हमारे मदरसोंमें जो हिसाब, जुगराफिया सब कुछ अपनी ही भाखामें पढ़ना हो, तो पाँच बरस क्या भाखा सीखनेमें एक दिन भी नहीं देना होगा। ग्यान है हिसाब, जुगराफिया, इतिहास, खेतीकी बिद्या, इंजनकी बिद्या, सड़क, पुल, मकान बनानेकी बिद्या और पचीसों तरहकी बिद्या। ग्यान पढ़ानेके लिए जब हम यह सरत रख देते हैं कि जब तक तुम पराई भाखा न पढ़ोगे, तब तक ग्यानमें हाथ नहीं लगा सकते, तब वह बहुत मुस्किल हो

जाता है।

सन्तोखी—हम लोगोंकी भाखाको तो भैया! लोग गँवारू कहते हैं।

भैया—"आइल-गइल", "आयन गयन", "आयो गयो", "एल-गेल" बोलनेसे तो गँवारु भाखा हो गई, और "आये-गये" कहनेसे वह अच्छी भाखा होगी। और "कम् वेन्ट" कहनेसे वह बहुत अच्छी भाखा हो गई। काहेसे वह साहेब लोगोंकी भाखा है। साहेब लोगोंका डंडा सिरपर है, उनका राज है, इसलिए अँगरेजी बोली बहुत अच्छी भाखा है, वह देवताओंकी भाखासे भी बढ़कर है, लेकिन जब साहब लोगोंका राज न रहे, और गँवार यही किसान-मजूर अपना पंचायती-राज कायम कर लें, तो क्या तब भी उनकी भाखा गँवारू रहेगी? यह तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस"वाली बात हुई। गँवारू कह देनेसे काम नहीं चलेगा। जिस बखत इसी गँवारु भाखामें इसकूल, कालेज सब जगह चौदह बरस तक पढ़ी जानेवाली बिद्या पढ़ाई जायगी उसीमें हजारों किताबें छपेंगी। उपन्यास, कविता, कहानी सब कुछ गँवारू भाखामें मिलने लगेगा। रोजाना, हफ़्तावार, माहवारी, अखबार निकलने लगेंगे, तब इस भाखाको कोई गँवारू नहीं कहेगा।

दुखराम—क्या ऐसा होगा भैया?

भैया—जो तुम लोग हमेसा गँवार बने रहना चाहोगे, तो नहीं होगा; जो तुम हमेसा गुलाम बने रहोगे, तो भी नहीं होगा; जो हिन्दुस्तानके आधे आदमियोंको बेपढ़ बनाये रखना है, तो नहीं होगा; नहीं तो इसमें अनहोनी कौन-सी बात है? बल्कि अपनी बोली पकड़नेसे तो छः बरसका रस्ता एक दिनमें पूरा हो जाता है।

सोहनलाल—लेकिन अपनी-अपनी बोली पढ़ाई जाने लगी, तो दरभंगा, बनारस, मेरठ, और उज्जैनके आदमी एक जगह होनेपर कौन-सी भाखा बोलेंगे?

भैया आज भी गौहाटी, ढाका, कटक, पूना, सूरत, पेसावरके आदमी एकट्ठा होनेपर क्या बोलते हैं।

सोहनलाल—हिन्दी बोलते हैं, टूटी-फूटी हिन्दीसे काम चला लेते हैं।

भैया—लेकिन इकट्ठा होनेका ख्याल करके उनसे यह नहीं न कहा जाता कि तुम असामी, बँगला, उड़िया, मराठी, गुजराती, पस्तो छोड़के हिन्दी-सिरिफ हिन्दी पढ़ो, नहीं तो कभी जो इकट्ठे होओगे तो बात करनेमें मुसकिल पड़ेगा। जैसे उन लोगोंको अपनी भाखामें सब कुछ पढ़ाया जाता है, उसी तरह दरभङ्गावालोंको मैथिली, भागलपुरवालोंको भगलपुरिया (अंगिका), गयावालोंको मगही, छपरावालोंको छपरही (मल्ली), लखनऊवालोंको अवधी, बरैलीवालोंको बरैलवी (पंचाली), गढ़वालवालोंको गढ़वाली, मेरठ-वालोंको मेरठी (खड़ी बोली या कौरवी), रोहतकवालोंको हरियानवी (यौधेयी), जोधपुरवालोंको मारवाड़ी, मथुरावालोंको ब्रजभाखा, झाँसीवालों-को बुन्देलखंडी, उज्जैनवालोंको मालवी, उदयपुरवालोंको मेवाड़ी, झालावाड़-वालोंको बागड़ी, खँडुआवालोंको नीमाड़ी छतीसगढ़वालोंको छतीसगढ़ी — सबको अपनी-अपनी भाखामें पढ़ाया जाय।

सोहनलाल—पढ़ानेमें तो सुभीता होगा भैया! हर आदमीका पाँच-पाँच साल बच जायेगा और डरके मारे जो बीच हीमें पढ़ाई छोड़ बैठते हैं, वह भी बात नहीं होगी, लेकिन हिन्दी भाखावालोंका एका टूट जायगा।

भैया—एका टूटनेकी बात तो इस बखत नहीं कह सकते हो सोहन भाई! इस बखत तो एका सिर्फ दिमागमें है। मध्य प्रान्त अलग है, युक्त-प्रांत और बिहार भी अलग है, हरियाना भी पंजाबमें है और रियासतोंने छप्पन टुकड़े कर डाले हैं, इसे आप देखते ही हैं।

सोहनलाल—लेकिन हम तो चाहते हैं कि सबको मिलाकर हिन्दका एक बड़ा सूबा बना दिया जाय।

भैया—सूबा नहीं, पचायती राज, प्रजातंत्र। सूबा क्या हम हमेसा बिदेसी जोंकोंके गुलाम बने रहेंगे? और अपना राज होनेपर किसी सुरुजबंसीको दिल्लीके तखतपर बैठायेंगे? हमारा पंचायती राज रहेगा, जो एक नहीं बहुतसे पंचायती-राजोंका संघ होगा। जो लोग चाहेंगे तो दरभंगासे बीकानेर, और गंगोत्तरीसे खँडवा तकका एक बड़ा प्रजातंत्र-संघ कायम कर लेंगे जिसके भीतर पचीसों प्रजातंत्र रहेंगे।

सोहनलाल—तो भैया ! मल्ल प्रजातंत्रकी बोली मल्लिका रहेगी और मालव प्रजातंत्रकी मालवी, यौधेय (अंबाला कमिश्नरी) प्रजातंत्रकी हरियानवी; फिर जब वह हिन्द प्रजातंत्र संघकी बड़ी पंचायत (पार्लामेण्ट)में बैठेंगे, तो किस भाखामें बोलेंगे ?

भैया—हिन्दीमें बोलेंगे और किसमें बोलेंगे ? इन्हींकी बात क्यों पूछ रहे हो, मदरास, कालीकट, बेजवाड़ा, पूना, सूरत, कटक, कलकत्ता और गोहाटीके मेम्बर भी जब सारे हिन्दुस्तानके प्रजातंत्र-संघकी बड़ी पंचायतमें इकट्ठा होंगे, तो क्या वह अंजरेजीमें लेक्चर देंगे। अंगरेज जोंकोंके जुवाके उतार फेंकनेके साथ ही अंगरेजी भाखाका जोर हिन्दुस्तानमें खतम हो जायगा तब हिन्दुस्तानमें एक दूसरेके साथ बोलने-चालने. और सारे देस-की सरकारके काम-काजके लिये एक भाखाकी जरूरत होगी, तो वह भाखा हिन्दी ही होगी !

सोहनलाल—तो भैया ! हिन्दी भाखाको तो तुम उजाड़ना नहीं चाहते हो न ?

भैया—हम उजाड़ेंगे कि उसे और मजबूतीसे बसावेंगे। सारे हिन्द प्रजातंत्र-संघकी वह संघ भाखा होगी। मदरसोंमें जैसे अंगरेजीके साथ दूसरी भाखा पढ़ाई जाती है, वैसे ही बारह बरसकी उमरसे ३-४ साल तक लड़कों-को हर रोज एक घंटा हिन्दी पढ़नेका कायदा बना देंगे। उस बखत हिन्दीका जोर और बढ़ेगा कि घटेगा ?

सोहनलाल—आज तो हिन्दी ही हिन्दी सब कुछ है, फिर तो ब्रिज, मालवी, मैथिली, न अपने घरकी मालकिन बन जायेगी ? फिर बेचारी हिन्दी-को जब कोई बुलायेगा तभी न चौखटके भीतर आयेगी।

भैया—आज-कल यह कहना तो गलत है कि हिन्दी सब कुछ है, काहेसे कि सब कुछ तो अंगरेजी है। दूसरे हिन्दीके चौखटके भीतर बैठानेकी बात भी ठीक नहीं है। मेरठ कमिश्नरीके साढ़े-तीन जिले, (मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, बुलंद सहर ½ की भी तो जनम भाखा वही है। उसके बाद सारे हिन्दुस्तानमें घर-घर में उसकी आव भगत रहेगी।

सोहनलाल—तो लोग अपनी-अपनी भाखाका प्रजातंत्र बना लेंगे, फिर तो हिन्दुस्तान सौ टुकड़ोंमें बँट जायेगा।

भैया—सोवियतकी आबादी हम लोगोंसे आधी है, २० करोड़ ही है, लेकिन वहाँ तो १८२ भाखा बोली जाती है और सबका अपना छोटा-बड़ा पंचायती-राज है। तुम चाहते हो कि पाँचों उगुँलियोंको खुला नहीं रखा जाय; बल्कि मिलाके सी दिया जाय, लेकिन इससे हाथ मजबूत नहीं होगा सोहन भाई! सोवियत १८२ प्रजातंत्रवाला होनेपर भी एक बड़ा प्रजातं है। हिन्दुस्तान भी १०० प्रजातंत्रोंवाला, एक बड़ा प्रजातंत्र हो तो कौन-सी बुरी बात है।

सोहनलाल—अच्छा तो यही होता कि सारे हिन्दुस्तानका एक ही प्रजातंत्र होता?

भैया अच्छा तो होता जो हिन्दुस्तानके लोग एक ही बोली बोलते होते, लेकिन वह तो अब हमारे हाथमें नहीं है। क्या सारे हिन्दूस्तानका तुम एक सूबा बनाना चाहते हो?

सोहनलाल—नहीं सूबा तो हम अलग-अलग चाहते हैं। बंगाल, उड़ीसा, सिन्ध सबको मिटाकर एक सूबा तो बनाया नहीं जा सकता।

भैया—अंगरेजी राजमें जो आज सूबा है और १२ लाख सालाना खरचपर वहाँ लाट साहब लाके बैठाये जाते हैं, वही तब प्रजातंत्र कहा जायगा, जिसका राजकाज पंचायतके हाथमें होगा, अनेक सूबाको तो तुम मानते ही हो, उसका मतलब ही है कि अनेक प्रजातंत्र हिन्दुस्तानमें रहेंगे और हिन्तुस्तान प्रजातंत्रोंका संघ रहेगा। अब झगड़ा यही है न कि १४ प्रजातंत्र रहे या सौ? मैं कहता हूँ कि उतने ही प्रजातंत्र हों जितनी भाखा लोग बोलते हों और अपने-अपने प्रजातंत्रमें पढ़ाई-लिखाई, कचहरी-पंचायतका सब कारबार अपनी भाखामें हो लेकिन सौ प्रजातंत्र होनेका मतलब यह तो नहीं है कि अब वह एक दूसरेसे कोई वास्ता नहीं रखेंगे, और कछुएकी तरह मूँड़ी समेटकर अपनी खोपड़ीमें घुस जाएँगे। हमारे महा-प्रजातंत्रके ये सभी प्रजातंत्र हाथ-पैर, नाक-कानकी तरह अंग होंगे। सबमें एक न खू

बढ़ेगा। सब एक-दूसरेकी मदद करेंगे। उस बखत रेलकी लाइनें आजसे भी ज्यादा बढ़ जायेंगी, पक्की सड़कें गाँव-गाँवमें पहुँच जायँगी। हर प्रजातंत्रमें हवाई जहाजके अड्डे होंगे। लोगोंकी जेबमें पैसा रहेगा, सालमें महीने डेढ़ महीनेकी सबको छुट्टी मिलेगी। तो बताओ लोग कूएँ के मेढक बनकर बैठे रहेंगे या अपने महादेसमें घूमने-फिरने जायेंगे ?

दुखराम--घूमने-फिरने जायँगे भैया! देस-परदेस देखनेका किसका मन नहीं कहता, नातेदारों-रिस्तेदारोंसे मिलनेकी किसकी तबियत नहीं होती।

भैया—जनम-भाखाको कबूल करनेसे हिन्दीको नुकसान होगा यह ख्याल गलत है सोहन भाई! उस बखत बनारसवाले कानपुरवालोंसे बहुत नगीच रहेंगे, टेलीफून भी नगीच कर देगा, हवाई जहाज भी और जेबका पैसा भी। हिन्दी सीखना लोग बहुत पसन्द करेंगे, क्योंकि सारे देसकी साझेकी भाखा वही है, फिर हिन्दीमें पोथियाँ सबसे अधिक निकलेगी। आज-कल देखते हैं न हिन्दीके सिनेमा-फिल्म जितने निकलते हैं, उतने बँगला, मराठी, तामिल, तेलगू सारी भाखाओंके मिलके भी नहीं निकलते। हिन्दी भाखाकी किताबोंकी भी वही हालत होगी; उसके पढ़नेवाले देश भरमें मिलेंगे। मुझे उमेद है, कि जैसे चौपटाध्याय फिल्म हिन्दीमें निकल रहे हैं, वह किताबें वैसी नहीं होगी।

सोहनलाल—चौपटाध्याय फिल्म क्यों कह रहे हो भैया? जो चौपटाध्याय होते तो इतने लोग देखने क्यों जाते और फिल्मवालोंको लाखों रुपयेका नफा कैसे मिलता ?

भैया—देखनेवाले तो इसलिए जाते हैं कि दूसरा अच्छा फिल्म है कहाँ ? दूसरे नाच-गाना और सुन्दर मुँहके देखनेकी आदत लोगोंकी पहिले हीसे है, बस वह समझते हैं कि चलो दो आनामें तवायफका नाच ही देख आएँ, लेकिन सिरिफ सुन्दर मुँह और सुरीले कंठ तकमें ही फिल्मको खतम कर देना अच्छी बात नहीं है, सोहन भाई। उसमें बात-चीत, हाव-भाव और तसवीरोंसे दुनियाका असली रूप दिखलाना होता है, साथ ही साथ लोगोंको रस्ता भी दिखलाना होता है। लेकिन रस्ता दिखलानेकी बात छोड़ दो,

काहेसे कि जोंकोंके राजमें वह अनहोनी बात है। लेकिन हिन्दी फिल्मोंमें सब चीजोंमें बेपरवाही देखी जाती है। फिल्म बनानेवाले तो जानते हैं कि उनके पास रुपया चला ही आयेगा, फिर क्यों परवाह करें ?

सोहनलाल—हिन्दी फिल्मोंमें आपको क्या दोस मालूम होता है भैया ?

भैया—पहिले गुन बताता हूँ तब दोस बताऊँगा। गुन तो यह है कि हमारे फिल्मके खिलाड़ी (अभिनेता) और खिलाड़िनें (अभिनेत्रियाँ) अपना करतब दिखलानेमें दुनियाके किसी भी खेलाड़ी-खेलाड़िनीसे कम नहीं हैं। और अच्छे फिल्मके लिए यह बहुत अच्छी चीज है। वह अपनी बात-चीत, हाव-भाव गीत नाच सबमें अच्छे हैं—मैं सभी खेलाड़ी-खेलाड़िनोंके बारेमें नहीं कहता, लेकिन अच्छे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंमें यह सब गुन हैं। और इन्हीं गुनोंका परताप है कि मदरास, कालीकट और बेजवाड़ामें भी लोग अपनी भाखाके फिल्मोंको छोड़कर हिन्दी फिल्मोंको देखने आते हैं, चाहे बेचारे फिल्मकी भाखाको नहीं समझ पायें। मैं समझता हूँ कि ये हमारे खेलाड़ी-खेलाड़िनोंके गुनका ही परताप है। पैसा बनानेवाले फिल्म मालिकोंकी चले तो सायद उसमें भी कुछ खराबी कर दें।

सोहनलाल—और दोस क्या है भैया !

भैया—भाखा तीन कौड़ीकी होती है, न उसमें लचक, न कहावत और न गहराई होती है। यह क्यों होता है ? बहुतसे फिल्म मालिक भाखा जानते ही नहीं, लेकिन तो भी अपनेको महाविद्वान समझते हैं। एक तो उनके भाखा लिखनेवाले भी बहुतसे उन्हींकी तरह हैं, और जो कोई अच्छा भी लिखता हो, तो अच्छेको बुरा और बुरेको अच्छा कहनेका अख्तियार फिल्म तैयार करनेवाले अपने हाथमें रखते हैं। समझ लो पूरी दमद-सोधन हो जाती है।

सोहनलाल—दमद-सोधन क्या है भैया ?

भैया—किसी पंडितने एक मुरुखसे अपनी लड़की ब्याह दी। दामाद एक दिन ससुरार आया। छापाखानेसे पहिलेकी बात है, उस वक्त किताबोंको उतारनेवाले मामूली पढ़े-लिखे लेखक हुआ करते थे। वह मजूरी लेकर

किताब उतार दिया करते थे। पंडित लोग किताब लेके फिर पढ़ते और जो असुद्ध होता उसपर पीला हड़ताल फेरते और जिसको ज्यादा ध्यानमें रखना होता, उसे गेरूसे लाल कर देते। पंडितके दामादने पोथी, हड़ताल और गेरूको देखा। उन्होंने पोथीको हाथमें ले लिया। पंडिताइनको अपने दामाद-पर बहुत गरव था, उन्होंने समझा कि दामाद भी बड़ा पंडित है और उससे कहा—"पंडित गेरू और हड़तालसे किताबको सोध रहे हैं तुम भी तो सोधते होगे बाबू!" दामाद कब पीछे रहनेवाले थे। उन्होंने कहा—"हाँ अइया! मैं अच्छी तरह जानता हूँ।" फिर जहाँ मन आया हड़ताल लगाया, जहाँ मन आया गेरू पोथीकी दमद-सोधन हो गई।

सोहनलाल—तो इसमें फिल्म पैदा करनेवालोंका ज्यादा दोस है या भाखा लिखनेवालोंका।

भैया—फिल्म पैदा करनेवालोंका बहुत बड़ा दोस है, उनमें ख़ुद लियाकत नहीं है और न लायक आदमियोंको चुन सकते हैं। भाखा लिखने-वालोंमें जो थोड़ेसे अच्छे भी हैं, उनमें भी एक बड़ा दोस है। वह हिन्दी या उर्दूकी किताबी भाखा लिखते हैं। किताबसे पढ़के सीखनेवालेकी भाखामें जीवट नहीं होता और सहरोंमें जो थोड़े-बहुत बाबू लोग अपने घरोंमें हिन्दी भाखा बोलते हैं, वह भी किताबी भाखा जैसी ही होती है।

सोहनलाल—तो जीवटवाली भाखा कौन बोलते हैं भैया?

भैया—मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुरके जिलोंके गँवार।

सोहनलाल—तब तो फिल्मकी भाखा लिखनेवालोंको भाखा सीखनेके लिए इन गँवारोंके पास जाना पड़ेगा?

भैया—उनके चरनमें जाकर बैठना पड़ेगा। हिन्दी भाखाको किताब-वालोंने नहीं पैदा किया, बल्कि इन्हीं गँवारोंने पैदा किया। हिन्दी पढ़नेवालों-ने सैकड़ों बरस पहले उन गँवारोंसे भाखा तो ले ली, लेकिन भाखामें जीवट लानेके मुहाविरे, कहावतें, सबदोंका तोड़ना-मरोड़ना और उन्हें मनमाने तौरसे रखना इत्तादि बातें नहीं सीखीं; इसलिए हिन्दी भाखामें वह चमतकार नहीं आ सका। किताब पढ़नेमें तो किसी तरह आदमी बरदास भी कर लेगा

लेकिन नाटककी बातचीतमें इससे काम नहीं चल सकता।

सोहनलाल—तो भैया! तुमने कोई फिल्म ऐसा नहीं पाया, जिसमें कुछ जीवटवाली भाखा दिखाई दे।

भैया—मैंने सिर्फ एक फिल्म ऐसा देखा है जिसकी भाखा मुझे पसंद आई, वह था—"जमीन।" मैं समझता हूँ जब तक फिल्म पैदा करनेवाले अपनेको सब कुछ जाननेवाला मानना नहीं छोड़ेंगे और जब तक भाखा लिखनेवाले मेरठके उन गँवारोंके चरनोंमें नहीं बैठेंगे, तब तक यह दोस नहीं जायेगा।

सोहनलाल—और दूसरे दोस क्या हैं भैया?

भैया—दूसरे दोस फिल्म पैदा करनेवालोंको है चाहे उन्हें उनका अंधापन कह लो, चाहे "कम दाम ज्यादा नफा"का ख्याल समझ लो, चाहे फिल्म मालिकोंका अपने घरके पास ही फिल्म बनानेका हठ समझ लो। हिन्दीके फिल्म बम्बई या कलकत्तामें ही तैयार किये जाते हैं। वहींके आस-पासके गाँवों, पहाड़ों, नदियोंका फोटो खींचा जाता है। वहाँ न हिन्दी बोलने-वाले गाँव हैं न हिन्दीवालोंके रीति-रवाज कपड़े-लत्ते। इसका फल यह होता है कि सब चीजें बनावटी दीख पड़ती हैं। बहुत-सी चीजोंको तो वह आने नहीं देते। "जमीन" की तसवीरोंमें भी यह दोस मौजूद है। यह दोस बँगला, मरहठी या तमिल फिल्मोंमें नहीं पाया जाता, काहेसे कि उनमें उन्हीं गाँवों, नदियों, पहाड़ों और लोगोंकी तसवीरें ली जाती हैं, जो उस भाखाको बोलते हैं। हिन्दी-फिल्मोंका यह दोस तब तक दूर नहीं होगा, जब तक देहरादून, कालसी जैसी जगहोंमें फिल्मवाले अपने डंडा-कुंडा उठाके नहीं आ जाते।

सोहनलाल—और कौन दोस है भैया?

भैया—हिन्दी-फिल्मोंकी सारी तसवीरें दो-एक मीलके छोटेसे घेरेमें घूमती रहती हैं, वह विसाल नहीं होतीं। नदियों, पहाड़ों, खेतों, गाँवोंका जो विसाल रूप हमें मिलना चाहिए उसे हम नहीं पाते। क्या जाने यह पैसा बचानेके ख्यालसे होता होगा।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—हस्तिनापुरके पास गङ्गाका विसाल कछार है, वहाँ सैकड़ों गाएँ-भैसें चरती हैं, चरवाहे मस्त होकर गाना गाते हैं, गङ्गामें मलाह नाव खेता है, और अपनी तानमें सारी मेहनत भूल जाता है। धोबी, कुम्हार सबके अपने-अपने गीत, अपने-अपने बाजे, चित्र-विचित्र नाच हैं। सहरोंमें भी औरतोंके ब्याह और दूसरे वक्तके अपनी खास-खास नाच और नाटक हैं। इस तरहकी सैकड़ों चीजें हैं, जिनका बम्बई और कलकत्ताके फिल्मोंमें कहीं पता नहीं है।

सोहनलाल—और कोई दोस है भैया ?

भैया—मैं अब एक ही दोस और कहूँगा। हिन्दी भाखा हिमालयकी गोदमें बोली जाती है। दुनियाके फिल्मवाले हिमालयके सुन्दर पहाड़ों, नदियों, झरनों, देवदार-वनों और बरफीली चोटियोंको पाके निहाल हो जाते, लेकिन हिन्दी फिल्मवालोंके लिए वह कोई चीज नहीं। जापानके राजाकी राजधानी तोकियो है, लेकिन फिल्मोंकी राजधानी क्योतो है, काहेसे कि क्योतोको थोड़ा-सा हिमालयका रूप मिला है। लेकिन हमारे आजके फिल्मवालोंको इसका कभी ख्याल आयेगा, इसमें सक है।

सोहनलाल—तो भैया ! जो फिल्म बनानेवाले मेरठ कमिसनरीके हिमालयवाले टुकड़ेमें आ जायँ, तो उनके बहुतसे दोस हट जायँगे ?

भैया—यह मैं मानता हूँ, लेकिन यह भी समझता हूँ, कि सेठ अपना घर छोड़ तपोबनमें थोड़े जाना चाहेंगे, वह पचास तरहका बहाना कर सकते हैं। और सबसे बड़ी बात यह है, कि नफा तो उन्हें खूब हो ही रहा है और थोड़े ही खर्चमें। लेकिन हम फिल्मकी बात करते-करते बहुत दूर चले गये सोहन भाई ! मैं कह रहा था हिन्दी भाखाके बारेमें।

सोहनलाल—हाँ, तो तुम समझते हो, कि अपनी-अपनी भाखाको पढ़ाई-की भाखा मान लेनेपर हिन्दीको नुकसान नहीं होगा ? लेकिन भैया ! दुनिया-को हमें और एक दूसरेके नगीच लाना है। मरकस बाबा तो सारी मानुख जातिको एक बिरादरी देखना चाहते थे, फिर किसी संजोगसे जो हिन्दीके नाते

हिन्दुस्तानके आधे लोग एक भाखासे बँध गये हैं, उनको फिर तोड़-फोड़के अलग करना, यह तो पैर पकड़के पीछे खींचना है।

भैया—पैर पकड़कर पीछे खींचना नहीं है सोहन भाई ! यह हाथ पकड़-कर आगे बढ़ाना है। जनम-भाखासे पढ़ाई करनेपर दस बरसके भीतर ही हमारे यहाँ कोई अपढ़ नहीं रह जायगा। और एक दूसरी जगह जाने, आपस-में मिलनेसे, हिन्दी भाखा सभी लोग थोड़ी-बहुत बोल लेंगे। और समझनेमें तो किसीको मुसकिल नहीं होगा, काहेसे कि इन सब भाखाओंमें बहुतसे सबद एक हीसे हैं। कविता, कहानी, उपन्यासका ढंग भी एक-सा ही रहेगा। हिन्दी पोथियोंकी उतनी ही ज्यादा माँग होगी, जितनी ही अधिक इन भाखाओंके पढ़ने-लिखनेवाले बढ़ेंगे। कमी इतनी होगी, कि आज जो हमारे कितने ही भाई यह समझते हैं, कि अवधी, ब्रज, मालवी, बनारसी, मैथिली इत्तादि भाखायें कुछ दिनोंमें मर जायेंगी, उनको जरूर निरास होना पड़ेगा। निरास वैसे भी होना पड़ेगा, क्योंकि जो जनम-भाखाओंको किताबकी भाखा न भी बनाया जाय, तो भी सौ-पचास सालोंमें उन भाखाओंके मरते देखनेकी खुसी हमारे भाइयोंको नहीं मिलेगी। अभी उन्हें मरना भी नहीं चाहिए, क्योंकि उन्होंने अपने भीतर अपनी जातिकी भाखा, समाज, विचार-विकास ओगरहके इतिहासकी बहुत-सी अनमोल सामिगरी रखी है। मैं जानता हूँ जो दुनियासे जोंकें उठ जायँगी, तो मानुख जाति जरूर एक होगी और फिर सबकी एक साझी भाखा भी होगी। हो सकता है, कि एक साझी और एक अपनी जनम-भाखा दो भाखाओंका रहना मुसकिल हो जाय। लेकिन वह अभी सैकड़ों बरसोंकी बात है। उस बखत तक हरेक भाखाके भीतर जितने रतन छिपे हुए हैं, सब जमा करके अच्छी तरह रख लिए गये रहेंगे। इसलिए किसी भाखाके नास होनेसे उतना नुकसान नहीं होगा।

सोहनलाल—लेकिन भैया ! यह बोलियाँ अभी ऐसी नहीं हैं, कि इनमें साइन्स-विग्यानपर किताबें लिखी जायँ। हिन्दीने बड़ी मुसकिलसे यह कर पाया है।

भैया—जो मान लें कि बनारसी बोलीमें साइन्सकी किताब नहीं लिखी

जा सकती, तो कितने ही दिनों तक हिन्दीमें किताबें पढ़ेंगे, जब तक कि हिन्दी बोली नाबालिगसे बालिग न हो जायगी। हिन्दी जैसी किसी भाखाकी किताब पढ़ना और उसमें लिखना-बोलना दोनोंमें बहुत फरक है समझ लेना बहुत सहज है। अपनी बोलीके पढ़ानेका मतलब यह नहीं है, कि हिन्दीको लोग छुयेंगे नहीं। दूसरी बात यह है कि बनारसी, मालवी किसी भी भाखामें साइन्स, इन्जीरिङ्की किताबोंके लिखनेमें उतनी ही दिक्कत होगी, जितनी हिन्दीमें। आखिर हिन्दीने भी साइन्सके सबदोंको संसकीरतसे लिया है, बँगला, गुजराती, मराठी भी संसकीरतसे ही सबदोंको लेती हैं फिर बनारसी, मैथिली, ब्रिज, मालवीने क्या कसूर किया है?

सोहनलाल—हिन्दी-उर्दूके बारेमें तुम्हारी क्या राय है भैया?

भैया—मेरी राय क्या पूछ रहे हो, मैंने तो पहिले ही कह दिया है, कि जिसकी जो जनम-भाखा हो उसको उसी भाखामें पढ़ाना चाहिए। बनारसमें बहुतसे बंगाली भी रहते हैं, उन्हें बँगलामें पढ़ाना होगा। मराठे भी हैं, उनको मराठीमें पढ़ाना होगा। हाँ, कोई दो भाखा बोलनेवाला हो तो वह चाहे जिस पाठसालामें जाय। इसी तरह बनारसमें जिस लड़केकी जनम-भाखा हिन्दी है, उसके लिए हिन्दीकी पाठसाला कायम करनी होगी, जिसकी जनम-भाखा उर्दू है उसके लिए उर्दूका मदरसा कायम करना होगा।

सोहनलाल—तो भैया, तुम हिन्दी-उर्दूको मिलाके एक भाखा नहीं करना चाहते।

भैया—मिलाना हमारे बसकी बात नहीं है, दस-पाँच आदमी बैठकर भाखा नहीं गढ़ा करते। हिन्दी-उर्दूके बननेमें सैकड़ों बरस न जाने कितनी पीढ़ियोंने काम किया है। मैं मानता हूँ कि हिन्दी और उर्दू भाखा मूलमें एक ही भाखा है। "का, में, पर, से, इस, उस, जिस, तिस, ना, ता, आ, गा" दोनों हीमें एकसे हैं, खाली झगड़ा है उधार लिए सबदोंका। हिन्दीने संसकीरतसे सबदोंको उधार लिया है और उर्दूने अरबी और कुछ-कुछ पारसीसे भी; लेकिन दोनोंने इतना अधिक उधार लिया है, कि अकबालकी कविताको समझनेवाला सुमित्रानन्दन पन्तकी कविताको बिलकुल नहीं समझ

सकता और सुमित्रानन्दन पन्तकी कविता जाननेवाला अकबालको बिलकुल नहीं समझ सकता। इसलिए मूलमें दोनों एक हैं, कहनेसे काम नहीं चलेगा। अकबाल और पन्त दोनोंके समझनेके लिए दोनों भाखाओंको अच्छी तरह पढ़ना होगा।

सोहनलाल—तो हिन्दू-मुसल्मानोंकी भाखाओंके मिलनेका कोई रस्ता है?

भैया—चोटियोंपर तो नहीं मालूम होता, लेकिन जड़में उसका झगड़ा ही नहीं है।

सोहनलाल—जड़ क्या है भैया?

भैया—जड़ यही है कि, जिसे जनम-भाखा कहते हैं, अवधी बोलनेवाले गाँवमें चले जाइये, वहाँ चाहे बाभन देवता हो, चाहे मोमिन जोलाहा, दोनों एक ही बोली बोलते हैं। बनारस, छपरा, गुड़गाँवा, थानाभवनके पास किसी गाँवमें चले जाइये, किसानों-मजूरोंकी भाखा एक है, चाहे वह हिन्दू हों या मुसल्मान।

दुखराम—वही जोंकोंसे जिनका बेसी रिसता-नाता नहीं है।

भैया—देखा न सोहन भाई! जड़में अपनी एक भाखा तैयार है, हिन्दू-मुसल्मान दोनों कमेरे उसी भाखाको बोलते हैं और फिर उनका न संसकीरत-के साथ पच्छपात है न अरबी-फारसीके साथ। यही दुक्खू भाईने जो अभी कहा, "बेसी रिसता-नाता" इसमें बेसी और रिसता पारसी भाखासे आया है और नाता अरबी भाखासे। रिसता-नाता कहनेसे बिलकुल निपढ़, गँवार बुढ़िया भी समझ लेगी, लेकिन "सम्बन्ध" कहनेसे उतना नहीं समझ पायेगी। हमने भी अपने इतने दिनोंके सत्संगमें पाँच-छ सौ अरबी-फारसी सबदोंको लिया है, और हिन्दीमें उनकी जगह अब सिरिफ संसकीरतके सबद ही लिखे जाते हैं। मैं समझता हूँ कि कोई अदमी समरकन्द-बुखारासे सात पीढ़ी पहिले आया हो, लेकिन अब उसकी भेख-भाखा सब हिन्दुस्तानकी है, तो वह हिन्दुस्तानी है। वह अपने पुरखाके सहर समरकन्द-बुखारामें जायगा, तो वहाँ भी उसे लोग हिन्दुस्तानी कहेंगे—आजकल समरकन्द, बुखारा, उजबेकिस्तान सोवियत प्रजातन्त्रके अच्छे सहर हैं। उसी तरह जिन अरबी,

पारसी सबदोंको निपढ़ गँवारोंने अपना लिया है और उसको वह अपने ढंगसे तोड़-मरोड़के बोलते हैं, वे सबद अब बिदेसी नहीं, सुदेसी हैं। जिन संसकीरत सबदोंको हमारे "गँवार" छोड़ चुके हैं, उनको फिरसे लादना भी ठीक नहीं।

सोहनलाल—लेकिन भैया, इन गँवारोंने तो हजार-बारह सौ संसकीरतके सबदोंको निकालकर अरबीके सबद लिए हैं। 'हमेसा', 'दिक्कत', 'मुसकिल', 'मवस्सर', 'अरज', 'गरज', 'लेकिन', 'बेसी', 'अमहक' (अहमक), 'इफरात', 'जमीन', 'हवा', 'तुफान', 'सहर', 'नौबत', 'जुलुम', 'परेसानी', 'मेहरबानगी', 'वगैरह' सबदोंको उन्होंने लेकर संसकीरतके सबदोंको छोड़ दिया है। जो संसकीरतके सबद रखे हैं, उनके बोलनेमें भी लाठीसे पीटके ठीक-ठाक कर डालते हैं। और आप इसी भाखाको अपनानेको कहते हैं!

भैया—दोनों बातोंको एकमें न मिलाओ सोहन भाई! जहाँ तक जनम-भाखाकी बात है, उसके लिए न रामसरूप पंडितकी बात मानी जायगी न कुतुबुद्दीन मोलबीकी; उसके लिए तो धनिया भौजी—गाँवकी बेपढ़ अहिरिनको ही परमान माना जायगा। दोनों सबदोंको उसके सामने रखा जायगा, जो अरबीवाले सबदको वह समझेगी तो उसे ले लिया जायगा, संसकीरतवालेको समझेगी तो उसको। बोलनेमें कठिन सबदोंकी धनिया भौजी कपाल-किरिया करे होगी, और उसकी कपाल-किरियाको भी मानना पड़ेगा। हिन्दी-उर्दूको मिलानेका काम भी यही जनम-भाखायें करेंगी, क्योंकि जनम-भाखाओंमें हिन्दू-मुसल्मानका झगड़ा नहीं है। जड़वालोंका रस्ता साफ है, चोटीवालोंका झगड़ा है। उनमें जो अपनी जनम-भाखा उरदू मानता है, वह उरदूमें लिखे-पढ़ेगा जो हिन्दी मानता है वह हिन्दीमें। मेरठ कमिसनरीके साढ़े-तीन जिलेमें भी कौन भाखा माननी चाहिए। इसका फैसला वहाँ कोई जाटकी धनिया भाभीके हाथमें होगा।

सोहनलाल—और जो हिन्दुस्तानके संघकी भाखा हिन्दी होगी, उसमें हिन्दी-उरदूका झगड़ा कैसे मिटेगा?

भैया—पहिले तो हिन्दीके अपने साढ़े-तीन जनम जिलोंकी भाखाके मुताबिक उसको मानना पड़ेगा। जिसके कारन बहुतसे संसकीरतके सबद छूट जायँगे, और बहुतसे अरबी-फारसीके भी। फिर यह प्रजातन्त्रोंके ऊपर छोड़ दिया जायगा कि वह कौन भाखा पसन्द करेंगे। जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो तरहके प्रजातंत्र हमारे देसमें बनेंगे, तो हिन्दुस्तान प्रजातंत्रसंघमें हिन्दी-संघ भाखा होगी और पाकिस्तानमें उरदू। मैं यह भी जानता हूँ कि आजकी उरदूको जो बंगालवाले पाकिस्तानपर लादा जायगा, तो बहुत मुसकिल होगी।

अध्याय १८

सुतन्तर भारत

सन्तोखी—दुक्खू भैया! सुना है, रजबली भैया आये हैं।

दुखराम—सुना क्या है, हम रजबली भैया के ही पास जा रहे हैं। तीन बरिसपर लौटे हैं। कितना दुनिया-जहान देखकर आये हैं। तुम भी आओ, चलें, कुछ नई बात सुनें!

सन्तोखी—हाँ, दुक्खू भैया! चलो चलें। तीन बरिसमें दुनिया बहुत बदल गई। १५ अगस्त (१६४७)से तो अब अपना देस गुलामीसे छूट गया है।

दोनों दोस्त चले। रजबली महुआके पेड़के नीचे खाटपर बैठे थे। दोनों पुराने दोस्तोंको देखते ही उठकर दौड़े और छातीसे लगकर मिले। फिर तीनों जने खटियापर जा बैठे।

कहो दुक्खू भाई! कहो सन्तोखी भाई! कैसे चल रहा है? बाल-बच्चे सब नीके तो हैं?

दुखराम—बस, किसी तरहसे जिन्दगी बीत रही है। अनाजका दाम बढ़ गया है और कपड़े-लत्तेका दाम तो और भी बढ़ गया है। नून-तेलका तो मानो अकाल पड़ गया है।

भैया—अनाजका दाम बढ़नेसे तो किसानका फायदा है।

दुखराम—उसी किसानको फायदा है, जिसको खाने भरसे जियादा अनाज होता है। जिसकी चैतकी फसल जेठतक भी नहीं पहुँचती, उसके तो जानपर संकट है।

भैया—हाँ, ठीक कहा भैया! और हमारे किसानोंमें सौ में पाँच ही दस ऐसे घर होते हैं, जिनके पास अपने खानेसे अधिक अनाज होता है। मुदा अब देस सुतन्तर है। अब हमें यह सब दुख दूर करना होगा।

सन्तोखी—हाँ भैया! जब तुम कहते थे कि लड़ाईके बाद हिन्दुस्तान सुतन्तर हो जायेगा, तो मुझको तो बिसवास नहीं होता था, कि अँगरेज हमारे देसको छोड़कर चले जायेंगे।

दुखराम—तो, सन्तोखी भाई, तुम समझ रहे हो कि अँगरेज राजी-खुसीसे भारत छोड़के चले गये?

सन्तोखी—कुछ लोग तो ऐसा ही कहते हैं। लेकिन मुझे तो इसपर बिसवास नहीं पड़ता। भैयासे पूछते हैं, यही बतावें। मुझे तो सन्देह होता है, कि काँत देख-देखकर अँगरेज कलकत्ता-बम्बई या दूसरी जगह जाकर बैठ गये हैं। मौका मिलते ही फिर चढ़ दौड़ेंगे।

भैया—राजी खुसीसे जानेकी बात गलत है और काँत बैठानेकी भी बात नहीं है। लड़ाईके बाद ऐसी हाल हुई, कि अँगरेजोंको भागना छोड़ कोई दूसरा रास्ता न दिखाई पड़ा।

दुखराम—लेकिन उनके पास पल्टन-पुलिस थी। हाकिम-हुकुम सब उनके हाथमें थे। फिर काहे बना-बनाया घर छोड़कर भाग गये?

भैया—नदीके किनारे सेठ छदामीमलका बहुत पक्का महल था। गंगा काटने लगीं और भीतर ही भीतर नेंवके नीचेकी मट्टी बहा ले गई। सेठ छदामीमल रात ही रात बाल-बच्चे सहित भाग गये।

दुखराम—हाँ भैया, हम एक बेर अजोधाजी गये रहे। उहाँ देखा, मौनी बाबाकी रेतीमें एक गोल चौड़ा जैसी दुई पोरसाकी चीज खड़ी है। हमने पूछा—बाबा, यह क्या है? तो हमारे कुटियाके बाबा बालकिसुनदासने कहा—"नहीं जानते! ई पक्का इनारा (कुआँ) रहा। सरजुग महरानी कुल

माँटी बहा ले गईं । अब ई ढाँचा बेकार खड़ा है ।" साँच ही बेकार था भैया ! कौन सीढ़ी लगाके पानी भरने जायगा ? और, थोड़ा टेढ़ा भी हो गया था ।

भैया—उहाँ तो टेढ़ा-मेढ़ा ढाँचा खड़ा भी रहा, लेकिन अंगरेजी राज को उसकी भी उमेद नहीं । यह लड़ाई जो न करे । लड़ाईमें अंगरेज तबाह तबाह हो गये ।

दुखराम—हमसे भी अधिक तबाह हुए भैया ?

भैया—हम लोग तो पहले हीसे इनारकी पेंदी पर पड़े हुए थे। अंगरेज लोग पंचमहलाके ऊपर बैठे थे । दुनिया भरका धन-माल खींच-खींचकर उनका पंचमहला बना था । साढ़े-पाँच सालकी लड़ाईमें पीढ़ियोंका बटोरा धन खरच हो गया और ऊपरसे इतना करजका बोझ हो गया कि सम्हारे मानका नहीं ।

दुखराम—क्या कहा भैया, करजका बोझ ! अंगरेज तो दुनिया भरको करज देते रहे ।

भैया—देते रहे तब देते रहे, अब करजके बोझसे गला दब गया, साँस तर-ऊपर होने लगी । छोटी-बड़ी जितनी रेलवे लाईन तुम देख रहे हो, सबको बेंचकर खा डाला । हिन्दुस्तानपर सौ सालसे जो झूठ-फुर करजा बनाकर रक्खे थे और जिसपर हर साल करोड़ों सूद लेते थे, वह भी सूद-मूर सहित बेबाक हो गया ।

दुखराम—तो अब हमारा देस करजसे अकंटक है भैया ?

भैया—करजसे अकंटक ही नहीं, अब तो उलटा हिन्दुस्तानका दसों अरब रुपया अंगरेजोंपर चढ़ गया है ।

सन्तोखी—कहीं करजवा मार तो नहीं लेंगे भैया ?

भैया—हाँ, चाल तो चल रहे हैं । कभी लाचार दिखलाते हैं...।

सन्तोखी—टाट तो नहीं उलट गया भैया ?

भैया—टाट उलटना ही न समझो, जब आदमी अपना देना नहीं चुका सकता, तो उसे दिवालिया छोड़ और क्या कह सकते हैं ? फिर, खाली

हिन्दुस्तानका ही करज नहीं है। मिसिर, अर्जन्तीन और कहाँ कहाँसे करज लिये हुए हैं। सबसे बेसी करज तो अमिरिकाका है। करज ही नहीं, रोजका रोटी-माखन भी अमिरिकाके ही भरोसे चल रहा है।

दुखराम—इतनी करजपर भी रोटी-माखन !

भैया—बिलायतमें रोटी-माखनका वही मतलब है, जो हमारे यहाँ साग-रोटीका। अच्छा, यह तो मालूम हुआ, कि करजके मारे अंगरेज लोग खोखले हो गये हैं और उनका गला पूरी तौरसे अमिरिकाके हाथ में है।

दुखराम—मालूम हो गया। अमिरिका जो कहेगा, वही अंगरेजोंको मानना पड़ेगा।

भैया—देखा न, हिन्दुस्तानके बाजारोंमें अमिरिकाका माल भरा पड़ा है।

दुखराम—तब तो अमिरिकाकी मर्जीके खिलाफ अंगरेज नहीं जा सकते। किरिप (क्रिप्स) के आने के बखत भी अमिरिका ने बहुत जोर लगाया था !

भैया—करज और अमिरिका ही कारन नहीं है। अंगरेज यह भी जानते थे, कि अपना राज कायम करनेके लिये हिन्दुस्तानसे फिर लड़ना होगा। अबके सिर्फ निहत्थी जनता हीसे मुकाबिला नहीं होगा। हिन्दुस्ताके २५ लाख पढ़े-सीखे पल्टनिया अफसर और सिपाही अब अपनी लड़ाई लड़ेंगे।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! इसमें कौन संका ? उनमेंसे बेसी तो पल्टनसे फरक भी हो गये हैं। देसके गुहारमें ऊ कैसे पीछे रहते ?

भैया—जरमनी और जापानके फसिहोंकी हारमें सबसे बड़ा हाथ रूसकी लाल पलटनका रहा।

दुखराम—हाँ भैया ! और यह भी देखा कि जितना मंजिल दूसरी पलटन एक महीनेमें मारतीं, उतना लाल पलटन एक दिनमें। मुदा सुनते हैं कि हिटलर अभी जिन्दा है।

भैया—जिन्दा भी होता, तो भी मरेसे अच्छा न होता। मुदा वह मर गया है। जब लाल पलटन उसके भुँईधराके पास पहुँची, तो उसने अपने हाथसे

गोली मार ली।

सन्तोखी—भुँईधरामें लुकाया ! बड़ा कायर था !

भैया—कायर तो था ही, नहीं तो सामने आकर लड़ना और अपने हाथसे नहीं, सत्रूकी गोलीसे मरना चाहिये था।

दुखराम—कहाँ भुँइधरा बनाये था भैया ?

भैया—बरलिनमें, अपनी रजधानीमें; और कहाँ ? माँटीका भुँइधरा नहीं था। इतना गहरा और मजबूत भुँइधरा बनाये था, कि बड़के बमगोलोंका भी असर नहीं हो सकता था। लेकिन जब लाल पलटन दुआरपर पहुँच गई, तो क्या करता ?

दुखराम—अंगरेज और अमिरिकाकी पलटन वहाँ नहीं पहुँची थी ?

भैया—वह लोग चींटीकी चालसे बढ़ रहे थे। एक चौथाई भी हिटलर की पलटन उनसे नहीं लड़ रही थी, मुदा तो भी वह परेसान थे ?

सन्तोखी—रूसका तो बहुत नोकसान हुआ होगा भैया ?

भैया—नोकसान ? घर-दुवार, कल कारखाना, गाँव-नगरका जो नुकसान हुआ, उसका लेखा कौन लगा सकता है ? सबसे अनमोल चीज है आदमीका जीव। हिटलरके गुंडोंने रूसके सत्तर लाख आदमियोंको मार डाला।

दुखराम—सत्तर लाख सिपाही ?

भैया—सिपाही बीस-पचीस लाखसे बेसी नहीं, बाकी तो गाँव-सहरमें रहनेवाले मरद-मेहर, बूढ़ा-बच्चा जो कोई सामने आया, सबके खूनसे हाथ रँगा।

सन्तोखी—अतताई !

भैया—अतताई, इसमें कोई संका नहीं। रूसके कमेरोंको भारी बलिदान देना पड़ा।

दुखराम—रूसवाले कमजोर तो नहीं पड़ गये ?

भैया—कमजोर नहीं पड़े। लेकिन इसकी बात फिर कहेंगे। अभी हम लोग क्या बात कर रहे थे ?

दुखराम—यही कि अंगरेज काहे हिन्दुस्तान छोड़ गये ! हमको तो मालूम

हो गया भैया कि अंगरेज राजी-खुसीसे नहीं भागे।

भैया—हाँ, भागना छोड़ और कोई रस्ता नहीं था। करजके बोझसे लदे, दाने-दानेको मुहताज, अमिरिकाका कुरुख, हिन्दुस्तानका हर तरहसे सुतंतर होनेका संकलप, रूसका जनताके राज बनानेपर जोर—सबने मिलकर पासा पलट दिया। मुदा जाते-जाते भी अंगरेज जितना भी अपकार हो सका, करके गये।

सन्तोखी—अपकार तो जरूर कर गये भैया!

भैया—बहुत अपकार! हिन्दुस्तानका दो टुकड़ा कर दिया।

दुखराम—लेकिन दो टुकड़ा तब हुआ, जब कंगरेसने माना। और तुम भी तो, भैया कहते थे, कि जब लोग चाहते हैं, तो बँटवारा कर लेना चाहिये।

भैया—मुदा इसके लिये मजबूर अंगरेजोंने किया। अंगरेजोंने हिन्दू-मुसुलमानका बोट अलग कर दिया। देसभगत मुसुलमानोंके लिये बोट पाना मुसकिल हो गया, काहेसे कि सरकारके पिट्ठू हिन्दू-मुसुलमानमें झगड़ा कराके अपनेको पक्का मुसुलमान दिखाने लगे। जितने अधिक हिन्दू-मुसुलमान दंगे होते रहे उतनी ही उनकी नेतासाही बढ़ती रही।

दुखराम—मुदा मुसुलमान पउलिक (पब्लिक)का मन भी तो वैसई बन गया?

भैया—"आग लगा जमालो दूर खड़ी" की कहावत नहीं सुनी? हिन्दू-मुसुलमानका बोट बाँटा था अंगरेजोंने इसी खियालसे। जो अन्तमें भी उनके मनमें ईमन्दारी होती, तो एकट्ठा करके बोट लेते। लेकिन उन्होंने हर तरहसे फूट डालनेवाले मुसुलमानोंका पच्छ लिया। उनका मन था, कि देसका बँटवारा करके हिन्दुस्तानको निर्बल बना दें।

दुखराम—तो उन्होंने जान-बूझके ऐसा किया।

भैया—जो इसमें कुछ संका हो तो दूसरी बात देखो। जब तक अंगरेज रहे, तब तक उन्होंने राजाओंको छूट दे दी थी और वह मनमाना अपनी परजा पर जुलुम करते थे। अंगरेज चलने लगे, तो उन्हीं राजाओंको

कर्ता-धर्ता बनाकर गये और परजाके हकका कुछ खियाल नहीं किया।

संतोखी—यह बात तो परतच्छ हैदराबादमें देखी जाती है !

भैया—हाँ, हैदराबादका नवाब बहुत दूरका सपना देख रहा है। कितने दूसरे राजा भी "परम सुतंत्र, न सिरपर कोऊ" बनना चाहते हैं। कासमीरमें भी राजा दाव देख रहा था, मुदा जब जान लेकर सिरी नगरसे भागना पड़ा, और कोई रस्ता दिखाई नहीं पड़ा तब सेख अब्दुल्लाको जेलसे छोड़कर मुखिया बनाया और हिन्दुस्तानमें आनेकी बात मानी।

सन्तोखी—अब्दुल्ला तो धोखा नहीं देगा भैया ?

भैया—अब्दुल्ला नाम है, इसीलिये न कह रहे हो ? और हिन्दुनके भीतर कितने भभीखन हैं, इसको नहीं जानते ? अब्दुल्ला बहुत पक्का आदमी है। वह कमेरोंका आदमी है। वह जोंकोंका नहीं कमकरोंका राज चाहता है।

दुखराम—मरकस बाबाका रस्ता मानता है कि नहीं भैया !

भैया—हाँ, मानता है, मरकस बाबाके रस्ते पर चलता है।

दुखराम—बस बस ! जो मरकस बाबाका रस्ता मानता है, मेरी समझमें वह विसवासघात नहीं करेगा !

भैया—हाँ, इसमें कोई संदेह नहीं। अब्दुल्ला जो धनियोंका आदमी होता, तो बदलनेका डर हो सकता था। वह किसान, मजूरकी भलाई चाहता है। उसके कई बड़े बड़े साथी मरकस बाबाके पक्के चेले हैं। वह अपना सरबस दावपर रखके आया है। वह जानता है कि जो कासमीर पाकिस्तानमें गया, तो पाकिस्तानी लुटेरे और जोंकें कासमीरको नोच-नोचकर खा जायेंगी। हाँ, मुदा उसके हाथको मजबूत करनेकी जरूरत है।

दुखराम—हाथ कैसे मजबूत होगा ?

भैया—कासमीरके राजाका मन अब भी साफ नहीं है। उसने अब्दुल्ला और उनके साथियोंको मंतिरी नहीं माना।

सन्तोखी—तो मंतिरी कोई दूसरा है ?

भैया—हाँ, महामंतिरी किसी दूसरेको बनाके रखा है।

दुखराम—तो राजाके पेटमें छूरी है। "रस्सी जल गई, ऐंठन नहीं गई" इसीको कहते हैं। सिरीनगर जब दुस्मनके हाथमें जानेवाला था, तो परान लेकर कायरकी भाँति भगा न ?

भैया—और जम्मू भी जाने ही वाला था, मुदा हमारे भाइयोंने जाकर वहाँ अपना खून बहाया और उसे संकटसे बचाया। अब राजाका कुछ न चलेगा। कासमीरी और हिन्दुस्तानी अपना खून इसलिए नहीं बहा रहे हैं, कि इस सड़े रजुल्लेपर चँवर ढुरे।

दुखराम—हाँ भैया ! रजुल्लोंका तो नाम सुनकर मुझे जर चढ़ आता है। सेख अब्दुल्लाका पाया जिससे मजबूत हो, वही करना चाहिए।

भैया—पहले तो सरहद-पारके लुटेरोंको मारकर भगाना है। मुदा इतने भरसे काम नहीं खतम होगा। पाकिस्तान जी-जानसे कासमीरको धर दबानेमें लगा हुआ है। कासमीरके बसिन्दे बहुत अधिक मुसुलमान हैं। पाकिस्तानी उनमें झूठी झूठी बात फैलाते हैं; कहते हैं—हिन्दुओंने लाखों मुसुलमानोंको मार डाला। बहू-बेटियोंकी इज्जत ले ली; उनके साथ मुसुलमानोंकी कोई बात नहीं हो सकती।

दुखराम—यह बात तो झूठ ही है न भैया ?

भैया—बहुत झूठ है, मुदा थोड़ी थोड़ी सच भी है। हिन्दुओंने तभी कुछ किया जब मुसुलमानोंने पाकिस्तानके इलाकोंमें जुलुम किया।

दुखराम—तो, बदला मिल गया, खेल खतम। फेर काहे हिन्नू सभा अउर सन्त-महन्त लोग आग लगाना चाहते हैं ?

सन्तोखी—हाँ भैया, हमको भी एक बात पूछना है। ई करपतरी महतमा कहाँसे ऊपर भये हैं ?

दुखराम—अउर ई डालूमियाँ कबसे गोरच्छाके झंडा उठाये हैं ?

सन्तोखी—दू मर्दे ! मियाँ होके गोरच्छा करे तो कोई खराब बात है ?

भैया—आपसमें बहसा-बहसी करनेका काम नहीं।

दुखराम—बहसा-बहसी ना सही, लेकिन जब पचखाके जिमदार सरब-दमनसिंहको करपतरी महराजका झंडा उठाये देखा, तो हमें तुरन्त गोसाईं जी

की चउपाई याद आई "जानि न जाय निसाचर माया ।" जे सरबदमन परजाका खून चूस-चूस मोटे हुए और साहबनकी खुसामद करते-करते जिनगी बिता दिये, वह भला कबसे गऊभगत और देसभगत हो गये !

भैया—हाँ, ठीक कह रहे हो । करपतरी महातमा और डालमियाँ सेठका देसभगतीमें कहीं पता नहीं था, जब अंगरेज राज करते थे । अब जब कँगरेसने राज सम्हाला, देस सुतन्तर हुआ, तब आँखमें धूल झोंकनेके लिए गोरच्छाका झंडा उठा लिए हैं, सतियागरह कर रहे हैं ।

दुखराम—सतियागरह नहीं भैया ! ई हतियागरह है । हम लोगनके बेकूफ-गँवार समुझिके आँखमें धूल झोंकना चाहते हैं । राजा-रजुल्ली, सेठ-सेठुल्ली, संत-महंत सबका धरमातमापन देख लिया है । हम इनके फेरमें नहीं पड़ेंगे । है न भैया ?

सन्तोखी—मुदा करपतरी महतमाको यह क्या सूझा ? सुनते हैं, वह उतराखंडमें तपसिया करते थे ।

दुखराम—तुम भी, संतोखी, रह गये बकलोल ही ! सुना नहीं है "दुनिया ठगिये मक्करसे, रोटी खाइये घी सक्करसे" ?

सन्तोखी—नहीं, ऐसा न कहो दुक्खू भाई ! सुनते हैं, वह बड़े निरलोभ महतिमा हैं । उनमें बहुत दया माया है ।

दुखराम—दया-मायाकी बात न करो सन्तोखी भाई ! कमेरोंके गला रेतनेवाले सेठों-जिमदारोंका जो पायक बने, उसको दया-माया कहाँ ?

भैया—दया-मायाका परतोख तो यही समझो, जे जब दाना-दानाके बेहाल हो लाखन आदमी बंगालमें मर रहे थे और समूचे भारतमें अन्नके लिए 'तराहि तराहि' मची थी, तब करपतरी महराज दिल्लीमें सैकड़ों मन अनाज और कनस्तरका कनस्तर घी स्वाहा कर रहे थे ।

दुखराम—हतियार ! भैया चाहे तुम नराज हो, मुदा हम तो यही कहेंगे ।

भैया—अपना मुँह नहीं खराब करना चाहिये दुक्खू भाई !

दुखराम—कासमीरकी बात, भैया । बीच हीमें छूट गई......

भैया—कासमीरकी बात यही है, कि पाकिस्तानी गोइन्दा कासमीरके मुसुलमानोंको हिन्दुओंके जुलुमका बखान करके भरमाना चाहते हैं। हम लोगोंको अपने यहाँ मुसुलमानोंके साथ कोई अनियाव नहीं करना चाहिये।

दुखराम—अनियावकी कौन बात है भैया? अब तो झगड़ा लगानेवाले मुसुल्मान भी ठंडे पड़ गये हैं। वह समझते हैं कि हमारा जनम-करम हिन्दुस्तानमें है, दूसरी जगह कोई ठौर ठिकाना नहीं। उमरपुरके कालूमियाँ बेचखोंचके लड़िका-परानीके साथ लाहौर गये थे। वहाँ गुंडोंने मुँह मलके पैसा-कौड़ी तो ले ही लिया, बेकत-परानी कहाँ गई, इसका भी पता नहीं; रोते-कलपते लौटके आये हैं। कहते हैं "यह माँटी अब पुरखोंकी कबुरके पास लगे तो अच्छा।"

भैया—वहाँ कालूमियाँ जैसोंको कौन पूछता है? वहाँ पुछार है तो खाली बड़ी-बड़ी जोंकनकी। मुसुलमान जोंक ही नहीं, हिन्दू सेठको भी ठेका मिला है।

दुखराम—इहाँ गोरच्छा और उहाँ ठीका......बाह डालूमियाँ बाह!

भैया—हम लोगोंको हिन्दुस्तानमें मजहबका झगड़ा नहीं होने देना चाहिये। सब कमेरोंको मिलके रहना चाहिये, तब कासमीरमें पाकिस्तानी गोइन्दा कुछ नहीं कर सकेंगे। इसके साथ ही सेख अबदुल्लाको मरकस बाबाके रास्तेपर काम करनेकी छूट मिलनी चाहिये। जगिरदारी, तलुकदारीका नाम भी नहीं रहने देना चाहिये। नदीसे सिंचाईकी नहर निकालनी चाहिये। कारखाना चलाने और घर-दुवार उजियार करनेके लिये बिजुली निकालनी चाहिये। मेवाका बाग लगाना चाहिये। जिसमें दस-गुना, बिस-गुना साल-दुसाला बने बिके, ऐसा इंतिजाम करना चाहिये।

दुखराम—माने जौन तरीकासे कमेरनके पास बेसी धन आवै, वह काम करना चाहिए। जो ऐसा हो तो मुसुलमान कमेरनको कौन फोड़ सकता है?

भैया—बस, यही रास्ता है दुक्खू भाई! इसीसे कासमीरके सेर सेख अबदुल्लाका हाथ मजबूत हो सकता है।

दुखराम—सेरको सवा सेर करना चाहिये । उनका हाथ जरूर मजबूत करना चाहिये ।

सन्तोखी—तो तुमको भैया बिसवास है न, कि अंगरेजोंका पवरा फिर लौटके नहीं आवेगा ?

भैया—नहीं आवेगा, नहीं आवेगा । देखा न हम लोगोंका चक्करवाला तिरङ्गा झंडा अब सब थाना-कचहरीके ऊपर फहरा रहा है ।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! मुदा ई महतमाजीका चरखा क्यों झंडे परसे अलोप हो गया ?

दुखराम—भैयाको तकलीफ मत दो, ई हमसे सुनो संतोखी ! हम बतावैं । हमको भी का मालूम, सोमारूने बतलाया ।

सन्तोखी—कौन सोमारू ? वही सदाफलका बेटा, जो रेलवइ ऐंजनमें काम करता है ?

दुखराम—हाँ, उसीने बतलाया कि अब हमारा देस सुतन्तर हो गया । आगे कल-मसीनका काम चलेगा । रेलकी लाईन बहुत बढ़ाई जायगी । खेत जोतनेके लिये भी मोटरका हल आयेगा । जानते हो न ? कल-मसीनमें सब जगह चक्का-चक्का होता है । वही चक्कर अब हम लोगोंकी पताकापर आया है ।

सन्तोखी—महतिमाजीको कैसा मालूम हुआ होगा ? सब जगह कल-मसीन चल जायगी, तो चरखेको कौन पूछेगा ?

दुखराम—महातिमाके जिनगीभर चरखा रहैगा । फिर वह लौटकर देखने थोड़े आवेंगे, कि अपसोस होगा ?

भैया—महातिमाके लिये ऐसा मत कहो दुक्खू ! उन्होंने देसका बहुत बड़ा काम किया । आँखके देखते ही देस सुतन्तर हो गया, यही उनके लिये संतोखकी बात है । ऐसे तो बाल-बुद्धि किसमें नहीं होती ? हमारा देस अब सदाके लिये सुतन्तर है । अंगरेज या कोई दूसरा फिर यहाँ लौटकर नहीं आ सकता । मुदा अभी दो बड़े-बड़े काम हमें करने हैं ।

दुखराम और सन्तोखी—कौन काम भैया !

भैया—अब यह बात कल कहेंगे। "कथा समापत होतु है, सुनहु बीर हनुमान।"

अध्याय १६

दुनिया-जहानकी बात

भैया—भाई लोग कहाँ भूल गये थे? मैं तो समझता था कि कहीं अधकुंभीके मेलाकी तैयारी तो नहीं हो गई?

दुखराम—अधकुंभीके मेलासे भी मुस्किल बात है भैया! दूकानसे नून अलोप हो गया। ई तो सन्तोखी भाई साथे रहे, कितना अगवार-पिछवार चक्कर लगानेपर पावभर मिला और सो भी पाँच पैसाकी जगह रुपैया सेरके भावसे। ऐसी चोरवाजारी तो नहीं देखी थी?

भैया—जब तक जोंकोंकी चलती-बनती रहैगी, तब तक सब देखनेको मिलैगा।

दुखराम फिर गाँधीमहतमा काहे कहते हैं, कि जोंकोंपर से सब अंकुस उठा दिया जाय? चीनीपरसे अंकुस उठा लिया गया। अनाजपरसे अंकुस उठाया जा रहा है। महतिमाजीका रामराज जोंकोंके लिये ही तो नहीं है?

सन्तोखी—महतिमा जो छुठियाते नहीं औ हिमालयके खोहमें जाके भजन-भाव करते, तो अच्छा था। जोंकनके ऊपरसे कुल अंकुस उठ गया तो गरीबोंकी मौत है।

भैया—ऐसा न कहो, सन्तोखी! महतिमा सब छुठियानेकी ही बात नहीं कहते। तुमको मालूम नहीं है कि हिन्दू-मुसुल्मानमें मेल करानेके लिये वह कितना काम कर रहे हैं।

सन्तोखी—मुदा भैया, एक बात सुनके तो हमारा मन सिहर गया। मनोरी साहुका लड़का कह रहा था, कि जल्दी ही फिर लड़ाई होनेवाली है। बाबूजी तो दो ही तीन लाख कमाकर रह गये, बाकी मैं अबके चालीस-पचास लाखसे कम कमाये बिना नहीं रहूँगा। मेरा तो कलेजा काँप रहा था।

तुम्हींने कहा था भैया, कि रूसमें ७० लाख आदमीकी जान इस लड़ाईमें गई। आगेकी लड़ाई तो और भी खराब होगी?

भैया—भय मत खाओ सन्तोखी भाई! लड़ाई इतना ठट्ठा खेल नहीं है, कौन किससे लड़ेगा?

सन्तोखी—साहुके लड़केने खबरका कागज पढ़कर कहा कि रूस और अमरीकामें कचवाबध लड़ाई होने जा रही है।

भैया—हाँ, अमरीका की जोंकोंके मुँहमें खून लग गया है।

दुखराम—हिटलरवा की तरह इनकी भी मत तो नहीं मारी गई? अब अमरीकाकी जोंकें दुनियाकी दिगविजय करना चाहती हैं क्या?

भैया—गाल तो वैसी ही बजा रही हैं।

दुखराम—हिटलरवा भी पहले गाल ही बजाता था, मुदा अन्तमें उसने दुनियाको लड़ाईमें ढकेल ही दिया औ हमारे देसके भी आध करोड़ आदमियोंकी जान गई।

भैया—लेकिन अमेरिकाकी जोंकें हिटलर जैसी पागल नहीं हैं।

दुखराम—मुदा सुनते हैं भैया, अमरीकाके पास अणुआँ बम है। एक बम गिरानेसे कलकत्ता ऐसी नगरीमें चिड़िया-चुनमुन कोई नहीं बच सकता।

भैया—हाँ, वह सबसे खतरेका हथियार है, इसमें संका नहीं। एक बमसे पचास-साठ हजार आदमीका जान गंवाना कम नहीं। मुदा, दुक्खू भाई, यह भी बूझे रहो, कि अमरीकाने काहे उस हथियारको जर्मनपर नहीं छोड़ा?

सन्तोखी—हमारा भैने (भांजा) सोहनलाल कहता था, कि जापान काला आदमी था, इसीलिये अमिरिकाने उसके हिरोसिमा नगरपर अणुआँ-बम फेंका।

भैया—यह भी हो सकता है। लेकिन खाली इसी कारन से नहीं। अमिरिका समझता था, कि जो जर्मनी के एक भी सहर पर इस बमको फेंका, तो हिटलरवा बिख-माहुरका बतास भरके बिलाइत पर उभिलै देगा,

तुम्हींने कहा था भैया, कि रूसमें ७० लाख आदमीकी जान इस लड़ाईमें गई। आगेकी लड़ाई तो और भी खराब होगी?

भैया - भय मत खाओ सन्तोखी भाई! लड़ाई इतना ठठा खेल नहीं है, कौन किससे लड़ेगा?

सन्तोखी—साहुके लड़केने खबरका कागज पढ़कर कहा कि रूस और अमरीकामें कचवाबध लड़ाई होने जा रही है।

भैया—हाँ, अमरीका की जोंकोंके मुँहमें खून लग गया है।

दुखराम—हिटलरवा की तरह इनकी भी मत तो नहीं मारी गई? अब अमरीकाकी जोंकें दुनियाकी दिगविजय करना चाहती हैं क्या?

भैया—गाल तो वैसी ही बजा रही हैं।

दुखराम—हिटलरवा भी पहले गाल ही बजाता था, मुदा अन्तमें उसने दुनियाको लड़ाईमें ढकेल ही दिया औ हमारे देसके भी आध करोड़ आदमियोंकी जान गई।

भैया—लेकिन अमेरिकाकी जोंकें हिटलर जैसी पागल नहीं हैं।

दुखराम—मुदा सुनते हैं भैया, अमरीकाके पास अणुआँ बम है। एक बम गिरानेसे कलकत्ता ऐसी नगरीमें चिड़िया-चुनमुन कोई नहीं बच सकता।

भैया—हाँ, वह सबसे खतरेका हथियार है, इसमें संका नहीं। एक बमसे पचास-साठ हजार आदमीका जान गंवाना कम नहीं। मुदा, दुक्खू भाई, यह भी बूझे रहो, कि अमरीकाने काहे उस हथियारको जर्मनपर नहीं छोड़ा?

सन्तोखी—हमारा भैने (भांजा) सोहनलाल कहता था, कि जापान काला आदमी था, इसीलिये अमिरिकाने उसके हिरोसिमा नगरपर अणुआँ-बम फेंका।

भैया—यह भी हो सकता है। लेकिन खाली इसी कारन से नहीं। अमिरिका समझता था, कि जो जर्मनी के एक भी सहर पर इस बमको फेंका, तो हिटलरवा बिख-माहुरका बतास भरके बिलाइत पर उझिल देगा,

औ बिलाइतके छोटेसे मुलुक में "रहा न कुल कोउ रोवनिहारा" हो जायगा ?

दुखराम—हिटलरके पास बिख-माहुरका ऐसा बतास था, तो काहे नहीं उसने चलाया।

सन्तोखी—बूझे नहीं, दुतरफा डर है। दोनों निरबंस हो जाते, तो जीत किसकी हार किसकी ?

भैया—हाँ यही बात थी। जापान अमरीका और बिलाइतसे बहुत दूर था, इतना दूर कि वहाँ तक जापानी उड़नखटोले बिखका बतास नहीं पहुँचा सकते थे, इसीलिए अमरीकाका हियाव बढ़ा।

सन्तोखी—यह तो अततार्ईका काम हुआ भैया! अमरीकाने अपने साथी-संगीसे पूछके ऐसा किया कि अपने मनसे ?

भैया—खाली चर्चिलसे पूछा।

दुखराम—अहिरावनसे। हम तो भैया; चरचिलाको दानो समझते हैं; जो रामजीको औतार लेना था, तो इसी दानवके खातिर औतार लेना चाहता था। उसकी एक-एक बातमें बिख और उसकी एक-एक चालमें सौ-सौ पातक होता है। तो स्तालिन बीरसे नहीं पूछा इस बारेमें।

भैया—पूछनेकी बात पूछते हो! उसीकेलिये तो अमरीकाने जल्दी-जल्दी अणुअ! बम गिराया। उसने देखा, जर्मन कि लड़ाईमें तो दुनिया-जहानने देख लिया, जे रूसकी पल्टनके सामने अमिरिकाकी पल्टन पसङ भी नहीं। चीनके मंचूरिया सूबामें जापानने छाँट-छाँटकर बीर-बंका पल्टन रखी थी। अंगरेज और अमिरिकाकी पल्टन जापानकी छँठवी पल्टनसे सालों लड़ती रही और इंच-इंच भर हटाते रहे; उधर जब रूसने जापानके ऊपर तेगा उठा लिया, तो तीरकी तरह घास-मूलीकी तरह काटते-मारते जापानियोंके सारे वीर बंकापनको धूलमें मिला दिया।

दुखराम—हूँ! तो अमिरिकाने समझा, कि यहाँ भी रूसवाले मीर बन जायेंगे और दुनिया जान जायेगी, कि उनमें कितनी बीरता है। इसीलिए यह अततार्ईपना किया।

मैया - और नहीं तो। जापान तो हथियार डालने ही जा रहा था।

सन्तोखी—कहते हैं, अमिरका ढेरका ढेर अणुश्रों-बम जमा कर रहा है। साहुका लड़का कहता था, कि ऐसा बम अमिरकाके ही पास है। छ घंटेमें वह सारे रूसको खतम कर देगा।

भैया—रूस, जानते हो, कितना बड़ा देस है। हिन्दुस्तान ऐसे सात देस उसमें समा जायेंगे। ८ हजार कोस लम्बा, ४ हजार कोस चौड़ा देस है। इतना बम कहाँ धरा है, कि धाप धापपर उसे गिराया जाय। फिर, रूसभी हाथपर हाथ रखकर बैठा नहीं है। उसके पासभी ऐसे बम और उससेभी भारी-भारी हथियार हैं।

सुखराम—तो यह अँगरेज काहे बीचमें फुदक रहे हैं?

भैया—ठीक कहते हो, अमिरिका और रूसतो बड़े-बड़े देस हैं। वहाँ सब लोग खाली सहर हीमें नहीं बसते हैं। बिखके बतास और बमसे गाँवके आदमी बचभी सकते हैं, मुदा एक-चौथाई अँगरेज तो लंदन ही में बसते हैं। पाँच सात और बड़े सहरोंको लेलो, तो सौमें से अस्सी-नब्बे अङ्गरेज वहीं बसते हैं। फिर जो ऐसे बमोंकी लड़ाई हुई और बिख बतास गोलाभी चला, तो बिलाइतमें तो सचमुच ही "रहा न कुल कोउ रोवनिहारा"हो जायगा।

दुखराम—यह देखकर तो, भैया मुझको बुझाता है, कि यह सब और कुछ नहीं, खाली बनरघुड़की है।

भैया—और रूसमें भी "इहाँ कुँहड़ बतिया कोउ नाहीं" वाली बात है।

दुखराम—तो उहाँ कोई डरता-वरता नहीं न भैया?

भैया—तनिक भी नहीं। "हाथी चलै बजार, कुत्ता भूँकै हजार"।

सन्तोखी—भला, सुनते हैं कि अमिरिका रूसको चारों ओरसे घेर रहा है।

भैया—हाँ, घेरनेकी कोसिस कर रहा है। जापानको अपनी जिमदारी बनाये है। कोरियामें पल्टन बैठाये है। चीनमें जोंकोंकी सरकारकी पीठ ठोंक रहा है, और करोड़न-करोड़न रुपया बरसा रहा है। इरानमें भी रुपया बोके

वहाँकी जोंकोंको हथिया रहा है। यही तुर्की और यूनानमें कर रहा है। इरोपके पूरबवाले देसोंमें दाल नहीं गली तो खिसियानी बिल्लीकी तरह खंभा नोचता है। इटली, फ्रांस, सब जगह छुन्द बन्द कर रहा है।

दुखराम—तब तो, भैया, यह लड़नेकी ही तैयारी है।

भैया—लड़नेकी तैयारी नहीं! वह जानता है कि जब तक रूस और उसके साथी देसोंके ऊपर सीधे चढ़ाई नहीं होगी, तब तक रूस नहीं लड़ेगा। उधर दूसरे देसोंमें सभी जगह कमेरे जोंकोंका टाट उलट देना चाहते हैं। जोंकोंमें अकेले इतनी तागत नहीं, कि अपना बचाव करें। अमिरकासे चानीका जूता उधार ले लेके वह अपने यहाँके देसबेंचुआ नेताओंको खरीद रही हैं और जोंक-राजको बचा रही हैं।

दुखराम—सुनते हैं, चीनमें अमिरका जोंकोंकी बड़ी मदत कर रहा है।

भैया—मदतकर रहा है, मुदा उसका कोई फल नहीं हो रहा है। चीनके देस-भगत लोग और उनकी पलटन चारों ओरसे जोंकोंपर पड़ी है। जोंकें एक जगह बचाव करने जाती हैं, तो दूसरी जगह चढ़ाई हो जाती है। नाकमें दम है। चीन इतना बड़ा दलदल है, वहाँ अरबों रुपये देने पर कोई पता नहीं लगता कि कहाँ आया कहाँ गया। अमिरका नया-नया हथियार भेजता है, और पलटनकी पलटन हथियार लिये-दिये देस-भगतोंके पास चली जाती है। किसान-मजूर चारों ओर बिगड़ गये हैं।

सन्तोखी—तब तो चीनमें जोंकोंका आगम अच्छा नहीं मालूम पड़ता।

भैया—चीनके लोग समझ गये हैं, कि पहले जपान हमें गुलाम बनाना चाहता था, और अब अमिरकाकी डालरशाही। वह सुतन्तर रहना चाहते हैं।

दुखराम—औ कोरियामें क्या बात है भैया?

भैया—उत्तरमें आधे कोरियाका इन्तिजाम रूसकी देख-रेखमें होता है। वहाँ किसान-मजूर, लिखे-पढ़े लोग खूब सुखी हैं। नये तरीकेसे खेती की जाती है। गाँव-गाँव सहर-सहर इस्कूल-अस्पताल हैं। पूरा परजा-राज बन गया है, जिसे दक्खिनी कोरियाके लोग देख-देख सिहाते हैं, और वैसे ही

अपने यहाँ भी बनाना चाहते हैं। अमिरका देस-भगतोंको पकड़-पकड़के जेहलमें डाल रहा है।

दुखराम—वहाँ भी अमिरकाको रुपिया बरसानेका ही आसरा है। मुदा समूची दुनियामें कितने दिन तक अमिरका रुपिया बरसाता रहेगा!

सन्तोखी—जिस दिन रुपियाकी बरसा बन्द होगी उस दिन जोंकोंकी क्या दसा होगी?

भैया—जोंकें छटपटाके मरेंगी।

दुखराम—तो इस बखत दुनियाकी सारी जोंकें अमिरकाकी जोंकोंका आसरा लगाये बैठी हैं।

भैया—वही दुनियाकी जोंकोंका सिरताज है। चारों ओर हाथ-पैर मार रहा है। उसने लड़ाईमें खूब रुपिया कमाया है।

दुखराम—काहे नहीं कमायेगा? अमिरकामें लड़ाई नहीं हुई। पलटन भी उतनी मरी थोड़े ही होगी।

भैया—हाँ, लड़ाईमें अमिरका एकका नौ बनाता रहा, मुदा कुबेरका अखुट खजाना उसके पास नहीं है।

दुखराम—तो रूस चुपचाप बैठा देख रहा है, कि अमिरिका कितना अरब-खरब रुपिया दुनियामें बोता है। उधर देस-भगत लोग भी अपना बल-बूता लगा रहे हैं। दस बरस, बीस बरस कितने समय तक चाँदीके भरोसे दुनियाकी जोंकोंको पोसता रहेगा? आखिरमें हाथ खींचना ही पड़ेगा।

भैया—चीनमें तो एक तरहसे हाथ खींच ही रहा है। चीनकी जोंकोंको जितने रुपयेकी जरूरत है, उतने दे नहीं पाता। इसीलिये वहाँकी जोंकोंकी बुरी दसा है।

सन्तोखी—हमको तो सन्तोख यही है भैया, कि रूस अँणुआ-बमसे नहीं डरता और उसके पास भी अँणुआ-बम और दूसरे बड़े-बड़े हथियार हैं। रूसी जोधा तो बीर बंका हई हैं।

दुखराम—इसीलिये लड़ाई नहीं होगी। यह खाली अँगरेज और अमिरकाकी बनरघुड़की है।

भैया—अँगरेजका काहे नाम लेते हो ? आजकल वह खाली सिखंडी रह गया है। ढोलके भीतर खाली पोल है।

दुखराम—तब भी वेहया बनके हर जगह पंच बनना चाहता है।

सन्तोखी—लेकिन सुनते हैं, कि अंगरेज पाकिस्तानसे बहुत साँठ-गाँठ कर रहा है। पाकिस्तानको लेके कहीं फिर तो हिन्दुस्तानपर चढ़ाई नहीं करेगा ?

भैया—'लड़ो भतीजो पाछु दो पूतो' की कहावत नहीं सुनी है ?

सन्तोखी—'आनका मैदा आनका घीव भोग लगावें बाबाजीव' वाली बात मालूम होती है।

भैया—जो अंगरेजोंको अपना घीव मैदा लगाना होता, तो हिन्दुस्तान छोड़के काहे जाते ? और पाकिस्तान कौन बिरतेपर हिन्दुस्तानसे लड़ाई करेगा ? न उसके पास लोहेका कारखाना है, न हथियारका करखाना है, न कोयला, न तामा, न उतने हुसियार कल-मसीन जाननेवाले, न उतने इलिम-विद्दा सीखे लोग हैं। ऊपरसे एक टुकड़ा पूरुबमें लटक रहा है, तो दूसरा टुकड़ा पच्छिममें। पागल कुत्ता काटे नहीं है, कि जिन्ना बुढ़ौतीमें सब करे-धरेपर लीपा-पोती कर देगा। अभी सुना है न, हिन्दुस्तानका इतना करजा पाकिस्तानपर हो गया है कि पचास-सालकी किस्तमें भी बेबाक करना मुस्किल है

सन्तोखी—कहीं भैया, करजा मार तो नहीं लेगा ? सूद तो ठीक-ठेकाने-से लगाया गया है ? अब उनके साथ मोह-मुरौअत काहेकी ?

भैया—महाजन कमजोर होता है, तभी करज मारी जाती है। हिन्दुस्तान जन-धन-बल सबमें जिन्नाके पाकिस्तानसे बहुत बड़ा है।

सन्तोखी—सुनते हैं, कि पाकिस्तानकी आमदनी पलटनके खरचा हीमें चली जा रही है। उसको इतनी पलटनकी क्या जरूरत है, जब हिन्दुस्तानसे लड़के पार नहीं पाना है ?

भैया—जिन्नाका पाकिस्तान बड़े फेरमें पड़ा है। पलटनसे लोगोंके निकालनेपर बेरोजगार हो वे काटने दौड़ेंगे। उधर सरहद पारवाले पठान

मुँह बाये हैं। अंगरेज हरसाल कई करोड़ रुपिया उनको सुंघ'ते रहे। तब त ोहिन्दुस्तानका बड़ा खजाना था, अब वह पाकिस्तानके माथे है।

सन्तोखी—जिन्नाने हिन्दुस्तानसे भी कुछ देनेके लिए कहा था न?

भैया—कहा था, मुदा हिन्दुस्तान काहेको देगा! पठानोंका इलाका हिन्दुस्तानकी सरहद पर थोड़े ही है।

सन्तोखी—तब तो भैया, पेसावरका इलाका पाकिस्तानमें चला गया यह अच्छा ही हुआ, नहीं तो हमीं लोगोंको सारी रुपिया सुंघाइ करनी पड़ती?

भैया—अभी तो पठानोंको कासमीरमें लूटनेके लिए भेज दिया है। जब वहाँसे भगा दिये जायेंगे और फिर जिन्नासे खोरिस मागेंगे, तब मालूम होगा।

दुखराम—पठान लोग अपना पठानिस्तान माँग रहे हैं न? जिन्ना उसे कैसे रोकेंगे?

भैया—तभी तक रोकेंगे, जब तक दीन-धरमके नामपर लागोंको पागल कर सकेंगे।

सन्तोखी - लेकिन सुनते हैं कि पाकिस्तान सारी दुनिया-जहानके मुसलमानोंको एक करके लड़ना चाहता है।

भैया—भूल गये, मैंने कहा न था, कि सबसे बेसी मुसलमान हिन्दुस्तान ही में रहते हैं। नाम गिनानेको चाहे आठ मुसलमानी राज गिन लो, लेकिन हैं वह एक-एक दो-दो जिलाके बराबर। और सभी पिछलग्गू। आज कलके जमानेमें लाठी और छुराकी लड़ाई नहीं है। 'समूचे दुनियाके मुसलमान' खाली नाम ही बड़ा है। इससे घबरानेकी जरूरत नहीं।

सन्तोखी—मुदा 'घरका भभीखन लंका ढाहे', कहीं हिन्दुस्तानके भीतर के मुसलमान तो धोखा नहीं देंगे?

भैया—पन्द्रह अगस्तके बाद मुसलमानोंके चाल ब्योहारमें तुम्हें फरक मालूम होता है कि नहीं?

सन्तोखी—फरक तो बहुत है भैया। अब न कहीं मसजिदके सामने

बाजाकी बात उठाते हैं, न छुरा-खंजर दिखाते हैं। बलुक भाई-चारा बढ़ाने-की पूरी कोसिस करते हैं।

भैया—भिभीखनको तो हमारे यहाँ जगह नहीं। भिभीखनके लिए सीधे पाकिस्तानका रास्ता बता देना चाहिये। नहीं बतानेपर भी वे चले ही जा रहे हैं। बाकी जो मुसलमान हिन्दुस्तानमें रहनेका निश्चय कर चुके हैं, वह भली-भाँति जानते हैं, कि जो हमने कुछ भी तीन-पाँच किया, तो भरता बन जायेंगे। पाकिस्तानकी सरहद बहुत दूर है। वहाँ तक जान बचाके भागना भी नहीं हो सकता।

दुखराम—यह तो मैं भी समझता हूँ, मुसलमानोंकी भलाई इसीमें है कि यहाँके लोगोंसे मिताई करें, अपनी जनम धरतीसे सनेह राखें।

भैया—इतना ही नहीं। मुसलमानोंको वही बोली-बानी, वही पर-पोसाक, वही खान पान अपनाना होगा, जो कि हिन्दुओंका है। बिलाइतमें ईसाई रहते हैं, यहूदी भी रहते हैं, लेकिन उनको देखके कोई नहीं कह सकता, कि वह दो दीन धरमको मानते हैं।

दुखराम—दीन-धरम अपने मनकी बात है भैया, जिसका जो मन हो वैसा माने। मुदा हर जगह अपनेको नक्कू बनाना ठीक नहीं है न भैया!

भैया—हाँ धरमकी जगह मंदिर-महजिद गिरजा अगियारी में है। उसका हर जगह साईनबोट टाँगना ठीक नहीं है।

संतोखी—कोई-कोई मुसलमान हिन्दुईको राज-भाखा बनानेपर चिढ़ते हैं।

भैया—मूरख हैं मूरख। हमारे यहाँकी भाखा हिन्दुई न होगी तो क्या अरबी फारसी होगी? अपने मनसे चाहे जो भाखा पढ़ते रहें, मुदा सरकारी कारबार तो अब अपनी ही भाखामें होगा।

सन्तोखी—जब अंगरेजी इतना दिन तक पढ़ते रहे, और कभी उजुर नहीं किया, तो बिदेसी भाखा छोड़के अपनी हिन्दुई भाखा पढ़ने लिखनेमें काहे इतनी नखराबाजी?

भैया—'पांडेजी पछतायेंगे और वही चनेकी खायेंगे' नखरा छोड़कर हिन्दुई भाखा सबको पढ़ना होगा। बहुत मुसलमान भी अब यह समझने

लगे हैं।

सन्तोखी—हाँ, इस बातका तो पता परागराजसे मिला है। दिसम्बरमें जब जवाहिरलाल पराग पहुँचे, तो लोगोंने जगह जगह बंदनवारसे सजाके दरवाजा बनाया। मुसलमानोंका दरवाजा सबसे सुन्दर था, और उसपर हिन्दीके मोटे-मोटे अच्छरोंमें लिखा था, उदूमें भी लिखा था, लेकिन छोटे-छोटे अच्छरोंमें। मुसुलमान भाई तो समझने लगे, मुदा महतिमाजी काहे उर्दूके पीछे सत्ती हो रहे हैं ?

दुखराम—का भैया ! ई सच बात है ?

भैया—उर्दू नहीं, वह तो हिन्दुस्तानी कहते हैं, लेकिन माने एक ही है। जब गांधीजी उर्दू और हिन्दी दोनों अच्छर और दोनों भाखाको हिन्दुस्तानी कहते हैं, तो उसका मतलब वही होता है। मुसलमानोंको उर्दू पढ़ना हो, तो पढ़ें; कौन रोकता है। लेकिन राजभाखा तो हिन्दी छोड़ दूसरी भाखा नहीं होगी। मुसुलमानोंको कैसी बयार बह रही है उसको देखना चाहिये और गांधीजीकी छठिआई बातका सहारा तिनकेका सहारा समझना चाहिए।

सन्तोखी—कोई-कोई मुसलमान कहते हैं, कि जो उर्दू भाखा नहीं रहेगी, तो मुसलमानी धरम उठ जायगा।

भैया—जो धरम ऐसा कच्चा है, तो उसको उठ ही जाना चाहिए। मुदा हिन्दुस्तानमें किसीके धरमपर रोक-थाम नहीं है। पारसी लोग गुजराती लिखते-पढ़ते हैं, उनका धरम तो नहीं चला गया। ईसाई बड़े उछाहसे अपनी हिन्दी पढ़ते हैं; बंगाला, मंदराजके रहवैया वहाँकी भाखा पढ़ते हैं। बौध हिन्दी पढ़ते हैं, अपनी भाखासे परेम करते हैं। इनमेंसे कोई नहीं कहता, कि हिन्दी पढ़नेसे हमारा धरम चला जायेगा।

दुखराम—तो काहे ऐसी उल्टी-पुल्टी बात मुसुलमानोंके मुँहसे निकलती है।

भैया—आखिरी बेर निकल रही है दुक्खू भाई। तुर्कीमें नमाज तक अपनी बोलीमें पढ़ते हैं, अरबीमें नहीं। अरबी अच्छरोंको भी वहाँ ठाँव

नहीं है, मुदा वहाँसे तो मुसुलमान-धरम नहीं चला गया। खाली घर या महजिदमें रोजा-नमाज छोड़के हिन्दू-मुसलमानमें बोली-बानी, कपड़ा-लत्ता किसी बातमें फरक नहीं होना चाहिए। हम तो समुझते हैं, कि धीरे धीरे रोटी-बेटी सब एक हो जायेगी।

अध्याय २०

अनाज कैसे बढ़े

सन्तोखी -- दुक्खू भाई, रजबली भैयाने बहुत बात तो बता दी है। आज उनसे क्या पूछना चाहिए ?

दुखराम—अभी तो संतोखी भाई, सब दूरे-दूरेकी बात रही है। अब तनी नजीकको बात करनी चाहिए।

सन्तोखी—हाँ दुक्खू भाई, देखे न नून-तेल सब अलोप होता जा रहा है। जहाँ देखो तहाँ दुई-दुई तरहका भाव। सब जगह ईमानधरम लोगोंका उठ गया है। हम सब गरीबोंकी दसा और बिगड़ती जा......

दुखराम—लो भैया भी आगये। जैहिन्द रजबली भैया !

भैया—जैहिन्द दुक्खू भाई, जैहिन्द सन्तोखी भाई। कहो आज क्या बात-बिचार करना है ?

दुखराम—-आज भैया, तुमको जादा तकलीफ नहीं देंगे। बस, घर-दुआरकी बातचीत और येही नून-तेल-लकड़ीकी चिन्ता।

भैया—यह छोटी बात है दुक्खू भाई ? कबीर साहब कह गये हैं—'ना किछु देखा भाव-भजनमें ना किछु देखा पोथीमें। कहे कबीर सुनो भाई संतों जो देखा सो रोटीमें।' रोटी सब चीजकी मूल है। रोटीके लिए सुराज भया है।

दुखराम—-यह तो हम भी बूझते हैं भैया, खाली हँसी करते रहे। मुदा देखते हो न अनाज दिन-पर-दिन अजुर होता जा रहा है।

भैया—रोटीका इंतिजाम सबसे पहले करना है। जानते हो न हर साल

अनाजका तोड़ा पूरा करनेके लिए अरबसे बेसी रुपिया दूसरे देसमें भेजके अनाज मंगाना पड़ रहा है।

सन्तोखी—अरब रुपिया बहुत होता है भैया! जो ऐसे रुपिया देना हुआ तो घर-दुआर बिक जायेगा।

भैया—औ अनाज न मँगायें, तो वही बँगालकी हालत होगी। लाखों परानी भूखे पटपटाके मर जायेंगे।

दुखराम—हमारे यहाँ अनाजका ऐसा टोटा तो कभी नहीं देखा गया। अब तो अँगरेज चले गये, और इहाँसे बिलायत भी अनाज नहीं जाता। फिर काहे अनाज का इतना अकाल?

भैया—अनाजका अकाल काहे न हो? खाने वाले मुँह पहलेसे बढ़ गये। और धरती एक भी अँगुल नहीं बढ़ी। ऊपरसे साल-साल धरतीका सत्त खींचते रहे। और खाद नहीं देते। भैंस बियाती है, तो काहे पखेव देते हो?

दुखराम—बियानेसे भैंस दूबर हो जाती हैं। पखेव न देंगे, तो कहाँसे दूध देंगी?

भैया—उसी तरह धरतीको भी पखेव चाहिए। फसल काटो और पखेव दो।

दुखराम—माने खाद दो। और पानी भी धरतीको बहुत चाहिए भैया।

सन्तोखी—और अच्छी जोताई भी। खेतको जोता-हेङाके तोसक जैसा नरम कर दें, तब जाके धरती माता परसन्न होती हैं।

भैया—कुल बात तो तुमने बता ही दिया। पखेव, पानी, जोताई और इनके साथ अच्छा बीज देदो, देखो थनहर भैंस जैसे जितना चाहो उतना दूध दुह लो। लेकिन पखेव कहाँ है हमारे गाँवमें? थोड़ा बहुत गोबर होता है। उसको भी और उपाय न होनेसे ईंधन बनाके जला देते हैं।

दुखराम—हाँ भैया, यह तो रोज ही देखते हैं, कि जिस खेतमें खाद-गोबर पड़ता है, उसमें कट्ठा-बिस्वामें मनभर गोहूँ उपजता है। पथर-कोयला

पर भोजन मीठा तो नहीं होता है, मुदा वह भी मिल जाता, तो सब गोबर बचाके खेतमें डालते।

भैया — खाली मनका भरम है। पथर-कोयला पर भोजन फीका नहीं होता। मुदा पथर-कोइला इतना कहाँसे मिलेगा, कि सब देस भरके चुल्होंमें वही जलाया जाय? इसकी यह मनसाय नहीं कि हमारे देसमें पथर-कोइला कम है। पथरकोइला बहुत निकाला जा सकता है और गोबरको बचाके खाद बनाना चाहिये। धरतीके पेटमें बहुत खाद है।

दुखराम — क्या कहा भैया, धरतीके पेटमें भी खाद है?

भैया — हाँ, जैसे कोइलाकी खान है, लोहाकी खान हैं, वैसे ही खादकी भी खान है। और वह खाद बहुत तेज होती है। जहाँ दूसरी खाद दो मन लगती है वहाँ इस खादके दो सेरसे ही काम चल जाता है। हमारे देसमें धरतीके पेटमें न जाने क्या-क्या है। हमारी धरतीमें अपार धन है। उसे निकालना चाहिये, और बहुत जल्दी। जानते हो, पचास लाख खाने वाले मुँह हमारे यहाँ हर साल बढ़ रहे हैं।

सन्तोखी — क्या कहा भैया, पचास लाख मुँह? मेरा तो कलेजा सिहर गया।

दुखराम — देख नहीं रहे हो सन्तोखी भाई, तुम्हारे घरमें तो एक ही लड़का-लड़की होके रह गई। मुदा रामदीन बाबाको नहीं देखते। अभी जिन्दा ही है। चार पीढ़ी सामने है। और खाली लड़कोंसे आजकल बत्तीस परानी हैं।

भैया — औ लखनऊके बड़े लिखवैया सामबिहारी मिसिर अपनी देहसे छत्तीस परानी देखके मरे

दुखराम — हाँ भैया, ई तो बड़े संकटकी बात है। औ मेहरारुओंकी मुरुखताईको पूछो ही नहीं, जो घरमें बहूको आये दो साल हो गया और कोई लड़का-फड़का नहीं हुआ, तो फिर देखो, आज सैदयबाबा किहाँ, काल डीहबाबा किहाँ, परसों परमजोतमाई किहाँ, चौथा दिन ओझा-सयानाकिहाँ। जनु गद्दी सूनी होती जा रही है। हमारे लड़का-फड़का

नहीं हुआ, भाईके हो गया। बस, नाम-निसान क्या उससे नहीं होगा ?

सन्तोखी—भाईके क्या, गाँवभर तो एक ही पुरुखा का है। चार घरमें धिया-पूता नहीं हुआ, तो पुरुखाका बंस, निरबंस थोड़े ही होगा। ई अरब-अरब रुपया हर साल बाहर भेजनेकी समरथाय अपने देसमें नहीं है। हम तो बूझते हैं भैया, जो परानी आधे हो जायँ, तो कुछ चिन्ता मिटे।

दुखराम—दुर् मर्दे, क्या मुँहसे कुवचन निकालता है। परानी आधा करनेके लिए हैजा बुलाएगा कि पलेक !

सन्तोखी—नराज मत हो दुक्खू भाई, हम उस दिनके लिए झँख रहे हैं, जब रुपया देना नहीं सँपरेगा, अनाज बाहरसे नहीं आयेगा, औ लड़के-सयानेको निरघिन मौत मरना होगा। सुने नहीं हो, बङ्गालामें जब अन्नका अकाल पड़ा, तो आदमी इज्जत बेंचके भी परान नहीं बचा सके। वैसी मौतसे हैजा पलेक अच्छा।

दुक्खू—तो तुम्हारे भगवान क्या करते हैं ! खाली हर साल पचास लाख मुँह-ई बढ़ानेमें बहादुर हैं !

सन्तोखी—भगवानको भी तो तुमने कह-कहके भुलवा दिया। अब कहाँ उतनी पूजा-पाठ होती है। हम भी देखते हैं, कि एक एक आदमीके बचाने खातिर कहाँ धाय-धायके औतार लेते थे, औ कहाँ लाखों आदमीके मारके आतताईके मोंछपर ताव देने पर भी उनकी नींद ही नहीं टूटती।

भैया—अब दुखराम कहेंगे कि रहने दो उनको छीर सागरमें हमेसा खातिर सोते। मुदा भगवानका काम, न हैजा-पलेकका काम है। अगले पचास साल तक जो इसी तरह बढ़ती हुई, तो हिन्दुस्तानमें एक अरब मुँह हो जायेंगे। उसके लिए भी सन्तोखी भाई ! हैजा-पलेक मत मनाओ। हमारी धरती एक अरब मुँहके भोजन, तन ढांकनेको अच्छा कपड़ा, रहनेको नीचुर घर और सब चीज दे सकती है। मुदा गांधी महतिमाके रहतासे नहीं। उसके वास्ते कल-मसीन आजकलके नये ईलिमका काम है। तुम कट्टा-बिस्वा मन कह रहे हो, रूस मुलुकमें तो बिस्वामें डेढ़-डेढ़ मन गेहूँ होता है और एक खेतमें

नहीं, जिलाके जिलामें।

दुखराम—तो उहाँ खूब खाद देते होंगे।

भैया—खूब, हर फसिल बोनसे पहले नापके खाद देते हैं। मोटरवाले हलसे एक हाथ गहरी जुताई करते हैं। ढेला एक नहीं रहने पाता। फिर बढ़िया चुनके बीज बोते हैं। और पानी हर बखत हाजिर। बड़ी-बड़ी नदीको बाँध दिये हैं। सरजू, कोसी, गंडक जैसी नदियाँ जो वहाँ होतीं, तो इतना पानी अकारथ थोड़े ही बहने पाता! वहाँ तो बड़ा-बड़ा सागर और झील बनाके बरसातका पानी भी जमा कर लेते हैं।

दुखराम—ईतो बहुत बड़ा काम है भैया!

भैया—बहुत बड़ा काम है, और वह काम यहाँ भी हो सकता है। गंगाजीसे नहर निकाली गई है, जानते हो न? उसी तरह सब नदियोंके पानी को खेतोंमें डाला जा सकता है। फिर एक बड़ी गंगा तो धरतीके भीतर हर जगह बह रही है।

दुखराम—वही न जिसका पानी कुएँमें आता है?

भैया—हाँ, वही। और वह पानी नदियोंके पानीसे भी जादा है। पहले जमानेमें उसके निकालनेमें बहुत मेहनत करनी पड़ती। आदमी या बैल लगकर चिल्लू-चिल्लूभर निकालते, लेकिन आजकल तो पानीकी कल ऐसी बन गई है, कि पाइप बैठा दो, तेल या बिजुलीका अंजन लगा दो, और एक-एक दिनमें सौ-सौ बिगहा सींच लो। देखा नहीं बनारस, पटना, कलकता, बम्बई सब जगह अब डोरी लोटा चाहे घड़ासे पानी नहीं खींचा जाता, बोस-बीस लाख आदमीके लिये और सतमहला तक पानी कल-मसीन पहुँचा देती है।

दुखराम—तो वह कल-मसीन अब धरतीमें लगाना चाहिए, नहीं तो संतोखी भाई फिर हैजा-पलेककी मनौती करेंगे।

भैया—हमारा देस दुक्खू भाई, धन-धानसे भरा है, लेकिन अकिल बिना सब काम चौपट है। रूस या बिलाइतके मुलुकको देखो, वहाँ छः महीना धरतीपर दो-दो चार-चार हाथ तक बरफ पड़ी रहती है, और कोई

खेती-बारी नहीं हो सकती। मुदा अपने देसमें हम हर खेतसे तीन-तीन फसल ले सकते हैं। और आलू, तरकारी, प्याज की तो पाँच-पाँच फसल भी उसी खेतसे निकाल सकते हैं।

सन्तोखी—सहरके पासके कोइरी (मुराव, काछी) लोग चार-चार पाँच-पाँच फसल निकालते ही हैं।

भैया—इसीलिये न कि वहाँ सहरके पासमें खूब खाद है। जोताई, पानी, बीज सबका अच्छा इतिजाम है। और धानके खेतमें भी हमारे यहाँ रब्बी और बादमें पिआज तरकारी लगाके तीन फसल कर सकते हैं।

दुखराम—अगहनी धानके खेतमें कैसे रब्बी होगी?

भैया—ऐसा इलिम निकला है, कि अगहनी धानको कातिका बनाया जा सकता है, माने पाख डेढ़पाख उसकी फसल पहले ही तैयार हो जायेगी।

दुखराम—बताओ भैया, हम अगले ही सालसे वही धान बोयेंगे।

भैया—लेकिन बड़े-बड़े ईलिमकी बात एक-एक घरमें नहीं चलती दुक्खू भाई। जैसे एक घर चाहे गंगाकी नहर बना दे, चाहे पानी निकालनेवाला इंजन बैठा दे, तो नहीं हो सकता। यह काम तभी होता है, जब गाँवके गाँव मिल जायँ और सरकार तन-मन-धनसे सहायता देनेको तैयार हो जाय। वैसे बीजको भिगाके कुछ देर तक गरमाईमें रखना पड़ता है। उसके लिये बड़े घर, मसीन, और हुसियार ईलिम जाननेवाले आदमीकी जरूरत पड़ती है।

दुखराम—तो रूसमें यह सब इतिजाम हुआ है?

भैया—इतिजाम न होता, तो सत्तर-सत्तर लाख परानीके मर जानेपर करोड़न बिगहा खेतके बेकार हो जानेपर भी रूस कैसे इतना अनाज पैदा करता, कि अपने खाके भी बिलाइतको भी चार पाँच करोड़ मन अनाज देता?

सन्तोखी—रूस हम लोगोंको भैया, अनाज क्यों नहीं देता?

भैया—दान नहीं देता है संतोखी भाई। कल-मसीन और दूसरी चीजकी अदला-बदलीमें देता है। हमारे यहाँको भी सवा-चार लाख मन बिलाइती

खाद भेजा है। दानकी उमेद मत रखो, "इस हाथ दो, उस हाथ लो"की बात है।

दुखराम हाँ भैया। जो दान देने लगे, तो परसादीमें खतम हो जाय। रूसके कमेरोंने आखिर सब कुछ अपने जाँगर हीसे किया है न? हमको भी अपने जाँगरका भरोसा रखना चाहिए।

भैया—जाँगर और ईलिम दो ही बात तो चाहिये। फिर हमारे यहाँकी भी धरती सोना उगलने लगेगी। आजकल सड़तर पट्तर (औसतन्) हर एकड़में कितना धान गोंहू होता है? सात मन हो जाय तो बहुत। येह हम एक-दो या सुतरे खेतकी बात नहीं कर रहे हैं। जिलाके जिला और सालोंके हिसाब लगानेपर फसिलकी यही उपज है।

संतोखी—इसका मतलब येह है कि नये ईलिमसे जो खेतीकी जाय, तो पाँचगुना फसिल बढ़ जायगी।

दुखराम—और एक फसिला दो-फसिला खेतमें तीन-तीन चार-चार फसिल काटी जायगी। यह भी दूना हुआ।

सन्तोखी—माने आज जितने ही खेतमें दस गुना फसिल पैदा हो सकती है।

भैया—और आज जितना खेत है, उसको सवाया कर सकते हैं, जो खेती-लायक सब परती, बंजर जमीनको जोत लिया जाय।

दुखराम—तब तो संतोखी भाई तुम भगवानसे हैजा-पलेक मत मनाओ। रजबली भाई ठीक ही कह रहे हैं कि खूब जाँगर औ ईलिम लगाया जाय, तो बाहरसे न अन्न मँगानेकी जरूरत है न भूखे मरनेकी। और अभी तीन पुस्त तक पचास लाख मुँह बढ़नेसे भी डर नहीं है। हाँ लेकिन मालूम होता है कि बाढ़का पानी गाँवके गोंएड़ा चला आया है। तनिक भी देर करनेसे सारा गाँव डूब जायगा।

भैया—यह ठीक कह रहे हो दुक्खू भाई। एक छन भी चुप बैठना बहुत खतरेकी बात है।

दुखराम—तो अब तो भैया, अपनी सरकार है, अपने मंतिरी लोग

है। उन लोगोंकी आँखोंमें पट्टी बँधी है क्या ? काहे नहीं इस बाढ़को देखते ?

भैया—न पट्टी बँधी है, और न खतरेसे बेबूझ हैं। मुदा कछुआकी चालसे चल रहे हैं।

दुखराम—ये भी बड़ा औगुन है भैया, घरमें आग लगी हो, और बुझानेवाला कछुआकी चालसे चले तो यह बहुत खराब है !

भैया—कछुआकी चाल बहुत खराब है। जो काम करना ही है, उसमें घिसिर-फिसिर करनेकी क्या जरूरत ? जिमदारी उठा देना है, मुदा आज-कल करते लासको घसीटते लिये जा रहे हैं। जो इसी तरह चलते रहे, तो दसा और खराब हो जायेगी।

सन्तोखी—खराब क्यों न होगी भैया ! जब हरसाल पचास लाख खवैया मुँह नये बढ़ रहे हैं। हम तो समझते हैं कि चटपट जिमदारीको गंगालाभ कराया जाय और नया ईलिम लगाके अनाज बेसी उपजानेके काम-में लग जायँ।

दुखराम—एक-एक परिवारसे नये ढंगकी खेती नहीं हो सकती है भैया, तो इसके लिये क्या करना चाहिये ?

भैया—साझेकी खेती, पंचइती खेतीका रस्ता लेना होगा।

दुखराम—"साझेकी सुई सेङरापर उठती है" की कहावत हर खेतिहरके मुँहपर है।

भैया—हमारे ही देसमें नहीं, दुनिया भरमें यह कहावत किसानोंके ठोरपर थी, मुदा इस कहावतपर चलनेसे काम नहीं चलेगा। कितने गाँव हैं, जहाँ परिवार पीछे आध-बीघा भी खेत नहीं पड़ता, और वह भी आठ जगह छितराया हुआ है। कितनी जिमीन तो मेंड़ ही में चली जाती है। इलिमदार लोग बताते हैं, जो मेंड़ तोड़ दी जाय, तो अनाज चोरानेवाले मूसोंके भागनेसे ही उपज सवाई हो जायगी।

दुखराम—हम तो तइयार हैं भैया, मुदा गाँवके आदमी क्या राजी होंगे ? किसीके पास बेसी खेत है, किसीके पास कम, और किसीके पास कुछो

नहीं। कैसे राजी होंगे ?

भैया—राजी होना पड़ेगा दुक्खू भाई ! नावमें पानी भर रहा है, जो दोनों हाथसे न उलीचोगे, तो सब डूब जायँगे।

सन्तोखी—हाँ, भैया ! जो पचास लाख खवैया मुँह हरसाल बढ़ रहे हैं और आज ही अरब-अरब रुपैया का अनाज बाहरसे मँगाना पड़ रहा है, तो डूबनेका रास्ता तो है ही। मुदा बेसी कम खेतका भी कोई निकास करना होगा।

भैया—निकास यही है, कि खेतकी उपजमेंसे जोताई-बोआई-कटाई-सिंचाईका खरच निकाल दो, बीजका दाम निकाल दो, मालगुजारी निकाल दो और जो कुछ खरच पड़ा हो, सब निकाल दो; फिर देखो कि सब खरच काट देनेपर कितना अनाज बच रहता है ?

सन्तोखी - कुल खर्च निकालनेपर तो सात मनमें दो मन बचेगा।

भैया—दो मन नहीं, एक मन और बढ़ा दो। हर आदमीको एकड़ पीछे तीन मन अनाज दो। अच्छा खेत हो तो और कुछ बाँध दो।

सन्तोखी—कहीं-कहीं तो उपज बेसी है, तीन मन भी कम होगा।

भैया—हम तीन मन बम्हाँकी रेख थोड़ई कहते हैं।

दुखराम—माने, जितनी उपज हो उसमेंसे सब खरच निकालकर फरक-फरक जमीनपर फरक-फरक भाव बान्ह दो, तो बेसी खेत वाले लोग काहे न राजी होंगे ?

सन्तोखी—एक आदमी ! राजी नहीं होगा, तो क्या कुल नावको डुबायेंगे ? और जिसके पास बेसी खेत है, उसका भी तो दो पुहुतमें बँटकर छोटा-छोटा कोला हो जायगा।

भैया - हम यह नहीं कहते कि पंचइती खेती हँसते-खेलते हो जायेगी, किसी गाँवमें फुटमत बहुत होती है, कोई एक दूसरेको देख नहीं सकता। किसी गाँवमें मुरुखताई बहुत होती है, लोग अपना भला बुरा नहीं समझते। मुदा सौ गाँवमें एक गाँव ऐसा भी मिल सकता है, सुलह-सराकत बेसी है। उसी गाँवको लो। खेतका मलिकाना बान्ह दो। फिर सरकारसे कहो कि

हमारा गाँव पंचइती खेती करेगा। हमको सींचनेके लिये पानीका अंजन दो, जोतनेके लिये मोटरका हल दो। मोटर हल बहुत न मिल सके, तो नये ढंगका हल और मजबूत बैल दो। बीज और बिलइतिया खाद दो। पथर-कोइला दो, हमारा गाँव अब गोबर नहीं जलायेगा, अब सारे गोबरकी खाद बनैगी।

दुखराम—और गाय-भैंस कैसे रहेंगे भैया ?

भैया—दूध देने वाला जानवर अपना-अपना रहेगा। भेड़-बकरी, सुअर, मुर्गा भी अपना-अपना।

दुखराम—माने, खाली जोतने वाले जानवर ही पंचइती रहेंगे। मुदा, दुधार जानवरके वास्ते भूसा कहाँसे मिलेगा ?

भैया—जिसके घरमें जितने ही पशु होंगे, उतना ही गोबर और खाद भी होगा। पंचायत गोबर और खादका दाम देगी। उसीके मुताबिक भूसा मिलेगा। फिर, बछड़ा जो तैयार होंगे, उसका भी तो दाम मिलेगा।

सन्तोखी—औ भेड़-बकरी, मुर्गा ?

दुखराम—दुर मरदे ! मुर्गा भूसा नहीं खाता, न भेड़-बकरी को सानी खिलाई जाती""मुदा भैया ! अकिल बताने के वास्ते खेती का इलिमदार भी सरकार से माँगना चाहिये।

भैया—सरकार कुल काम करेगी। हम लोगों से बेसी सरकार को परेसानी है। अरब रुपया उसीको जमाकरके बिदेस भेजना पड़ रहा है, तब अहतरोलिया (आस्ट्रेलिया) और अजिन्तीन (अर्जेन्टाइना) से जहाजों पर भरके अनाज आ रहा है।

दुखराम—रूससे जो सवाचार लाख मन बिलैतिया खाद आई है, उसमें से भी मिलेगा ?

भैया—बिलेतिया खाद, सिंचाईका इंजन, बढ़िया बीज, मोटरका हल, सब पहले पंचइती खेतीको मिलेगा तब किसी औरको।

दुखराम—तो सरकारको भी इसकी फिकिर है भैया !

भैया—फिकिर है मुदा अकेले सरकारकी फिकिरसे काम नहीं चलेगा

दुक्खू भाई !

सन्तोखी—हमको तो भैया, सब बात साफ-साफ लौकती है। जो नये ढंगसे पंचइती खेती हो तो अनाज, आलू, गोभी, तमाकू, मिर्चाका टाल लग जायेगा। और ऊख भी।

भैया—ऊख तो पाँच सौ बीघा बो दो, तो पंचाइत एक छोटी चीनीकी कल बैठा देगी।

सन्तोखी—तब तो भैया, लछिमी पैर तोड़कर गाँवमें बैठ जायँगी !

भैया—छोटा-मोटा बहुत तरहका कारखाना खुलैगा सन्तोखी भाई ! दूसौ एकड़ सिगरेटवाला तमाकू जिस गाँवमें बो दिया जाये, वहाँ छोटासा एक सिगरेटका कारखाना भी खड़ा कर दिया जायगा।

सन्तोखी—तब तो दुक्खू भाईकी तस्बीर छापके गाँवके नामपर अपना सिगरेट हम दुनियाके चारों खूँटमें चलायँगे और चारों ओरसे पैसा बहता चला आवैगा।

दुखराम—हमारा फोटू छपैगा, तो उसके साथ सोमरिया भौजीका भी छपना चाहिए।

सन्तोखी—हमको उजुर नहीं, अपनी भौजीसे पहिले पूछ लो।

भैया—पंचइती खेती होने लगेगी तो सोमरिया भौजी भी वही नहीं रहेगी दुक्खू भाई ! अभी कामकी बात तो हमने कही नहीं। उपजके बारेमें इतना ही समझो कि वह सैकड़ों गुना बढ़ जायेगी। गाँवमें अपनी लोरी होगी जो ढो-ढोकर फल-तरकारी सहरमें ले जायगी।

सन्तोखी—काहे न भैया, सहरमें अपनी तरकारीकी दूकान खोल लेंगे ! गाँवके लोगका टिकाव भी वहीं हो जायगा।

भैया—कुल होगा सन्तोखी भाई, मुदा मुखकी बात है धनके आवगको बढ़ाना। रेंड़ी भी गाँवमें चकका चक बोयेंगे। तेल अलग निकालेंगे। खली खाद बनेगी और पत्तोंको खिलाकर रेसमका कीड़ा पोसेंगे। गाँवही में कताय-बिनायके असमिया अंडी तैयार होगी।

दुखराम—तब तो मेहरारुओंको भी कताईका काम बहुत मिलेगा और

गाँवके जोलाहा भी जी जायेंगे ?

भैया—औ गाँवमें मधुमक्खी भी पोसेंगे ।

दुखराम—यह नहीं करना चाहिये भैया; एक मरखही गायसे रस्ता रुक जाता है, मधुमाखी काट-काटके मुँह तुम्बा बना देंगी ।

भैया—नहीं दुक्खू भाई ! यह मधुमक्खी नहीं काटेगी । दूसरे देसमें लोग बहुत पोसते हैं । हमारे गाँवमें मनों मध निकलेगी और मोम ऊपरसे । खूब पैसा आयेगा । लोगोंको बतला देंगे, अपने घर-घरमें मधुमक्खी पोसेंगे । इसे पंचइती करनेका काम नहीं ।

सन्तोखी—और साबुन नहीं बनाया जा सकता भैया ?

भैया—रेंड़ीके तेलसे चाहे तो साबुन बना सकते हैं और बढ़िया महकौआ साबुन । पंचइती खेतीसे सौ तरहका आमदनीका रास्ता निकल आवेगा ।

सन्तोखी—आमदनीको कैसे बाँटा जायगा भैया ?

भैया—खेत मालिकका बँधा हुआ अनाज पहले निकाल दिया जायगा । फिर बीज, खाद औ हथियारका दाम चुका दिया जायगा । बाकी आमदनीमें जो जितना काम किये हैं उनमें बाँट दिया जायगा ।

सन्तोखी—काम भी तो कई तरहका है भैया ? कोई बेसी काम करता है, कोई कम । कोई बेसी मसक्कतका काम करता है कोई अकिलका ।

भैया—"सब धान बाईस पसेरी" नहीं होगा सन्तोखी भाई ! एक-एक दिनमें कामका हिसाब होगा । जो एकड़का छठवाँ हिस्सा एक दिनमें कोड़नेका हिसाब रखा गया और कोई आदमी तिहाई एकड़ कोड़ देगा तो हाजिरी बहीमें एक-ही दिनमें उसके नामपर दो दिनका काम दरज होगा । जो आधा काम करेगा उसका आधा दिन दरज होगा ।

दुखराम—माने कामकी तौल रहेगी । तब तो लोग खूब बेसी-बेसी काम करेंगे ?

भैया—हर फसिलमें समूचे गाँवके मरद-मेहरारू मिलके जितने दिन काम किये हैं, सब बहीमें दर्ज रहेगा । साल भरमें गाँवभरमें कितना काम

हुआ, उसको हाजिरी-बही ऐनाकी तरह झलका देगी। आमदनीको उसीपर बाँट दिया जायगा।

दुखराम—और जिसका बखत सब इतिजाममें ही लग जायेगा, उसको ?

भैया—उसको तनखाह दी जायेगी। मिस्त्रीको जास्ती पैसा मिलेगा। गाँवमें अपनी पंचइती दूकान भी होगी।

दुखराम—तब तो भैया, नून-तेलकी भी आफत न होगी। कपड़ा-लत्ता सब गाँव हीमें मिलैगा ?

भैया—गाँवमें पंचइती खेती हो जानेपर सब ठीक हो जायगा, सरकार भी जिउ-जानसे मदद करेगी। एक गाँवको नमूना बनाकर देखा देना चाहिये, फिर सैकड़ों गाँव दौड़-दौड़कर आयेंगे और कहेंगे—दुखराम भैया, चलो, हमारे गाँवमें पंचइती खेती बनवा दो।

दुखराम—और जो दू चार आदमी गाँवके सरकसई करें ?

भैया—दू-चारके सरकसईसे कुछ नहीं बनता-बिगड़ता। उनका खेत एक छोरपर फरका कर देंगे।

दुखराम—और जो न माने ?

भैया—कानूनके सामने मानना न मानना कोई नहीं चलता। कानून ही मनवानेके लिए तो पुलिस-पल्टन रखी जाती है।

सन्तोखी—नावमें पानी भर रहा हो और कोई आदमी टाँग पसारकर कहे कि हम उलीचने नहीं देंगे, तब बताओ दुक्खू भाई क्या करोगे ?

दुखराम—क्या करेंगे ? उसको टाँग पकड़कर गंगालाभ करा देंगे।

सन्तोखी—पंचइती खेतीसे बेखेतवाले लोगोंका भी बहुत निस्तार होगा।

भैया—बेखेतवाले लोगोंकी रोजीका रस्ता जो न निकाला गया, तो जैसे ही कारखाना बढ़ने लगा, वह गाँव छोड़के चले जायेंगे। अब दूसरेको भूखा रखके, बाबू बनके, सूद-सवाई करके धनी बननेका जमाना गया। गाँव भरके सुखमें सुख मानना पड़ेगा और सुख होगा पंचइती खेती हीसे।

सन्तोखी—तो कारखाना बहुत बढ़ेगा भैया ?

भैया—कारखानेकी बात अब कल होगी। आज बस यहीं तक।

अध्याय २१

कल-कारखानोंका फैलाव

दुखराम—अच्छा हुआ, मँगरू! तुम भी आ गये। बड़े मौकेसे आये। आज रजबली भैयासे कल-कारखानेकी बात हो रही है। तुमको तो गिरीडीह-की कोइलरीका हाल मालूम ही है।

मँगरू—कोइलरीकी बात क्या पूछते हो दुक्खू भाई ? हम लोग चाहते हैं कि खूब जास्ती कोइला निकालें, देसको कोयलेका बहुत काम है, मुदा मालिक बीचमें कोई न कोई ऐसा अड़ंगा लगा देता है, कि काम होने नहीं पाता।

सन्तोखी—कोयलेकी तो बड़ी जरूरत है मगर न! हम लोग अपने गाँवमें भी चाहते हैं, कि गोबरकी खाद बनावें और पथर कोइलासे भात पके, मुदा ई मालिक काहे बीचमें टाँग अड़ाता है ?

दुखराम—इसीलिए न भैयाने उसका नाम जोंक रखा है। लो भैया भी पहुँच गये। जय हिन्द भैया!

भैया—जय हिन्द सब भाई लोगोंके! कहो मँगरू! कब आये गिरीडीहसे ?

मँगरू—राते आये रजबली भैया! तीन बरस हो गया देखे, कहा, रजबली भैयासे भी भेंट कर लें।

भैया—अच्छा तो, आज बात भी वही होगी, जो तुम्हारे कामको है। कल-कारखानेका बढ़ाना बहुत जरूरी है और यह काम बहुत जल्दी होना चाहिए।

दुखराम—माने, कछुआकी चालसे नहीं होना चाहिए।

भैया—पेटकी भूख दूर करनेके लिए पंचइती खेती करनी चाहिए।

देस हमारा सुतन्तर हुआ, मुदा मजबूत तभी होगा, जब कल-कारखाना बढ़ेगा। जानते हो न "दुब्बरकी मेहरारू सबकी भौजाई है ?"

सन्तोखी—और धनकी आमदनी भी भैया कारखाना हीसे ज्यादा होती है।

भैया—बल और धन दोनों खातिर कल-कारखाना चाहिये। अब हमारा देस सुतन्तर है। हमारे पास अपनी पल्टन है। पल्टनको कितना कितना हथियार चाहिये और आजकलका हथियार बुद्ध ठाकुरके लोहसारमें नहीं बन सकता।

सन्तोखी—अपने यहाँ भी अणुआ-बम बनना चाहिए भैया ! क्या जाने, कभी किसी दुसमनकी आँख हमारे ऊपर पड़े।

भैया—वह भी चाहिये, लेकिन सबसे पहले देखो अपनी फौज के लिए लड़नेवाला उड़नखटोला (हवाई जहाज) चाहिये, लड़नेवाली मोटर चाहिए, और टंक भी चाहिए।

दुखराम—टंक क्या है भैया ?

भैया टंक है चलता-फिरता किल्ला। जैसे किलेकी दीवारपर छोटी-मोटी तोपका कोई असर नहीं होता, वैसे ही दो-दो तीन-तीन अंगुल मोटी इस्तपातकी चादरवाले टंकपर गोला-गोलीका कोई असर नहीं होता है। गोला-गोलीकी बरसा होती रहे, तो भी वह चला जाता है। वह सड़कपर ही नहीं, खेत-खाई भींटा-पहाड़ सबपर रेंगता चला जाता है। बड़े बड़े घरोंको तो वैसे ही उलटते चला जाता है, जैसे सूखे पत्तेके ढेरोंको भैंसा। वह पहिया नहीं, सिक्कड़पर चलता है।

सन्तोखी—अपनी पल्टनमें टंक है भैया ?

भैया—है, मुदा सब उधारका। माँगे हथियारसे आज-कल अपना बचाव नहीं हो सकता। संकट आनेपर अंगरेज या दूसरे देसका मुँह जोहना पड़ेगा।

दुखराम—नहीं भैया ! हथियारके कालमें मुँहजोहाई ठीक नहीं।

भैया—इसीलिए पिस्तौल, बन्दूक, तोप, टंक, उड़नखटोलासे लेकर

अणुआ-बम तक सब अपने यहाँ तैयार होना चाहिये।

सन्तोखी - हमारे यहाँ कोई हथियार तैयार भी होता है भैया ?

भैया—अंगरेज हमारा हथियार छीन लिए थे, इसीलिए न कि हम बाछी बन जायँ ? वह भला काहे हिन्दुस्तानमें हथियार बनने देते ! पिछली लड़ाईका जब चाँप पड़ा तो कुछ छोटे-छोटे हथियार बनानेका इतिजाम किया। अच्छे किसिमके इस्पात तकको नहीं बनने देते थे। इसी लड़ाईमें एक इस्पातका भट्ठा ताताको बनाने दिया। अपने देसमें न मोटर बनती, न उड़नखटोला बनता, न टंक बनता, न रेडियो बाजा बनता, बताओ जो कभी देसपर लड़ाईका संकट आये, तो हमारा गला दूसरोंके ही हाथ रहेगा न ?

दुखराम—हाँ, भैया ! इसमें क्या संदेह। छोटेसे बड़े तक सब तरहका हथियार जब तक अपने देसमें नहीं बनेगा, हम निहत्थेके निहत्थे रहेंगे।

भैया -सब हथियार अपने यहाँ बनना चाहिये। हथियारका कारखाना बनेगा तो उसीमें सवारीकी मोटर, माल ढोनेकी लोरी, मुसाफिरीका उड़न-खटोला भी बनेगा और देसका करोड़ों रुपया बाहर जानेसे बच जायेगा। यही नहीं, हम अपना माल दूसरे देसमें भेजेंगे और बाहरसे भी खूब धन आयेगा।

सन्तोखी—है तो भैया ठीक ! मुदा, हमारे पास कारखाना खड़ा करने और माल तैयार करनेके लिए सब चीज बसुत है ? फिर बेसी ईलिम भी तो चाहिए।

भैया -लोहा, तामा, कोइला, रबड़ सब चीज अपने इहाँ है। ईलिम अकिलका जो अपने यहाँ टोटा है, वह भी ऐसा नहीं है कि पूरा नहीं किया जा सके। मतारीके पेटसे कोई ईलिम-अकिल सीखके नहीं आता। बड़े-बड़े अकिला लोग हमारे देसमें आज भी हैं, जिनका लोहा दुनिया मानती है।

मँगरू —हाँ, भैया ! हम अपनी कोइलरीमें देखते हैं कि सब बड़का-बड़का इंजिनियर और मिस्त्री अपने देसके हैं, भैया सब चीज अपने देसमें

है। जल्दी अपने देसको मजबूत करना बहुत जरूरी है। अब एक-दो लोहा-इस्पातके कारखानेसे काम नहीं चलेगा।

दुखराम—कैसे काम चलेगा! पंचइती खेतीके लिए हमें मोटर-हल चाहिये, सिंचाईके लिए अंजन चाहिये, चीनी सिगरेट बनानेकी कल मसीन भी चाहिये।

सन्तोखी—बाहरसे सब चीज मँगानेमें एकका नौ देना पड़ेगा, फिर इतना पैसा हम कहाँसे देंगे?

भैया—हाँ, सन्तोखी भाई! छ-छ सात-सात लाख गाँव हैं। एक-दो गाँवका इतिजाम करना हो तो बेंच-खोंचकर कुछ पैसा बटोर भी लें लेकिन कुल देसका आधार इस बेंचाई-खोंचाईसे नहीं होगा। हमारे यहाँ पचासों जगह लोहा भरा पड़ा है। एक-एक जगह एक एक ताता जैसा कारखाना खड़ा कर सकते हैं। छोटा नागपुरमें और दूसरी जगह ताँबा है। सब ताँबा निकालना होगा। नहीं तो कल-कारखानेकी चीज नहीं बन सकेगी। मटिया तेल खाली आसाममें निकला है। अभी बहुत जगह उसके वास्ते भुइँ-करनी हैं। नदियाँ सब बिजलीसे भरी हुई हैं, वह मुफुतमें मीठा पानी बहाके समुन्नर में ले जाकर खारा नहीं बनाती, बलुक टालकी बटाल बिजली भी बहा ले जाती है। जहाँ नहरका बड़ा-बड़ा बान्ह बहेगा वहाँ बिजली भी बहुत पैदा की जा सकती है। और, गाँव-गाँव मटिया तेलकी ढिबरी बालनेका काम नहीं पड़ेगा।

संतोखी—गाँवे-गाँवे बिजली बत्ती लग जायगी। गाँव जगमगा उठेगा और हमारे पंचइती गाँव में तो सबसे पहले बिजली आयेगी। है न भैया?

भैया—जरूर! मुदा बिजली से घर ही नहीं जगमगायेगा उससे तेल-कोइलाका खरच हट जायगा। सिचाईके अंजनका खर्च कम हो जायगा। तेल-कोइलाका अंजन न लगाकर हम लोग बिजलीका छोटा अंजन लगा लेंगे। चीनी-सिगरेटकी कल बिजलीसे चलेगी। चर कट्टी मसीनमें भी बिजली लगा देंगे, चारे का टाल लग जायेगा। मोटर-हल भी बिजलीसे चलेगा।

फिर जितनी रेल है, सबमें कोयला झोंकनेका काम नहीं पड़ैगा।

मँगरू—पथर कोइलाका काम तो बंद नहीं हो जायगा भैया ?

भैया—नहीं मँगरू ? पथर-कोइलाका खरच बहुत बढ़ जायेगा, कि उसको बचाने के लिये पनबिजलीकी बहुत जरूरत पड़ेगी। लोहा, तामा, अलमुनिया को गलाकर तैयार करनेमें पथर-कोइला बहुत खर्च होगा और गोबर बचानेके लिये घर घरमें चूल्हेके लिये पथर कोइला देना पड़ेगा। तुम घबड़ाओ, मत मँगरू, कि कोइलरीका काम बन्द हो जायगा। आज जितना कोइला निकलता है, उससे बीस गुना अधिक कोइलेकी माँग होगी। फिर खाली लोहा-तामाकी सिल्ली ढालकरके ही छोड़ नहीं देना है, उनसे सब कल-मसीन बनाना होगा।

सन्तोखी—हाँ. भैया! कल-मसीन बाहरसे मँगाकर एकका नौ देना बेबूझका काम है।

भैया—अपने देसमें घड़ी बनेगी, रेडिहा बाँजा और फोनूगिलाफ बनेगा। मोटर और बाइसिकिल बनेगी। आजकलकी तरह नहीं कि पुर्जा बाहरसे मँगा लिया और यहाँ बैठकर जोड़ दिया, बस! सब चीज अपने ही यहाँ ढाली जायगी, अपने ही यहाँ जोड़ी जायगी। जो चीज अपने देसमें नहीं है उसे अपने यहाँके कारखानेका माल भेजकर बदल मँगाया जायगा।

मँगरू—मुदा जो यह कुल कल-कारखाना सेठोंके जिम्मे लगा दिया, तो सब गुर-गोबर…

भैया—ठीक कहते हो मँगरू! बिजली, लोहा, तामा, कोइला, कल-मसीन-बनाई यही देसका जीव है। जोंकोंको अपने जीवसे खेलवाड़ करनेका मौका नहीं देना चाहिये। सेठोंके पास इतना पैसा भी नहीं है कि ऐसे बड़े-बड़े कारखानोंको जल्दीसे देसके चारों खूँटपर खोल दें। सेठ कारखाना खोलेंगे तो खाली अपने "लाभ-सुभ"के लिए।

मँगरू—हाँ भैया! सेठ देसकी भलाईका कभी ख्याल नहीं करते। उनको सबसे पहले अपना "लाभ-सुभ" चाहिये, देस जाय चूल्हा-भाड़में! हम लोग कोइलाखान वाले मजूर तिलमिलाकर रह जाते हैं। हम

चाहते हैं कि बेसी से बेसी कोइला निकालें, मुदा सेठ सोचता है – बेसी कोइला निकला तो सस्ता हो जायेगा, फिर नफा कम होगा। फिर सेठ ऐसा तिकड़म लगाता है, कि कोइलरीमें हड़ताल हो जाय।

दुखराम—माने मजूर लोग काम करना छोड़ दें, और कोइला निकलना बन्द हो जाय...यह भी तो कसाईका काम है।

भैया—कोइला सबकी जड़ है दुक्खू भाई! कोइला कम हुआ कि कारखानाको रोकना पड़ेगा, रेलको कम करना पड़ेगा। सब जगह मजूर बेकार होंगे औ कारखानोंसे कपड़ा और दूसरी चीजोंके उपजनेसे देसभरमें हाहाकार मच जायगा।

मँगरू—तो भैया जो काम देसके जीवकी तरह है, उसे कभी सेठोंके हाथमें देना नहीं चाहिये।

भैया—अभी तक जो सेठोंके हाथमें लोहा-कोइला पनबिजलीका काम है, सबको सरकार हथिया ले, और आगे खूब जोर लगाके नये नये कारखाने खोले। पनबिजली भी बढ़ाना चाहिये, नहीं तो सचमुच ही कोइलेसे पूर नहीं पड़ेगा। पनबिजली तो हमारे यहाँ अलमगंज है। सतलज, बियास, जमुना, गंगा, रामगंगा, सरजुग, रापती, गंडक (नरइनी), कमला, कोसी, ब्रह्मपुत्र, सौन, दमोदर, महानदी, नरबदा, तापती, गोदावरी, किसुना, काबेरी...देखा न कितनी बड़ी-बड़ी नदियाँ अपने देसमें हैं?

दुखराम—और सब सिंचाईका पानी कामकी बिजली बेकार बहाये लिये जा रही हैं!

भैया—हाँ, सबको जूएमें नाधना होगा। बाँध बाँधके पचासों कोसका समुद्दर एक-एक जगह बनाना होगा।

दुखराम—इसमें तो बहुत आदमियोंको काम करना पड़ेगा?

भैया—एक-एक समुन्दर बनानेके लिए चार-चार पाँच-पाँच लाख आदमियोंका काम पड़ेगा। मुदा अपने यहाँ आदमियोंकी क्या कमी है?

सन्तोखी—चटकल-पटकल गाँवके मजूरोंको कलकत्ता खींच ले जाती रही। लड़ाईके बखतमें हवाई जहाजका अड्डा जब जगह जगह बनने लगा,

तो गाँवमें मजूरोंका मिलना मुसकिल हो गया। आदमीके बिना कहीं पंचइती खेतीमें तो हरज नहीं होगा?

भैया मजूरोंकी कमी तो जरूर होगी दुक्खू भाई! पंचइती खेतीसे फरक रहने वाले गाँव के मजूर तो फुरसे उड़ जायँगे।

दुखराम—अच्छा! तब देखेंगे, बबुआ तिवारीका हल कैसे चलता है। मजूरी देते समय बड़ा सतजुगका अइन-कानून छाँटते हैं!

सन्तोखी—इसके वास्ते भी पंचइती खेतीका रास्ता ही ठीक मालूम होता है। मरद-मेहरारू सबको काम मिल जायेगा।

भैया—कल-कारखाना खूब जोरसे जो बढ़ाया गया, तो पचीस बरस-में अपना देस धन-धानसे अटूट हो जायगा, कहीं कोई भूखा-दूखा नहीं रह जायेगा।

मँगरू—जो कोइलाकी खान सेठोंके हाथसे निकलके समूचे देसके हाथमें चली आएगी, तो हम लोग खूब हुमुचके काम करेंगे, और कोइलाका कभी टोटा नहीं पड़ने देंगे।

भैया—हाँ मँगरू, और लोहा, तामा पन-बिजुली सब जगह मजूर हुमुच-हुमुचके काम करेंगे। मजूरको जब मालूम होगा, कि वह सेठकी थैली भरनेके लिये नहीं काम कर रहा है, वह देसकी भलाईके लिये काम कर रहा है, तो न रात गिनेगा न दिन, खूब मन लगाके काम करेगा।

मँगरू—हाँ भैया हम आधा-पेट भूखा रह के भी देसके लिये काम करेंगे। मुदा सुनते हैं, कि सेठोंकी ही सरकारमें भी चलती है। पुलिस भी उनकी ही मदत करती है।

भैया—अब पुराने अइन-कानूनसे काम नहीं चलेगा। कल-कारखाना, खान सबका मालिक मजूर है जो देसके लिए एतना धन उपजा रहा है। सबके इन्तजाममें मजूरसे पहले पूछना पड़ेगा। हम तो समझते हैं कि मजूर, इलिमदार लोग औ सरकारके लोग मिलकरके सब चीजका इतिजाम करें। तभी ठीकसे काम चलेगा। जोंकोंको बहुत छोह हो तो कुछ पैसा देके बिदा कर देना चाहिए।

मँगरू—तब सब जगह संती हो जाएगी भैया। फिर काहे कोई हड़ताल करेगा। आमदनी-खरच हम लोगोंकी आँखोंके सामने रहेगा और हम उतनी ही मजूरी लेंगे, जिसमें काम भी चलता रहे, और हमारी भी रोजी चले।

भैया—खाली रोजी ही नहीं। मजूरोंके लड़कोंके पढ़ानेका इतिजाम करना होगा। रहनेके लिये सूअरकी खोभार नहीं, पक्का मकान बनाना होगा। अस्पताल, दवा-दरपनका पूरा इतिजाम करना होगा। कमासुत पूतका खाली पेट भर देनेसे छुटकारा नहीं लेना होगा।

संतोखी—और कपड़ा, चीनी और दूसरे कारखानोंके बारेमें क्या होगा भैया?

भैया—कल-कारखाने तो सभी देसके हाथमें होने चाहिए, जोंकोंके हाथमें रहनेमें बहुत गड़बड़ होती है।

मँगरू—हाँ भैया, सेठ खाली अपनी थैलीकी ओर देखते हैं। चीज कमसे कम पैदा करके महँगा बनाकर अपनी थैली भरते हैं।

सन्तोखी—और चीज मँहगी होनेसे समूचे देसको तकलीफ होती है।

भैया—आज-कल जो देसमें चीज इतनी मँहगी है उसका कारन यही है, कि चीज कम पैदा होती है और खरीदनेवाले जादा हैं। सरकार जब चीजके भावपर अंकुस रखती है तो जोंकें चोरबाजारी करने लगती हैं और लोगोंकी आँखमें धूल झोंकके एकका नौ लेती हैं। मुदा पहले कुछ साल तक छोटे-मोटे कारखानोंको सेठोंके हाथमें रखना होगा।

मँगरू—तब तो मजूरोंका गला रेता गया न भैया!

भैया—एक ही दिनमें मँगरू, सब कारखानोंका इतिजाम सरकारी हाथमें लेनेमें और काम रुक जायगा। पहले जड़को पकड़ना चाहिए। पन-बिजली, लोहा, तामा, कोइला, मसीन बनानेका कारखाना देसके हाथमें चला जाना चाहिए, और दूसरे करखानोंपर पूरा अंकुस होना चाहिए जिसमें मजूर हकसे बेहक न हों। उनको पूरी मजूरी मिलनी चाहिए। रहनेके लिये अच्छा मकान बनना चाहिए। स्कूल-अस्पतालका पूरा इतिजाम होना

चाहिए। मजूर-सभासे बिना पूछे किसी मजूरको निकालना नहीं चाहिए। कारखानेके इन्तिजाममें भी मजूरोंके आदमी होने चाहिए। सेठके नफाको भी मनमाना नहीं होने देना चाहिए। पहले इतना हो जाना चाहिए। पीछे तो फिर जोंकोंको हटाना ही है।

मँगरू - मुदा भैया, सेठ इसपर राजी होंगे? कितने सालोंसे उनके मुँहमें खून लगा है। बड़े-बड़े भगत सेठ लोगोंको देखा है। चींटीको चीनी-सतुआ खिलाते हैं, मुदा मजूरका गला काटनेके लिये सबसे बड़े कसाई हैं।

भैया—यह तो लोगोंके हाथमें है मँगरू। जानते हो न अब सरकारमें वो ही लोग जायेंगे जिनको २०-२१ सालसे बेसी उमिरवाले सब मरद मेहरारू बोट देंगे।

दुखराम—तो भैया अब बोट खाली पैसेवालेके हाथमें नहीं रहेगा?

भैया—नहीं अब बोटमें न गरीब अमीर देखा जायगा, न मरद-मेहरारू। सब लोग जिसको अपना बोट देके चुनेंगे वही जाकर राज-काज चलानेके लिये अपनी सरकार बनायेंगे। जो लोग चाहेंगे कि जोंकें रहें, तभी जोंकें रह पायेंगी।

सन्तोखी—लोगोंमें तो बेसी जोंकोंको अपना दुस्मन ही समझते हैं, फिर कौन जोंकोंको बोट देने जायगा भैया?

भैया—यह न कहो संतोखी भाई। लोगोंकी आँखमें धूल झोंकनेकी बिद्दा जोंकें बहुत जानती हैं। वह भेस बदलके बहुरुपिआ बननेमें बहुत हुसिआर हैं। वह तो तुम्हारे पास आएँगी गोरच्छाका झंडा लेके वे कहेंगी, जो हमको वोट न दोगे तो हिन्दू-धरमका छयकार हो जायगा।

सन्तोखी—बहुत बड़ा खतरा है भैया! जोंकें जातका नाम लेके आएँगी। अपनी मुढ़ताईसे लोग बहक जाते हैं, औ नहीं जानते कि जोंकोंकी कोई जात नहीं होती वह सबका खून चूसती हैं।

भैया—बहुत सजग रहनेकी जरूरत है। जोंकोंके फंदेमें जो पड़े तो फिर देसके सुतन्तर होनेसे कोई फायदा नहीं होगा। उसी तरह हम भूखों मरेंगे

और अंगरेजोंकी जगह अब अपने यहाँकी जोंकोंका जूता चाटेंगे।

सन्तोखी—जूता चाटनेसे भी जी नहीं बचेगा भैया! हमको तो बराबर मनमें आ रहा है, वहाँ हरसाल पचास लाख खवैया मुँहके बढ़ने और टालके टाल रुपिआ भेजके बिदेससे अनाज मँगानेका। हमें किसीके धोखे-में नहीं पड़ना चाहिए, और जोंकोंके लिए तो एक भी बोट नहीं देना चाहिए।

भैया—हाँ, सब लोगोंको यह गाँठि बान्ह लेना चाहिए औ हिन्दू-मुसुलमानके नामपर मरना नहीं चाहिए। गरीबोंकी भलाई होगी तो हिन्दू-मुसुलमान दोनोंकी! जोंकोंका जाल चला, तो मरना होगा हिन्दू मुसुलमान दोनोंको।

दुखराम—यह तो जोंकों और कमेरोंकी लड़ाई रही।

भैया—यह तो तब तक रहेगी, जब तक कि जोंकोंका टाट नहीं उलट जाता।

मँगरू—लड़ाई बहुत संगीन है और चारों ओर घूम रहे हैं बहुतसे रँगे सियार। देखें कैसे कमेरोंका बेड़ापार होता है।

भैया—बेड़ा जरूर पार होगा मँगरू। मुदा कमेरोंके हकके लिये लड़ने-वाले जो आपसकी लड़ाई छोड़ दें तब।

मँगरू—हाँ भैया, इससे बड़ा नुकसान होता है। कमेरोंके लिये सोसलिस्ट भी लड़ते हैं, कमुनिस्ट भी लड़ते हैं, फरवरबलाकी भी लड़ते हैं; करान्तिवाले सोसलिस्ट भी लड़ते हैं, मुदा फिर आपसमें लड़ते वह कमेरोंकी बात भूल जाते हैं। हम लोग तो बड़ी दुबिधामें पड़ जाते हैं।

भैया—हाँ ठीक कहा मँगरू। असल मुद्दा है कमेरोंका राज बनाना, लेकिन अपनी मुढ़ताईसे अपने-अपने दल औ पाटीको ही वह असल मुद्दा समझ लेते हैं। चाहे जो जिस पाटीमें हो, उसमें रहे। अपना देस इतना बड़ा है कि सब पाटी फूल-फल सकती हैं; और सबको फूलना-फलना चाहिये। मुदा कमेरोंकी भलाई मनमें रखते और मरकस बाबाके चेला होते जो आपस-के मनमुटावको फरका रखके जोंकोंसे लड़नेमें आगे नहीं रहता, वह बहुत

नालायक है। देस सुतन्तर हो गया, लेकिन किसान-मजूर और कलम-घिसवैया मजूरोंकी दसा पहले ही जैसी है। अब सबको एक साथ उठके विजय-पताका गाड़नी है। बस भैया! यहीं बात बन्द करते हैं। कल फिर जा रहे हैं। न जाने कितने महीना, कितने बरिस बाद सब भाइयोंसे फिर भेंट मुलाकात हो। जय हिन्द!

जय हिन्द रजबली भाई! हम सबको भूलना नहीं।